स्नातक-परिचायिका

[गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के सन् १९१२-७६ के स्नातक-स्नातिकाओं का संक्षिप्त परिचय-ग्रन्थ]

प्रधान सम्पादक
विद्यासागर विद्यालंकार

सम्पादक
डॉ० विनोदचन्द्र विद्यालंकार

अखिल [illegible]तीय स्नातक मण्डल
[गुरुकु[illegible]वविद्यालय कांगड़ी]

स्नातक-परिचायिका

[गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के सन् १९१२-७६ के स्नातक-स्नातिकाओं का संक्षिप्त परिचय-ग्रन्थ]

प्रधान सम्पादक
विद्यासागर विद्यालंकार

सम्पादक
डॉ० विनोदचन्द्र विद्यालंकार

अखिल भारतीय स्नातक मण्डल
[गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय]
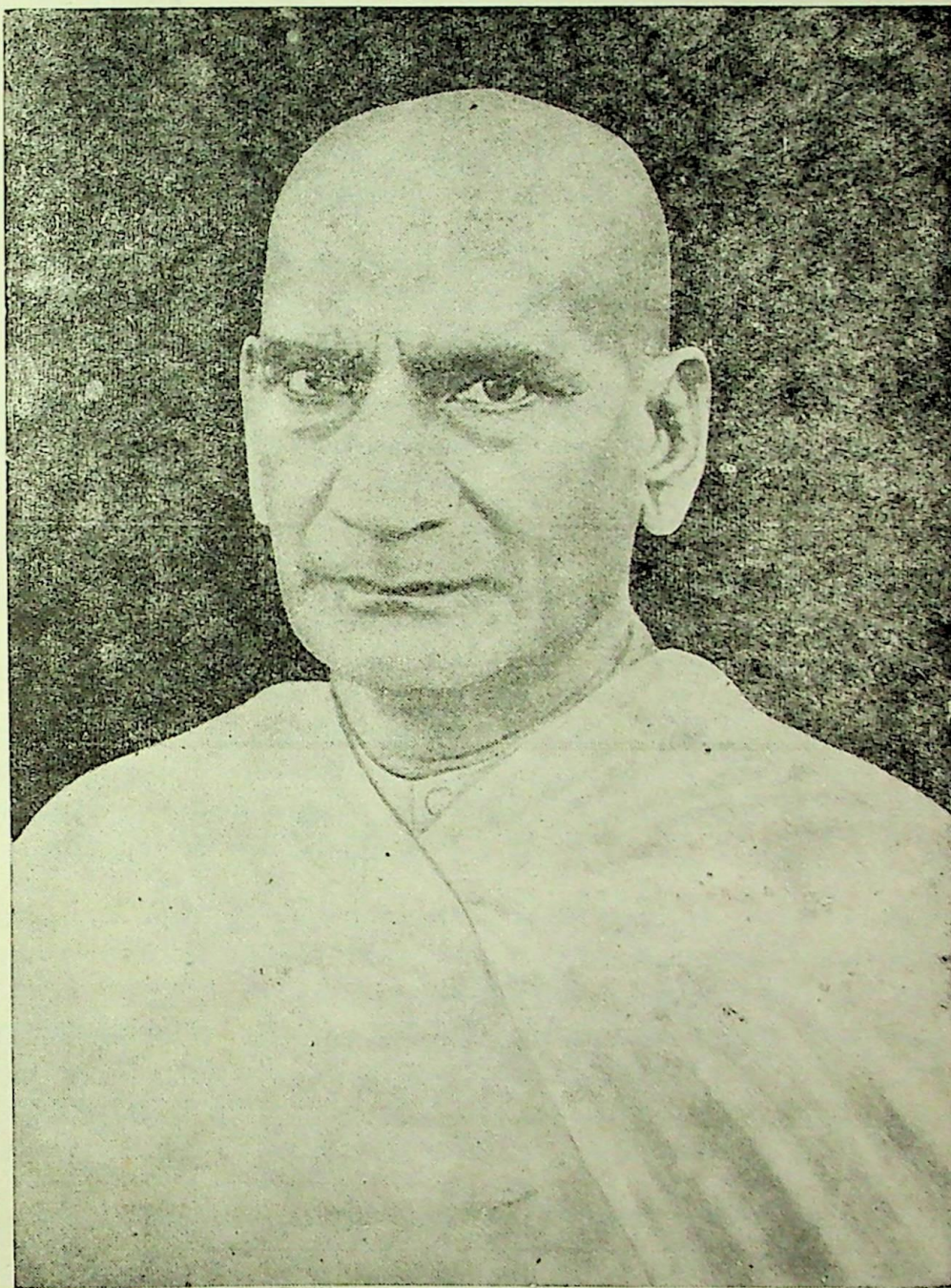
कुलपुत्रों की ओर से
कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी के पावन चरणों में
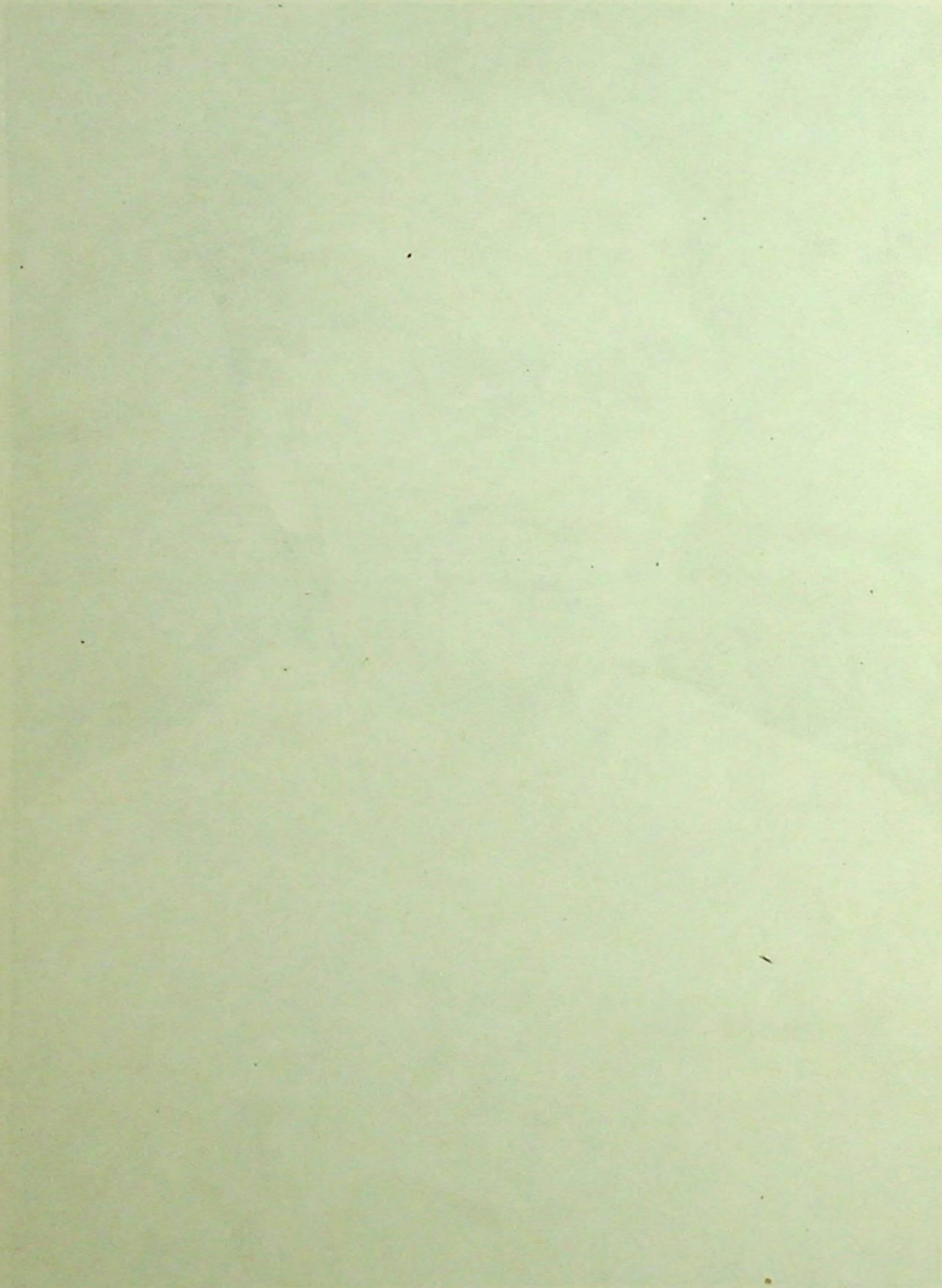
प्राक्कथन

गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त स्नातकों के संक्षिप्त परिचय को ग्रन्थ का आकार देना व्यावहारिक उपयोग की दृष्टि से ही उपादेय नहीं, वैचारिक दृष्टि से भी उपयोगी है।

गुरुकुल के स्नातकों का व्यक्तित्व अन्य विश्वविद्यालयों के स्नातकों से कुछ-न-कुछ भिन्न अवश्य होता है। इस भिन्नता के कई कारण हैं। एक कारण तो यह है कि अनेक विसंगतियों और विषमताओं से भरे संसार से अलग रह कर उन्हें एक साथ मां-प्रकृति की एक ही गोद में पलने का अवसर मिलता है।

पुण्यसलिला भागीरथी के तट पर हिमालय की सघन वन-वीथियों के बीच रहते हुए गुरुकुल के विद्यार्थी सांसारिक छल-छद्म भरे वातावरण से दूर प्रकृति के सान्निध्य में रहते हुए विद्याभ्यास करते हैं। उस वातावरण का जो प्रभाव उनके हृदय में अंकित हो जाता है, उसके कारण उनके स्वभाव में स्वतन्त्र चिन्तन, निर्भीकता, साहस और मन-वचन-कर्म से सत्य की ही साधना करने की प्रवृत्ति के गुणों का विकास होना स्वाभाविक हो जाता है।

जीविकोपार्जन करना तो सभी के लिये अनिवार्य होता है, किन्तु धन की अमिट तृष्णा का रोग गुरुकुल के स्नातकों को नहीं सताता। अन्याय के आगे मस्तक झुकाने की व्यावहारिक दक्षता भी उनमें नहीं होती। अवसरवादी होने की चतुराई से वे सर्वथा अनभिज्ञ होते हैं। यत्न करने पर भी वे इस खेल के खिलाड़ी नहीं बन पाते।

सरकारी नौकरियों के द्वार उनके लिए बन्द रहते हैं। व्यापारिक दावपेंच का उन्हें रत्ती भर ज्ञान नहीं होता। केवल कठिन श्रम और सचाई के सहारे उन्हें संसारी संघर्षों से जूझना पड़ता है। ऐसी कठिनाई में उनका तपस्यामय कठोर जीवन काम आता है। तभी विषम से विषम परिस्थिति में भी वे डगमगाते नहीं। स्वावलंबी बनकर अपनी छोटी-सी नाव पर भवसागर पार करने का साहस कर बैठते हैं।

पिछले ७५ वर्ष साक्षी हैं कि गुरुकुल के स्नातकों ने बड़े-बड़ तूफानों को पार किया है और राष्ट्रीय जीवन के अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान किया है। सराहनीय बात यह है कि इस सफलता पर उन्होंने गर्व नहीं किया। विन-म्रता उनके स्वभाव का सहज गुण बन जाता है। स्वभाव से ही वे संसारी मोहमाया से कुछ विरक्त रहते हैं। यह विरक्ति उन्हें अपने आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द से विरासत में मिली है। अलिप्तता उनकी प्रकृति का अंग बन जाती है। अन्य लोग जीवन के सन्ध्या-काल में अरण्यवासी बन जाते हैं, अध्यात्म का सहारा लेते हैं। कुल-माता की गोद में पलने वाले बालक तो जीवन के शैशव से ही आरण्यक हो जाते हैं। यह अरण्य-जीवन उनके स्वभाव में अनासक्ति के ऐसे बीज बो देता है कि अनेक बार उनका गृहस्थ जीवन भी उन्हें पूर्णतः विषयासक्त नहीं बना पाता।

ऐसे असामान्य नागरिक वर्ग का अलग से एक परिचय-ग्रन्थ होना ही चाहिये था। प्रस्तुत ग्रन्थ ने इस अभाव की पूर्ति की है।

सत्यकाम विद्यालंकार
अध्यक्ष, अ० भा० स्नातक मण्डल

आमुख

देश-विदेश के साहित्यकारों, नेताओं तथा विद्वानों आदि का जीवन-परिचय देने के लिए 'साहित्यकार कोष', 'हिन्दी सेवी संसार', 'जीवनी विश्वकोष', 'नेशनल बायोग्राफीज़' आदि अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं, परन्तु किसी विश्व विद्यालय-विशेष के सभी स्नातकों का जीवन-परिचय एक ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित करने की परम्परा अभी तक कहीं प्रचलित नहीं है। इस दिशा में सन् १९५० में, अपनी स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने पहल की और उस समय तक के अपने सभी स्नातकों का परिचय "गुरुकुल के स्नातक" नामक पुस्तक द्वारा प्रस्तुत किया। इस पुस्तक की लोकप्रियता एवं उपयोगिता को देखकर इस विश्वविद्यालय के स्नातकों के संगठन अखिल भारतीय स्नातक मंडल की वार्षिक बैठकों में कई वर्षों से यह विचार किया जा रहा था कि इस पुस्तक का नया संस्करण प्रकाशित किया जाये। सन् १९६८ तथा १९६९ में स्नातक मंडल के तत्कालीन अधिकारियों ने इसके लिए प्रयत्न भी किए, किन्तु कतिपय अपरिहार्य कारणों से उस समय यह कार्य सम्पन्न नहीं हो सका।

अप्रैल १९७६ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर हुई अखिल भारतीय स्नातक मंडल की बैठक में यह निर्णय किया गया कि गुरुकुल के संस्थापक कुलपिता प्रातःस्मरणीय स्वामी श्रद्धानन्द जी की बलिदान-अर्ध-शताब्दी के अवसर पर इस ग्रन्थ को प्रकाशित कर दिया जाये।

इस ग्रन्थ के लिए प्रामाणिक सामग्री संकलित करने के उद्देश्य से प्रत्येक स्नातक-बन्धु को अपना विशद परिचय तथा चित्र भेजने की प्रार्थना के साथ एक परिपत्र भेजा गया। पहली बार में हमें कुछ ही बन्धुओं के उत्तर प्राप्त हुए। हम सभी स्नातक-बन्धुओं के परिचय प्राप्त करना चाहते थे, ताकि यह ग्रन्थ हमारी इच्छा के अनुकूल पूर्ण, विशद व सुन्दर बन सके। इसीलिए हमने प्रत्येक बन्धु को कई स्मरण-पत्र भेजे। अन्ततः हमें काफी बड़ी संख्या में परिचय प्राप्त हुए। जो स्नातक-बन्धु पूरी तरह से मौन रहे, या ठीक पता ज्ञात न होने के कारण जिन तक हमारे पत्र न पहुंच सके, या जो बन्धु दुर्भाग्यवश अब हमारे बीच नहीं रहे, उनका भी प्रामाणिक परिचय प्राप्त करने का पूरा प्रयास किया गया। इसके लिए हमने उनके संबंधियों, परिचितों, सहपाठियों आदि से संपर्क किया और इसमें हमें पर्याप्त अंशों तक सफलता भी प्राप्त हुई। कुछ परिचयों के लिए हमें विभिन्न परिचय-कोषों का सहारा लेना पड़ा है। इस समूचे कार्य में इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण 'गुरुकुल के स्नातक' परम सहायक सिद्ध हुआ है।

इस परिचायिका के प्रारम्भ में 'गुरुकुल के स्नातकों का विभिन्न क्षेत्रों में योगदान' शीर्षक के अन्तर्गत स्नातक-बन्धुओं द्वारा राष्ट्र, आर्यसमाज, साहित्य, पत्रकारिता, आयुर्वेद आदि के क्षेत्र में की गई सेवाओं का विशद विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें उस प्रत्येक स्नातक-बन्धु का उल्लेख करने का पूरा प्रयास किया गया है जिसके किसी भी क्षेत्र में योगदान के बारे में सूचनाएं सुलभ थीं।

'स्नातक-परिचय' शीर्षक से प्रारम्भ होने वाले खण्ड में सम्वत् १९६८ से २०३२ तक (सन् १९१२ से १९७६ तक) के सभी स्नातकों के परिचयों का समावेश है। जो परिचय छोटे या अपूर्ण हैं, वे सामग्री के अभाव में ऐसे बन्धुओं के हैं जिनसे हमें अपने पत्रों का उत्तर पाने का सौभाग्य नहीं मिला, या जिनके बारे में किसी अन्य स्रोत से भी कोई सूचना प्राप्त नहीं हो सकी है।

प्रत्येक परिचय में सम्बद्ध व्यक्ति की जन्मतिथि, जन्मस्थान, पिता का नाम, स्नातक होने के बाद प्राप्त उपाधियों, जीवन के विविध कार्यक्षेत्रों, प्रकाशित/अप्रकाशित रचनाओं, विदेश यात्राओं आदि का उल्लेख है। किसी उपाधि-विशेष

के लिए किए गए अनुसंधान के विषय व शीर्षक का उल्लेख उपाधि के सामने तथा रचना-विशेष पर प्राप्त पुरस्कार का विवरण रचना के नाम के आगे कोष्ठक में दे दिया गया है। विशेष विवरण के अन्तर्गत विविध क्षेत्रों में किए गए योगदानों, विशेष अभिरुचियों एवं प्रवृत्तियों तथा प्राप्त सम्मानों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है। परिचय के अन्त में वर्तमान पता भी दे दिया गया है।

'कन्या गुरुकुल और उसकी स्नातिकाएं' के अंतर्गत प्रारम्भ में कन्या गुरुकुल देहरादून की स्थापना एवं विकास और उसकी स्नातिकाओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए योगदान का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। तदनन्तर सम्वत् १६८८ से २०३२ तक (सन् १६३१ से १६७६ तक) की स्नातिकाओं का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। हमें खेद है कि कई-कई बार स्मरण-पत्र भेजने के बावजूद बहुत कम स्नातिकाओं के परिचय प्राप्त हो सके हैं। यही कारण है कि विवशता में हमें अधिकांश स्नातिकाओं के पते देकर ही संतोष कर लेना पड़ा है।

अंत में पाठकों की सुविधा के लिए एक नामानुक्रमणिका दे दी गई है, जिसमें वर्णानुक्रम से स्नातक/स्नातिका का नाम, स्नातक होने का सन् तथा उस पृष्ठ की संख्या अंकित है जिस पर उसका परिचय दिया गया है।

अन्त में हम अपने उन सभी स्नातक-बन्धुओं के आभारी हैं जिन्होंने इस कार्य में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया। अनेक स्नातकेतर बन्धुओं ने भी इसे तैयार करने में सक्रिय सहयोग प्रदान किया है। श्री प्रमोद जोशी, श्री राकेशचन्द्र, और श्री रजनीकान्त ने इस कार्य में बहुत हाथ बटाया है। पाण्डुलिपि तैयार करने में सर्वश्री दिनेशचन्द्र, उमेशचन्द्र तथा रोहिताश्वसिंह ने निःस्वार्थ भाव से सहयोग प्रदान किया, इसके लिए उनका हार्दिक धन्यवाद है।

—सम्पादक-द्वय

संकेत-सूची

स्व०	स्वर्गीय
ज०	जन्मतिथि व जन्मस्थान
पि०	पिता
शि०	शिक्षा (प्राप्त उपाधियां)
कार्य	कार्यक्षेत्र (गत व वर्तमान)
र०	रचनाएं
वि० या०	विदेश यात्रा
वि०	विशेष विवरण
प०	पता
उ० प्र०	उत्तर प्रदेश
अनु०	अनुवाद

विषय-सूची

गुरुकुल के स्नातकों का विविध क्षेत्रों में योगदान

जिस समय भारत पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, सर्वत्र लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली का बोलबाला था, सभी महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जा रही थी, यूरोपीय संस्कृति और जीवन-पद्धति को प्रतिष्ठा का पद प्रदान किया जा रहा था और इन विश्वविद्यालयों से दीक्षित स्नातकों में अपने देश, जाति, राष्ट्र, समाज व धर्म के प्रति अनादर की भावना उत्पन्न की जा रही थी, ऐसे समय में जगद्वन्दनीय महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मूर्त रूप देने के लिए कुलपिता अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने सन् १६०० ई० में गुरुकुल की स्थापना की। उनके सम्मुख इस संस्था की स्थापना का प्रधान उद्देश्य जहाँ एक ओर अंग्रेजों द्वारा प्रचलित शिक्षा प्रणाली के विरोध में मातृभाषा द्वारा शिक्षा देने वाली एक नयी प्रणाली का सूत्रपात करना था, वहाँ दूसरी ओर गुरुकुलीय शिक्षा के माध्यम से ऐसे नागरिक तैयार करना भी था जो स्वतन्त्रता, मानसिक स्वाधीनता एवं राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत, चरित्रवान् तथा वैदिक धर्म, आर्य संस्कृति एवं भारतीय सभ्यता के रंग में रंगे हुए हों और जिनमें भारतीय संस्कृति के पुनरुद्धार एवं लोकसेवा की तड़प हो। इन्हीं आदर्शों को दृष्टि में रखकर गुरुकुल का संचालन किया गया और इस कार्य में काफी हद तक सफलता भी मिली।

आज गुरुकुल की स्थापना को लगभग ७६ वर्ष पूरे हो गए हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा रोपे गये नन्हें से पौधे ने विशालकाय वृक्ष का रूप धारण कर लिया है। इस अवधि में गुरुकुल ने देश, जाति व समाज को अपने आदर्शों के अनुरूप ऐसे लोक सेवक नागरिक प्रदान किये हैं जिन्होंने अपने रचनात्मक कार्यों द्वारा राष्ट्रीय नव-निर्माण, सामाजिक, धार्मिक व साहित्यिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया है और 'कुलमाता' के गौरव को उत्तरोत्तर बढ़ाया है।

यहाँ हम गुरुकुल के स्नातकों द्वारा विविध क्षेत्रों में की गई सेवाओं का सिंहावलोकन करेंगे।

राष्ट्र सेवा एवं बलिदान

वर्तमान शताब्दी में सरकारी नियंत्रण से स्वतन्त्र रहते हुए सही अर्थों में राष्ट्रीय शिक्षा देने वाली सर्वप्रथम क्रांतिकारी संस्था गुरुकुल कांगड़ी ही थी। इसके संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वयं एक देश भक्त राष्ट्रीय नेता थे, उनके मन में देश को स्वतन्त्र कराने की उत्कट अभिलाषा थी और इसके लिए जहाँ उन्होंने अपने जीवन की चिन्ता किए बिना वीरतापूर्वक असहयोग आन्दोलनों और सत्याग्रहों में भाग लिया, वहां गुरुकुल के वातावरण को भी विशुद्ध रूप से राष्ट्रीय बनाये रखने का प्रयास किया। यही कारण है कि ब्रिटिश सरकार चिरकाल तक इसे राजद्रोही एवं भयंकर खतरे का मूल मानती रही और इसके विषय में ब्रिटिश मजदूर दल के नेता रैमजे मैकडानल्ड ने निम्न भाव प्रकट किए थे, जिनमें एक ओर गुरुकुल की उत्कृष्टता को स्वीकार किया गया है और दूसरी ओर सरकारी मनोवृत्ति का स्पष्ट बोध कराया गया है "भारत के राजा-महाराजाओं के विषय में जिन्होंने थोड़ा सा भी पढ़ा है, उन्होंने गुरुकुल का नाम अवश्य सुना होगा। यहां आर्यसमाजियों के बालक शिक्षा ग्रहण करते हैं। आर्यों की भावना और सिद्धान्तों का यह अत्यन्त उत्कृष्ट मूर्त रूप है। इस उन्नतिशील धार्मिक संस्था के विषय में जितने भी संदेह किए जाते हैं वे सब इस गुरुकुल पर लाद दिए गए हैं। इसलिए इस पर शासन की तिरछी नजर है।"

यह सब होते हुए भी गुरुकुल राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत नागरिकों को उत्पन्न करने के अपने लक्ष्य से पल भर के लिए भी नहीं डिगा। यहां के छात्रों और दीक्षित स्नातकों ने राष्ट्रीय क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है और कुछ ने मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की भी आहुति दे दी। जब कभी महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह संग्राम छिड़ा और नवयुवकों का आह्वान किया गया तो गुरुकुल के छात्र व स्नातक अग्रणी रहे।

१९३० के सत्याग्रह संग्राम में जब त्याग, तपस्या और बलिदान के लिए नवयुवकों की पुकार हुई तो श्री सर्वमित्र और सत्यभूषण ने देश के लिए हंसते-हंसते अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

१९३० के नमक सत्याग्रह, १९३०, ३२ के अवज्ञा आंदोलनों तथा १९४२ के राष्ट्रीय आंदोलनों में भी गुरुकुल के छात्र व स्नातक किसी से पीछे नहीं रहे। सन् १९४२ में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की ९ वीं और १० वीं दोनों कक्षाओं ने दिल्ली में चार-चार और पांच-पांच के समूह में धरना दिया, गिरफ्तार हुए और बोस्टन जेल में रखे गये। गुरुकुल कांगड़ी के महाविद्यालय के भी अनेक छात्रों ने ४२ के आंदोलन में भाग लिया और सहारनपुर जेल में रखे गए। सर्वश्री देवशर्मा विद्यालंकार, चन्द्रमणि विद्यालंकार, भीमसेन विद्यालंकार, कृष्णस्वरूप विद्यालंकार, दीनदयालु शास्त्री, धर्मवीर वेदालंकार, भूदेव विद्यालंकार, सत्यव्रत सिद्धांतालंकार, सत्यदेव विद्यालंकार, ईश्वरदत्त मेधार्थी, जयचन्द्र विद्यालंकार, केशवदेव वेदालंकार, गौतमदेव सिद्धान्तालंकार, सुरेन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार, पूर्णचन्द्र विद्यालंकार, वासुदेव विद्यालंकार, रामेश्वर सिद्धांतालंकार, सुभाष वेदालंकार, अमरनाथ विद्यालंकार, हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार, सत्यदेव विद्यालंकार, सोमप्रकाश आयुर्वेदालंकार, अवनिमोहन विद्यालंकार, धर्मेन्द्रनाथ वेदालंकार, वेदभूषण वेदालंकार, राजेश्वर वेदालंकार, हरिदत्त आयुर्वेदालंकार, वेदप्रकाश आयुर्वेदालंकार, जगदीश वेदालंकार, भीमसेन वेदालंकार, मेधाव्रत आयुर्वेदालंकार, चन्द्रगुप्त आयुर्वेदालंकार, गुरुदत्त आयुर्वेदालंकार, ब्रह्मदत्त विद्यालंकार, विद्यासागर विद्यालंकार, जयकृष्ण विद्यालंकार, आदि ने इन आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया और जेल यात्रा भी की। इनमें से कुछ तो उस समय तक स्नातक बन चुके थे और कुछ छात्र जीवन बिता रहे थे। यदि प्रतिशत की दृष्टि से गणना की जाए तो बहुत ही कम शिक्षा संस्थाएं ऐसी होंगी, जिनके छात्रों व स्नातकों को गुरुकुल के छात्रों व स्नातकों की भांति बहुत बड़ी संख्या में जेलयात्रा का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो।

गुरुकुल के प्रथम स्नातक श्री हरिचन्द्र विद्यालंकार प्रारंभ से ही क्रांतिकारी विचारधारा के थे। आपने सुप्रसिद्ध क्रांतिकारियों के साथ सक्रिय रूप से कार्य किया और सन् १९१४ में राजा महेन्द्रप्रताप के साथ विदेश चले गए और वहीं आपका निधन हो गया।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति को तो राष्ट्रप्रेम की भावना अपने पिता महात्मा मुंशीराम से मानो विरासत में ही मिली थी। बाल्यावस्था में ही उनमें राष्ट्रीय विचारों का सूत्रपात हो गया था और मन ही मन उन्होंने लोकमान्य तिलक को अपना राजनीतिक गुरु मान लिया था। उनके जीवन का ध्येय था समाज व राष्ट्र की सेवा। उनमें भारतीयता व राष्ट्रीयता कूट कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने 'विजय', एवं 'अर्जुन' के माध्यम से अपनी ओजस्विनी लेखनी द्वारा सत्याग्रह व राष्ट्रीयता का संदेश जन-जन तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया, जिस कारण वे राजद्रोही के रूप में प्रसिद्ध हो गए और ब्रिटिश सरकार की आंखों में खटकने लगे। १९२७ और १९३०, १९३२ में इसी कारण उन्हें जेल यात्राएं करनी पड़ीं, परन्तु वे जेल के कष्टों को सहकर भी अपने ध्येय पर अडिग रहे और जीवन पर्यन्त देश, धर्म और जाति की सेवा में लगे रहे। १९५२ में राष्ट्रपति ने उन्हें सच्चे राष्ट्र सेवक और विद्वान् के रूप में राज्यसभा का सदस्य मनोनीत करके सम्मानित किया।

श्री देवशर्मा विद्यालंकार (आचार्य अभयदेव) महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों के लिए अनवरत प्रयत्नशील रहते थे और उन्होंने अपने पैतृक स्थान चरथावल में असहयोग आंदोलन का अच्छा कार्य किया।

श्री पं० कृष्णस्वरूप विद्यालंकार ने बदायूं जिले में महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्य किया है। वे कई वर्षों तक इस्लाम नगर में कांग्रेस के प्रधान व मंत्री तथा टाउन एरिया कमेटी के अध्यक्ष रहे और स्वतन्त्रता संग्राम के सिलसिले में दो बार जेल भी गए।"

श्री केशवचन्द्रसिंह आयुर्वेदालंकार शाहजहांपुर जिले के प्रभावशाली एवं लोकप्रिय राष्ट्रीय नेता हैं और कांग्रेस के प्रतिष्ठित कार्यकर्ता हैं। उन्होंने अपना जीवन कांग्रेस के कार्यों के लिए ही समर्पित कर दिया है। वे वर्षों तक विधान सभा के सदस्य भी चुने जाते रहे।

सहारनपुर जिले की राष्ट्रीय जागृति का प्रधान श्रेय गुरुकुल को है। १९३० में रुड़की में हुए नमक-सत्याग्रह आंदोलन में गुरुकुल के छात्रों व स्नातकों ने ही बहुत बड़ी संख्या में भाग लिया था। श्री पूर्णचन्द्र विद्यालंकार सहारनपुर जिले के त्यागी, तपस्वी एवं अग्रणी राष्ट्रीय नेता हैं। आपने ग्रामोद्धार और महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों में विशेष योगदान किया। कुछ वर्ष जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधान तथा उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य भी रहे। उत्तर प्रदेश की जनजागृति का बहुत बड़ा श्रेय आपको भी दिया जाता है। इस जिले के विकास और प्रतिष्ठा को बढ़ाने में श्री दीनदयालु शास्त्री का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। वे लगातार कई वर्षों तक उत्तरप्रदेश की धारासभा, विधानसभा व विधानपरिषद् के सदस्य रहे और श्री चन्द्रभानु गुप्त के मंत्रीमंडल में उपशिक्षामन्त्री चुने गए। राज्य की राजनीति में उनका प्रमुख स्थान था।

श्री दीनानाथ सिद्धान्तालंकार ने दिल्ली में गुप्तरूप से शहीद शिरोमणि भगतसिंह के साथ क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लिया। १९३० में उन्हें कलकत्ता में सत्याग्रह आंदोलन के सिलसिले में तथा १९३८ में कानपुर में नमक कानून का उल्लंघन करते हुए श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के साथ जेल जाना पड़ा।

श्री सत्यदेव विद्यालंकार गांधी जी और जमनालाल बजाज के सान्निध्य में वर्धा आश्रम में रहे उन्होंने और १९२३ में राष्ट्रध्वज आन्दोलन में भाग लेकर पहली बार राष्ट्रीय संघर्ष में प्रवेश किया। परिणामतः अनेक बार जेलयात्रा करनी पड़ी।

श्री सत्यपाल सिद्धान्तालंकार ने महान् क्रांतिकारी भगतसिंह व शहीद चन्द्रशेखर के निकट संपर्क में आकर उनके क्रान्तिकारी कार्यों में हाथ बटाया। लाहौर में सांडर्स हत्याकांड व दिल्ली एसेम्बली में हुए बम विस्फोट के सिलसिले में इनकी गिरफ्तारी का वारंट भी जारी हुआ था।

श्री धर्मवीर वेदालंकार भी स्वतंत्रता-सेनानियों में अग्रणी रहे हैं। वे पूज्य बापू की प्रबल प्रेरणा पाकर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े और कई सत्याग्रहों में भाग लेकर कारावास-जीवन के अनुभव प्राप्त किए। इनकी कार्यशैली से प्रभावित होकर १९३७ में कांग्रेसी सरकार ने इन्हें रांची नगरपालिका का आयुक्त मनोनीत किया।

बिहार की राजनीति में भी गुरुकुल के स्नातकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार ने बिहार कांग्रेस कमेटी और दानापुर कांग्रेस कमेटी के प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में अपने रचनात्मक कार्यों से प्रदेश की अभूतपूर्व सेवा की। श्री विद्याकिशोर विद्यालंकार बिहार के सक्रिय राजनीतिक कार्यकर्ता हैं। इन्होंने अपना सारा जीवन कांग्रेस के रचनात्मक कार्यों द्वारा इस प्रदेश के बिकास के लिए समर्पित कर दिया है। १९६२-६७ में ये बिहार विधान सभा के सदस्य चुने गए। इस अवधि में बिहार सरकार ने इन्हें विभिन्न सलाहकार मंडलों व समितियों में मनोनीत करके इनकी योग्यता व क्रियाशीलता का पूरा-पूरा लाभ उठाया।

पटना निवासी श्री सुरेन्द्रनाथ विद्यालंकार भी सच्चे राष्ट्र सेवक हैं। इनका शहीद भगतसिंह के कार्यकलापों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। इन्होंने उनके कार्यों में सक्रिय सहयोग दिया और उनके मुकदमें के लिए हजारों रुपए एकत्र करके कलकत्ता भेजे। साथ ही इन्होंने असहयोग आंदोलन में सम्मिलित होने के कारण सपत्नीक जेलयात्रा भी की।

पंजाब व हरियाणा का राजनीति-क्षेत्र भी स्नातकों के योगदान से अछूता नहीं रहा। श्री रामेश्वर सिद्धांतालंकार ने गांधी सेवा संघ और कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में कई बार राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लिया और जेल यात्रा की।

श्री अमरनाथ विद्यालंकार प्रख्यात राष्ट्रीय नेता हैं। ये १९४१ में किसान आंदोलन और १९४२ में भारत छोड़ो आंदोलन, के सिलसिले में कई वर्षों तक जेल में रहे। ये स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद पंजाब विधान सभा के सदस्य बने। नया संविधान बनने पर १९५२ में लोकसभा के, १९५७ में विधान सभा तथा १९६२ में पुनः लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। ये १९५६ में पंजाब के श्रम व स्वास्थ्य मंत्री और १९५७ में श्रम, शिक्षा व भाषामंत्री रहे। इस समय ये लोकसभा के सदस्य के रूप में अपने स्वतन्त्र विचारों और क्रियात्मक कार्यों द्वारा देश की सेवा में व्यस्त हैं। श्री समरसिंह वेदालंकार तथा श्री जगदीश वेदालंकार ने भी पंजाब विधान सभा के सदस्य तथा पंजाब कांग्रेस कमेटी के प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में काफी ख्याति प्राप्त की।

आंध्रप्रदेश में स्व० विनायकराव विद्यालंकार की सेवाओं को आज भी आदर के साथ स्मरण किया जाता है। ये कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता थे। अपनी राष्ट्रीय सेवाओं के कारण १९५१ में विधान सभा के सदस्य और प्रदेश के वित्तमन्त्री तथा दूसरे चुनाव में लोकसभा के सदस्य चुने गए। इन पदों पर कार्य करते हुए अपनी योग्यता एवं दूरदर्शिता के कारण ये काफी लोकप्रिय हुए। श्री शंकरदेव वेदालंकार भी इसी प्रदेश के होनहार नेता हैं। ये १९५२-५६ में हैदराबाद राज्य के समाजसेवा मंत्री और १९५७-६२ में लोक सभा के सदस्य रहे और आज भी लोकसभा के सदस्य के रूप में देश की सेवा कर रहे हैं।

अनेक क्रांतिकारियों को भी गुरुकुल में प्रश्रय मिलता रहा है। श्रीपाद् दामोदर सातवलेकर भी इनमें से एक हैं। आपको 'पृथ्वीसूक्त' पुस्तिका लिखने पर गुरुकुल से बेड़ियां पहनाकर गिरफ्तार किया गया था।

आर्यसमाज की सेवा

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना जिन आदर्शों को लेकर हुई थी उनमें से एक आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए उच्चकोटि के प्रचारक, उपदेशक एवं कार्यकर्ता तैयार करना भी था। गुरुकुल के स्नातकों ने इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

गुरुकुल की स्थापना आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से की गई थी, इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि गुरुकुल के स्नातकों से प्रतिनिधि सभा के कार्यों में भाग लेने तथा पंजाब प्रांत में सामाजिक व धार्मिक जागृति उत्पन्न करने की आशा की जाए। इस आशा के अनुरूप गुरुकुल के विभिन्न स्नातकों ने अपने-अपने ढंग से इस लक्ष्य की प्राप्ति में अपना सहयोग दिया।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता थे। आप वर्षों तक आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री व प्रधान आदि पदों पर बड़ी योग्यता से कार्य करते रहे। उन्होंने समय-समय पर आर्य जगत् का सही नेतृत्व व मार्गदर्शन किया। वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता के रूप में कार्य करते हुए संस्था को प्रगति पथ पर अग्रसर करके आर्यसमाज की अभूतपूर्व सेवा की। आपने आर्य महासम्मेलनों, आर्यरक्षा समिति, सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति आदि का संचालन बड़ी सफलता के साथ किया।

श्री युधिष्ठिर विद्यालंकार (श्री स्वामी व्रतानन्द जी) ऋषि दयानन्द के परमभक्त हैं। आपने आजन्म ब्रह्मचारी रहते हुए आर्यसमाज की सेवा का व्रत लिया है। प्रारम्भ में आप कुछ समय आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक रहे, फिर बाद में आपने चित्तौड़ में गुरुकुल की स्थापना कर महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्न को साकार किया। आजकल आप उसी का संचालन कर रहे हैं और वहां आर्ष पद्धति से शिक्षा-दीक्षा दे रहे हैं।

स्व० श्री बुद्धदेव विद्यालंकार विद्यामार्तण्ड न केवल प्रतिनिधि सभा में महोपदेशक थे, बल्कि कई वर्ष तक सभा के प्रधान के रूप में भी सराहनीय कार्य किया। उत्तर व दक्षिण भारत में सर्वत्र वे शास्त्रार्थ महारथी के रूप में विख्यात हुए। कुछ वर्ष तक गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य भी रहे।

स्व० पं० यशपाल जी सिद्धान्तालंकार ने पंजाब प्रतिनिधि सभा के वेद-प्रचार विभाग के अधिष्ठाता और महोपदेशक के रूप में प्रशंसनीय कार्य किया है। आपने आर्य धर्म प्रचार के लिए आसाम व बर्मा में भी कार्य किया। इसके साथ कन्या गुरुकुल देहरादून के प्रवन्ध में भी आपका पूर्ण सहयोग रहता था।

विद्यामार्तण्ड श्री धर्मदेव सिद्धान्तालंकार (संप्रति स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती) ने ११ वर्षों तक सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के सहायक मंत्री, धर्मार्य सभा के मंत्री तथा प्रधान के रूप में उल्लेखनीय सेवा की। आपने दक्षिण भारत में १४ आर्यसमाजों की स्थापना की तथा हिन्दी व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का कार्य बड़ी सफलता के साथ संपन्न किया। कई ऐसे अवसर भी आए जब आपको दक्षिण के संस्कृत-पंडितों के साथ शास्त्रार्थ करना पड़ा, ऐसे समय में आपका संस्कृत व दक्षिणी भाषाओं का पाण्डित्य बहुत ही सहायक सिद्ध हुआ। इस समय आप दिन-रात आर्यसमाज व वैदिक धर्म की अभिवृद्धि के लिए ही कार्यरत हैं। विश्व वेद परिषद् के प्रधान के रूप में आपकी सेवाएं उल्लेखनीय हैं। इस परिषद् के माध्यम से आप वेद का संदेश जन-जन तक पहुंचाने के लिए कटिबद्ध हैं।

श्री प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के ओजस्वी महोपदेशक के रूप में ही नहीं, बल्कि गुरुकुल विश्वविद्यालय के आचार्य एवं कुलपति तथा दयानन्द उपदेशक विद्यालय के आचार्य के रूप में भी अच्छी ख्याति प्राप्त की है। वैदिक सिद्धान्तों पर आपके भाषण बड़े सुलझे हुए होते हैं। मधुरभाषी एवं प्रभावशाली वक्ता होने के कारण आपके भाषण आर्यजगत् में बहुत पसन्द किए जाते हैं।

स्व० श्री भीमसेन विद्यालंकार ने अनेक वर्षों तक पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री के रूप में अभिनन्दनीय कार्य किया। स्नातक होने के बाद उन्होंने १ वर्ष मैसूर में भी वैदिक धर्म के प्रचार और दलितोद्धार आदि का कार्य किया। आप वर्षों तक कोल्हापुर में वैदिक धर्म का प्रचार बड़ी योग्यता से करते रहे हैं।

श्री धर्मवीर वेदालंकार ने ५ वर्ष तक आर्यसमाज शिमला के पुरोहित के रूप में और उसके बाद कई वर्षों तक अखिल भारतीय श्रद्धानन्द ट्रस्ट के संयोजक मंत्री के रूप में दिल्ली व बिहार के रांची आदि स्थानों में दलित वर्ग तथा भीलों के उद्धार का अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किया।

श्री समरसिंह वेदालंकार लगभग १७ वर्ष तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में महोपदेशक रहे और काफी समय तक हरियाणा वेद प्रचार मंडल के अध्यक्ष के रूप में कार्य करते रहे। आपकी गणना सभा के कुशल एवं प्रसिद्ध उपदेशकों में की जाती है। आपने दो वर्ष सभा के पत्र 'बलिदान' का भी संपादन किया।

श्री नारायणदत्त विद्यालंकार पानीपत के कुशल वैद्य होने के साथ-साथ आर्यसमाज के प्रभावशाली कार्यकर्ता भी हैं।

सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० हरिशरण सिद्धांतालंकार आर्यसंस्कृति के त्यागी एवं तपस्वी प्रचारक हैं। दिल्ली की आर्य जनता आपके व्याख्यानों और वेदकथाओं को बहुत पसन्द करती है।

स्व० श्री गुरुदत्त सिद्धांतालंकार वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और आर्य प्रादेशिक सभा के अधीन प्रचार कार्य करते रहे। स्व० चन्द्रगुप्त वेदालंकार कुछ समय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से उपदेशक रहे। आपके ओजस्वी भाषण जनता को बहुत पसन्द थे।

श्री दीनानाथ सिद्धांतालंकार सुयोग्य एवं ख्यातिप्राप्त आर्योपदेशक हैं। आपने सामाजिक, धार्मिक व समाज-सुधार सम्बन्धी प्रवृत्तियों में पूर्ण सहयोग दिया है। शुद्धि एवं विधवा विवाह पर सार्वजनिक भाषण देने के कारण आपने विरोधियों का लाठी-प्रहार भी सहा।

श्री पं० सुखदेव दर्शनवाचस्पति आर्य जगत् के जाने-माने वक्ता एवं प्रचारक हैं। आप न केवल पंजाब व उत्तर प्रदेश में ही, बल्कि बंगाल, महाराष्ट्र, बर्मा आदि में वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे हैं। आपके ओजपूर्ण व्याख्यान इतने अधिक पसन्द किए जाते हैं कि दूर-दूर की आर्यसमाजें आपको आग्रहपूर्वक आमंत्रित करती हैं। आपने गुरुकुल कांगड़ी में भी वर्षों तक शिक्षाध्यक्ष, उपाचार्य आदि महत्वपूर्ण पदों पर सफलतापूर्वक कार्य किया है।

डॉ० रामनाथ वेदालंकार जहां एक ओर आर्यजगत् में अपने वेद विषयक गवेषणापूर्ण एवं ज्ञानवर्धक भाषणों के लिए प्रख्यात हैं, वहां दूसरी ओर आपने धनोपार्जन की चिन्ता न करके छात्रकाल से सेवाकाल की समाप्ति तक का सारा जीवन गुरुकुल की सेवा में ही व्यतीत कर दिया। आप गुरुकुल में वेदोपाध्याय, संस्कृत विभागाध्यक्ष, आचार्य आदि के पदों पर कुशलतापूर्वक कार्य करते रहे। अब भी आप पंजाब विश्वविद्यालय की महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ के अध्यक्ष के रूप में वेद-अनुसंधान का कार्य करते हुए आर्यसमाज व वैदिक साहित्य की ही सेवा में लगे हुए हैं।

श्री क्षितीश वेदालंकार ने १९४२ में सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में मध्यप्रांत बरार में तथा १९४७ में आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के अधीन प्रचारक के रूप में कार्य करते हुए वेद का संदेश जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान किया है। आपके भाषणों में इतनी आकर्षण शक्ति है कि उसका समाचार पाते ही दूर-दूर से लोग आकर उनका रसास्वादन करते हैं। आपने हैदराबाद आर्य-सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व करके छः मास जेलयात्रा भी की।

डॉ० हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार, श्री मनोहर विद्यालंकार, श्री सत्यदेव विद्यालंकार आदि स्नातकों ने आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए आर्यसमाज व गुरुकुल की उन्नति में अपना अमूल्य योगदान किया और आज भी उसकी अंतरंग सभा आदि के सदस्य एवं सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में कार्य कर रहे हैं। डॉ० हरिप्रकाश कई वर्षों तक सभा के मंत्री तथा श्री मनोहर विद्यालंकार उपप्रधान रहे। श्री सत्यभूषण वेदालंकार, श्री रामप्रसाद वेदालंकार, श्री विश्ववर्धन वेदालंकार, श्री प्रकाशचन्द्र वेदालंकार आदि स्नातक आर्यसमाज के कार्यों में सक्रिय योगदान कर रहे हैं। बहुत से स्नातक ऐसे भी हैं जो दिल्ली व पंजाब-हरियाणा के विभिन्न स्थानों पर उच्च अध्ययन करने के साथ-साथ भाषणों, पौरोहित्य आदि कार्यों के माध्यम से आर्यसमाज की सेवा कर रहे हैं।

डॉ० अनन्तानन्द आयुर्वेदालंकार, श्री चन्द्रगुप्त वेदालंकार, श्री धीरेन्द्र विद्यालंकार, श्री उदयवीर 'विराज' वेदालंकार, श्री सतीश विद्यालंकार आदि स्नातकों ने हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में सक्रिय भाग लेकर जेलयात्रा की।

उत्तर प्रदेश आर्यप्रतिनिधि सभा को सुसंगठित और प्रबल बनाने में श्री पं० धर्मपाल विद्यालंकार का योगदान अविस्मरणीय है। आप कई वर्ष तक सभा के प्रधान कार्यालय में संचालक व सहायक मंत्री के रूप में कार्य करते रहे। आपने 'आर्यमित्र' के अवैतनिक संपादक के पद पर भी कार्य किया। आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आपने अभी हाल ही में हरिद्वार में आर्यसमाज-मंदिर का निर्माण करवाया है। आप अपने नगर बदायूं में भी आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। वर्तमान समय में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की गतिविधियों में डॉ० निरूपण विद्यालंकार (मेरठ) तथा श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार (गोरखपुर) सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं।

दक्षिण भारत में भी गुरुकुल के अनेक सुयोग्य स्नातकों ने वैदिक धर्म प्रचार, समाज-सुधार और राष्ट्रभाषा-प्रसार का प्रशंसनीय कार्य किया है। इनमें श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, पं० केशवदेव सिद्धान्तालंकार, पं० मदनमोहन विद्यासागर वेदालंकार और पं० भीमसेन विद्यालंकार इत्यादि का नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय है। श्री सत्यव्रत जी और पं० देवेश्वर जी ने बंगलौर (मैसूर राज्य) में लगभग ५ वर्ष तक रह कर वैदिक धर्म के प्रचार और राष्ट्रभाषा के प्रसार के अतिरिक्त बंगलौर में दयानन्द ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना की थी। पं० केशवदेव सिद्धान्तालंकार ने आंध्र

प्रदेश और मद्रास में जो धार्मिक व सामाजिक कार्य किया है वह उल्लेखनीय है। आपने आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य बड़ी लगन के साथ किया। आपके सद्प्रयत्नों से तमिलभाषी प्रदेश और आंध्र में १५ आर्यसमाजों की स्थापना हुई।

दक्षिणकेसरी स्व० विनायकराव विद्यालंकार विद्यामार्तण्ड ने हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा के सर्वमान्य नेता और प्रधान के रूप में दक्षिण भारत में धार्मिक जागृति लाने का जो अद्भुत कार्य किया है वह सदा स्मरणीय रहेगा। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की सफलता का अधिकतर श्रेय उन्हीं को है।

पं० मदनमोहन विद्यासागर वेदालंकार अपनी विद्वता और समाजसेवा के कारण हैदराबाद में काफी अधिक लोकप्रिय हैं। आप दक्षिण में सार्वदेशिक सभा की ओर से आर्यसमाज के प्रमुख प्रचारक, ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त तथा ओजस्वी वक्ता है। डॉ० विजयवीर विद्यालंकार भी हैदराबाद में आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। आप स्व० स्वामी सोमानन्द जी (पूर्व श्री नरेन्द्र जी) के पथप्रदर्शन में आर्यसमाज व वैदिक धर्म के लिए सदा प्रयत्नशील रहे हैं।

विदेशों में गुरुकुल के स्नातक और आर्यसमाज

विदेशों में आर्यसमाज के प्रचार कार्य में गुरुकुल कांगड़ी के स्नातकों ने अच्छा योगदान किया है। ये स्नातक कई देशों में जाकर बस गए, जहां उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचारक, पुरोहित और हिन्दी-अध्यापक के रूप में अपनी बहुमूल्य सेवाएं भी दी हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी के निमन्त्रण पर २२ दिसम्बर १९२७ को फीजी की राजधानी सूबा में गुरुकुल के एक पुराने तथा सुयोग्य स्नातक श्री पं० अमीचन्द्र विद्यालंकार ने पदार्पण किया और स्थायी रूप से वहां जाकर बस गए। आपने अपने कार्यों से सारे द्वीप को प्रभावित किया। आपने वहां वैदिक धर्म और शिक्षा का प्रचार इतनी योग्यता से किया कि वहाँ की प्रतिनिधि सभा, जनता व सरकार को भारी संतोष हुआ। आपकी योग्यता से प्रभावित होकर लोग अपने बच्चों को भारत भेजने के लिए अत्यधिक उत्सुक हो गए तथा बहुत से बालक-बालिकाएं गुरुकुल लौटोका में प्रवेश लेने लगे। आप फीजी में शिक्षा प्रचार के जनक माने जाते हैं। उनसे पहले यहाँ हिन्दी तो क्या, अंग्रेजी पाठशालाओं की भी बड़ी कमी थी। पंडित जी ने स्थान-स्थान पर डी० ए० वी० स्कूल, हिन्दी पाठशालाएं और आर्य कन्या पाठशालाएं स्थापित कीं। आज भी फीजी में अधिकतर पाठशालाएं आर्यसमाज द्वारा संचालित होती हैं। इसका श्रेय पंडित जी को ही है। पंडित जी वहाँ की पार्लियामेंट के सदस्य भी रहे तथा आजीवन वहां के यूरोपियनों और फीजीयनों के भी आदर-पात्र बने रहे।

पूर्व अफ्रीका में आर्यसमाज की प्रवृत्ति को चलाने वालों में पं० सत्यपाल सिद्धांतालंकार का नाम सदा श्रद्धा के साथ स्मरण किया जायेगा। पं० सत्यपाल जी सन् १९२१ में स्नातक हुए। ये सन् २२ से २४ तक बर्मा में प्रचार का कार्य करते रहे। सन् १९२७ में वे पूर्व अफ़्रीका गये और वहाँ नैरोबी को केन्द्र बनाकर ३०-३५ वर्षों तक कार्य करते रहे। पूर्व अफ्रीका के परिवारों में निःस्वार्थ भाव से उन्होंने आर्यसमाज का संदेश पहुंचाया। वहाँ हिन्दी तथा संस्कृत के वर्ग चलाये। अमीर और गरीब के भेदभाव के बिना पंडित जी प्रत्येक घर में सेवा करने पहुंच जाते थे। स्थानीय मांसाहारी अफ्रीकी प्रजा के बीच उबले हुए कन्दमूल खाकर वे महीनों तक कार्य करते रहे। किसी भी स्थान में पहुँचने में अपमान की परवाह न करके इस विद्वान् ने प्रजा की निःस्वार्थ सेवा में अपना जीवन खपा दिया। बौद्ध और ईसाई मिशनरियों की सेवा भावनाओं से पंडित जी की सेवा का कार्य किसी भी दृष्टि से कम नहीं आंका जा सकता। सारे पूर्व अफ्रीका की जनता में उन्होंने पिता का सन्मान पाया और गुरुकुल के नाम को उज्जवल किया।

पुराने स्नातकों में पं० ईश्वरदत्त विद्यालंकार ने यूरोप और अफ्रीका के देशों में गुरुकुल की प्रतिष्ठा को बढ़ाया।

आप विदेशों में अधिक दिन नहीं ठहरे, परंतु उनके योग और धनुर्विद्या के अद्भुत प्रदर्शनों की स्मृति आज भी वहां की जनता के मन में अंकित है।

अफ्रीका, कीनिया, युगांडा और टांगानीका के प्रदेशों में जाकर स्थायी रूप से कार्य करने वाले कई स्नातक बंधु हैं, जो वहां पर आर्यसमाज की पाठशालाओं में कार्य करते हुए वैदिक सिद्धांतों और हिन्दी भाषा अध्यापन कर रहे हैं और साथ ही आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में व्याख्यान देने तथा धार्मिक यज्ञ, संस्कार आदि करवाने का कार्य भी करते हैं। इनमें श्री सत्यदेव वेदालंकार भारद्वाज, श्री धर्मेन्द्रनाथ वेदालंकार, श्री देवनाथ विद्यालंकार, स्व० श्री रणधीर वेदालंकार और अमृतपाल वेदालंकार के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। दारेस्सलाम को केन्द्र बनाकर श्री देवनाथ जी वेदालंकार ने ५-७ वर्षों तक अच्छा प्रचार कार्य किया है। इस समय आप व श्री धर्मेन्द्रनाथ वेदालंकार इंगलेंड में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में व्यस्त हैं। आजकल पं० श्यामसुन्दर स्नातक भजनोपदेशक के रूप में अपनी सेवाएं पूर्व अफ्रीका को दे रहे हैं। इसके पूर्व वे सिंगापुर-मलाया में भी प्रचार कार्य कर चुके हैं।

मोजांबिक के लौरेंस माविवंस (मोपुटु)शहर में भारत सेवक समाज के आश्रम में पं० रविशंकर सिद्धांतालंकार और पं० सुमन्तराय विद्यालंकार ने कई वर्षों तक सुन्दर कार्य किया है। वहां के वैरानगर में पं० मतिमान वेदालंकार और रोडेशिया के बुलवायो नगर में पं० हरिदेव वेदालंकार ने वर्षों तक अध्यापन कार्य किया है।

अफ्रीका में भारतीय बस्तियां प्रायः उजड़ गयी हैं। वहां की राष्ट्रीयता की इस लहर में आर्यसमाज को भी भारी क्षति पहुँची है। गुरुकुल के स्नातकों को भी वर्षों की सेवा के बाद अन्य देशों की शरण लेनी पड़ी है।

दक्षिणी अफ्रीका में भारतीयों की बड़ी बस्ती है। यहाँ सात लाख भारतीय है। यहां १९४७ में पं० नरदेव वेदालंकार का आगमन हुआ। आपने दक्षिण अफ्रीका में आर्यसमाज और हिन्दी प्रचार की नींव डाली है। हिन्दी प्रचार के लिए केन्द्रीय संस्था हिन्दी शिक्षा संघ (दक्षिण अफ्रीका) की स्थापना की, जिसके अन्तर्गत ५१ हिन्दी पाठशालाएं चल रही हैं। पंडित जी इस संघ के २५ वर्ष तक सभापति रहे। इनके प्रयासों से हजारों विद्यार्थियों और नर-नारियों ने हिन्दी की परीक्षा उत्तीर्ण की है।। आप आर्यप्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत वेद निकेतन और वैदिक पुरोहित मंडल के प्रधान भी हैं। वहाँ पर आपने २५ वैदिक पुरोहितों को प्रशिक्षित किया है। वेद-निकेतन के द्वारा धार्मिक परीक्षाओं का संचालन किया हैं। देश-विदेशों में इन परीक्षाओं के केन्द्र खुल गये हैं। पंडित जी ने यहाँ धार्मिक प्रचार साहित्य का निर्माण भी किया है।

दक्षिणी अफ्रीका में १९३५ से १९४५ तक श्री सुधीरकुमार विद्यालंकार ने और उसके बाद श्री अरुणकुमार विद्यालंकार ने भी शिक्षा-क्षेत्र में अच्छा कार्य किया है। पं० हरिशंकर आयुर्वेदालंकार शायद एकमात्र प्रवासी भारतीय है जो गुरुकुल के स्नातक हैं।

इनके अतिरिक्त जिन अन्य स्नातकों ने कुछ समय के लिए विदेशों में जाकर प्रचार कार्य किया है, उनमें श्री सत्यव्रत सिद्धांतालंकार, श्री बुद्धदेव विद्यालंकार, श्री मदनमोहन विद्यासागर वेदालंकार, श्री दिलीप वेदालंकार आदि प्रमुख हैं।

श्री पं० सत्यव्रत जी सिद्धांतालंकार ने आचार्य रामदेव जी के साथ जाकर १ वर्ष के लगभग अफ्रीका में वैदिक धर्म का प्रचार किया था। श्री बुद्धदेव विद्यालंकार विद्यामार्तण्ड ने भी अफ्रीका में १ वर्ष तक वैदिक धर्म का प्रचार बड़े उत्साह के साथ किया। पं० मदनमोहन जी विद्यासागर वेदालंकार ने बर्मा और अफ्रीका में धर्म प्रचार तथा समाज सुधार कार्य किया। श्री दिलीप वेदालंकार ने भी कुछ वर्ष पूर्वी अफ्रीका आदि में वैदिक धर्म का प्रचार बड़ी सफलतापूर्वक किया है। ब्रिटिश गायना में श्री श्रुतिकांत विद्यालंकार आर्यसमाज और हिन्दी-प्रसार के कार्य में सराहनीय योगदान कर रहे हैं।

स्नातकों की साहित्य-सेवा

वैदिक-साहित्य

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना में इसके संस्थापक महात्मा मुंशीराम का एक प्रमुख उद्देश्य था स्वामी दयानन्द द्वारा प्रदर्शित पद्धति से वैदिक साहित्य का अनुशीलन कराना एवं वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए उच्चकोटि के लेखक तथा प्रचारक तैयार करना। भारतवर्ष में जिस समय गुरुकुल-शिक्षाप्रणाली का पुनरुज्जीवन हुआ था, उस समय वेदों के अध्यापनार्थ पंडितों का अत्यन्त अभाव प्रतीत होता था, किन्तु अब गुरुकुलों के प्रयत्न से वेद-वेदांग के पंडितों की कमी नहीं है। गुरुकुल के अनेक स्नातक अत्यन्त परिश्रम, निष्ठा तथा विद्वता के साथ वेदों पर कार्य कर रहे हैं तथा वे आधुनिक ज्ञान-विज्ञान एवं नवीन विवेचनात्मक शैली से परिचित होने के कारण वैदिक अनुसंधान-कार्य में पर्याप्त सफल हुए हैं।

विश्वविद्यालय के प्रथम स्नातक, सुप्रसिद्ध साहित्यकार, सम्पादक तथा राजनैतिक कार्यकर्ता एवं भूतपूर्व कुलपति स्व० प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने जहां उच्चकोटि की साहित्यिक तथा ऐतिहासिक कृतियों की रचना की है वहां कुछ वैदिक ग्रन्थों का प्रणयन भी किया है। स्नातक होने के कुछ समय पश्चात् लिखी 'उपनिषदों की भूमिका' और जीवन के अन्तिम काल में लिखी 'ईशोपनिषद् भाष्य' नामक उनकी रचनाएं अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं।

गुरुकुल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व वेदोपाध्याय प्रो० विश्वनाथ विद्यालंकार विद्यामार्तण्ड आर्यसमाज के गम्भीर वैदिक विद्वान् हैं। आपने वेदों का गहन अध्ययन करके 'वैदिक पशुयज्ञ मीमांसा,' 'वैदिक जीवन,' 'संन्ध्या रहस्य' तथा 'वैदिक गृहस्थाश्रम' नामक ग्रन्थों की रचना की है। इसके अतिरिक्त वैदिक विषयों पर पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख भी प्रकाशित होते रहते हैं।

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार 'पालीरत्न' ने यास्ककृत निरुक्त की दो खण्डों में अपूर्व व्याख्या प्रस्तुत की है। वह व्याख्या आज भी, जबकि निरुक्त की अनेक हिन्दी तथा संस्कृत टीकाएं प्रकाशित हो चुकी हैं, अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। इसके अतिरिक्त 'वेदार्थ करने की विधि' तथा 'वैदिक स्वराज्य' नामक लघु ग्रन्थ भी आपने लिखे हैं।

सुप्रसिद्ध भाष्यकार पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार विद्यामार्तण्ड मीमांसातीर्थ ने स्वामी दयानन्द का दृष्टिकोण अपनाते हुए चारों वेदों का हिन्दी भाष्य करके आर्यसमाज की जो अपूर्व सेवा की है उसे भुलाया नहीं जा सकता। 'क्या वेदों में इतिहास है ?' नामक पुस्तक में सुयोग्य विद्वान् ने प्रमाण निर्देशपूर्वक यह दर्शाने का प्रयास किया है कि वेदों में इतिहास नहीं है। आपने 'ऋग्वेद की 'माधवानुक्रमणी' आदि ग्रन्थों का हिन्दी-अनुवाद भी किया है।

तपोमूर्ति पं० देवराज विद्यावाचस्पति वेदों के धुरन्धर विद्वान् तथा गम्भीर विचारक हैं। आपके शोधपूर्ण लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। आपका सम्पूर्ण जीवन वेद-सेवा में लगा हुआ था। आपकी 'अग्निहोत्र' नामक एक पुस्तक गुरुकुल से प्रकाशित हुई है। आपने 'संन्ध्या' की व्याख्या भी लिखी है। आप ज्योतिष के भी प्रकाण्ड विद्वान् हैं तथा वैदिक ज्योतिष के सम्बन्ध में प्रमाणिक लेखक भी हैं। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की अंग्रेजी रचना 'ओरायन' का आपने हिन्दी-अनुवाद किया है। 'वेदों में सब समस्याओं का समाधान विद्यमान है' इस विषय पर भी आप लिखते रहे हैं। आपके कुछ ग्रन्थ अप्रकाशित भी हैं।

वेदों के मूर्धन्य विद्वान् स्व० स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती (पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार विद्यामार्तण्ड) को कौन नहीं जानता ? आपने वेद सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है, यथा पंचयज्ञप्रकाश, अथ मरुत्सूक्तम्, सोम, स्वर्ग,

शतपथ में एक पथ । वेद में अधिराष्ट्र दृष्टि से मरुत् वीर सैनिक हैं, इसका नाद गुंजाने वाले सर्वप्रथम आप ही हैं। आपने 'सोम' का अर्थ 'ब्रह्मचारी' किया है तथा वेद के तीन 'नाक' या स्वर्ग ब्रह्मचर्य, गृहस्थ एवं वानप्रस्थ आश्रम सिद्ध किये हैं। नूतन दृष्टिकोण देने के कारण लघु-कलेवर होते हुए भी आपके उक्त ग्रन्थ विशेष महत्व रखते हैं। उक्त पुस्तकों के अतिरिक्त मान्य विद्वान् ने शतपथ ब्राह्मण भाष्य तथा अथर्ववेद का भाष्य, यद्यपि ये दोनों भाष्य अपूर्ण हैं, प्रस्तुत करके प्रशंसनीय कार्य किया है।

गुरुकुल के भूतपूर्व आचार्य स्व० स्वामी अभयदेव जी विद्यालंकार (पं. देवशर्मा जी) ने चारों वेदों में से मन्त्र चयन कर भक्तिरस से ओतप्रोत वैदिक विनय तीन खण्डों में लिखी है। इसमें ३६५ मन्त्रों की भावभीनी मधुर व्याख्या है, जिसमें वर्ष में प्रत्येक दिन के लिए एक-एक मन्त्र है। 'ब्राह्मण की गौ' तथा 'वैदिक ब्रह्मचर्य गीत' आपकी वेद विषयक अन्य कृतियां हैं। ये सब गुरुकुल से ही प्रकाशित हुई हैं। आपने श्री अरविन्द की 'सीक्रेट आफ द वेद' नामक अंग्रेजी लेखमाला का, जो 'आन दि वेद' नाम से श्री अरविन्दाश्रम द्वारा प्रकाशित भी हो चुकी है, हिन्दी अनुवाद तीन खण्डों में 'वेद रहस्य' नाम से किया है, जिससे हिन्दी के पाठकों के लिए श्री अरविन्द के वेद सम्बन्धी विचार सुलभ हो गये हैं।

गुरुकुल के भूतपूर्व कुलपति प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने जहां समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र तथा संस्कृति से सम्बद्ध ग्रंथों का प्रणयन किया है तथा उन पर मंगलाप्रसाद आदि पुरस्कार प्राप्त किये हैं, वहां वैदिक साहित्य सम्बन्धी साहित्य की रचना करने का भी गौरव प्राप्त किया है। आप कुछ समय गुरुकुल में वेदाध्यापन भी करते रहे हैं। आप द्वारा लिखी 'एकादशोपनिषत्' एक अमूल्य कृति है। इसमें आपने ११ उपनिषदों का धारावाही अनुवाद आवश्यक टिप्पणियों सहित प्रस्तुत किया है, जिसमें नीचे मूलपाठ भी दिया गया है। इस ग्रंथ की भूमिका भूतपूर्व राष्ट्रपति सर्व-पल्ली डॉ० राधाकृष्णन ने लिखी है। आपके द्वारा अंग्रेजी में लिखी 'हेरिटेज आफ वैदिक कल्चर' की विदेशों में बहुत प्रशंसा हुई है।

वेदों के उद्भट विद्वान्, प्रख्यात व्याख्याता तथा उच्चकोटि के लेखक श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड को समस्त आर्यजगत् सम्मान की दृष्टि से देखता है। पंडित जी संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड़, जर्मन आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता हैं। आपकी रचनाएं भिन्न २ भाषाओं में सुलभ हैं। वेद-सम्बन्धी आपकी प्रसिद्ध पुस्तक है, 'वेदों का यथार्थ स्वरूप'। इस पुस्तक पर आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने १००० रुपये का पुरस्कार देकर आपको सम्मानित किया है। आप द्वारा प्रणीत 'भारतीय समाजशास्त्र' 'वैदिक कर्तव्य शास्त्र', 'स्त्रियों को वेदाध्ययन और वैदिक कर्मकाण्ड में अधि-कार', 'बौद्धमत और वैदिक धर्म,' 'ग्लोरी आफ द वेदाज़' आदि पुस्तकें अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। इसके अति-रिक्त आपने सामवेद के चुने हुये १०० मंत्रों का अंग्रेजी में पद्यानुवाद भी किया है। इसी शैली पर अब आप सम्पूर्ण सामवेद का पद्यानुवाद कर रहे हैं, जो शीघ्र ही प्रकाशित होगा। आपने सम्पूर्ण ऋग्वेद व सामवेद का अंग्रेजी भाष्य तैयार किया है जो सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की ओर से प्रकाशित हो रहा है। इन प्रकाशित ग्रंथों के अतिरिक्त अनेक कृतियां अप्रकाशित भी हैं जो समयानुसार शीघ्र ही मुद्रित होकर आर्य जनता के हाथों में आयेंगी। आपने एक बृहद् ग्रन्थ 'सब समस्याओं का समाधान वेदों में है' इस विषय पर भी लिखा है, जो अभी अप्रकाशित है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रचार-विभाग के अधिष्ठाता और महोपदेशक स्व० पं० यशपाल सिद्धांतालंकार का सम्पूर्ण जीवन वेद-सेवा में व्यतीत हुआ। आप प्रचारक के साथ-साथ उच्चकोटि के लेखक भी थे। आप द्वारा प्रणीत 'शक्ति रहस्य', 'वैदिक आर्षकोष', 'वैदिक सिद्धान्त दर्पण' नामक रचनाएं। उपयोगी एवं संग्रहणीय हैं। इन समस्त रचनाओं का प्रकाशन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा किया गया है।

पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार वेद के उच्चकोटि के व्याख्याता हैं। आपने दो खण्डों में सामवेद की सुन्दर तथा सरल व्याख्या की है। इसके अतिरिक्त आपने 'वैदिक परिवार व्यवस्था,' 'जीवेम शरदः शतम्', 'संन्ध्या व्याख्या', 'ऋग्वेद के ऋषि' नामक ग्रन्थों का भी निर्माण किया है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व आचार्य पंडित प्रियव्रत वेदवाचस्पति वेदों के प्रख्यात विद्वान् हैं। आपने वेद विषयक अनेक पुस्तकों के लेखक के रूप में अच्छी ख्याति प्राप्त की है। 'वेद का राष्ट्रीय गीत', 'वेदोद्यान के चुने हुए फूल,' 'मेरा धर्म,' 'वरुण की नौका' आपकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं। 'वेद का राष्ट्रीय गीत' में अथर्ववेद के भूमिसूक्त की उत्कृष्ट व्याख्या है। प्रारम्भ में विस्तृत भूमिका है, जिसमें वेद-सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं पर विचार किया गया है। 'वेदोद्यान के चुने हुए फूल' में विभिन्न विषयों से सम्बद्ध मन्त्रों के अर्थ तथा व्याख्या हैं। 'मेरा धर्म' में राष्ट्र के उत्थान में कैसे वैदिक सिद्धान्तों का उपयोग हो सकता है, वैज्ञानिक, सामाजिक तथा सामूहिक रूप से देश की उन्नति कैसे सम्पादित की जा सकती है, आदि विषयों पर विद्वता, सरलता और विस्तार से प्रकाश डाला गया है। उक्त पुस्तकों पर आपको उत्तर प्रदेश सरकार तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। वेद के वरुण सम्बन्धी सूक्तों के आधार पर आपने 'वरुण की नौका' नामक पुस्तक की दो खण्डों में रचना की है। आपकी ये समस्त रचनायें गुरुकुल द्वारा प्रकाशित हुई हैं। आपका 'वेदों के राजनैतिक सिद्धान्त' नामक एक बृहद् ग्रंथ अभी अप्रकाशित है।

गुरुकुल के भूतपूर्व वेदोपाध्याय पं० धर्मदेव वेदवाचस्पति वैदिक साहित्य के प्रतिभाशाली अन्वेषक विद्वान् हैं। आपके लेख समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। गुरुकुल से आपकी 'त्याग की भावना' नामक एक पुस्तक भी प्रकाशित हुई है, जिसमें ऋग्वेद १०म मण्डल के दानस्तुति के दो सूक्तों की व्याख्या है।

पं० भगवद्दत्त वेदालंकार ने भी वेदों पर गहन अनुसंधान कार्य किया है। आपकी 'ऋभु देवता,' 'वैदिक स्वप्न विज्ञान,' 'वैदिक अध्यात्म-विद्या,' 'आत्मसमर्पण,' 'विष्णु देवता,' 'ऋषि-रहस्य,' 'वेद विमर्श,' 'ऋषि देव विवेचन' नामक पुस्तकें काफी लोकप्रिय हुई हैं और आपको 'विष्णु देवता' तथा 'ऋषि-रहस्य' पुस्तकों पर उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत भी किया गया है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व आचार्य एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष तथा पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ के अध्यक्ष, वेदों के गम्भीर विचारक डॉ० रामनाथ वेदालंकार का वेद विषयक अनुशीलन तथा विशिष्ट लेखनशैली प्रख्यात है। समय-समय पर आपके विद्वतापूर्ण लेख 'धर्मयुग,' 'वेदवाणी,' 'गुरुकुल पत्रिका' 'आर्योदय', 'नवनीत' आदि में प्रकाशित होते रहते हैं। अभी हाल ही में आपका 'वेदों की वर्णनशैलियां' विषयक शोधपूर्ण प्रबन्ध गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त आपकी 'वैदिक वीर गर्जना' तथा 'वैदिक सूक्तियां' नामक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। आर्योदय में आपकी यजुर्वेद के ३५ वें अध्याय की व्याख्या सम्पूर्ण धारावाहिक रूप में प्रकाशित हो चुकी है। आपके पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित फुटकर लेख भी इतने हैं कि वे एक पुस्तक का रूप धारण कर सकते हैं। अब भी आप वैदिक अनुसंधान में संलग्न हैं।

हैदराबाद निवासी पंडित मदनमोहन विद्यासागर वेदालंकार दक्षिण भारत के उच्चकोटि के उपदेशक हैं। आप घर-घर में वैदिक धर्म का सन्देश पहुँचाने में संलग्न हैं। आपने तेलगु तथा हिन्दी में वेद विषयक कई पुस्तकों की रचना की है। आप द्वारा प्रणीत तेलगु में 'वैदिक संन्ध्या' 'शुद्धि संस्कारविधि' 'अन्त्येष्टिविधि' 'वैदिक विवाह पद्धति' तथा हिन्दी में 'वेदों की अन्त:साक्षी का महत्त्व', 'संस्कार महत्त्व', 'वैदिक सिद्धांत प्रदीप' आदि रचनाएं आर्य जनता के द्वारा आदृत हैं। वेदवाणी में आपकी 'संस्कार और यज्ञ में यजमान' यजमानपत्नी आदि के आसन', विषयक लेखमाला धारावाही रूप में प्रकाशित होती रही है।

गढ़वाल विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ० कृष्णकुमार आयुर्वेदालंकार ने एम. ए. में वेद का अध्ययन करने वाले छात्रों की सुविधा के लिए ऋक्सूक्त सुधारक', 'ऋक्सूक्तसंग्रह' और 'वैदिक साहित्य का इतिहास' नामक पुस्तकों की रचना की है जो बहुत उपयोगी सिद्ध हुई हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के रीडर डॉक्टर सत्यकाम वर्मा आयुर्वेदालंकार ने भी वैदिक साहित्य विषयक कई पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें 'वेद वाटिका', 'वेद सुमन', 'ईश-केन-कठ उपनिषदों का भाष्य'; 'डिक्शनरीज आफ' वैदिक ग्रामर', 'वैदिक संग्रह' उल्लेखनीय हैं, इनमें से पहली छः पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, शेष मुद्रणाधीन हैं।

इसके अतिरिक्त पंडित हरिश्चन्द्र विद्यालंकार का सामवेद भाष्य पंडित नित्यानंद वेदालंकार रचित 'संध्या विनय' आदि; पंडित धर्मवीर वेदालंकार प्रणीत 'वैदिक विवाह संस्कार', श्री नन्दकिशोर विद्यालंकार का 'वैदिक विवाह का आदर्श', प्रो० सत्यभूषण 'योगी' वेदालंकार एम० ए० का लक्ष्मणस्वरूप के अंग्रेजी निरुक्त का हिन्दी भाषान्तर'; डॉ० प्रशान्तकुमार वेदालंकार का 'वैदिक साहित्य में नारी', प्रो० सुखदेव दर्शनवाचस्पति प्रणीत 'वेद तत्त्व प्रकाश' (स्वामी दयानन्द की ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका का परिष्कृत हिन्दी टीका सहित सम्पादन); पंडित सत्यकाम विद्यालंकार रचित 'वैदिक वन्दना गीत (वेदमन्त्रों पर रचित गीत) आदि स्नातकों की वेदविषयक पुस्तकें भी आर्यजनता के सम्मुख आ चुकी हैं, जिनकी सर्वत्र मुक्तकण्ठ से प्रशंसा हुई है।

वेदों का पाण्डित्य रखने वाले कुछ इतर स्नातक भी गुरुकुल ने उत्पन्न किए हैं। गुरुकुल के भूतपूर्व प्रस्तोता तथा संस्कृत विभागाध्यक्ष साहित्याचार्य स्व० वागीश्वर विद्यालंकार एम० ए० वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् थे। आपने वैदिक अलंकार शास्त्र पर एक लेखमाला तैयार की थी जो 'गुरुकुल पत्रिका' में प्रकाशित हो चुकी है। पं० सत्यपाल सिद्धान्तालंकार जो वर्षों तक अफ्रीका में वेद प्रचार-कार्य करते रहे हैं, वेद, उपनिषद् आदि का अनुपम पाण्डित्य, रखते हैं। गुरुकुल सोनगढ़ तथा गुरुकुल सूपा के भूतपूर्व आचार्य स्व० पण्डित चन्द्रकान्त वेदवाचस्पति, वेदों के पण्डित, कुशल व्याख्याता तथा उत्तम लेखक रहे हैं। पण्डित तडित्कान्त वेदालंकार श्री सातवलेकर जी के स्वाध्यायमण्डल में वेदानुसन्धान का कार्य करते रहे हैं। आपकी 'वेदों में यम व पितर' 'वेदों में महिला ऋषि', 'स्वर विज्ञान' और 'गायत्री मन्त्र का महत्त्व' नामक कृतियां उल्लेखनीय हैं। स्व० धर्मराज वेदालंकार गुरुकुल में व्याकरण प्रातिशाख्य आदि का अध्यापन करते हुए वैदिक अनुसन्धान करते रहे हैं। स्व० वेदव्रत विद्यालंकार ने वेदमन्त्रों पर गीत लिखे हैं, जो गुरुकुल से प्रकाशित वेद गीतांजलि में संकलित हैं। पं० जगन्नाथ वेदालंकार (श्री अरविन्दाश्रम, पाण्डिचेरी) वैदिक विषयों के सुलझे हुए लेखक हैं तथा आपका श्री अरविन्द के वेदविषयक लेखों का संस्कृतानुवाद 'गुरुकुल पत्रिका' में क्रमशः प्रकाशित होता रहा है। प्रो० हरिदत्त वेदालंकार का वेद सम्बन्धी ज्ञान उनकी लिखी 'हिन्दू परिवार मीमांसा' आदि पुस्तकों से सहज प्रकट होता है, जहाँ उन्होंने प्रत्येक विषय की मीमांसा के लिए वैदिक परम्परा का भी उल्लेख किया है तथा आधुनिक विद्वानों में प्रचलित कई वेदसम्बन्धी भ्रान्त धारणाओं का भी सप्रमाण प्रत्याख्यान किया है। पंडित मनोहर विद्यालंकार के 'वेदवाणी' एवं 'गुरुकुल पत्रिका' में प्रकाशित होने वाले लेख उनकी वेद-विषयक प्रतिभा को सहज मुखरित करते हैं। आप व्यापार कार्य में संलग्न होते हुए भी प्रतिदिन कुछ न कुछ समय वैदिक स्वाध्याय तथा अनुसंधान के लिए देते हैं। श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० (गोरखपुर) के वेद सम्बन्धी व्याख्यान तथा 'आर्यमित्र' 'आर्योदय' आदि में प्रकाशित होने वाले विद्वत्तापूर्ण लेख आर्यजनता में बहुत पसन्द किए जाते हैं। डॉ० जयदेव विद्यालंकार (संस्कृत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय) वेदों में विशेष गति रखते हैं। श्री सत्यभूषण वेदालंकार के वेदविषयक लेख पठनीय होते हैं, जो वेदवाणी तथा 'आर्योदय' आदि पत्र-पत्रिकाओं द्वारा पाठकों को प्राप्त होते हैं। 'वैदिक विचारधारा' नाम से 'आर्योदय' में आपकी एक लेखमाला प्रकाशित हुई थी। डॉ० विनोदचन्द्र विद्यालंकार को भी वैदिक विषयों पर लेख लिखने में रुचि है। उनके वेद विषयक लेख 'गुरुकुल पत्रिका', 'वेदवाणी' 'आर्योदय' तथा विभिन्न स्मृति-ग्रंथों एवं अभिनंदन ग्रथों में प्रकाशित होते रहते हैं।

संस्कृत-साहित्य

गुरुकुल विश्वविद्यालय के स्नातकों ने संस्कृत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया है। उन्होंने संस्कृत भाषा में अनेक मौलिक ग्रन्थों की रचना की है।

गुरुकुल के प्रथम स्नातक पंडित हरिश्चन्द्र विद्यालंकार की 'संस्कृत प्रवेशिका' छोटी कक्षाओं में पढ़ाने के लिए इतनी अधिक लोकप्रिय हुई कि इसके १७ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति को संस्कृत के प्रति अत्यधिक अनुराग था और उन्हें संस्कृत के विकास की चिन्ता सदा सताती रहती थी। छात्रावस्था से ही आपको संस्कृत में कविता करने का शौक था। वे जीवन के अन्तिम दिनों में महाभारत के ढंग पर संस्कृत में 'भारतैतिह्यम्' नाम से भारत का संपूर्ण इतिहास महाकाव्य के रूप में लिखना चाहते थे, परन्तु उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो पाई। केवल ३१ अध्याय ही लिख पाए जो पहले 'गुरुकुल पत्रिका' में क्रमशः छपे और बाद में पाठकों की मांग पर पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए।

संस्कृत के सुप्रसिद्ध विद्वान् पंडित धर्मदेव विद्यामार्तण्ड (स्वामी धर्मानन्द सरस्वती) ने 'महापुरुष कीर्तनम्' और 'महिलामणिकीर्तनम्' नामक काव्यों का प्रणयन किया है। इन दोनों रचनाओं पर उत्तरप्रदेश सरकार ने आपको पुरस्कार देकर सम्मानित किया है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष स्व० वागीश्वर विद्यालंकार कृत 'साहित्य सुधा संग्रहः', 'छात्रकौतकम्', 'विदूषक परिषद्' 'वैदिक साहित्य सौदामिनी' संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि हैं। श्री हरिवंश वेदालंकार कोचर की 'वैताल पंचविंशति' उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है। श्री जनमेजय विद्यालंकार ने 'अभिनवकाव्यम' नामक काव्य की रचना की, जिस पर उन्हें उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा ५०० रुपए का पुरस्कार प्राप्त हुआ। श्री भगवद्दत्त वेदालंकार कृत 'वैदिक स्वप्न विज्ञानम्' भी उत्तरप्रदेश शासन से पुरस्कृत हो चुकी है। श्री मदनगोपाल विद्यालंकार की 'चारू चरितावलि', श्री जगन्नाथ वेदालंकार रचित' 'संस्कृत कथा मंजरी' और 'मातृसूक्ति मुक्तावलि', श्री आनन्दवर्धन विद्यालंकार की संवादमाला' एवं 'कुसुमलक्ष्मीः' की पाठकों द्वारा मुक्तकंठ से प्रशंसा हुई है। श्री आनन्दवर्धन विद्यालंकार की 'कुसुम लक्ष्मी:' उ०प्र० सरकार के १००० रुपये के गंगानाथ झा पुरस्कार से पुरस्कृत भी हुई है। श्री वासुदेव चैतन्य आयुर्वेदालंकार ने 'चैतन्य नीतिशतकम्' नाम से ७०० संस्कृत श्लोकों की रचना की है, जो गुरुकुल पत्रिका में क्रमशः प्रकाशित हुए हैं।

देशबन्धु कालेज दिल्ली में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ० मनोहरलाल विद्यालंकार ने संस्कृत में कई छात्रोपयोगी पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें 'संस्कृत मंजरी', 'संस्कृत गौरवम्', 'संस्कृत गद्य मंजरी,' संस्कृत सुषमा' प्रमुख हैं। डी. ए. वी. कालेज अम्बाला शहर के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो० वेदप्रकाश वेदालंकार ने 'आदिकवि वाल्मीकि': एवं 'अलंकार संस्कृत निबन्धमाला' की रचना की है, जिनमें से प्रथम हरियाणा सरकार के भाषा विभाग द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है। राजस्थान के डॉ० सुभाषचन्द्र वेदालंकार ने भी अनेक संस्कृत-ग्रन्थ रचे हैं।

संस्कृत भाषा में पुस्तक निर्माण के अलावा, अनेक स्नातक संस्कृत की पत्र-पत्रिकाओं के लिए विभिन्न विषयों पर शोधपूर्ण सुन्दर लेख व श्लोक आदि भी लिखते रहते हैं, जिनकी सर्वत्र सराहना होती है।

संस्कृत को जनसामान्य में लोकप्रिय बनाने तथा छात्रों के लिए संस्कृत के अध्ययन को सरल बनाने की दृष्टि से अनेक स्नातकों ने संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवियों के दुरूह ग्रंथों के भावानुवाद, अनुवाद एवं टीकाएं भी तैयार की हैं। इसका परिणाम यह है कि अब संस्कृत को न जानने वाले भी इनका रसास्वादन सरलता से कर सकते हैं।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति द्वारा 'रघुवंश' व 'किरातार्जुनीयम्' का हिन्दी अनुवाद इस दिशा में प्रथम चरण था। इसके बाद श्री वागीश्वर विद्यालंकार ने भी 'कुन्दमाला' एवं 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' के हिंदी रूपांतर प्रस्तुत किए। श्री सत्यकाम विद्यालंकार ने 'पंचतंत्र' व 'मेघदूत' का; श्री निरंजनदेव आयुर्वेदालंकार ने 'हिंदी वेणीसंहार' 'हिन्दी दशकुमारचरित' का; श्री चंद्रमणि विद्यालंकार ने 'वाल्मीकिरामायण' का; श्री इन्द्रसेन विद्यालंकार ने 'उत्तररामचरित' का; श्री उदयवीर 'विराज' वेदालंकार ने 'अभिज्ञानशाकुन्तल', 'कुमारसंभव', 'विक्रमोर्वशीय,' 'मालविकाग्निमित्र' का तथा श्री प्रताप विद्यालंकार ने 'मेघदूत' व 'ऋतुसंहार' का हिन्दी रूपांतर इतनी सुबोध एवं प्रांजल भाषा में किया है कि पाठकों का मन अनायास ही उनकी ओर बार-बार आकृष्ट हो जाता है और उन्हें पढ़ने के बाद उनमें एक विशेष आनन्द की अनुभूति होती है।

स्नातकों द्वारा तय्यार की गई संस्कृत-ग्रन्थों की छात्रोपयोगी टीकाएं बाजार में बिकने वाली अन्य सामान्य टीकाओं और कुंजियों की तरह की नहीं हैं, बल्कि वे इतने अच्छे ढंग से लिखी गई हैं कि उनमें टीकाकार या अनुवादक की योग्यता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

मेरठ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध मेरठ कालेज के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ० निरूपण विद्यालंकार ने संस्कृत साहित्य के कई ग्रन्थों की टीकाएं की हैं, जिनमें 'अभिज्ञानशाकुन्तल' 'मुद्राराक्षस,' 'साहित्य दर्पण' और 'काव्यदीपिका' प्रमुख हैं। इन टीकाओं में कवि-परिचय, कला-परिचय, नाटक की विशेषताओं का विस्तृत विवरण तथा मूल पाठ का अर्थ व भाव तो दिया ही गया है, साथ ही गद्य या पद्य में आए विशेषणों का सार्थक्य निरूपण भी किया गया है, जो अन्य टीकाओं में देखने को कम मिलता है। यही कारण है कि इनकी टीकाएं विद्वद्‌मण्डली एवं छात्रों में बहुत अधिक पसन्द की जाती हैं।

गढ़वाल विश्वविद्यालय के अंगीभूत राजकीय डिग्री कालेज श्रीनगर के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ० कृष्णकुमार आयुर्वेदालंकार रचित 'ध्वन्यालोक', 'रघुवंश,' 'हर्षचरित', किरातार्जुनीयम्', 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की टीकाएं भी इसी कोटि की हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के रीडर डॉ० सत्यकाम वर्मा आयुर्वेदालंकार ने 'वाक्य पदीय : ब्रह्म-कांड' की त्रिभाषी टीका प्रस्तुत करके इस ग्रन्थ को हिन्दी भाषाभाषी और अहिन्दीभाषाभाषी दोनों ही तरह के लोगों के लिए सुगम बना दिया है।

श्री धर्मदेव वेदवाचस्पति और प्रो० वेदप्रकाश वेदालंकार ने सम्मिलित रूप से 'चारुदत्तम्', 'हितोपदेश', 'अपरी-क्षित कारक', 'रघुवंश', और 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के पंजाब विश्वविद्यालय के लिए पाठ्यक्रमोपयोगी अंशों की सुबोध टीकाएं प्रस्तुत की हैं।

इसके अतिरिक्त प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार का 'गीताभाष्य'; श्री जयचन्द्र विद्यालंकार कृत 'कुन्दमाला-नाटिका' की टीका; श्री हरिश्चन्द्र विद्यालंकार कृत 'मनुस्मृति' का अनुवाद; डॉ० रामनाथ वेदालंकार रचित 'नलचम्पू' (प्रथम उच्छ्‌वास) की सटिप्पण हिन्दी-संस्कृत टीका; सत्यभूषण योगी वेदालंकार प्रणीत 'मनुस्मृति' (१,२) का अनुवाद श्री जयपाल विद्यालंकार की 'स्वप्नवासवदत्तम्' और 'किरातार्जुनीयम्' की टीकाएं सर्वत्र समादृत हुई हैं।

इन टीकाओं और अनूदित ग्रंथों की रचना के अतिरिक्त गुरुकुल विश्वविद्यालय के अनेक स्नातकों ने संस्कृत साहित्य से सम्बन्धित विषयों पर उच्चकोटि के शोधपूर्ण एवं आलोचनात्मक ग्रंथ लिखकर विद्वद्‌मण्डली में पर्याप्त ख्याति अर्जित की है।

श्री चन्द्रमणि विद्यालंकार का महर्षि पतंजलि व तत्कालीन भारत'; पं० वागीश्वर विद्यालंकार की 'कालिदास काव्यकला'; श्री विद्यासागर वेदालंकार कृत 'सांख्य दर्शन-एक परिचय', 'वेदांत: एक परिचय' 'चार्वाक दर्शन' (हरजी-मल पुरस्कार प्राप्त); पं० कृष्णस्वरूप विद्यालंकार का 'गीता मर्म' एवं 'गीता विज्ञान विवेचन' (पुरस्कृत); श्री सुखदेव दर्शनवाचस्पति का 'पुराणालोचन'; प्रो० हरिदत्त वेदालंकार की 'कालिदास के पक्षी' (उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत) डॉ० कृष्णकुमार आयुर्वेदालंकार का 'अलंकारशास्त्र का इतिहास', एवं 'अम्बिकादत्त व्यास: एक अध्ययन'; डॉ० निरूपण विद्यालंकार का 'प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्र साहित्य में शूद्रों की स्थिति' (उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत); डॉ० सत्यकाम वर्मा आयुर्वेदालंकार के 'भाषातत्त्व और वाक्यपदीय', 'व्याकरण की दार्शनिक भूमिका', 'संस्कृत व्याकरण का उद्‌भव एवं विकास' और 'भर्तृहरि: शब्द और अर्थ'; डॉ० देवेन्द्रकुमार विद्यालंकारकृत 'संस्कृत नाटकों के हिन्दी अनुवाद'; डॉ० विनोदचंद्र विद्यालंकार रचित 'जयदेव: आचार्य और नाटककार के रूप में आलोचनात्मक अध्ययन' आदि ग्रंथ इसी श्रेणी में आते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि गुरुकुल के स्नातकों ने संस्कृत-साहित्य को समृद्ध बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है और आगे आने वाली पीढ़ी इसे और भी अधिक समृद्ध बनाने के लिए प्रयत्नशील है।

हिन्दी में साहित्य-सृजन

मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से शिक्षा देने का सर्वप्रथम सफल प्रयास गुरुकुल कांगड़ी द्वारा किया गया था। परिणामतः गुरुकुल ने हिन्दी को अनेक प्रतिष्ठित लेखक प्रदान किए, जिन्होंने निःसंदेह राष्ट्रभाषा हिन्दी में विविध विषयों पर मौलिक एवं शोधपूर्ण उत्तम साहित्य निर्माण द्वारा समाज व राष्ट्र की उल्लेखनीय सेवा की है। शायद ही कोई ऐसी विधा बची होगी जिस पर स्नातकों ने कलम न चलाई हो। स्नातकों द्वारा रचित साहित्य की जहां जनता ने सराहना की है, वहीं इनमें से बहुत सी पुस्तकों को केन्द्रीय व प्रांतीय सरकारों, अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, बंगाली हिन्दी अकादमी आदि संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत भी किया गया है। यहां हम पाठकों को स्नातकों की हिन्दी-सेवा का दिग्दर्शन कराने का प्रयत्न करेंगे।

प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं ऐतिहासिक विषयों पर लगभग २५ पुस्तकें लिखी हैं जो बहुत ही लोकप्रिय हुई हैं। 'अपराधी कौन', 'सरला की भाभी', 'सरला', 'जमींदार' आदि उपन्यास, 'महर्षि दयानन्द', 'नैपोलियन बोनापार्ट', 'प्रिंस बिस्मार्क', 'गेरीबाल्डी' एवं 'मेरे पिता' आदि जीवनचरित्र, 'जीवन संग्राम', 'भारतीय संस्कृति का प्रवाह', 'आर्यसमाज का इतिहास', स्वतंत्र भारत की रूपरेखा', 'मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण', 'आधुनिक भारत में वक्तृत्वकला की प्रगति' आदि ऐतिहासिक ग्रन्थों ने काफी ख्याति प्राप्त की है। 'मेरे पिता' पर आपको उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया है।

स्व० श्री प्राणनाथ विद्यालंकार राजनीति और अर्थशास्त्र पर हिन्दी में प्रामाणिक पुस्तकें लिखने वाले जाने-माने पुराने लेखक हैं। आपके 'राजनीतिशास्त्र', 'मुद्राशास्त्र', 'शासन पद्धति', 'अर्थशास्त्र' नामक ग्रन्थ हिन्दी जगत् में काफी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं।

श्री अमरनाथ विद्यालंकार न केवल सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ हैं, बल्कि आपने लेखक के रूप में भी काफी यश अर्जित किया है। आपकी 'आज की दुनिया', 'आज का मानव सैनोर', 'मानव संघर्ष', 'भारत का इतिहास' नामक इतिहास पर आधारित पुस्तकें उल्लेखनीय हैं।

पं० जयचन्द्र विद्यालंकार ख्याति प्राप्त इतिहासकार हैं। ब्रिटिश इतिहास लेखकों की पक्षपातपूर्ण भ्रांत धारणाओं को चुनौती देकर भारतीय इतिहास को स्वतंत्र ऐतिहासिक मनोवृत्ति से लिखने की प्रेरणा देने वाले आप ही हैं। आपकी एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें 'भारतीय इतिहास का भौगोलिक आधार', 'भारत भूमि और उसके निवासी', 'इतिहास की मीमांसा', 'राष्ट्रीय इतिहास का अनुशीलन' प्रमुख हैं। आपको 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा' पर अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। आपकी साहित्य सेवा के प्रति आदर प्रकट करने के लिए पंजाब सरकार ने एक सार्वजनिक आयोजन में आपको १२०० रुपए और दुशाला भेंट करके सम्मानित किया है।

पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार वैदिक साहित्य के ख्याति प्राप्त लेखक होने के साथ-साथ एक अच्छे कवि भी थे। इनके 'बिखरे फूल' और 'उसकी राह पर' सुन्दर काव्य-संग्रह हैं।

श्री विनायकराव विद्यालंकार ने अमेरिका के राष्ट्रपति 'अब्राहिम लिंकन' का जीवनचरित्र तथा 'चाबुक' नाम का एक कथासंग्रह लिखा है। श्री भूदेव विद्यालंकार की 'स्वाधीनता के पुजारी'; श्री चन्द्रमणि विद्यालंकार की 'ऋषि दयानन्द के सत्य-अहिंसा के प्रयोग'; वैद्य धर्मदत्त विद्यालंकार की 'प्राचीन भारत में स्वराज्य', 'संगीत संध्या' एवं 'हिन्दी गीता'; श्री कृष्णस्वरूप विद्यालंकार कृत 'बाल विवाह', 'अछूतोद्धार' और 'आनन्द यहीं हैं'; श्री ईश्वरदत्त विद्यालंकार की 'जिन ढूंढा तिन पाइयां'; श्री महामुनि विद्यालंकार रचित 'महर्षि दयानन्द के जीवन का मनन'; श्री वागीश्वर विद्या-

लंकार रचित 'नीराजना' नामक काव्य संग्रह बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक रचनाएं हैं। श्री ओमप्रकाश विद्यालंकार कृत 'होमियोपैथी के सिद्धांत' होमियोपैथी-चिकित्सा का प्रारंभिक अध्ययन करने वालों के लिए उपयोगी है।

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने शिक्षा, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, मनोविज्ञान तथा संस्कृति पर अनेक विशालकाय पुस्तकें लिखी हैं जो विभिन्न विश्वविद्यालयों में बी० ए०, एम० ए० के छात्रों के लिए तो उपयोगी हैं ही, जनसामान्य भी उनसे लाभान्वित होता है। आपको 'समाजशास्त्र के मूलतत्त्व' नामक पुस्तक पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मंगलाप्रसाद पुरस्कार तथा 'आर्य संस्कृति के मूल तत्त्व' पर २००० रुपए का अन्य पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ है। आपकी अन्य रचनाओं में 'ब्रह्मचर्य संदेश', 'शिक्षा सिद्धान्त', 'सामाजिक मानवशास्त्र', 'सामाजिक विचारों का इतिहास', 'शिक्षाशास्त्र', 'भारत की जनजातियां और संस्थाएं' का प्रमुख स्थान है। आपकी इन साहित्यिक रचनाओं के प्रति आभार प्रकट करने के लिए पंजाब सरकार के भाषा विभाग ने सन् १९६२ में एक विशेष दरबार का आयोजन करके आपको १२०० रुपए तथा दुशाला भेंट किया था। इसके साथ ही आपने होमियोपैथी का गहन अध्ययन करके तथा अपने ३६ वर्ष के अनुभवों के आधार पर होमियोपैथी के तीन वृहत् ग्रन्थों की रचना की है। ये ग्रन्थ हैं : 'रोग तथा उनकी होमियोपैथी चिकित्सा', 'होमियोपैथिक औषधियों का सजीव चित्रण' और 'बुढ़ापे से जवानी की ओर'। हिन्दी में होमियोपैथी की इन सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों को लिखने पर अभी हाल ही में आपको 'फूलवती खूटेरा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

श्री दीनानाथ सिद्धान्तालंकार ने अनेक धार्मिक, समाज सुधार की प्रेरणा देने वाली तथा ज्ञानवर्धक पुस्तकों की रचना की है। आपकी 'अमृत पथ', 'श्री रामचरित्र', 'प्रेरक जीवन कहानियां', 'डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी का जीवन', 'आर्यसमाज की उपलब्धियां', 'भारत की प्राचीन नीतियां' नामक पुस्तकें काफी लोकप्रिय हुई हैं।

श्री पं० वंशीधर विद्यालंकार ने कवि एवं लेखक के रूप में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की है। आपकी 'मेरे फूल' 'बालापद' अच्छे काव्यसंग्रह हैं। आपने 'साहित्य', 'फल-वन' की भी रचना की है।

स्व० श्री सत्यदेव विद्यालंकार हिन्दी साहित्य के जाने-माने लेखक हैं। आपने ४० पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें अधिकांश विभिन्न नेताओं के जीवनचरित्र हैं। आप द्वारा रचित 'गांधी जी का मुकदमा', 'दयानन्द दर्शन', 'जनरल अवारी', 'स्वामी श्रद्धानन्द', 'धुन के धनी', 'जीवन संघर्ष', 'हमारे राष्ट्रपति', 'लाला देवराज', 'राष्ट्रवादी दयानन्द', 'परदा', 'राष्ट्रधर्म', 'जयहिन्द', 'लालकिले में', 'आज का मध्य भारत', 'आर्य सत्याग्रह', 'आर्यसमाज किस ओर' आदि पुस्तकें जनसामान्य में अत्यधिक लोकप्रिय हुई हैं। 'धुन के धनी' में आपने श्री जयनारायण व्यास का तथा 'जीवनसंघर्ष' में श्री महाशय कृष्ण जी का प्रामाणिक जीवन परिचय लिखा है। आपकी 'परदा' और 'राष्ट्रधर्म' शीर्षक पुस्तकें अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से 'राधामोहन गोकुल जी पुरस्कार' से सम्मानित हो चुकी हैं। आपकी साहित्य-सेवा का आदर करने के लिए पंजाब सरकार ने १९६५ में आपको 'जय साहित्य' नामक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया था।

स्व० श्री भीमसेन विद्यालंकार ने 'वीर मराठे', 'वीर शिवाजी', 'वीर पंजाबी', 'दयानंदोपनिषद्', 'लाला लाजपतराय की आत्मकथा', 'बाल महाभारत' नामक बालोपयोगी एवं ज्ञानवर्धक पुस्तकें लिखी हैं। आपने 'वर्तमान भारत' नामक पुस्तक का संपादन भी किया है।

श्री निधि सिद्धांतालंकार ने हिन्दी में मुख्य रूप से वन तथा वन्यपशु सम्बन्धी साहित्य की रचना की है। आपने 'शिवालिक की घाटियों में', 'मालिनी के वनों में', 'मचान पर उनचास दिन', 'सूखे सूनसान नालों में' नामक पुस्तकों में अपनी वन-यात्राओं के अनुभवों का सजीव एवं रोचक वर्णन किया है। आपकी प्रथम दो पुस्तकें उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत हो चुकी हैं। आपने 'द्वापर की एक दोपहर' और 'पौलस्त्य' नामक दो उपन्यास भी लिखे हैं जो

शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं। पुस्तकों के अतिरिक्त आपने अपनी रोमांचकारी एवं साहसपूर्ण वन-यात्राओं को आधार बनाकर लगभग ७५ लघु रचनाएं भी लिखी है जो 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।

स्व० श्री रामगोपाल विद्यालंकार ने 'स्वामी श्रद्धानन्द', 'आचार्य रामदेव' और 'संस्कार प्रकाश' नामक पुस्तकें लिखी हैं।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक डॉ० सत्यकेतु विद्यालकार को कौन नहीं जानता। आपने प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं इतिहास पर अनेक शोधपूर्ण एवं प्रामाणिक ग्रन्थों की रचना की है। 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास', 'मध्य एशिया तथा चीन में भारतीय संस्कृति', 'दक्षिण पूर्वी एशिया में भारतीय संस्कृति', 'भारतवर्ष का इतिहास', 'पाटलीपुत्र की कथा', 'भारत का राष्ट्रीय आंदोलन और नया संविधान', 'प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था और राजशास्त्र' आदि पुस्तकों में प्राचीन भारत के इतिहास तथा भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार का विशद चित्रण किया गया है। इनके अतिरिक्त आपने राजनीतिशास्त्र पर कई ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें 'राजनीतिशास्त्र', 'प्राचीन भारत की शासन संस्थाएं तथा राजनीतिक विचार', 'प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था और राजशास्त्र' आदि प्रमुख हैं। आपके ये सभी ग्रन्थ विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में निर्धारित हैं और शोधार्थी इनका संदर्भ ग्रन्थ के रूप में उपयोग करते हैं। आप न केवल इतिहासकार के रूप में ही प्रख्यात हैं, बल्कि आपने अनेक ऐतिहासिक चरित्रों को आधार बनाकर कतिपय उपन्यास भी लिखे हैं, जो काफी लोकप्रिय हुए हैं। 'आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य', 'सेनानी पुष्यमित्र', 'अन्तर्दाह', 'होटल मॉडर्न' आपके उल्लेखनीय उपन्यास हैं। आपको 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास' पर अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन द्वारा मंगलाप्रसाद पुरस्कार तथा 'प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था और राजशास्त्र' पर उत्तर प्रदेश शासन द्वारा ५००० रुपए के मोतीलाल नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। इनके अतिरिक्त आपकी अन्य कृतियां भी नागरी प्रचारिणी सभा, मध्यप्रदेश शासन, उत्तर प्रदेश शासन, बंगाली हिन्दी मंडल आदि संस्थाओं के भिन्न-भिन्न पुरस्कारों से समादृत हो चुकी हैं।

श्री धनराज विद्यालंकार ने अनेक अंग्रेजी व अन्य भाषाओं की पुस्तकों का हिन्दी-अनुवाद किया है। आपकी 'रामकृष्ण परमहंस', 'महापुरुषों के साथ', 'सांस्कृतिक मानवशास्त्र' आदि प्रमुख अनूदित रचनाएं हैं।

श्री नारायणदत्त सिद्धान्तालंकार ने 'शंकराचार्य : जीवन और दर्शन', 'महर्षि दयानन्द : जीवन और दर्शन', 'गुरुनानक : जीवन और दर्शन' नामक पुस्तकों में उक्त महापुरुषों का जीवन परिचय प्रस्तुत किया है।

श्री सत्यकाम विद्यालंकार ने १० से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। आपने 'सोमा', 'मुक्ता', 'चेयरमैन', 'देवता का दान' नामक उपन्यास लिखे हैं, जिनमें से 'सोमा' पंजाब सरकार द्वारा पुरस्कृत हो चुका है। आपका 'आठ श्रेष्ठ कहानियां' नाम से एक कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुआ है। 'चरित्र निर्माण', 'मानसिक शक्ति के चमत्कार', 'सफल जीवन', 'सफलता के सूत्र' एवं 'जीवन साथी' ये आपकी जीवन को सफल बनाने के लिए मार्गदर्शन करने वाली पुस्तकें हैं। महापुरुषों का जीवन परिचय देना भी आप नहीं भूले हैं। इस कार्य के लिए आपने 'महात्मा गांधी', 'जीवन-रश्मि' 'हमारे राष्ट्र निर्माता', 'शिवाजी', 'सरदार पटेल' नामक पुस्तकों की रचना की है। यही नहीं, विभिन्न देशों का परिचय आपने 'देश-देशान्तर' और 'ईरान' के माध्यम से दिया है।

श्री हरिश्चन्द्र विद्यालंकार ने 'बाल रामायण', 'माता का संदेश', 'शिष्टाचार', 'आर्यसमाज का इतिहास', 'महर्षि दयानन्द सरस्वती' एवं 'मिलजुल कर काम करो' नामक पुस्तकों की रचना की है।

श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार ने इतिहास, राजनीति तथा अन्य विषयों पर लगभग १५ पुस्तकें लिखी हैं। 'चीन का स्वाधीनता का युद्ध', 'कांग्रेस का इतिहास', 'वर्तमान जगत', 'आधुनिक संसार', 'किसानों का सवाल', एवं 'भारतीय

संस्कृति' आपकी राजनीति एवं संस्कृति परक कृतियां हैं। आपने हिन्दी के छात्रों के लिए 'मुक्ति पत्र : एक अध्ययन', 'प्रबन्ध प्रकाश', 'आधुनिक हिन्दी निबन्ध', 'हिन्दी व्याकरण', 'सरल रचना विधि' नामक पुस्तकें रचीं हैं। 'आविष्कार और आविष्कारक', 'भ्रमण और साहस की कहानियां', 'साहसी मानव' आपकी बालोपयोगी रचनाएं हैं।

१९७४ में सोवियत भूमि के नेहरू पुरस्कार से सम्मानित विद्यामार्तण्ड श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कहानीकार, नाटककार एवं उच्चकोटि के लेखक के रूप में जाने जाते हैं। आपकी अब तक लगभग २८ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें आठ कहानी संग्रह, छः नाटक, सात अन्य विषयों की पुस्तकें तथा सात अनूदित एवं संपादित कृतियां हैं। आपके प्रायः सभी कहानी संग्रह एवं नाटक पुरस्कृत हो चुके हैं। १९७३ में दिल्ली राज्य द्वारा आपको सर्वश्रेष्ठ लेखक के रूप में पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया था। यही नहीं, पंजाब सरकार का भाषा विभाग भी आपका सम्मान करने में पीछे नहीं रहा। उसने १९७५-७६ के सर्वश्रेष्ठ हिन्दी लेखक के रूप में आपको एक सार्वजनिक समारोह में १२०० रुपए और एक दुशाला भेंट करके सम्मानित किया। आपकी कुछ रचनाएं रूसी, अंग्रेजी, जर्मन और चैकोस्लोवाक भाषाओं में भी अनूदित हो चुकी है। आपके 'चन्द्रकला', 'भय का राज्य', 'अमावस', 'तीन दिन', 'वापसी', 'पहला नास्तिक', 'गहरे अंधेरे में', 'मेरी प्रिय कहानियां' नामक कहानी-संग्रह; 'अशोक', 'रेवा', 'न्याय की राह', 'हिन्दुस्तान जाकर कहना', 'शिव सती', 'गौरी शंकर' नाटक; तथा 'आजकल' 'आज का मानव समाज' 'बच्चन', 'उत्कीर्ण पथचिन्ह', 'स्वीडन', 'चौथी दुनियां और उसके आसपास' शीर्षक रचनाएं उल्लेखनीय हैं। आपने चेखव, हार्डी तथा रूसी लेखकों के कहानी-संग्रहों का हिन्दी में अनुवाद भी किया है।

श्री निरंजनदेव आयुर्वेदालंकार हिन्दी के अच्छे कवि हैं। आपकी कविताएं 'प्रियहंस' और 'सव्यसाची' उपनाम से भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आपकी 'प्रमुख हिन्दी कवि', 'हिन्दी वेणीसंहार' और 'हिन्दी दशकुमारचरित' नामक पुस्तकें हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

डॉ० हरिवंश वेदालंकार (कोचर) ने 'अपभ्रंश साहित्य' नामक शोधपूर्ण ग्रन्थ लिखा है। इस पर आपको दिल्ली विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त हुई है।

श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित लेखक हैं। आप अर्थशास्त्र, राजनीति, भूगोल और इतिहास के अच्छे ज्ञाता हैं। आपकी 'सरल अर्थशास्त्र', 'पंचवर्षीय सिंचाई बिजली योजना', 'सामुदायिक योजना' अर्थशास्त्र विषयक तथा 'हमारे राष्ट्रपति राधाकृष्णन', 'मालवीय जी' आदि जीवन परिचय सम्बन्धी पुस्तकें काफी ज्ञानवर्धक एवं लोकप्रिय हैं। आप प्रतिवर्ष 'भारत ज्ञान कोश', 'विश्व ज्ञान कोश' तथा 'हिन्दुस्तान वार्षिकी' का भी संपादन करते हैं।

डॉ० इन्द्रसेन आयुर्वेदालंकार कुशल चिकित्सक तो हैं ही, साथ ही उच्चकोटि के कवि भी हैं। आप पिछले चार वर्ष से हिन्दी की सेवा कर रहे हैं। अब तक आपने काव्यप्रेमियों को 'रसधारा', 'सूक्तिधारा', 'हृदयहरधारा', 'करुण धारा', 'रंजन धारा', 'राज धारा', 'उद्गार धारा', 'मनोहर धारा', 'अभिराम धारा', 'मनोरम धारा' नाम से १० काव्य-धाराएं दी हैं। ग्यारहवीं धारा–ललाम धारा–लिखी जा रही है। इनके अतिरिक्त आपने 'हिन्दी राष्ट्रभाषा कैसे बने', 'हिन्दी से जापानी शिक्षक' नामक पुस्तकें भी लिखी हैं।

श्री शंकरदेव विद्यालंकार ने श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर की अनेक रचनाओं का हिन्दी भाषान्तर प्रस्तुत करके हिन्दी साहित्य की अपूर्व सेवा की है। 'रवीन्द्र कथा', 'नैवेद्य', 'चित्रांगदा', 'फूलों की डाली', 'भूले पंछी', आपकी सरल एवं सुबोध भाषा में अनूदित रचनाएं हैं। 'अंतिम पाठ' (कथा संग्रह) और 'प्राचीन भारत के विद्यापीठ' आपकी मौलिक हिन्दी कृतियां हैं। इनके अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपके रोचक लेख प्रकाशित होते रहते हैं। आपकी

हिन्दी सेवा के प्रति आभार प्रकट करने के लिए नागपुर में हुए विश्व हिन्दी सम्मेलन में आपको सर्वश्रेष्ठ अहिन्दीभाषी हिन्दी लेखक के रूप में सम्मानित किया गया था।

पटना विश्वविद्यालय में यू० जी० सी० प्रोफेसर श्री वीरेन्द्र विद्यावाचस्पति ने हिन्दी साहित्य का अध्ययन-अध्यापन करने वाले छात्रों एवं विद्वानों को बहुमूल्य रचनाएं दी हैं। आप द्वारा प्रणीत शोधपूर्ण ग्रन्थ 'अपभ्रंश भाषा का अध्ययन' बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा पुरस्कृत हो चुका है। 'पद्माभरण और पद्माकर', 'हिन्दी साहित्य : परम्परा और परख' तथा 'विद्यापति : अनुशीलन एवं मूल्यांकन' आपकी विद्वत्ता और गहन अध्ययन के प्रतीक हैं।

श्री नित्यानन्द वेदालंकार हिन्दी साहित्य के सुलझे हुए विद्वान् हैं। हिन्दी में ग्रंथ-रचना करने में आप सिद्धहस्त हैं। आपने अनेक मौलिक पुस्तकें लिखी हैं। आपकी प्रमुख पुस्तकों में 'छायावाद : नया मूल्यांकन', 'पूर्व और पश्चिम', 'जीवन की राहें', 'सुराज्य की रूपरेखा', 'प्रभावशाली व्यक्तित्व : मार्गदर्शन' आदि उल्लेखनीय है। आपकी पुस्तकें इतनी अधिक लोकप्रिय हुई हैं कि अनेक पुस्तकों के चार-चार, पांच-पांच संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

'उन्मुख' नाम से काव्य रचना करने वाले श्री सत्यपाल विद्यालंकार के लगभग एक दर्जन उपन्यास और काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। आपका 'दीपदान' काव्यसंग्रह और 'कामायनी का सरल अध्ययन' आपके गहन अध्ययन का परिणाम है।

श्री वीरसेन (पृथ्वीसिंह मेहता) विद्यालंकार ने 'बिहार का ऐतिहासिक दिग्दर्शन' और 'राजस्थान का इतिहास' नाम से इतिहास सम्बन्धी दो पुस्तकें लिखी हैं।

डॉ० ऋषिदेव वेदालंकार ने समाजशास्त्र, नृतत्त्वशास्त्र, धर्मशास्त्र, साहित्य, आदि विषयों पर अनेक ग्रन्थ लिखे हैं, जिन पर आपको विभिन्न संस्थाओं से पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। आपकी 'समाजशास्त्र', 'समाजशास्त्र के सिद्धांत', 'प्राग् ऐतिहासिक संस्कृतियां' समाजशास्त्र विषयक; 'मानव विज्ञान व नृतत्त्वशास्त्र' और 'मानवविज्ञान' नृतत्त्वशास्त्र की तथा 'अलोचनादर्श' साहित्यपरक कृतियां हैं। 'मानव विज्ञान' पर आपको बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा सम्मानित किया गया है।

श्री चन्द्रगुप्त वेदालंकार का 'बृहत्तर भारत' अपने विषय का अनूठा एवं प्रामाणिक ग्रन्थ है। आज भी अनेक शोधकर्ता एवं विद्वान् संदर्भ ग्रन्थ के रूप में इसका उपयोग करते हैं। आपने 'राष्ट्रभाषा हिन्दी' नाम से भी एक पुस्तक लिखी है।

श्री हरिदत्त वेदालंकार ने इतिहास, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र एवं भारतीय संस्कृति आदि विषयों पर १६ पुस्तकें लिखी हैं। इनमें से अधिकांश पुस्तकें विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में निर्धारित हैं और इतनी अधिक लोकप्रिय हुई हैं कि उनके कई-कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। 'भारत का सांस्कृतिक इतिहास', 'हिन्दू विवाह का संक्षिप्त इतिहास', 'प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास', 'भारत की सांस्कृतिक दिग्विजय' आदि आपकी इतिहास विषयक पुस्तकें हैं। राजनीतिशास्त्र में आपकी 'अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध', 'आधुनिक राजनीतिक चिंतन का इतिहास', 'प्रमुख राजनीतिक विचारक' नामक पुस्तकें उल्लेखनीय हैं। आपकी 'हिन्दू परिवार मीमांसा', 'भारतीय जनता तथा संस्थाएं' समाजशास्त्र की प्रमुख रचनाएं हैं। आपने रेम्जेम्यूर की 'शार्ट हिस्ट्री आफ ब्रिटिश कामनवेल्थ' का हिन्दी अनुवाद 'ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का संक्षिप्त इतिहास' के नाम से किया है। आपकी रचनाओं की उत्कृष्टता इसी बात से पता चलती है कि आपकी प्रायः सभी रचनाएं विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं से पुरस्कृत हो चुकी हैं। भारत सरकार के विधि मंत्रालय ने 'अन्तर्राष्ट्रीय कानून' को हिन्दी में कानून की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक होने के कारण दस हजार रुपए के प्रथम पुरस्कार से समादृत किया है। आप म०प्र०शासन साहित्य परिषद् के 'कौटिल्य' एवं

'मोतीलाल नेहरू' पुरस्कार से भी सम्मानित हो चुके हैं। इनके अतिरिक्त आपके निर्देशन में पंतनगर विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक पुस्तकों के अनुवाद व मौलिक लेखन का कार्य द्रुतगति से चल रहा है।

श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार ने वन्य प्राणियों के सम्बन्ध में अनेक सचित्र पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें 'अजगर' 'सांपों की दुनिया', 'सिंह', 'गेंडा', 'गजराज', 'तेन्दुआ, और 'चीता' तथा 'शेर' प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त आपने ओषधीय वनस्पतियों पर भी अनेक पुस्तकें लिखी हैं, जिनका उल्लेख यथास्थान किया जाएगा।

श्री सत्यभूषण 'योगी' वेदालंकार हिन्दी के अच्छे कवि हैं और कवि समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। 'योगी का वीरकाव्य', 'योगी की मधुशाला', 'योगी का सोऽहं काव्य' आदि आपकी रचनाएं हैं। 'कामायनी का सश्रद्ध नमन' आपकी शोधपूर्ण कृती है।

डा० अरविन्दकुमार देसाई वेदालंकार ने हिन्दी में अनेक मौलिक पुस्तकें लिखी हैं। 'भारतेन्दु और नर्मद का तुलनात्मक अध्ययन' आपका शोधपूर्ण ग्रन्थ है। आपका एक कहानी-संग्रह 'अभिनव कहानी कुंज' नाम से है। आपने छात्रों के उपयोग के लिए 'अभिनव गद्य भारती', 'हिन्दी भाषा प्रवेश' तथा' जनता की बोली' की रचना की है।

श्री वेदराज वेदालंकार ने कतिपय सुप्रसिद्ध लेखकों की अंग्रेजी पुस्तकों के हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत किए हैं। ये हैं: 'गांधी और गांधीवाद' (पट्टाभिसीतारमैया कृत), 'सत्य की खोज में (राधाकृष्णनकृत), कस्तूरबा(सुशीला नैयर कृत), रवीन्द्र प्रतिभा (कृष्ण कृपलानी कृत), रमण महर्षि (आर्थर आसबौर्न कृत) आदि।

श्री क्षितीश वेदालंकार हिन्दी के एक सफल एवं ख्यातिप्राप्त लेखक हैं। आपकी 'आर्य सत्याग्रह में गुरुकुल की आहुति', 'जातिभेद का अभिशाप', 'मधुर आकांक्षा', 'गांधी जी के हास्यविनोद', 'जलबिन्दु', आदि पुस्तकें उल्लेखनीय हैं। आप द्वारा संपादित 'सातवलेकर अभिनन्दन ग्रन्थ', 'मारीशस-स्मारिका', 'श्री कृष्ण संदेश' बहुत अच्छे बन पड़े हैं। आपने 'स्वेतलाना' नामक एक उपन्यास की भी रचना की है।

श्री विद्यासागर विद्यालंकार एक कुशल एवं सधे हुए लेखक हैं। आपकी हिन्दी में छः मौलिक तथा एक दर्जन अनूदित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके साथ ही भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपके ३०० से अधिक लेख सामयिक विषयों पर तथा ५० लेख वैज्ञानिक विषयों पर प्रकाशित हुए हैं।

श्री नवरत्न विद्यालंकार (सुमन्तराय देसाई) के 'प्रार्थना' एवं 'गांधी वानी' नामक दो संग्रह प्रकाशित हुए हैं। श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति ने 'भूमध्यसागर का रणक्षेत्र' की रचना की है।

हिन्दी में जंगल व जंगली प्राणियों से सम्बद्ध साहित्य, काव्य, उपन्यास आदि लिखने वालों में श्री उदयवीर 'विराज' वेदालंकार ने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। आपने लगभग ३० पुस्तकों की रचना की है। 'नेपालेश्वर', सम्राट् विक्रमादित्य', 'झबरी', 'मीडिया', 'असिधारा', 'वसन्त के फूल', 'वनराज के राज में', 'हाथियों का खेदा', 'हाथियों की खोज में', 'जंगल के रहस्य', 'हम हिन्दू हैं', 'तिरंगा झंडा', 'प्रेमदूती', 'नया अलोक', 'नयी छाया', 'रति विलाप' आदि आपकी प्रमुख एवं उल्लेखनीय कृतियां हैं। 'हाथियों का खेदा' पर आपको उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा १००० रुपए तथा 'बसन्त के फूल' पर ४०० रुपए के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

डॉ० योगेश्वरदेव आयुर्वेदालंकार ने 'जागरण' और 'ज्योत्स्ना' की रचना की है। आपकी 'ज्योत्स्ना' हरियाणा सरकार द्वारा १९६९ में पुरस्कृत हो चुकी है।

श्री आनन्दवर्धन विद्यालंकार हिन्दी में अच्छी कविताएं लिखते हैं। 'विहग', 'रश्मिहास', 'और 'सान्ध्यरव' नाम से आपके तीन काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए हैं।

श्री श्यामसुन्दर आयुर्वेदालंकार ने 'जीवन निर्माण' और 'स्वर्ग आश्रम' नामक जीवनोपयोगी पुस्तकों तथा श्री सत्यव्रत वेदालंकार ने 'अग्नीतकान्वय' और एक निबन्ध संग्रह की रचना की है।

श्री सत्यभूषण वेदालंकार ने 'लाला लाजपतराय', 'झांसी की रानी', 'महाराणा प्रताप', 'लोकमान्य तिलक' आदि महापुरुषों की जीवनियाँ; 'निबन्ध चन्द्रिका,' 'व्यापारिक पत्र' एवं 'आनुमानिक पत्र' आदि छात्रोपयोगी पाठ्यपुस्तकें लिखी हैं।

डॉ० जयकृष्ण विद्यालंकार ने हिन्दी में दस से भी अधिक आलोचनात्मक एवं शोधपूर्ण लेख लिखे हैं, जो केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की त्रैमासिक शोधपत्रिका 'गवेषणा' में प्रकाशित हुए हैं। श्री प्रताप विद्यालंकार की रोचक एवं भावपूर्ण कविताएं तथा लेख हिन्दी के प्रमुख पत्रों में छपते रहते हैं।

श्री हरिवंश वेदालंकार ने 'आज का हिन्दी व्याकरण' और 'हिन्दी निबन्ध रचना' का प्रणयन किया है।

डॉ० सत्यकाम वर्मा आयुर्वेदालंकार ने हिन्दी में उच्चस्तरीय छात्रोपयोगी आलोचनात्मक साहित्य का सृजन किया है। आपकी सबसे पहली पुस्तक 'आचार्य कृपलानी' है जो आपकी छात्रावस्था में ही (१९४६ में) प्रकाशित हो गई थी। आपकी 'सन्यासी : एक अध्ययन', 'गोदान : एक अध्ययन', 'हिन्दी साहित्यानुशीलन', 'हिन्दी का आधुनिक साहित्य', 'महाकवि प्रसाद', 'महाकवि पंत', 'जनकवि दिनकर', 'युगकवि तुलसी' उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

श्री शंकरदेव वेदालंकार कुशल राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ उच्चकोटि के लेखक भी हैं। आप द्वारा प्रणीत 'उल्टी खोपड़ी', 'माणिक्यम्मा योगिनी', 'अधिकार याद रख लिए, कर्तव्य भूल गये ?', 'इंदिरा गांधी समग्र रूप में' आदि रचनाएं उल्लेखनीय हैं।

श्री भारतभूषण विद्यालंकार ने सुयोग्य अनुवादक एवं संपादक के रूप में कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं। आप द्वारा अनूदित 'जापान का इतिहास' व 'चीनी पुनर्जागरण' तथा संपादित 'विदेशियों के लिए प्राइमर' (८०० पृष्ठ), 'देवनागरी लिपि अभ्यास पुस्तक', 'व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी कोश', 'चैम्बर्स अंग्रेजी-हिन्दी कोश' 'समेकित पारिभाषिक शब्दावली' और 'प्रशासन पदनाम शब्दावली' नामक पुस्तकों का प्रमुख स्थान है।

श्री चन्द्रभानु वेदालंकार, डॉ० भगतसिंह विद्यालंकार, श्री वेदकुमार वेदालंकार, डॉ० विजयवीर विद्यालंकार, तथा श्री ओम्प्रकाश विद्यालंकार ने मराठीभाषी होते हुए भी गुरुकुल विश्वविद्यालय की शिक्षा-दीक्षा के प्रभाव से हिन्दी साहित्य की जो सेवा की है, वह अविस्मरणीय रहेगी।

श्री चन्द्रभानु वेदालंकार ने 'हिन्दी साहित्य', 'विपात्र : मुक्ति की उपनिषद्' और 'भारतेन्दु के विचार : एक पुनर्विचार' नाम से तीन पुस्तकें लिखी हैं।

डॉ० भगतसिंह ने 'चिन्तन : अनुचिन्तन', 'कवित्रय', 'रामकथा के पात्रों के चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन', 'रामकथा और तुलसीदास' और 'कवितावली संदर्भ और संपर्क', 'बाल्मीकि रामायण में शस्त्रास्त्र' आदि शोधपूर्ण आलोचनात्मक कृतियाँ हिन्दी-साहित्य को दी हैं। साथ ही आपने २२ शालोपयोगी हिन्दी-पुस्तकों का संपादन किया है। आपके अनेक आलोचनात्मक लेख भी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

श्री वेदकुमार वेदालकार ने छात्रों की सुविधा को ध्यान में रखकर दो प्रमुख काव्यों की टीकाएं प्रस्तुत की हैं। डॉ० विजयवीर विद्यालंकार ने 'रस सिद्धांत विवेचन', 'दक्षिण में रामकथा', 'संत साहित्य में नाम स्मरण' नामक तीन शोधपूर्ण ग्रन्थों तथा 'विपंचिका' नामक काव्य की रचना की है। श्री ओम्प्रकाश विद्यालंकार ने 'प्रेमचन्द्र से मुक्ति बोध : औपन्यासिक यात्रा' लिखकर अपनी शोधवृत्ति का परिचय दिया है।

डॉ० ओम्प्रकाश वेदालंकार का शोधप्रबन्ध 'संत कबीर की योग साधना और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि' हिन्दी साहित्य की बहुमूल्य कृती है। आपने 'निबन्ध मंजूषा' नाम से एक निबन्ध संग्रह का भी सृजन किया है।

डॉ० सुरेशकुमार विद्यालंकार एक सुयोग्य भाषाविज्ञानी हैं। आपने शैली विज्ञान का गहन अध्ययन करके 'शैली और शैली विज्ञान', 'शैली विज्ञान' तथा 'शैली विज्ञान और प्रेमचन्द्र की भाषा' नामक तीन गवेषणापूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं। इसी विषय पर आपके बहुत से तुलनात्मक लेख भी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

श्री विजयकुमार विद्यालंकार महापुरुषों का जीवन परिचय लिखने में प्रवीण है। आपने 'इंदिरा गांधी', 'वीर सावरकर', 'लालबहादुर शास्त्री', 'राजा राममोहन राय' के जीवन चरित्र बहुत सुन्दर एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत किए हैं। आपकी 'राजा राममोहन राय' पुस्तक को उ० प्र० सरकार से पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है। आप द्वारा अनूदित 'हमारी विरासत', 'घर परिवार' काफी लोकप्रिय हुई है।

इनके अतिरिक्त श्री राजकुमार विद्यालंकार की 'धारा' (काव्यसंग्रह), श्री शंकरसिंह वेदालंकार की 'वाग्दान', 'एक महर्षि,' और 'एक समाज', श्री सम्मोद मित्र की 'ज्ञान की बातें', श्री सत्यवीर विद्यालंकार की 'ब्रह्मचर्य' आदि कृतियाँ भी उल्लेखनीय हैं।

गुरुकुल के स्नातकों ने हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य सुलभ कराने के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान किया है। कुछ स्नातकों ने विज्ञान की मौलिक पुस्तकों का सृजन किया है और कुछ ने अनुवाद के माध्यम से विज्ञान के छात्रों व अध्यापकों को अच्छी वैज्ञानिक पुस्तकें उपलब्ध करायी हैं।

श्री महामुनि विद्यालंकार कृत 'भौतिकी' विज्ञान की अनुपम तथा हिन्दी में संभवतः सर्वप्रथम मौलिक वैज्ञानिक पुस्तक है। श्री यज्ञदत्त विद्यालंकार ने दो खंडों में 'विज्ञान प्रवेशिका' की रचना की है। श्री सत्येन्द्रकुमार वेदालंकार ने बी० एस-सी० के छात्रों के लिए 'कार्बनिक रसायन' (दो भाग) नामक पुस्तक प्रकाशित की है।

श्री राजेन्द्रकुमार वेदालंकार और डा० विनोदचन्द्र विद्यालंकार पंतनगर विश्वविद्यालय में कृषि विषयक अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकों को हिन्दी में सुलभ कराने के लिए उनके अनुवाद तथा मौलिक पुस्तकों के संपादन में सहयोग देने के कार्य में व्यस्त हैं। श्री राजेन्द्रकुमार वेदालंकार द्वारा अनूदित 'पादप रोगविज्ञान' 'पशु प्रजनन', 'भारत में मृदा सर्वेक्षण तथा संपादित 'फूलों के रोग', 'फसलों के रोग', 'सब्जियों के रोग' आदि पुस्तकें उल्लेखनीय है। डा० विनोदचन्द्र विद्यालंकार अब तक लगभग १० पुस्तकों का अनुवाद कर चुके हैं जिनमें से 'कवकनाशी और पादप रोग नियंत्रण,' 'गाय भैंस की भारतीय नसलों के अभिलक्षण', व 'भारत में मृदा संरक्षण' नामक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 'फल जैविकी', 'प्रसार शिक्षा' आदि शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली हैं। आपने 'उत्तरप्रदेश कृषि मानचित्रावली', 'आनुवंशिकी के प्रारंभिक सिद्धांत, आदि अनेक पुस्तकों के संपादन में भी सहयोग दिया है।

हिन्दी में साहित्य सृजन के अलावा, गुरुकुल के स्नातक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए रोचक, ज्ञानवर्धक, गवेषणात्मक लेख, मनोरम कविताएं, कहानियाँ, यात्रा वृत्त आदि लिखकर, हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अनुसंधान करके तथा विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में हिन्दी साहित्य का अध्यापन करके हिन्दी सेवा का कार्य कर रहे हैं।

पत्रकारिता के क्षेत्र में स्नातक

गुरुकुल कांगड़ी के स्नातकों को पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अच्छी ख्याति प्राप्त हुई है। हिन्दी का शायद ही कोई ऐसा पत्र होगा, जिसके संपादकीय विभाग में गुरुकुल के स्नातकों ने कार्य न किया हो।

स्व० श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति को दिल्ली में हिन्दी पत्रकारिता का जनक माना जाता है। बाल्यावस्था से ही पत्रकारिता की ओर आपका विशेष झुकाव था। जब आप लगभग ७–८ वर्ष के थे, तभी 'सत्य प्रकाशक' नाम से एक हस्तलिखित पत्रिका निकालते थे। स्नातक बनने से पूर्व ही आपने अपने पिता स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा निकाले जाने वाले 'सद्धर्म प्रचारक' के दैनिक संस्करण के संपादन का दायित्व संभाला और उसे काफी समय तक सफलतापूर्वक निभाया। १९१३ में साप्ताहिक सद्धर्म प्रचारक आपके संपादकत्व में निकलने लगा, परन्तु आपके मन

में तो कोई दैनिक पत्र निकालने की प्रबल इच्छा थी जो कालान्तर में 'विजय' के रूप में फलवती हुई। इस पत्र के माध्यम से आप दिल्ली के यशस्वी पत्रकार एवं साहित्यकार के रूप में प्रख्यात हुए । इसके बाद आपने जनवरी १६५३ में दिल्ली से साप्ताहिक 'सत्यवादी' तथा दैनिक 'वैभव' या 'भविष्य' का संपादन किया किन्तु किन्हीं अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण 'वैभव' का संपादन छोड़ दिया। कुछ दिन बाद, यानी २४ अप्रैल १६२३ को आपने 'अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्य न पलायनम्'? इस ध्येय वाक्य को लेकर दैनिक 'अर्जुन का प्रथम अंक निकाला और 'सत्यवादी'-'अर्जुन' के साप्ताहिक के रूप में निकलता रहा। 'अर्जुन' ने अपने जीवन काल में आर्य समाज और सारे देश की जो सेवा की, वह सर्वविदित है । बाद में राजनीतिक कारणों से 'अर्जुन' के नाम को बदलना पड़ा और यह 'वीरअर्जुन' के नाम से प्रकाशित होने लगा। भारत का विभाजन होने के बाद आर्थिक स्थिति के बिगड़ जाने के कारण 'वीरअर्जुन' के प्रकाशन के २५ वर्ष पूरे हो जाने के बाद आपको इसे बन्द कर देना पड़ा। आपने कुछ समय बम्बई के 'नवराष्ट्र' और दिल्ली के 'जनसत्ता' का भी संपादन सफलतापूर्वक किया। इन सभी पत्रों के माध्यम से आपकी स्वतन्त्र विचारधारा और राष्ट्रीय भावना खुल कर सामने आई । आपकी संपादकीय टिप्पणियाँ व अग्रलेख जहाँ एक ओर भारतीयों के मन में राष्ट्रप्रेम व देश पर मर मिटने की भावना उत्पन्न करते थे, वहीं विरोधी के हृदय पर विष बुझे बाण की तरह प्रहार करते थे। यही कारण रहा कि तत्कालीन शासक तथा उनके पिट्ठू आपको अपना प्रबल शत्रु समझते थे। आपके प्रयत्नों से हिन्दी पत्रकार-सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ और आप दो बार उसके प्रधान भी चुने गये ।

पत्रकारिता के क्षेत्र में पुराने स्नातकों में पं० इन्द्र जी के बाद स्व० श्री सत्यदेव विद्यालंकार का प्रमुख स्थान है। आपको अध्ययन काल से ही पत्रकारिता का शौक था। गुरुकुल में पढ़ते समय आप 'राजहंस', 'अद्भुत', 'विजय-दशमी' तथा 'समालोचक' नामक हस्तलिखित पत्र निकाला करते थे । आपने पत्रकारिता की दीक्षा 'सद्धर्म प्रचारक' व श्रद्धा से ली । स्नातक होने के पश्चात् आपने अपने पत्रकारिता-जीवन की शुरुआत पंडित इन्द्र जी के मार्गदर्शन में ही की थी और उन्हीं के साथ विजय में कार्य करना प्रारम्भ किया था । आजकल हिन्दी के जितने भी प्रमुख समाचार पत्र निकलते हैं उनमें से अधिकांश की आधारशिला रखने वालों में आपका प्रमुख स्थान है । आप दैनिक 'हिन्दुस्तान' के आदि संपादक थे और 'नवभारत टाइम्स' की शुरुआत भी आपने ही की। आपने 'राजस्थान केसरी 'मार-वाड़ी' विश्वमित्र', 'अमर भारत', 'नवयुग', 'प्रणवीर', 'नवप्रभात' आदि पत्रों के संपादन का कार्य बड़ी सफलता के साथ किया और सभी पत्रों को प्रगति पथ पर अग्रसर किया।

स्व० श्री पं० भीमसेन विद्यालंकार ने १६२४ में सर्वप्रथम वीर अर्जुन में प्रधान संपादक के रूप में कार्य करना प्रारम्भ किया और लगभग १ वर्ष तक इसमें सफलता के साथ कार्य करते रहे । कानूनी तौर पर अर्जुन के पहले संपादक आप ही थे। १६२५ में आपने लाहौर से साप्ताहिक 'सत्यवादी' का प्रकाशन प्रारम्भ किया । १६२६ में आप लोक सेवक मण्डल के साप्ताहिक पत्र 'पंजाब केसरी' के सम्पादक बने। १६३३ में आपने 'अलंकार' मासिक निकाला जिसका नाम बाद में 'हिन्दी सन्देश' रखा गया । आपने राजपाल एण्ड सन्स लाहौर की ओर से 'राजपाल' मासिक का सम्पादन भी किया। आपको देश भक्ति विषयक लेख लिखने पर १६४७ से पूर्व दो बार जेलयात्रा भी करनी पड़ी। आप साप्ताहिक पत्र 'आर्य' के भी संपादक रहे ।

स्व० श्री रामगोपाल विद्यालंकार अपने समय के जाने-माने पत्रकार थे। आपने अपने सम्पादकीय जीवन की शुरुआत नागपुर से 'प्रणवीर' निकाल कर की। आप कुछ समय कलकत्ता के 'विश्वमित्र' का भी सम्पादन करते रहे । आपने लगभग २० वर्ष तक 'अर्जुन' का सम्पादन किया और उसे सफलता के चरम पर पहुँचा दिया । 'अर्जुन' के संपादन और प्रबन्ध के साथ आपका इतना घनिष्ठ सम्बन्ध था कि हिन्दी पत्रकार जगत् में आपको तथा अर्जुन को

एक साथ स्मरण किया जाता था। बाद में कुछ समय आपने दैनिक 'हिन्दुस्तान' और 'नवभारत टाइम्स' में भी कार्य किया।

कौन ऐसा भारतीय पाठक होगा जो श्री सत्यकाम विद्यालंकार के नाम से भली भाँति परिचित न हो। आपकी गणना भारत के प्रमुख पत्रकारों में की जाती है। आपने पहले कुछ काल तक 'अर्जुन' के सम्पादक के रूप में कार्य किया और उसमें सरकार की दृष्टि में आपत्तिजनक किसी समाचार के छप जाने से आपको पं० इन्द्र जी के साथ जेल यात्रा करनी पड़ी थी। १९३१ में आप दिल्ली के 'नवयुग' के सम्पादक बनाए गये। आपने श्री देशबन्धु गुप्ता के 'तेज' की ओर से प्रकाशित 'विजय' साप्ताहिक तथा 'आपबीती' का भी योग्यतापूर्वक सम्पादन किया। १९५०में आपने 'धर्मयुग' परिवार में उसके मुखिया के रूप में कदम रखा। आपके संपादकत्व में 'धर्मयुग' ने एक सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्र के रूप में पर्याप्त ख्याति अर्जित की। १९६१ में आपने 'नवनीत' हिन्दी डाइजेस्ट तथा इसके गुजराती व मराठी संस्करणों का कार्य भार सम्भाला और निरन्तर १० वर्ष तक उसका सम्पादन करते रहे। आपके कार्यकाल में 'नवनीत' ने काफी लोकप्रियता प्राप्त की।

श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार गुरुकुल के स्नातक होने के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (लाहौर) के साप्ताहिक पत्र 'आर्य' के प्रधान सम्पादक नियुक्त हुए और ६ वर्ष तक लगातार इसका सम्पादन करते रहे। १९३४ में आप 'नवयुग' दैनिक के प्रधान सम्पादक बने। आपने दैनिक 'हिन्दुस्तान' के संयुक्त सम्पादक, 'नवयुग' साप्ताहिक के सम्पादक, दैनिक 'नवभारत' के संयुक्त सम्पादक तथा 'जनरुचि' के संपादक रूप में कई वर्षों तक कार्य किया और इन सभी पत्रों को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

निर्भीक एवं सत्यनिष्ठ पत्रकार श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार साप्ताहिक 'वीरअर्जुन' के आदि संपादक के रूप में जाने जाते हैं। इससे पूर्व १९३२ में आपने पं० इन्द्र जी के साथ 'वीर अर्जुन' दैनिक के सम्पादकीय विभाग में कार्य किया। आप कुछ समय 'त्यागभूमि' के सम्पादक रहे। १९५२ में आप अर्थशास्त्र विषयक मासिक पत्रिका 'सम्पदा' के सम्पादक बने और आज भी आप उसी में कार्य कर रहे हैं।

श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार न केवल ख्याति प्राप्त लेखक हैं, बल्कि उन्होंने सुयोग्य पत्रकार के रूप में भी पर्याप्त प्रसिद्धि पाई है। गुरुकुल से स्नातक बनने के बाद आप सर्वप्रथम देहरादून की 'ज्योति' के सहसम्पादक बने। १९३१ में आपने लाहौर में दैनिक 'जन्मभूमि' का संपादन एवं प्रकाशन किया। विभाजन के बाद आपने भारत सरकार के विदेशी मामलों के मासिक पत्र 'विश्वदर्शन' का संपादन किया। यह अपने ढंग का हिन्दी में प्रथम और अन्तिम पत्र था लगभग ६ वर्ष तक इसमें कार्य करने के बाद आप भारत सरकार की सांस्कृतिक मासिक पत्रिका 'आजकल' के संपादक नियुक्त हुए। आपके सुझाव पर ही सरकार ने 'आजकल' को भारतीय साहित्य का प्रतिनिधि पत्र बनाया था। मई १९६३ में आपने बम्बई में टाइम्स ऑफ इन्डिया की भारतीय कहानियों की मासिक प्रतिनिधि पत्रिका 'सारिका' का सम्पादन कार्य संभाला और उसे दक्षतापूर्वक निभाया।

स्व०•श्री पं० वंशीधर विद्यालंकार हिन्दी प्रचार मण्डल हैदराबाद की साहित्यिक पत्रिका 'अजन्ता' के संपादन से न केवल हिन्दी जगत् में, बल्कि संम्पूर्ण विश्व में अमर हो गए।

श्री अमरनाथ विद्यालंकार ने लगभग तीन वर्ष तक सर्वेन्टस ऑफ पीपल सोसायटी के प्रमुख पत्र 'पंजाब केसरी' का सम्पादन किया। श्री विश्वनाथ विद्यालंकार और श्री चन्द्रमणि विद्यालंकार ने १९२१ में 'वैदिक सन्देश' नामक मासिक पत्र का, श्री पं०धर्मदेव विद्यामार्तण्ड ने 'गुरुकुल पत्रिका' का, डा०हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार ने 'आर्योदय' साप्ताहिक का, श्री ऋषिदेव वेदालंकार ने आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश के साप्ताहिक 'आर्यमित्र' का कुशलतापूर्वक

सम्पादन किया । श्री भगवतदत्त वेदालंकार कई वर्षों तक 'गुरुकुल पत्रिका' के सम्पादक के रूप में कार्य करते रहे हैं। डा० रामनाथ वेदालंकार गुरुकुल विश्वविद्यालय की शोध-पत्रिका 'शोध भारती' के प्रधान सम्पादक रहे हैं।

श्री दीनानाथ सिद्धांतालंकार ने पत्रकारिता के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान दिया है। गुरुकुल से स्नातक होते ही आप गुरुकुल कांगड़ी के साप्ताहिक पत्र 'श्रद्धा' में उपसम्पादक बने। १९२३ में आपने पं० इन्द्र जी के साथ 'अर्जुन' में सहसम्पादक के रूप में कार्य किया। आपने बम्बई के 'राष्ट्रदूत' और दिल्ली के 'वीर अर्जुन' में भी सह-संपादक के रूप में कार्य करके पंडित इन्द्र जी को अपना पूरा सहयोग दिया। आप लाहौर के 'विधवा बन्धु', दिल्ली के 'जीवन पथ', 'ग्राम सहयोगी' एवं 'भारत सेवक' नामक मासिक पत्रों के संपादक रहे। इसके अतिरिक्त, 'विश्वमित्र' दैनिक, 'आर्य' साप्ताहिक, 'आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका,' 'जनसत्ता' तथा 'आर्य जगत्' भी आपकी लेखनी से अछूते नहीं रहे।

श्री वैद्य निरजनदेव आयुर्वेदालंकार ने 'अर्जुन' (दिल्ली), 'लोकमत' (जबलपुर), जन्मभूमि' (लाहौर) नामक दैनिक पत्रों में सह संपादक के पद पर कार्य किया और उन्हें अपनी सम्पादन-कला से बहुत लोकप्रिय बनाया।

श्री परम वेदालंकार ने दिल्ली के कई दैनिक समाचार पत्रों के सम्पादकीय विभाग में कार्य किया। बाद में आपने दिल्ली से ही 'दैनिक समाचार' नामक स्वतंत्र पत्र निकाला।

श्री शिवकुमार वेदालंकार ने कुछ महीने 'अर्जुन' में उपसंपादक के रूप में कार्य करने के बाद नवम्बर १९३९ से 'हिन्दुस्तान' दैनिक के संपादकीय विभाग में कार्य करना आरम्भ किया। आप पहले कुछ वर्ष उप संपादक रहे और अब मुख्य उपसंपादक के पद पर कुशलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं।

श्री आनन्द विद्यालंकार आत्म प्रचार रहित,निष्ठावान् पत्रकार हैं। आपके पत्रकार-जीवन का शुभारंभ १९३९ में 'नवराष्ट्र' से हुआ, जिसमें आपने उपसंपादक के रूप में कार्य किया। इसके बाद आप 'विश्वमित्र' और 'अर्जुन' में भी कार्य करते रहे। १९४७ में आपने 'नवभारत टाइम्स' में प्रवेश किया और तब से वहीं वरिष्ठ सहसंपादक और अग्रलेख-लेखक का कार्य कर रहे हैं।

श्री अमृतपाल वेदालंकार ने १९४७ में जालन्धर के साप्ताहिक पत्र 'आकाशवाणी' के संपादक के रूप में कार्य किया। केनिया (अफ्रीका) में आप १७ वर्ष तक 'अमर भारती' का संपादन करते रहे और आजकल लीड्स (ग्रेट ब्रिटेन) में विश्व हिन्दू परिषद् के 'हिन्दू विश्व' का संपादन कर रहे हैं।

श्री कृष्णचन्द्र वेदालंकार प्रतिभाशाली कुशल पत्रकार हैं। पहले कुछ समय तक आप बम्बई के 'माहेश्वरी' के संपादक रहे। १९३८-४९ में आपने दैनिक 'वीर अर्जुन' में सह-संपादक और अग्रलेख-लेखक के रूप में उल्लेखनीय कार्य किया। आजकल आप 'हिन्दुस्तान' दैनिक में सह संपादक है।

श्री धीरेन्द्रकुमार विद्यालंकार ने न केवल भारतीय, बल्कि विदेशी दूतावासों से निकलने वाले पत्रों का भी संपादन किया है। आपने १९३९-५१ तक 'वीर अर्जुन' दैनिक के संपादकीय विभाग में विभिन्न पदों पर कार्य करने के बाद १२ वर्ष अमेरिकी दूतावास के साप्ताहिक पत्र 'अमेरिकन रिपोर्टर' में कार्य किया और उसी में हिन्दी संपादक के पद पर कार्य करते रहे।

श्री क्षितीश कुमार वेदालंकार ख्याति प्राप्त विद्वान् एवं सफल पत्रकार हैं। आपने १९४७ में 'अर्जुन' के संपादकीय विभाग में कार्य करना शुरू किया और पांच वर्ष तक उसी में कार्य करते रहे। १९५२ से आप दैनिक 'हिन्दुस्तान' में सह-संपादक एवं अग्रलेख-लेखक हैं। आपके अग्रलेख काफी रोचक और प्रभावशाली होते हैं।

श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति ने पत्रकारिता की दीक्षा 'अर्जुन' से प्राप्त की थी। आपने कई वर्षों तक नागपुर के दैनिक व साप्ताहिक 'लोकमत', बम्बई के दैनिक 'हिन्दुस्तान' (बाद में लोकमान्य), साप्ताहिक 'छाया' तथा नागपुर

की 'प्रतिमा' मासिक में सम्पादक के रूप में कार्य किया। इस समय आप 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में सह संपादक हैं और एक अच्छे पत्रकार और लेखक के रूप में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

श्री विद्यासागर विद्यालंकार ने सर्वप्रथम 'अर्जुन' में संपादक एवं प्रबन्धक के रूप में कार्य किया। उसके बाद 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के संपादकीय विभाग में कार्यरत रहे। आप नवभारती सहकार प्रकाशन प्रतिष्ठान की मासिक पत्रिका 'प्रकर' का संपादन एवं प्रकाशन कर रहे हैं।

श्री सूर्यदेव वेदालंकार कुशल एवं ख्याति प्राप्त पत्रकार हैं। पहले आप वाराणसी के दैनिक 'आज' के संपादकीय विभाग में थे। आजकल आप लखनऊ से प्रकाशित होने वाले 'नवजीवन' दैनिक के उप संपादक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

श्री सुभाषचन्द्र वेदालंकार ने अपने पत्रकारिता-जीवन का आरम्भ 'शिक्षासुधा' नामक पत्रिका के संपादक के रूप में किया था। इस समय आप दिल्ली में प्रकाशन-विभाग की 'योजना' पत्रिका का संपादन कर रहे हैं।

श्री उदयवीर 'विराज' वेदालंकार ने 'वीर अर्जुन', 'हिन्दी मिलाप' और 'धर्मयुग' के संपादकीय विभागों में कार्य करने के अतिरिक्त युद्ध-यात्रा और शिकार पर 'हेमगंगा' नाम से एक मासिक पत्रिका भी प्रकाशित की।

श्री सतीश (दत्तात्रेय) विद्यालंकार कुशल पत्रकार है। आपने १९४१ में 'आर्यभानु' (हैदराबाद) के संपादन के साथ ही पत्रकार जीवन में प्रवेश किया और उसके बाद निरंतर 'प्रभात' (जयपुर), 'लोकवाणी' (जयपुर), 'अमर भारत' (दिल्ली) तथा 'वीर अर्जुन' (दिल्ली) आदि पत्रों में संपादन कार्य करते रहे। इस समय आप दैनिक 'हिन्दुस्तान' में मुख्य उप संपादक हैं।

श्री ब्रह्मदत्त विद्यालंकार 'जागृति', 'लोकमत' आदि पत्रों में कुशलतापूर्वक संपादन-कार्य करते रहे हैं। आजकल आप 'नवभारत टाइम्स' में उपसंपादक तथा अग्रलेख-लेखक के रूप में कार्य कर रहे हैं। आप द्वारा विभिन्न योजना-परियोजनाओं आदि के बारे में लिखी गई रिपोर्टें बहुत अधिक पसन्द की जाती हैं।

'नवनीत' हिन्दी डाइजेस्ट के संपादक श्री नारायणदत्त विद्यालंकार 'हिन्दी स्क्रीन' के माध्यम से पत्रकारिता में प्रविष्ट हुए। उसके बाद आप खादी ग्रामोद्योग कमीशन (बम्बई) के प्रकाशन विभाग में संपादक रहे। आपने भारतीय विद्या भवन की पत्रिका 'भारती' का संपादन भी किया। १९५८ में आप 'नवनीत' के सहायक संपादक बने और अब १९६८ से इसी के संपादक हैं। नवनीत में विषयों की विविधता आपकी सूझबूझ और परिश्रम का ही परिणाम है।

डा० अशोक कुमार आयुर्वेदालंकार मध्यप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख मासिक पत्र 'आर्यावर्त' और 'मेडिकल ऐसोशिएशन गजट' के प्रमुख संपादक हैं। डा० देवेन्द्र कुमार विद्यालंकार ने काफी समय तक 'वीर अर्जुन' तथा 'जनसत्ता' में सह संपादक का कार्य किया। श्री हरिवंश वेदालंकार कई वर्षों तक 'गुरुकुल' तथा 'आर्य' के कुशल संपादक रहे। श्री वेदराज वेदालंकार १९४५-४७ में बनारस व कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले 'सात्विक जीवन' के संपादक रहे। श्री वीरेन्द्र वेदालंकार ने कुछ समय तक दैनिक 'हिन्दुस्तान' के संपादकीय विभाग में कार्य किया है। डा० जयकृष्ण विद्यालंकार केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा की त्रैमासिक पत्रिका 'गवेषणा' का संपादन कर रहे हैं और श्री सच्चिदानन्द विद्यालंकार पटना के 'प्रदीप' दैनिक के उपसंपादक हैं। कविराज पुरुषोत्तमदेव मुलतानी आयुर्वेदालंकार 'आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका' (दिल्ली) के संपादक हैं। श्री जगदीश आयुर्वेदालंकार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (लाहौर) के साप्ताहिक पत्र 'आर्य' के उपसंपादक रहे और संप्रति अंग्रेजी दैनिक 'ट्रिब्यून' में मुख्य उप संपादक हैं। श्री रवीन्द्र आयुर्वेदालंकार अरविंदाश्रम के दो प्रमुख मासिक 'पत्रों-पुरोधा' और 'अग्निशिखा' का संपादन कर रहे हैं। श्री विद्यारत्न वेदालंकार कुछ वर्ष दिल्ली के 'नेताजी' के सह संपादक रहे और उसके बाद से 'नवभारत टाइम्स' के संपादकीय विभाग में उप संपादक के रूप में कार्यरत हैं। श्री गुरुदत्त वेदालंकार केन्द्रीय सूचना सेवा में विभिन्न पत्र-

पत्रिकाओं का संपादन कर रहे हैं। कुछ समय आप 'योजना' के भी संपादक रहे। स्व० श्री यशपाल वेदालंकार ने सर्व-प्रथम कानपुर के 'नागरिक' का संपादन किया और उसके बाद जीवनपर्यन्त 'हिन्दुस्तान' दैनिक के संपादकीय विभाग में कार्य करते रहे। श्री सत्यभूषण योगी वेदालंकार ने शिमला से प्रकाशित होने वाले 'प्रदीप' के सहायक संपादक के रूप में कई वर्ष तक कार्य किया। श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार गोरखपुर से प्रकाशित होने वाले 'आरोग्य' के संपादक रहे।

आयुर्वेद के क्षेत्र में स्नातक

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल की स्थापना करते समय प्राचीन भारतीय संस्कृति के पुनरुद्धार के साथ-साथ प्राचीन चिकित्सा पद्धति के उद्धार का भी संकल्प लिया था। फलत: सन् १९१४ के लगभग गुरुकुल में स्नातक कक्षाओं में वैकल्पिक विषय के रूप में आयुर्वेद का पाठ्यक्रम भी पढ़ाया जाने लगा। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, त्यों-त्यों छात्रों में आयुर्वेद के प्रति बढ़ती हुई रुचि को देख कर पृथक् से एक आयुर्वेद महाविद्यालय खोलने की आवश्यकता अनुभव होने लगी और १९२४ में इसकी स्थापना कर दी गई।

इस महाविद्यालय के पाठ्यक्रम में आयुर्वेद और ऐलोपैथी, दोनों का समन्वय रखा गया था और शुरू से इसका स्तर इतना ऊंचा रखा गया कि इसने न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी अच्छी ख्याति प्राप्त की। परिणामतः इस महाविद्यालय से 'आयुर्वेदालंकार' की उपाधि प्राप्त अनेक स्नातक यूरोप के विश्वविद्यालयों में एम० डी० परीक्षा के लिए सीधा प्रवेश पा सके और उन्होंने प्रथम श्रेणी में उपाधि प्राप्त करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की। डा०धर्मानन्द आयुर्वेदालंकार, डा० नारायणदत्त आयुर्वेदालंकार, डा० राजेश्वर आयुर्वेदालंकार, डा० राजीव आयुर्वेदालंकार, डा० सुरेन्द्रकुमार आयुर्वेदालकार, डा० महेन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार, डा० राजपाल आयुर्वेदालंकार तथा डा० भूपेन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार ने म्यूनिख से ही पी-एच० डी० प्राप्त की और रोम, वियना व बर्लिन से कुछ अन्य उपाधियाँ भी प्राप्त की। इस महाविद्यालय से निकले हुए स्नातक चिकित्सा के क्षेत्र में अपनी कार्यकुशलता एवं सेवाभावी प्रकृति के कारण काफी लोकप्रिय एवं सफल चिकित्सक के रूप में विख्यात हुए हैं। कुछ स्नातकों ने रोग विशेष में विशेषज्ञता प्राप्त की है। इनमें श्री ब्रह्मानन्द विद्यालंकार, श्री विद्याधर विद्यालंकार, डा० धर्मानन्द केसरवानी, डा० मेधाव्रत आयुर्वेदालंकार आदि उल्लेखनीय हैं।

स्व० श्री ब्रह्मानन्द विद्यालंकार आयुर्वेदाचार्य ने प्लेग, बोन टी० बी० व कैंसर पर अनुसंधान करके उनके उपचार के लिए उपयुक्त औषधियाँ खोजीं, जिनसे कुछ रोगियों को लाभ भी पहुँचा। आपने इस कार्य के लिए आगरा में कैंसर अनुसंधान संस्था की स्थापना भी की थी। श्री स्व० विद्याधर विद्यालंकार ने राजयक्ष्मा रोग पर शोध करके 'राजेश्वरी' एवं मलेरिया के लिए 'मालती' नामक औषधियों का आविष्कार किया। डा० धर्मानन्द आयुर्वेदालंकार ने क्षयरोग की चिकित्सा के लिए वक्ष के शल्यकर्म में दक्षता प्राप्त की है तथा भुवाली सेनीटोरियम में संभवतः वक्ष का प्रथम शल्यकर्म आपने ही किया था। डा० मेधाव्रत आयुर्वेदालंकार ने नेत्ररोगों में विशेषज्ञता प्राप्त करके हजारों रोगियों को नेत्रदान दिए।

गुरुकुल के कुछ स्नातक विभिन्न आयुर्वेद महाविद्यालयों में भी उच्च पदों पर कार्य कर रहे है। वैद्य रणजीतराय आयुर्वेदालंकार आयुर्वेद महाविद्यालय सूरत में तथा डा० ब्रह्मदत्त शर्मा आयुर्वेदालंकार तिबिया कालेज दिल्ली में वर्षों तक प्रधानाचार्य के रूप में कार्य करते रहे। वैद्य सुरेन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार आर्य कन्या शुद्ध आयुर्वेद महाविद्यालय बड़ोदा में, डॉ० अनन्तानन्द आयुर्वेदालंकार गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय में, और डॉ० विनयकुमार आयुर्वेदालंकार

पटियाला के राजकीय आयुर्वेद कालेज में प्रधानाचार्य हैं। डा० क्रांतिकृष्ण आयुर्वेदालंकार, डा० राजेन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार, डा० वासुदेव आयुर्वेदालंकार, डा० नरेन्द्रपाल आयुर्वेदालंकार गुरुकुल के आयुर्वेद महाविद्यालय में अपने विषय के निष्णात उपाध्याय हैं। डा० ब्रह्मस्वरूप आयुर्वेदालंकार कुरुक्षेत्र के श्रीकृष्ण आयुर्वेदिक कालेज में निदान चिकित्सा के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हैं डा० अंगिरादेव आयुर्वेदालंकार स्टेट आयुर्वेद कालेज लखनऊ, डा० अविनाशचन्द्र आयुर्वेदालंकार अतर्रा आयुर्वेद कालेज, डा० वेदप्रकाश आयुर्वेदालंकार आयुर्वेद कालेज इंदौर, डा० प्रभातकुमार अयुर्वेदालंकार एवं डा० शम्भूनाथ आयुर्वेदालंकार राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय जम्मू तवी में तथा डा० बालकृष्ण आयुर्वेदालंकार पटियाला आयुर्वेद कालेज में अपने-अपने विषय के रीडर के पद पर कार्यरत हैं। डा० सत्यदेव आयुर्वेदालंकार चंडीगढ़ में पंजाब के आयुर्वेद विभाग में उप निदेशक हैं। अधिकांश स्नातक स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य में व्यस्त हैं और धन व ख्याति, दोनों अर्जित कर रहे हैं। बहुत से स्नातक विभिन्न प्रान्तों के राजकीय चिकित्सालयों में सेवारत हैं।

गुरुकुल के अनेक स्नातकों ने आयुर्वेद विज्ञान के क्षेत्र में गंभीर विचारक, लेखक, अन्वेषक तथा विद्वान् के रूप में भी पर्याप्त प्रसिद्धि पाई है और आयुर्वेद-साहित्य को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान किया है।

श्री वैद्य धर्मदत्त विद्यालंकार आयुर्वेद के धुरन्धर विद्वान् एवं लेखक हैं। आपने 'आयुर्वेद द्रव्यगुणविज्ञान', 'त्रिदोष विमर्श', 'आधुनिक चिकित्साशास्त्र', 'त्रिदोष संग्रह' तथा 'आयुर्वेदिक इन्टरप्रिटेशन ऑफ मेडिसन' नाम से गवेषणात्मक और महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं। 'आयुर्वेद द्रव्यगुण विज्ञान' में पाश्चात्य विज्ञान के साथ आयुर्वेद का समन्वय बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक इस विषय की प्रथम पुस्तक है। आपकी 'आधुनिक चिकित्सा शास्त्र' और 'त्रिदोष संग्रह' क्रमशः १९६६ और १९६८ में उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत की जा चुकी हैं। 'त्रिदोष विमर्श' आपकी संस्कृत-कृती है।

आयुर्वेद के सुप्रसिद्ध ग्रन्थों के व्याख्याकार श्री विद्याधर विद्यालंकार ने 'योग रत्नाकर', 'भैषज्य रत्नावली', 'रसेन्द्रसारसंग्रह', 'रसतरंगिणी', 'गदनिग्रह', 'अनुभूतयोगमाला', 'भावप्रकाश' आदि का सटीक अनुवाद किया है, जो काफी लोकप्रिय हुए। इन पर आपको अनेक विशिष्ट पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। आप आयुर्वेद के महान् ग्रन्थ 'रस-गंगाधर' का अनुवाद पूरा करना चाहते थे, किन्तु, जीवन यात्रा के पूर्ण हो जाने के कारण यह अपूर्ण ही रह गया।

ख्यातिप्राप्त विद्वान् श्री जयदेव विद्यालंकार ने आयुर्वेद के अनेक ग्रन्थों के प्रामाणिक अनुवाद एवं टीकाएं की हैं। आपने लाहौर के कविराज नरेन्द्रनाथ मिश्र की प्रेरणा से 'भैषज्यरत्नावली' का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया, जिसमें औषधि की मात्रा, उसके विषय में आवश्यक सूचनाएं, विशेष निर्देष, पाठभेद आदि दिए गए हैं। यह अपने ढंग की निराली टीका थी। इसके बाद आपने अपने पिछले अनुभवों से लाभ उठाकर 'चरकसंहिता' और 'चिकित्साकलिका' का भी अनुवाद किया। अनुवाद के अतिरिक्त आपने नौ प्राचीन ग्रन्थों-'रसहृदयतंत्र' और 'रसेन्द्र चूड़ामणि'—के संशोधित तथा टिप्पणीयुक्त संस्करण प्रकाशित किए। आप द्वारा संपादित 'चक्रदत्त' की शिवदास सेन टीका काफी महत्वपूर्ण है।

आयुर्वेद शास्त्र के पारंगत विद्वान् भिषग्रत्न श्री अत्रिदेव विद्यालंकार ने १५० पृष्ठों से लेकर १८०० पृष्ठों तक के लगभग ३० ग्रन्थों की रचना की है। शायद ही आयुर्वेद की कोई ऐसी संहिता बची हो, जिस पर आपने कार्य न किया हो। आपकी प्रथम पुस्तक 'जीवन विज्ञान' है जिसे आपने स्नातक होने के कुछ ही समय बाद लिखा था। आपने 'चरक संहिता' 'सुश्रुत संहिता', 'प्रत्यक्षशारीरम्', 'अष्टांगसंग्रह', 'अष्टांगहृदय', 'जीवानन्दम्' नामक महत्वपूर्ण ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद तथा 'रसेन्द्रसारसंग्रह' और 'रसरत्नसमुच्चय' का संपादन किया है। साथ ही आपने अनेक मौलिक पुस्तकें भी लिखी हैं जिनमें 'चरक संहिता' का अनुशीलन', 'संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद', 'आयुर्वेद का बृहत्

इतिहास', 'शल्यतंत्र', 'भैषज्यकल्पना', 'भारतीय रसपद्धति', 'प्राचीन भारत में प्रसाधन', 'स्वास्थ्यविज्ञान', 'आत्रेय वचनामृत', 'योगचिकित्सा', 'स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग' आदि प्रमुख हैं। आपकी एक पुस्तक 'संस्कारविधि विमर्श' भी है जिसमें सभी संस्कारों का आयुर्वेद की दृष्टि से महत्व प्रदर्शित किया गया है।

गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी में लगभग ३५ वर्ष तक प्रधान वैद्य व निर्माण विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्य करने वाले श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने अपने अनुभवों के आधार पर 'आसव-अरिष्ट' नामक पुस्तक की रचना की। यह पुस्तक उस समय इस दृष्टि से अपने विषय की प्रथम रचना थी कि इसमें आसव में मद्य की मात्रा जानने तथा निर्माण से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई थीं।

वैद्य श्री निरंजन देव आयुर्वेदालंकार न केवल सिद्धहस्त लेखक व कवि ही हैं, बल्कि आयुर्वेद के मर्मज्ञ विद्वान् भी हैं। आपने उत्तर प्रदेश की आयुर्वेदिक तिब्बी अकादमी की प्रार्थना पर 'प्राकृत दोष विज्ञान', 'प्राकृत अग्निविज्ञान', और 'प्राकृत धातु मल विज्ञान' का प्रणयन किया है। आपकी एक पुस्तक संस्कृत व हिन्दी में 'आयुर्वेदीय द्रव्यगुण-विज्ञानम्' नाम से प्रकाशित हुई है। आपकी ये सभी पुस्तकें विद्वानों द्वारा समादृत हुई हैं। इनके अलावा आपने पदार्थ विज्ञान पर 'आयुर्वेदोपयोगी पदार्थ विज्ञान' नामक ग्रन्थ की भी रचना की है जो शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

डा० सत्यपाल आयुर्वेदालंकार का 'काश्यप संहिता' का हिन्दी में अनुवाद अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है। इसमें आपने स्थान-स्थान पर आयुर्वेद के विविध ग्रन्थों के प्रमाण देकर विषय को पूरी तरह स्पष्ट कर दिया है।

डा० इन्द्रसेन आयुर्वेदालंकार ने जहाँ एक ओर अनेक काव्य लिखे हैं, वहीं दूसरी ओर आयुर्वेद विषयक कई महत्वपूर्ण पुस्तकों की रचना भी की है। आपकी 'एक्स-रे', 'फिरंग रोग' तथा 'पाश्चात्य चिकित्सा सार' नामक रचनाएं उल्लेखनीय हैं। 'टैक्सोनोमी' पर आपकी एक पुस्तक शीघ्र ही हरियाणा आकादमी द्वारा प्रकाशित की जानी है। आपने आयुर्वेद विषय पर कुछ अन्य पुस्तकें भी लिखी थीं जो दुर्भाग्यवश विभाजन के कारण पाकिस्तान में ही छूट गईं।

आयुर्वेद का अध्ययन-अध्यापन करने वाला हर व्यक्ति वैद्य रणजीतराय आयुर्वेदालंकार के नाम से परिचित होगा। आपकी गणना देश के गिने-चुने आयुर्वेद विशारदों में की जाती है। आपने आयुर्वेद के अनेक मौलिक ग्रन्थों की रचना करके आयुर्वेद साहित्य को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान किया है। 'आयुर्वेदीय क्रिया शरीर' पर आपको अखिल भारतीय महा सम्मेलन और निखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ से स्वर्णपदक तथा लाला मदनमोहनलाल आयुर्वेद अनुसंधान पीठ दिल्ली से एक हजार रुपए का पारितोषिक प्राप्त हुआ है। 'निदान चिकित्सा हस्तामलक', 'आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान', 'आयुर्वेदीय हितोपदेश', आदि आपके विद्वत्तापूर्ण एवं गवेषणात्मक मौलिक ग्रन्थ हैं। इसके साथ ही पिछले ३० वर्ष से आप 'सचित्र आयुर्वेद' पत्रिका में निरन्तर विविध विषयों पर लिख रहे हैं।

औषधीय वनस्पतियों पर अनुसंधान में रुचि रखने वाले तथा इनकी खोज में हिमालय की घाटियों में भटकने वाले श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार को कौन नहीं जानता। दीखने में छोटी, पर गुणों की खान आपकी पुस्तकें जन-जन में काफी लोकप्रिय हुई हैं। आपने वनस्पति विषयक २४ पुस्तकों की रचना की है। आपकी 'त्रिफला' 'अंजीर', 'आंवला', 'अशोक', 'बरगद', 'हरड़', 'मिर्च', 'नारियल', 'नीम', 'बकायन', 'पलाश', 'पीपल', 'सर्पगन्धा', 'पपीता', 'तुलसी', 'सोंठ' आदि पुस्तकें उल्लेखनीय हैं। आपकी अनेक कृतियां उ० प्र० शासन और अखिल भारतीय आयुर्वेदिक कांग्रेस द्वारा पुरस्कृत हो चुकी हैं।

आयुर्वेदाचार्य श्री ब्रह्मदत्त शर्मा आयुर्वेदालंकार आयुर्वेद साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् लेखक हैं। आपने 'विकृति-विज्ञान', नाम से सात खंडों में एक वृहद्ग्रन्थ के निर्माण की योजना बनाई है, जिसका १००० पृष्ठों का प्रथम खंड प्रकाशित हो चुका है और दूसरा प्रेस में है। इस ग्रन्थ में रोग-विज्ञान, त्रिदोष-सिद्धान्त, रोग-समाप्ति, 'रोग विषयक

किङ्कुथम्' आदि विषयों पर प्राच्य-पाश्चात्य का समन्वय प्रस्तुत किया गया है। यह ग्रन्थ आयुर्वेदिक एवं मेडिकल कालेजों के छात्रों व उपाध्यायों के लिए समान रूप से उपयोगी है। आपकी 'तुलसी' गांधी गीता मंदिर आगरा द्वारा 'अखिल भारतीय तुलसीग्रन्थ प्रतियोगिता' में सर्वोत्तम पुस्तक के रूप में पुरस्कृत हो चुकी है। आपकी 'आर्शी रोंग', 'नेत्रविज्ञान', 'अगदतन्त्र', 'शरीररचनाविज्ञान', 'आदि पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाश में आने वाली हैं। आपने फिलहाल अंग्रेजी व हिन्दी में लगभग एक दर्जन ग्रन्थों का निर्माण करने की योजना बनाई है और आप इन्हें पूरा करने के लिए प्रयत्नशील हैं। इन ग्रन्थों के प्रकाशित हो जाने पर आयुर्वेद-साहित्य में एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति हो जायेगी। पुस्तक निर्माण के अतिरिक्त शोध पत्रों, ज्ञानवर्धक लेखों के लिखने में भी आपकी बहुत रुचि है। आपके लगभग ५० से भी अधिक शोधपूर्ण लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

श्री आत्मदेव विद्यालंकार ने तिबिया कालेज दिल्ली की 'स्वस्थवृत्त', 'देहतत्त्व विज्ञान', व 'रोगविकृतिविज्ञान' नामक तीन महत्वपूर्ण पुस्तकों का अनुवाद किया है।

कविराज पुरुषोत्तमदेव आयुर्वेदालंकार के आयुर्वेद-चिकित्सा के सम्बन्ध में लगभग २०० लेख भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके हैं। आप 'आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका' के संपादक के रूप में आयुर्वेद जगत की सेवा कर रहे हैं।

इनके अतिरिक्त श्री ब्रह्मदत्त विद्यालंकार की 'मांस मीमांसा', श्री देवराज विद्यावाचस्पति की 'जल चिकित्सा', श्री देशबन्धु विद्यालंकार कृत 'व्यायाम', डा० मेधाव्रत आयुर्वेदालंकार रचित 'आयुरहोमियो सम्बन्ध', तथा वैद्य सुरेन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार प्रणीत 'आयुर्वेद सिद्धान्त' और 'बृहत्त्रयी' नामक मौलिक पुस्तकों का आयुर्वेद-साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। डा० अनन्तानन्द आयुर्वेदालंकार कृत 'ए हैण्डबुक आफ फिजियोलाजी' का अनुवाद तथा डा० कान्तिकृष्ण आयुर्वेदालंकार कृत 'ए हैण्डबुक आफ बैक्टीरियोलाजी' का अनुवाद उपयोगी पुस्तकें हैं।

स्नातक-परिचय

संवत् १९६८ (सन् १९१२)

इन्द्र विद्यावाचस्पति (स्व०)

ज० ९ नवम्बर १८८९, जालन्धर; पि० महात्मा मुँशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द); **कार्य** : गुरुकुल कांगड़ी में संस्कृत साहित्य, तुलनात्मक आर्य सिद्धान्त व इतिहास के उपाध्याय (१९१४), गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता (१९१७), गुरुकुल कांगड़ी के सहायक मुख्याधिष्ठाता (१९२०), गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता एवं कुलपति (१९३४-६०), 'दैनिक सद्धर्म प्रचारक' (१९११), 'विजय साप्ताहिक (१९१८), 'सत्यवादी' साप्ताहिक (१९२३) तथा 'नवराष्ट्र'(१९३९) के प्रकाशक व संपादक,'जनसत्ता' के संपादक (१९५२), संवत् १९६० विक्रमी में कांगड़ी ग्राम में पाठशाला की स्थापना,हिन्दू पब्लिसिटी ट्रस्ट दिल्ली के मंत्री (१९२२), आर्य सम्मेलन की स्वागत-समिति के प्रधान (१९२७), दिल्ली स्वदेशी संघ के प्रधान, अस्पृश्यता निवारक लीग के महामंत्री, दलितोद्धार सभा के मन्त्री (१९३२), जिला व प्रांतीय कांग्रेस कमेटी दिल्ली के प्रधान (१९३७),दिल्ली कांग्रेस कनवेंशन के स्वागताध्यक्ष(१९३५) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री (१९४३), दिल्ली म्युनिसिपल कमेटी के सदस्य (१९४७), राष्ट्रभाषा सुरक्षा परिषद् के स्वागताध्यक्ष (१९४९), कई वर्षों तक आर्य-प्रतिनिधि सभा, पंजाब के मंत्री व उपप्रधान, द्वितीय अखिल भारतीय हिन्दी पत्रकार-सम्मेलन के सभापति, अखिल भारतीय हिन्दी पत्रकार संघ के प्रधान, अखिल भारतीय संस्कृति-सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष (१९५२), संघ लोकसेवा आयोग के परामर्शदाता, भारत के शिक्षा मंत्रालय की विश्वकोष परामर्शदात्री समिति के सदस्य, राष्ट्रपति द्वारा राज्य-परिषद् के सदस्य मनोनीत (१९५२-५८); र० ऐतिहासिक-मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (दो खण्ड), भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अस्त, भारत के स्वाधीनता संग्राम का इतिहास, आर्यसमाज का इतिहास (तीन भाग), संस्कृत साहित्य का अनुशीलन; उपन्यास–अपराधी कौन, शाह आलम की आंखें, जमींदार, सरला की भाभी, सरला, आत्म बलिदान, गुलाम कादिर; नाटक-स्वर्ण देश का उद्धार; जीवन चरित्र–नैपोलियन बोनापार्ट, प्रिंस बिस्मार्क, गैरीवाल्डी, महर्षि दयानन्द, जीवन की झांकियां (३ भाग), पंडित जवाहरलाल नेहरू, सम्राट् रघु, हमारे कर्मयोगी राष्ट्रपति, मेरे पिता, मैं इनका ऋणी हूं, लोकमान्य तिलक, मेरे पत्रकारिता संबंधी अनुभव; भारतीय संस्कृति व राजनीति-उपनिषदों की भूमिका, भारतीय संस्कृति का प्रवाह, ईशोपनिषद् भाष्य, राष्ट्रों की उन्नति, राष्ट्रीयता का मूलमंत्र, स्वतंत्र भारत की रूपरेखा, जीवन सग्राम, राजधर्म, गांधी हत्याकांड, स्वराज्य और चरित्र-निर्माण; अन्य आधुनिक भारत में वक्तृत्व कला की प्रगति, भारतेतिहास: (संस्कृत काव्य); वि० पत्रकारिता की ओर बचपन से झुकाव था-नवम् श्रेणी में ही हस्तलिखित पत्रिकाएं प्रकाशित, छात्रावस्था में सद्धर्म प्रचारक के लिए लेख लिखते थे और संस्कृत में 'उषा' नामक हस्तलिखित पत्रिका तथा हिन्दी में 'सत्य-प्रकाशक' नामक हस्तलिखित पत्रिकाएं प्रकाशित किया करते थे। अध्ययन काल में संस्कृत व हिन्दी में काव्य रचना करने में रुचि थी। स्वाधीनता-आंदोलन के सिलसिले

में तीन बार जेलयात्रा (१९२७, १९३०, १९३२) की। कई बार ब्रिटिश शासन के कोपभाजन होने के कारण पत्र बंद करने पड़े, किन्तु भयभीत होकर किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। आजीवन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय और आर्यसमाज की सर्वतोमुखी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहे और इसमें अद्भुत सफलता भी प्राप्त की। उद्भट विद्वान्, प्रभावशाली लेखक, उच्चकोटि के पत्रकार अभूतपूर्व वक्ता, विद्याव्यसनी लोकप्रिय राष्ट्रीय व आर्य नेता के रूप में प्रख्यात, हिन्दी साहित्य सम्मेलन हैदराबाद द्वारा १९४२ में 'साहित्य-वाचस्पति' की उपाधि से सम्मानित। **निधन** २३ अगस्त १९६०, दिल्ली।

हरिश्चन्द्र विद्यालंकार (स्व०)

ज० १८८७, जालन्धर; **पि०** महात्मा मुँशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द); **कार्य** : स्नातक बनने के बाद लगभग एक वर्ष गुरुकुल में तुलनात्मक धर्म व साहित्य के उपाध्याय, दिल्ली में 'सद्धर्म प्रचारक' व 'विजय' के आदि संपादक, १९१४ में राजा महेन्द्रप्रताप के साथ यूरोप गमन तथा वहीं लुप्त हो जाना; **र०** संस्कृत प्रवेशिका (प्रथम भाग), बाल्मीकि रामायण का डच भाषा में अनुवाद; **वि०** अध्ययन काल से ही पत्रकारिता व लेखन के प्रति रुचि, प्रभावशाली वक्ता और स्वतंत्र विचारक।

संवत् १९७० (सन् १९१४)

चन्द्रमणि विद्यालंकार (स्व०)

ज० १६ सितम्बर १८९१, जालन्धर; **पि०** श्री शालिग्राम; **शि०** पालिरत्न (लंका); **कार्य** : गुरुकुल कांगड़ी में वेदोपाध्याय, कुछ समय आवागढ़ राज्य में कार्य, देहरादून में भास्कर-प्रेस की स्थापना; **र०** निरुक्त भाष्य (दो भाग), महर्षि पतंजलि व तत्कालीन भारत, धम्मपद, आर्ष मनुस्मृति, ऋषि दयानन्द के सत्य-अहिंसा के प्रयोग, वेदार्थ की विधि, स्वामी दयानन्द और वैदिक स्वराज्य, जिन चरितम्, बाल्मीकि रामायण (३ खंडों में अनुवाद) आदि; **वि०** आर्यसमाज व कांग्रेस के प्रमुख सक्रिय कार्यकर्त्ता व पदाधिकारी रहे, स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान कई बार जेलयात्रा।

ब्रह्मदत्त विद्यालंकार (स्व०)

ज० जालन्धर; **पि०** श्री चेतराम; **कार्य** : उत्कृष्ट वक्ता, अपने समय के आर्य समाज के सर्वाधिक सफल प्रचारक व उपदेशक; **र०** मांस मीमांसा। **निधन** १९२४.

भारद्वाज विद्यालंकार (स्व०)

पि० श्री लक्ष्मणदास; **कार्य** : स्नातक बनने के बाद कलकत्ता में डाक्टरी पढ़ी, जहाजों पर चिकित्सक, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में डाक्टर, गुरुकुल कांगड़ी में उपाध्याय फिर दीवानचन्द्र ट्रस्ट, सैदपुर (पाकिस्तान) के चिकित्सालय में चिकित्सक, अमृतसर में बाबा प्रद्युमन सिंह धर्मार्थ चिकित्सालय में चिकित्सक।

यज्ञदत्त विद्यालंकार (स्व०)

ज० जालन्धर; **पि०** श्री रूड़ामल; **कार्य** : स्नातक होने के बाद लाहौर से हिन्दी का समाचार पत्र प्रकाशित, कई वर्ष गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में मुख्याध्यापक तदनन्तर जालन्धर में स्वतंत्र-व्यवसाय।

विश्वनाथ विद्यालंकार

ज० मार्च १८९२, वजीराबाद (पाकिस्तान); **पि०** लाला प्रीतमदास; **कार्य** : कई वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में वेद, दर्शन तथा रसायनशास्त्र के उपाध्याय एवं उपाचार्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के वैदिक अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष; **र०** सामवेद भाष्य, वैदिक पशुयज्ञ मीमांसा, वीर माता का उपदेश, बाल सत्यार्थप्रकाश, बाल ऋग्वेदादि भूमिका, संध्या रहस्य, वैदिक जीवन, वैदिक गृहस्थाश्रम, 'वैदिक विज्ञान' मासिक पत्र; **वि०** वेदों के उद्भट विद्वान्, गुरुकुल विश्वविद्यालय की मानद उपाधि 'विद्यामर्तण्ड' से सम्मानित, आर्य समाज के स्थानिक प्रचार तथा अध्ययन-अध्यापन में विशेष अभिरुचि, दलितोद्धार में प्रमुख भूमिका, बर्मा में स्वतंत्र व्यवसाय। **प०** ६१, कांवली रोड, देहरादून।

संवत् १९७१ (सन् १९१५)

चन्द्रकेतु विद्यालंकार (स्व०)

पि० श्री सुन्दरसिंह; **कार्य :** पछाद (हिमाचल प्रदेश) में स्वतंत्र रूप से भेड़पालन का व्यवसाय; **वि० या०** स्नातक होने के बाद अमरीका में कृषि और फार्मिंग का विशेष अध्ययन।

जयदेव विद्यालंकार (स्व०)

ज० १८९२, अम्बाला; **पि०** श्री मुंशीराम; **कार्य :** पुराणमत पर्यालोचन में आचार्य रामदेव जी के सहायक, जोबनेर (जयपुर) हाईस्कूल, गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल मुलतान में अध्यापक, ज्ञानमंडल वाराणसी में कार्य, आर्य साहित्य मंडल अजमेर में वेदभाष्य का कार्य, १५ वर्ष तक वनस्थली विद्यापीठ में संस्कृत के प्राध्यापक, 'आर्यमित्र' व 'आर्यमार्तण्ड' का संपादन; **र०** चारों वेदों का हिन्दी भाष्य (चतुर्वेदभाष्यकार), विधवा विवाह मीमांसा (अनु०), मुद्राराक्षस चर्चा, पुराणमत पर्यालोचन, धनुर्वेद का इतिहास, क्या वेद में इतिहास है आदि; **वि०** अत्यन्त अध्ययनशील, वेदों के अध्ययन और साहित्य-सृजन में विशेष रुचि, प्रामाणिक, सुबोध एवं सरल भाष्यों के प्रख्यात रचयिता, लगनशील एवं परिश्रमी सपादक, तपस्वी साधक एवं विचारक, गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा मानद विद्यामार्तण्ड' उपाधि से सम्मानित ।

प्राणनाथ विद्यालंकार (स्व०)

शि० पी-एच० डी०; **कार्य :** बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में इतिहास के उपाध्याय एवं सुमेरियन एवं हड़प्पा संस्कृति पर विशेष अनुसंधान; **र०** राजनीतिशास्त्र, मुद्राशास्त्र, कौटिलीय अर्थशास्त्र, शासन पद्धति, भारतीय अर्थशास्त्र, इकॉनामिक कंडीशन्स इन एंशियन्ट इडिया, रोम का इतिहास; **वि०** अध्ययन काल में सुयोग्य एवं सर्वप्रथम आने वाले छात्र, इतिहास, अर्थशास्त्र में ऐसे समय हिन्दी में पुस्तक-लेखन जब इनका सर्वत्र अभाव था, अत्यन्त पुरुषार्थी एवं उद्यमी, अध्ययनशील विचारक और उच्चकोटि के लेखक; **वि० या०** वियना व लंदन की यात्रा ।

ब्रह्मानन्द विद्यालंकार (स्व०)

ज० चैत्र शुक्ला ३ संवत् १९४४, टेहू (आगरा); **पि०** पं० चतुर्भुज दीक्षित; **शि०** आयुर्वेदाचार्य, भिषग्रत्न (कलकत्ता); **कार्य :** गुरुकुल कांगड़ी के आयुर्वेद महाविद्यालय में प्राध्यापक, कुछ समय बाद राजामडी (आगरा) में 'गायत्री चिकित्सालय' नाम से एक चिकित्सालय की स्थापना, जहाँ मृत्यु पर्यन्त सफलतापूर्वक देश-विदेश से आए रोगियों की सफल चिकित्सा करते रहे, १९४५ में बोन टी० बी० व कुष्ठ पर तथा १९५४ में कैंसर की आयुर्वेदिक पद्धति से चिकित्सा पर अनुसंधान और 'कैंसर अनुसंधान संस्था' की स्थापना, लगभग १०० कैंसर पीड़ित रोगियों को उनकी चिकित्सा से स्वास्थ्य-लाभ; **वि०** विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में सामान्य स्वास्थ्य, कैंसर आदि रोगों पर लेख प्रकाशित, निखिल भारतीय स्नातक वैद्य-सम्मेलन के सभापति, हिन्दी-संस्कृत में कविता करने में विशेष रुचि; **वि० या०** जापान, बर्मा, रंगून की यात्रा ।
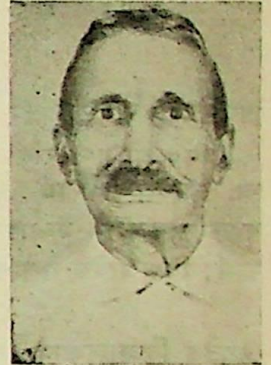
युधिष्ठिर विद्यालंकार (स्वामी व्रतानन्द सरस्वती)

ज० ३० नवम्बर १८९२, किला रायपुर (लुधियाना); **पि०** लाला केदारनाथ थापर; **कार्य :** माघ पूर्णिमा १९८६ विक्रमी को गुरुकुल चित्तौड़गढ़ की स्थापना, आर्य कन्या गुरुकुल (नरेला व दाधिया), गुरुकुल करतमपुर तथा वैदिक आश्रम नान्देड़ (महाराष्ट्र) के संचालक, पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा में ख्याति
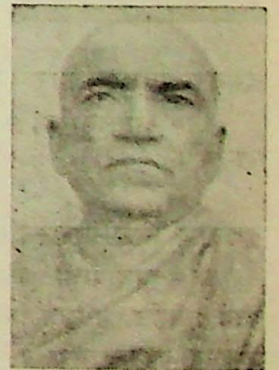
प्राप्त उपदेशक, र० सच्ची पाठविधि, आर्यकुमार के कर्तव्य, ओ३म् संकीर्तन आदि; वि० ऋषि दयानन्द के परम भक्त, स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के नेतृत्व में शुद्धि सभा का कार्य, साढ़े तीन वर्ष गुरुकुल भैंसवाल के आचार्य, श्रीमद्-दयानन्द आर्ष विद्यापीठ झज्जर के प्रतिकुलपति, गोरक्षा आन्दोलन में एक बार जेलयात्रा, आजन्म ब्रह्मचारी; वि० या० वैदिक धर्म के प्रचार के लिए मॉरीशस और बर्मा की यात्रा । प० महर्षि दयानन्द आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) ।

विश्वमित्र विद्यालंकार (स्व०)

ज० लायलपुर; पि० श्री रलाराम; शि० कलकत्ता में आयुर्वेद का विशेष अध्ययन; कार्य : जीवन पर्यन्त स्वतंत्र चिकित्सा कार्य, सफल एवं पीयूषपाणि वैद्य ।

संवत् १९७२ (सन् १९१६)

जगत्प्रिय विद्यालंकार (स्व०)

पि० श्री गण्डाराम; शि० तिबिया कालेज में आयुर्वेद का स्वाध्याय; कार्य : स्वतत्र चिकित्सा कार्य करते रहे, अनेक गुरुकुलों में अध्यापन, सर गंगाराम ट्रस्ट में प्रचार कार्य; वि० प्रत्येक खेल के उत्कृष्ट खिलाड़ी ।

जयदेव विद्यालंकार (स्व०)

ज० ९ जनवरी १८९२, बेहल (मुलतान); पि० श्री खुशाबीराम; कार्य : गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल मुलतान में शिक्षक रहे, आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के अधीनस्थ आर्य विद्यालयों के निरीक्षक (१९२९-६१), आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अधीनस्थ विद्यालयों के निरीक्षक (१९६२-७०); र० संस्कृत प्रदीप, सुखी जीवन, नैतिक शिक्षा । निधन २७ मई १९७०

देवदत्त विद्यालंकार (स्व०)

पि० श्री चतुर्भुज; कार्य : बारां में संस्कृत के प्राध्यापक थे ।

देवराज विद्यावाचस्पति (स्व०)

ज० गाजीवाला (बिजनौर); पि० श्री ज्वाला प्रसाद; कार्य : पहले गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल सोनगढ़, गुरुकुल सूपा में अध्यापन एवं स्वाध्याय; र० जल चिकित्सा; वि० अत्यन्त शांत प्रकृति होने से मुनि कहलाते थे । वेद का विशेष अध्ययन कर विद्यावाचस्पति किया, अत्यन्त स्वाध्यायशील, स्वर्गीय पं० मधुसूदन ओझा से वैदिक साहित्य और ज्योतिष पढ़ा, आजन्म ब्रह्मचारी ।

धर्मपाल विद्यालंकार (स्व०)

ज० लातूर (हैदराबाद); पि० श्री गोविन्द सिंह । दिवंगत ।

पूर्णदेव विद्यालंकार (स्व०)

ज० हरगोविन्दपुर (गुरदासपुर); पि० लाला मोहन लाल; कार्य : नैरोबी (अफ्रीका) में शिक्षण व वेदप्रचार कार्य, भारत लौटने के बाद अमृतसर, बटाला व दिल्ली में छात्रों के शिक्षण के लिए 'कोचिंग सेन्टर' खोले । निधन २९ मई १९७३, दिल्ली ।

प्रियव्रत विद्यालंकार

ज० श्रावण बदी १९४९ वि०, ताजपुर (बिजनौर); पि०श्री रघुवंशसहाय; कार्य : गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की स्थापना होने पर उसके प्रथम मुख्याधिष्ठाता (१९१६-२५), बाद में गुरुकुल सूपा के आचार्य तथा मुख्याधिष्ठाता, वर्षों तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य और मुख्याधिष्ठाता, संप्रति सेवानियृत्त; वि० सुकवि, क्रिकेट के खिलाड़ी, संगीतवेत्ता, आर्यसमाज थानेसर के प्रधान; वि० या० गुरुकुल सूपा के शिष्टमंडल के साथ प्रचारार्थ पूर्वी अफ्रीका (केनिया, मूंबासा, युगाण्डा) । प० राजीव भवन, चक्रवर्ती मौहल्ला, थानेसर शहर (कुरुक्षेत्र) ।

बलभद्र विद्यालंकार

पि० श्री सुन्दरसिंह; कार्य : स्नातक बनने के बाद गुरुकुल में गणित, विज्ञान के अध्यापक, बिड़ला मिल में रंगाई विभाग में कार्यकर्ता, स्वतन्त्र व्यवसाय; वि० देश-सेवा में विशेष रुचि, इनकी पत्नी श्रीमती सत्यवती जी भी दिल्ली की प्रसिद्ध राजनीतिक कार्यकर्त्री थीं और देश सेवा में ही अपना जीवन बलिदान कर दिया।

बुद्धदेव विद्यालंकार (स्व०)

पि० श्री रामचन्द्र; कार्य : आर्यसमाज के प्रमुख प्रचारक, गुरुकुल में अध्यापक, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सर्वप्रथम प्रधान उपदेशक, बाद में गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य तथा आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान; र० मनु और मांस, कायाकल्प, पंचयज्ञ प्रकाश, काव्यसंग्रह–बिखरे फूल, उसकी राह पर, वैदिक साहित्य–मरुत्, सोम, स्वर्ग, शतपथ में एकपथ, शतपथ ब्राह्मण का तथा अथर्ववेद का भाष्य, (अपूर्ण) पाणिनीय प्रवेशिका; वि० वर्णाश्रम-व्यवस्था के प्रबल पोषक, प्रभात आश्रम के संस्थापक, अत्यन्त प्रतिभाशाली, सुकवि और उत्कृष्ट वक्ता।

भीष्मदेव विद्यालंकार (स्व०)

ज० डेरागाजीखां; कार्य : कलकत्ता में वैद्यक पढ़कर स्वतन्त्र चिकित्सा करते रहे। निधन क्वेटा भूकम्प में।

विद्यासागर विद्यालंकार (स्व०)

ज० वजीराबाद (पाकिस्तान); पि० ईश्वरदास; कार्य : जयपुर में आयुर्वेद का अध्ययन करने के बाद वजीराबाद में अध्यापन।

संवत् १९७३ (सन् १९१७)

आत्मानन्द विद्यालंकार

ज० १६ मार्च १८९५, डेरागाजीखां; पि० लाला दयाल चन्द; कार्य : अध्यापन तथा उपदेश, गुरुकुल मुलतान के मुख्याधिष्ठाता, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की पाठशालाओं के निरीक्षक, इन्द्रप्रस्थीय संस्कृत परिषद् के सदस्य; वि० दार्शनिक दृष्टि और उसका व्यवहारिक जगत् में उपयोग विषय पर चिन्तन में विशेष अभिरुचि, पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, अनेक विदेशी व विभिन्न धर्म के लोगों ने इनके पांडित्य से प्रभावित होकर इनका शिष्यत्व ग्रहण किया। प० ए ३४, डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली।

जगन्नाथ विद्यालंकार (स्व०)
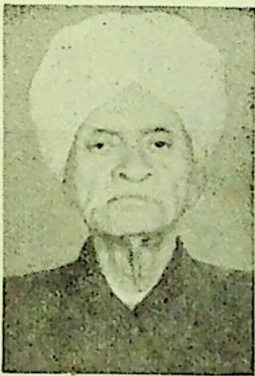
ज० नजीबाबाद; कार्य : स्नातक बनने के पश्चात् पहले बहजोई ग्लास वर्क्स में कार्य किया, बाद में गुरुकुल कांगड़ी में रसायनशास्त्र के सहायक उपाध्याय, सहायक मुख्याधिष्ठाता, आश्रमाध्यक्ष आदि पदों पर कार्य करते रहे, होमियोपैथिक चिकित्सा में विशेष रुचि थी, कुछ समय देहरादून में प्रैक्टिस भी करते रहे।

धर्मदत्त विद्यालंकार

ज० २० दिसम्बर १८९४, बेहल (मुलतान); पि० महाशय खुशाबीराम; शि० सिद्धान्तालंकार, आयुर्वेदाचार्य (मद्रास आयुर्वेद कालेज), आयुर्वेद महोपाध्याय (आयुर्वेद एकेडमी हैदराबाद, १९६७), आयुर्वेद वारिधि (हरियाणा आयुर्वेद शिक्षा समिति, १९-७४), आयुर्वेद महामहोपाध्याय (उ०प्र० वैद्य सम्मेलन, १९७६); कार्य : गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वेद महाविद्यालय में चिकित्सक, उपाध्याय तथा प्रधानाचार्य, कनखल में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; र० प्राचीन भारत में स्वराज्य, आयुर्वेदिक इण्टरप्रेटेशन ऑफ मेडिसिन (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत),

त्रिदोष विमर्श (संस्कृत) में, आधुनिक चिकित्सा शास्त्र, त्रिदोष संग्रह (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), औषधि विज्ञान, हिन्दी गीता और संगीत संध्या; वि० आर्यसमाज तथा सर्वोदय समाज में विशेष रुचि, प्राच्य और पाश्चात्य चिकित्सा पद्धतियों के गम्भीर अध्येता तथा दोनों के समन्वय में विश्वास, आयुर्वेद-सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए १९७२ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में सार्वजनिक सम्मान तथा अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट किया गया तथा १९७५ में 'विद्यामार्तण्ड' की मानद उपाधि से सम्मानित। प० कमला फार्मेसी, कनखल (सहारनपुर)।

भूदेव विद्यालंकार

ज० कानपुर; पि० श्री माधव प्रसाद तिवारी; कार्य: जोधपुर के राजा तेजसिंह तथा रामसिंह के पुत्रों के शिक्षक, शान्तिनिकेतन में हिन्दी व संस्कृत के शिक्षक, कानपुर में लोहे के व्यापारी; र० स्वाधीनता के पुजारी; वि० या० स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ बर्मा; वि० सार्वजनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—आर्यसमाज, कांग्रेस, हिन्दू महासभा आदि में सक्रिय भाग, पं० अखिलानन्द, पं० गिरधर शर्मा व स्वामी आत्मानन्द से सफल शास्त्रार्थ, साहित्य में विशेष अभिरुचि, कानपुर कांग्रेस कमेटी के मन्त्री, स्वतन्त्रता-संघर्ष में ६ मास की जेलयात्रा, स्वतंत्रता सेनानी की पेंशन प्राप्त, हिन्दू संघ के संस्थापक और १२-१३ वर्ष तक मन्त्री, पत्र-पत्रिकाओं में विचारोत्तेजक लेख प्रकाशित। प० ७/२०७ स्वरूपनगर, कानपुर।

यज्ञेश्वर सिद्धान्तालंकार

ज० श्री गोविन्दपुर (गुरदासपुर); कार्य: गुरुकुलों में अध्यापन, डी० ए० वी० हाईस्कूल दिल्ली में अध्यापक; वि० प्रिय विषय आर्य सिद्धांत, खेल-कुश्ती के शौकीन। प० बी १३ साउथ ऐक्सटेंशन–१, नई दिल्ली-१।

व्रतपाल विद्यालंकार (स्व०)

पि० श्री रामरत्न; कार्य: स्नातक होने के बाद विविध गुरुकुलों में अध्यापक, आर्यसमाज के प्रचारक।

शशिभूषण विद्यालंकार (स्व०)

ज० १० मार्च १८९४, कौल (करनाल); पि० श्री गोपीनाथ; कार्य: कुछ दिनों गुरुकुल कुरुक्षेत्र में मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल में अध्यापन, बाद में अम्बाला में जैन कालेज में अध्यापन; वि० स्नातक परीक्षा में प्रथम, व्याकरण के प्रखर पंडित, अखिल भारतीय जैन विद्वत्परिषद् के सदस्य, वैदिक व जैन साहित्य के अध्ययन में रुचि, वर्षों आर्यसमाज अम्बाला शहर में मंत्री एवं पुरोहित के रूप में सेवा। निधन २ अक्टूबर १९६६।

हरिदत्त विद्यालंकार (स्व०)

ज० मुलतान; कार्य: स्नातक होने के बाद स्वतन्त्र व्यवसाय; वि० अत्यन्त मधुर प्रकृति।

संवत् १९७४ (सन् १९१८)

ओम्प्रकाश विद्यालंकार (स्व०)

ज० बिजनौर; शि० कलकत्ता में होमियोपैथी तथा ऐलोपैथी का अध्ययन; कार्य: गुरुकुल में आयुर्वेद के उपाध्याय, बाद में बिजनौर में होमियोपैथी की प्रैक्टिस; र० होमियोपैथी के सिद्धान्त।

कृष्णकुमार विद्यालंकार

ज० सागर; पि० श्री बलदेव प्रसाद; शि० एम० बी० बी० एस०; कार्य: कानपुर में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य।

जगन्नाथ विद्यालंकार (स्व०)

ज० मुकेरियाँ; कार्य: स्वतन्त्र व्यवसाय करते थे।

देवराज विद्यालंकार

ज० १७ अक्टूबर १८९६, कसूर (पाकिस्तान); पि० श्री उमादत्त; कार्य : स्वतंत्र व्यवसाय (१९२८ तक), कैमिस्ट (लाहौर, १९४७ तक,) औषधि व्यापार (दिल्ली १९७२ तक), इस समय स्वाध्याय. प्रवचन व आत्म-निरीक्षण में लीन; र० आर्य और दस्यु, हिन्दी भाषा ही भारतवर्ष की राष्ट्र भाषा बन सकती है (इस पर स्वर्ण-पदक प्राप्त हुआ); वि० स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रेरणा से गढ़वाल क्षेत्र में अवैतनिक प्रचार कार्य (१९१८), अमृतसर व नागपुर में कांग्रेस का कार्य (१९४९-५०), १५ वर्ष अवैतनिक वेद प्रचार (१९५०-६५), आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कई वर्ष तक पदाधिकारी, गुरुकुल विश्वविद्यालय की विद्यासभा के सदस्य वैदिक साहित्य में विशेष अभिरुचि, विद्यालंकार में सर्वप्रथम आने के कारण स्वर्णपदक प्राप्त। प० ५२/३८ राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली।

देशबन्धु विद्यालंकार

ज० कानपुर; कार्य : कई वर्ष तक दिल्ली क्लाथ मिल में श्रम कल्याण विभाग में अधिकारी, तदनन्तर गुरुकुल में सहायक मुख्याधिष्ठाता (१९४१-४४), दिल्ली में स्वतंत्र व्यवसाय, आजकल हैदराबाद में हैं; वि० योगासन और व्यायाम में निष्णात, इसके प्रदर्शन के लिए अमरीका-गमन तथा ख्याति प्राप्त। प० द्वारा/श्री अजीत कश्यप, गौशाला, मेड़चल, हुबीरपुर, (हैदराबाद), आ० प्र०।

नन्द किशोर विद्यालंकार (स्व०)

ज० बिजनौर; पि० लाला मथुराप्रसाद, कार्य : रामजस कालेज में संस्कृत के प्रोफेसर, फिर कलकत्ता में व्यापार, फिर हैप्पी इण्डिया इन्स्योरेंस कम्पनी की स्थापना; र० पुनर्जन्म, वैदिक-विवाह, वि० विद्यालंकार में पुनर्जन्म पर शोधपूर्ण निबंध लिखकर प्रतिष्ठित स्नातक बने, सुयोग्य लेखक, सुवक्ता एवं विचारक।

रामचन्द्र विद्यालंकार (स्व०)

ज० हल्दौर (बिजनौर); पि० ठाकुरदास, कार्य : स्नातक होने के बाद पहले नजीबाबाद में साबुन का कारखाना, दिल्ली गाजियाबाद से हौजरी वर्क्स का संचालन, तदन्तर फार्म में कृषि।

बासुदेव विद्यालंकार (स्व०)

गणित का विशेष अध्ययन और अध्यापन।

विद्यासागर विद्यालंकार (स्व०)

ज० नगीना (बिजनौर); पि० श्री लाला बिहारी लाल सक्सेना; शि० शास्त्री (पंजाब), साहित्याचार्य, दर्शनाचार्य (जयपुर), पंचतीर्थ (बंगाल), एम० ए० (आगरा); कार्य : गुरुकुल कांगड़ी (१९१८-२०), गुरुकुल वृन्दावन (१९२६-३२), गुरुकुल मुलतान में संस्कृत व दर्शन के उपाध्याय, सुभाष-नेशनल कालेज उन्नाव में संस्कृत विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य किया; र० छंदो दीपिका, अष्टोत्तरशतनाममालिका, सांख्य दर्शन-एक परिचय, वेदांत एक परिचय, चार्वाक दर्शन-गवेषणापूर्ण मौलिक ग्रन्थ (हरजीमल डालमिया पुरस्कार से सम्मानित), काव्यप्रकाश टीका; वि० भारतीय दर्शन के ख्यातिप्राप्त विद्वान् थे, विभिन्न आर्यसमाजों के सदस्य एवं पदाधिकारी रहे। निधन २७ अगस्त १९७२।

विनायकराव विद्यालंकार (स्व०)

ज० ३ फरवरी १८९६, कलम (उस्मानाबाद); पि० श्री पंडित केशवराव कोरटकर; शि० एल० एल० बी०, बार ऐट् लॉ (इंगलैंड), कार्य : वकालत, आर्य समाज के कार्यों में सक्रिय भाग (१९२२-३३), आर्यप्रतिनिधि सभा हैदराबाद के प्रधान (१९३३-५०, १९५८-१९६२), हैदराबाद में आ० प्र० शासन में सचिव (१९५०), विधान सभा के सदस्य एवं मंत्री मण्डल के सदस्य (१९५१-५३), लोकसभा के सदस्य; र० चाबुक (कथासंग्रह), इब्राहिमलिंकन;

वि० आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता, निजाम के विरुद्ध धार्मिकस्वतंत्रता आंदोलन(१९३७-३८),विलय आंदोलन का संचालन (१९४७), आर्य सत्याग्रह में प्रमुख भाग, 'आर्य-भानु' के संपादक, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, निःस्वार्थ सेवाभावी, उदारचेता, १९५७ में गुरुकुल विश्वविद्यालय की मानद उपाधि 'विद्यामार्तण्ड' से सम्मानित, १९५९ में हैदाराबाद के नागरिकों की ओर से अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट, वि० या० इंगलैंड तथा यूरोपीय देश; निधन ३ सितम्बर १९६२।

सत्यानन्द विद्यालंकार

ज० श्री गोविन्दपुर (गुरदासपुर) ; **कार्य** : शिमला आदि नगरों में आर्यसमाज के पुरोहित एवं प्रचारक।

संवत् १९७५ (सन् १९१९)

अभयदेव विद्यालंकार (स्व०)

ज० २ जुलाई १८९६, चरथावल (मुजफ्फरनगर); **कार्य** : वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी के आश्रमाध्यक्ष, वेदोपाध्याय, आचार्य (१९२१-४२); र० तरंगित हृदय, वैदिक विनय (तीन भाग), ब्राह्मण की गौ, वैदिक उपदेशमाला, वैदिक ब्रह्मचर्य गीत, वेदरहस्य (श्रीअरविन्द की पुस्तक का हिन्दी अनुवाद); **वि०** मौलिक विचारक, सुलेखक, साधक व संत स्वभाव के, महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों के लिए सतत प्रयत्नशील, १९२१ में पैतृक स्थान चरथावल में असहयोग आंदोलन का संचालन किया था, १९३० के राष्ट्रीय आंदोलन के सिलसिले में जेल-यात्रा की, १३ अप्रैल १९३८ को सन्यासाश्रम में प्रवेश किया, श्री अरविन्द की योगप्रणाली के अन्यतम साधक थे व मृत्युपर्यन्त इसी के प्रचार-प्रसार में लगे रहे, चरथावल में 'श्रीअरविन्द निकेतन' की स्थापना। **निधन** ९ जनवरी १९७०, चरथावल।

ईश्वरदत्त विद्यालंकार

ज० २८ अगस्त १८९६, जसपुर (नैनीताल); पि० श्री सुखदेवप्रसाद वेदपाठी; शि० पी-एच० डी० (१९२८, म्यूनिख विश्वविद्यालय), **कार्य** : पूर्वी अफ्रीका में वैदिक धर्म प्रचार तथा गुरुकुल कांगड़ी के लिए वहाँ से ५० हजार रुपए का दान भिजवाना (१९२०), दक्षिणी अफ्रीका में प्रचार-कार्य (१९२१), गुरुकुल सूपा के लिए धन-संग्रह व स्थापना (१९२३-२४), बिहार सरकार की शिक्षा-संस्थाओं में शिक्षण-कार्य (१९२९-५१), खगड़िया डिग्री कालेज के प्रिन्सिपल (१९५१-५६), इस समय रिटायर्ड होने के बाद अध्ययन में व्यस्त; र० रामानुजाज़ कमेन्टरी ऑन द भगवद्गीता, जिन ढूंडा तिन पाइयां, पत्र-पत्रिकाओं में शोध-लेख; वि० या० अफ्रीका (१९२०-२१) प्रचारार्थ, अमरीका (१९२२) अध्ययनार्थ, जर्मनी (१९२५-२८) अध्ययनार्थ; वि० फ्रांसीसी, जर्मन, गुजराती में विशेष रुचि, अफ्रीका और यूरोप में यौगिक प्रदर्शन, प० महेन्द्रू, पटना-६।

कृष्णस्वरूप विद्यालंकार

ज० चैत्र सुदी ८ संवत् १९५५, इस्लामनगर (बदायूं); पि० श्री रामचरणलाल; **कार्य** : समाज सेवा, अध्ययन, अध्यापन, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में एक वर्ष आश्रमाध्यक्ष; र० गीता मर्म, गीता विज्ञान विवेचन (१००० रुपए का पुरस्कार प्राप्त), म० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा की मासिक पत्रिका 'आर्यावर्त' के गीता अंक का सम्पादन, बाल विवाह, अछूतोद्धार, आनन्द यहीं है, वैदिक संभोग-मर्यादा, गीतार्थ सार बोधिनी; वि० वर्षों इस्लामनगर की आर्यसमाज, आर्य कन्या पाठशाला, कांग्रेस कमेटी आदि के प्रधान व मंत्री, स्वतंत्रता-संग्राम के सिलसिले में १९३० व १९४२ में दो बार जेलयात्रा, 'गांधी सेवा सदन' आसफपुर (बदायूँ) के दो वर्ष तक मंत्री तथा उ० प्र० पंचायतीराज विभाग में तीन वर्ष तक प्रशिक्षक पद पर
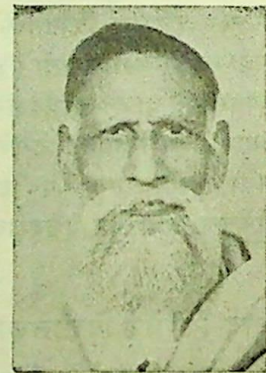
कार्य, कुछ वर्ष टाउन एरिया कमेटी इस्लामनगर के चेयरमैन, छात्रावस्था में जंगली चीते को गरदन से पकड़ कर दबोचने के कारण गुरुकुल से स्वर्णपदक प्राप्त, धनुर्विद्या प्रवीण। प० द्वारा/मुनीशचन्द्र योगेशचन्द्र सर्राफ, नयागंज (मंडी), उझानी (बदायूं)।

जयचन्द्र विद्यालंकार

ज० ५ सितम्बर १८९८, किजकोट (लायलपुर); कार्य : कई वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी, राष्ट्रीय महाविद्यालय सूरत, कौमी कालेज लाहौर, बिहार विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ, भारतीय विद्याभवन बम्बई में उपाध्याय, ख्यातिप्राप्त भारतीय इतिहासकार, अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान (१९५०), इतिहास व समाजशास्त्र के ख्यातिप्राप्त लेखक, समालोचक एवं शोधकर्ता; र० भारतीय इतिहास का भौगोलिक आधार, भारत भूमि और उसके निवासी, भारतीय इतिहास की रूपरेखा (दो भाग), इतिहास प्रवेश (दो भाग), हमारी आज की लड़ाई, मनुष्य की कहानी, हमारा भारत, भारतीय कृष्टि का क ख, पुरखों का चरित्र (तीन पोथी), भारतीय इतिहास की मीमांसा, प्राचीन पंजाब और उसका पास-पड़ोस, गोरखाली इतिहास की मुख्य धाराएं, राष्ट्रीय इतिहास का अनुशीलन, भारतीय वाङ्मय के अमररत्न, गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के सम्मान में समर्पित भारतीय अनुशीलन ग्रन्थ, वि० भारतीय इतिहास परिषद् के संस्थापक और प्रधानमंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन में इतिहास परिषद् के दो बार सभापति, राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय सहयोग तथा जेल-यात्रा, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कई वर्ष तक सदस्य, हिन्दी भवन प्रयाग के संस्थापक, 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा' पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्राप्त, पंजाब सरकार द्वारा साहित्य सेवा के लिए पुरस्कृत एवं सम्मानित। 'भारतीय कृष्टि का क ख' पर भारत सरकार द्वारा पुरस्कार प्राप्त, भारतीय सविधान का हिन्दी अनुवाद करने वाली विज्ञ समिति के सदस्य। प० Via Pridosa, 65/1 Lavino Dizola, Pridosa, Bolonya (Italy).

देवदत्त विद्यालंकार (स्व०)

ज० लुधियाना; दिवंगत।

देवेश्वर सिद्धांतालंकार (स्व०)

ज० पेशावर; पि० श्री शिवराम; कार्य : प्रारम्भ में बीमा व्यवसाय किया और बाद में बर्मा में ट्रांसपोर्ट का व्यवसाय।

धर्मचन्द्र विद्यालंकार (स्व०)

ज० पेशावर; पि० श्री शिवराम; शि० स्नातक होने के बाद कलकत्ता में आयुर्वेद का विशेष अध्ययन और भिषगाचार्य की उपाधि प्राप्त; कार्य : रावलपिण्डी में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य, तदनन्तर अमृतसर के बाबा प्रद्युम्नसिंह धर्मार्थ चिकित्सालय में चिकित्साध्यक्ष; वि० पीयूषपाणि व सफल वैद्य, सेवाभावी, आयुर्वेद के विकास में रुचि।

निरन्जनदेव विद्यालंकार

ज० १५ जुलाई १८९७, हरगोविन्दपुर (गुरदासपुर); पि० लाला गुलजारीलाल; कार्य : लैंसडौन (गढ़वाल) के निकट भगड़ू नामक पर्वतीय स्थान पर वेद प्रचार कार्य (१९१९-२९), गुरुकुल मटिण्डू (हरियाणा) में आचार्य (१९२०-६०), इस समय आर्यसमाज में कार्य कर रहे हैं; वि० हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग, हिन्दी आंदोलन के सिलसिले में सन् १९५७ में जेलयात्रा। प० ई २९ दयानन्दनगर, गाजियाबाद।

परमानन्द विद्यालंकार

पि० श्री ज्ञानचन्द महता; कार्य : गुरुकुल सूपा में अध्यापक, दिल्ली क्लाथ मिल के श्रम कल्याण विभाग में कार्य, संप्रति सेवानिवृत्ति जीवन-यापन। प० ४९, रेहड़ी मोहल्ला, जम्मू।

रामचन्द्र सिद्धांतालंकार (स्व०)

ज० कौल (करनाल); पि० श्री गोपीनाथ; कार्य : गुरुकुल कुरुक्षेत्र में मुख्याध्यापक, गुरुकुल कांगड़ी और गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे वर्षों तक संस्कृत साहित्य व व्याकरण के अध्यापक, बम्बई में समाजसेवा एवं शिक्षण कार्य; वि० आर्यसमाज के कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान, बम्बई में आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता एवं पुरोहित, कुशल वक्ता, वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की लगन।

वागीश्वर विद्यालंकार (स्व०)

ज० १३ मई १८९६, जलाबाद (बिजनौर); शि०

साहित्याचार्य (वाराणसेय संस्कृत विश्व०), एम० ए० संस्कृत-हिन्दी (आगरा); **कार्य** : गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में अध्यक्ष संस्कृत विभाग, कुलसचिव, शिक्षाध्यक्ष, प्रधानाचार्य विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालयाध्यक्ष आदि (१९२०-५८); **र०** नीरांजना (काव्य, १९३९), कुन्दमाला, शकुन्तला (संस्कृत नाटक का अनुवाद, १९३२), साहित्य सुधा संग्रह (१९२४), छात्र कौतुकम् (संस्कृत एकांकी, १९३४), विदूषक परिषद् (संस्कृत एकांकी, १९३७), वैदिक साहित्य सौदामिनी (अन्तिम चारों संस्कृत भाषा में), कालिदास और उनकी कला, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय (हिन्दी अनुवाद, अप्रकाशित); **वि०** गुरुकुल की प्रगति और इसे विश्वविद्यालय स्तर पर लाने में बहुत बड़ा योगदान, उच्चकोटि के लेखक तथा हिन्दी-संस्कृत के दक्ष कवि, अगाध पाण्डित्य से पूर्ण तथा सरल व मधुर स्वभाव के, गुरुकुल की विद्यासभा के सदस्य । **निधन** ३० मई १९७६ ।

विद्याधर विद्यालंकार (स्व०)

ज० सितम्बर १८९६, पटियाला; **पि०** श्री राजाराम, **शि०** वैद्य कविराज, भिषगाचार्य (कलकत्ता), वैद्यशास्त्री; **कार्य** : लाहौर और सोलन में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य (१९१९-३०), रावलपिण्डी में प्रधान चिकित्सक (१९३०-४७), लाहौर के भगत लखाराम तनेजा महिला आयुर्वेद कालेज में प्राध्यापक (१९४१-४७), पुन: सोलन में चिकित्सा कार्य (१९४७-५१), राजकीय आयुर्वेद कालेज हैदराबाद में प्राध्यापक (१९५१-६२), हैदराबाद में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य (१९६२-६५), **र०** रसेन्द्रसार संग्रह, योगरत्नाकर, रसतरंगिणी, भैषज्यरत्नावली, गदनिग्रह, अनुभूतयोगमाला, भावप्रकाश, राजेश्वरी (कहानी संग्रह), शिशुपालवध, पवित्र पापी, जय पराजय (उपन्यास), रघुवंश (प्रथम सर्ग का हिन्दी अनुवाद), किरातार्जुनीयम् (११ वें सर्ग का अनुवाद), सुखी जीवन, स्वास्थ्य रक्षा, आदि; **वि०** संस्कृत व हिन्दी के कवि, कहानीकार एवं लेखक, संस्कृत व अंग्रेजी के अनेक ग्रन्थों के अनुवादक, रचनाओं पर अनेक पुरस्कार प्राप्त, राजयक्ष्मा रोग पर विशेष अनुसंधान एवं 'राजेश्वरी' नामक औषधि का आविष्कार, आयुर्वेद साहित्य के ख्याति प्राप्त लेखक, आर्यसमाज एवं हिन्दी व संस्कृत से सम्बन्धित संस्थाओं के कार्यों में विशेष रुचि, वर्षों तक आर्यसमाज सोलन के प्रधान, मंत्री आदि, संगीत व क्रीड़ा में भी रुचि, आयुर्वेद महासम्मेलन दिल्ली और ओरियण्टल कांफ्रेंस पूना के सम्मानित सदस्य । **निधन** १३ जून १९६५ ।

विष्णुदत्त विद्यालंकार:

ज० लुधियाना; **पि०** श्री गंगाराम; **शि०** स्नातक होने के बाद आयुर्वेद का विशेष अध्ययन; **कार्य**: लुधियाना में स्वतन्त्र चिकित्सा, कार्य : **वि०** सफल एवं जाने माने वैद्य, आर्यसमाज के कार्यों में सक्रिय सहयोग । **प०** लल्लूमल स्ट्रीट, चौड़ा बाजार, लुधियाना ।

वेदव्रत विद्यालंकार

ज० सहारनपुर; **पि०** श्री जुगलकिशोर; **कार्य** : वर्षों तक काशीराम हाईस्कूल सहारनपुर में अध्यापक, संप्रति सेवा निवृति के बाद झरिया में निवास ।

शांतिस्वरूप विद्यालंकार

ज० ७ अगस्त १८९६; **पि०** श्री कुँवर बहादुर; **शि०** मास्टर ऑफ फोटोग्राफी (अमरीका १९५६); **कार्य** : अमरीका में फोटोग्राफी का व्यवसाय (१९३३ से), वेस्टर्न रिजर्व यूनिवर्सिटी अमरीका में ७ वर्ष फोटोग्राफी के प्रशिक्षक; **वि०** फारेन इंपोर्ट कारपोरेशन के प्रधान तथा ओहियो व क्लीवलैंड की सोसायटी आफ प्रोफेशनल क्लीवलैंड फोटोग्राफर्स एसोसिएशन आदि संस्थाओं के प्रतिष्ठित सदस्य, पोर्ट्रेट फोटोग्राफी में विशेष अभिरुचि । **प०** Shri Shanti Bahadur, Lakeside Studio, 2250 Community College Ave. Apt 617, Cleveland Ohio 44115, U. S. A.

सत्यभूषण विद्यालंकार

ज० जींद; **पि०** श्री मिट्ठनलाल; **कार्य** : दिल्ली में ठेकेदारी ।

सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

ज० ५ मार्च १८९८, लुधियाना; पि० श्री पं० बालकराम शर्मा, कार्य : कोल्हापुर और दक्षिण भारत में वैदिक धर्म का प्रचार. वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी में आर्य सिद्धांत के उपाध्याय, कुलसचिव, दयानन्द सेवा सदन के आजीवन सदस्य, गुरुकुल विश्वविद्यालय के मुख्याधिष्ठाता (१९३५-४०), गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलपति (१९६१-६६), शिक्षा, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, संस्कृति एवं होमियोपैथी की पुस्तकों के लेखन में व्यस्त; र० एकादशोपनिषद् (मूल सहित धारावाही हिन्दी व्याख्या), गीताभाष्य, वैदिक-संस्कृति के मूल तत्व, ब्रह्मचर्य संदेश, सामाजिक मानव-शास्त्र, समाजशास्त्र के मूल तत्व, सामाजिक विचारों का इतिहास, समाज कल्याण तथा सुरक्षा, भारत की जनजातियां तथा संस्थाएं, प्रारम्भिक समाजशास्त्र, भारतीय सामाजिक संगठन, समाजशास्त्र तथा बालकल्याण, व्यावहारिक मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र, हेरिटेज आफ वैदिक कल्चर, होमियोपैथिक औषधियों का सजीव चित्रण, रोग तथा उनकी होमियोपैथिक चिकित्सा, बायोकेमिस्ट्री की औषधियों का तुलनात्मक चार्ट, कान्फीडेन्शियल टॉक्स टू यंगमेन, वैदिक-विचारधारा का वैज्ञानिक आधार, बुढ़ापे से जवानी की ओर, उद्बोधिनीसंस्कार चन्द्रिका; वि०या० गुरुकुल के लिए धन संग्रहार्थ बर्मा तथा अफ्रीका की यात्रा; वि० विशिष्ट साहित्य सेवा के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, द्वारा 'विद्यामार्तण्ड' की मानद उपाधि से अलंकृत, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा समाजशास्त्र के मूल तत्व पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक से सम्मानित (१९५९), पंजाब सरकार के भाषा विभाग द्वारा एक विशेष सरकारी दरबार में साहित्यिक रचनाओं के लिए १२०० रुपए और दुशाला भेंट करके साभार सम्मानित (१९६२), विद्वत्ता के कारण राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा १९६४ में राज्यसभा के सदस्य मनोनीत, इनके कतिपय ग्रन्थों के गुजराती, मराठी, उड़िया आदि में अनुवाद उपलब्ध, राष्ट्रीय आंदोलन में जेलयात्रा। प० डब्ल्यू ७७ ए, ग्रेटर कैलाश (१), नई दिल्ली-४८।
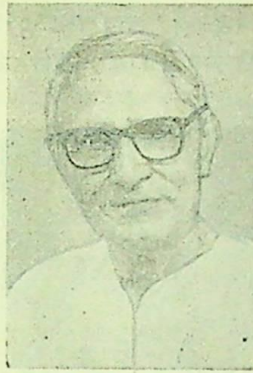
सोमदत्त विद्यालंकार (स्व०)

विविध आर्य समाजों में पुरोहित का कार्य करते थे, अत्यन्त सज्जन एवं मृदुभाषी थे।

संवत् १९७६ (सन् १९२०)

दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

ज० २३ अप्रैल १८९४, पिण्डी भट्टियां (गुजरांवाला); पि० स्व० श्री हीरानन्द; कार्य : सुयोग्य एवं ख्यातिप्राप्त पत्रकार, लेखक एवं आर्योपदेशक, साप्ताहिक 'श्रद्धा' के उपसंपादक, दैनिक 'अर्जुन' के स० संपादक (दिल्ली), 'विधवा बंधु' के सम्पादक (लाहौर), राष्ट्रदूत के स० सम्पादक (बम्बई), दैनिक 'आकाशवाणी' के स० सम्पादक (जालन्धर), दैनिक 'आज' के स० सम्पादक (बनारस), दैनिक 'विश्वमित्र' के स० सम्पादक (कलकत्ता), दैनिक 'वीर अर्जुन' के स० सम्पादक (दिल्ली), 'आर्य' साप्ताहिक के स० सम्पादक (जालन्धर), 'जीवन-पथ' मासिक के सम्पादक (दिल्ली), 'आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका' मासिक के स० सम्पादक (दिल्ली), 'जनसत्ता' दैनिक के स० सम्पादक (दिल्ली), 'भारत सेवक' मासिक के स० संपादक व सम्पादक (दिल्ली), 'ग्राम सहयोगी' साप्ताहिक के सम्पादक (दिल्ली), 'आर्य जगत्' के स० सम्पादक, स्वतन्त्र पत्रकार के रूप में लेखन-कार्य; र० अमृत पथ, श्री रामचरित्र, उपनिषद् वचनामृत, अध्यात्म योग, यज्ञ प्रसार, ज्वलन्त जीवन, वेद और बाइबिल, श्री डॉ० श्यामा प्रसाद मुकर्जी का जीवन, प्रेरक जीवन कहानियां, आर्य समाज की उपलब्धियां (सार्वदेशिक सभा द्वारा पुरस्कृत), हिन्दू जाति पतन के कगार पर, भारत की प्राचीन नीतियाँ, स्वर्गीय श्री मूलराज जी बी० ए० बी० टी० स्मृति ग्रन्थ;

वि० विद्वद् वेद गोष्ठी के सदस्य व सम्पर्क अधिकारी, आर्योपदेशक होने के नाते सामाजिक, धार्मिक व समाज सुधार सम्बन्धी प्रवृत्तियों में सक्रिय सहयोग, १९२८ में कलकत्ता में मारवाड़ियों की एक बड़ी सार्वजनिक सभा में विधवा विवाह, शुद्धि आदि पर भाषण देने पर लाठी वर्षा सही, भगतसिंह के साथ क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग, १९३० में सत्याग्रह आन्दोलन के सिलसिले में ६ महीने की जेल यात्रा तथा १९३८ में कानपुर नमक-सत्याग्रह में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के साथ जेल-यात्रा। प० हंसराज कालेज टीचर्स फ्लैट्स नं० ८, मलकागंज, दिल्ली-३।

महानन्द सिद्धान्तालंकार (स्व०)

ज० बिसौली (बदायूं); पि० स्वर्गीय श्री शिवचरन लाल; शि० आयुर्वेदमार्तण्ड (कलकत्ता); कार्य : स्वामी श्रद्धानन्दजी के व्यक्तिगत सचिव, गुरुकुल कांगड़ी के प्रस्तोता तथा सहायक मुख्याधिष्ठाता, ग्वालियर राज्य फार्मेसी में ड्रग इन्वेस्टीगेटिंग ऑफीसर, अलीगढ़ में चिकित्सा कार्य, सत्य रिसर्च इन्स्टीट्यूट बिसौली में वैद्य; वि० देसी जड़ी-बूटियों द्वारा पायरिया, मलेरिया एवं गनोरिया के अचूक उपचार के लिए औषधि अनुसंधान, आयुर्वेद के उत्थान व अन्वेषण में विशेष अभिरुचि, आर्यसमाज के रचनात्मक कार्यों में सक्रिय योगदान।

महामुनि विद्यालंकार (स्व०)

ज० अमृतसर; कार्य: पहले गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा गुरुकुल कुरुक्षेत्र में गणित तथा विज्ञान के अध्यापक, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में कार्यालयाध्यक्ष; र० भौतिकी, महर्षि दयानन्द के जीवन का मनन।

राजेन्द्रबल विद्यालंकार (स्व०)

ज० झंग; कार्य : आर्य के सम्पादक, वेदकोष का सम्पादन, वैदिक अनुसंधान, सर गंगाराम ट्रस्ट में कार्यकर्ता गुरुकुल फार्मेसी के ऐजेन्ट, मुद्रण कला का कार्य, लखनऊ के एक प्रेस में व्यवस्था सम्बन्धी कार्य; वि० आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में रुचि; वेदों के सुयोग्य विद्वान्।

वासुदेव विद्यालंकार

ज० ६ सितम्बर १८९८, क्वेटा (बलुचिस्तान); पि० श्री गणेशदास; कार्य: गुरुकुल भैंसवाल में चिकित्सक एवं मुख्याधिष्ठाता, फिर डेरा-गाजी खां में व्यापार, संप्रति वानप्रस्थ-जीवन यापन; वि० आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान, वर्षों तक आर्यसमाज के पुरोहित के रूप में कार्य, धार्मिक ग्रन्थों, वेदों व आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय में विशेष रुचि, धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति, १९५७ में हिन्दी रक्षा आन्दोलन में ६ मास की जेल यात्रा। प० ३१ एल न्यू कांलोनी, गुड़गांवा (हरियाणा)।
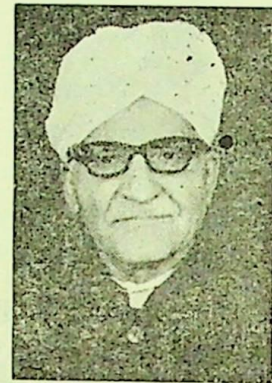
शान्तिस्वरूप वेदालंकार

ज० आश्विन पूर्णिमा सम्वत् १९५५ विक्रमी, कुण्डा (बिजनौर); पि० श्री पं० बलदेवसहाय; कार्य: गुरुकुलों में अध्यापक, आर्यसमाज धामपुर में पुरोहित, गुरुकुल चित्तौड़ में अध्यापक, आर्य अनाथालय दिल्ली के प्रबन्धक, चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस तथा न्यू इण्डिया प्रेस दिल्ली में प्रूफ रीडर, अब गांव में खेती की देखभाल; वि० आर्यसमाज के कार्य कलापों में सक्रिय सहयोग, वैदिक साहित्य के स्वाध्याय में विशेष रुचि, वेदालंकार परीक्षा में सर्वप्रथम, संस्कृत साहित्य व संस्कृत व्याकरण का गहन अध्ययन। प० कुण्डा खुर्द, पो० नूरपुर (बिजनौर)।

सत्यदेव विद्यालंकार (स्व०)

ज० १ अक्टूबर १८९७ नाभा (पू० पंजाब), पि० श्री प्रभुदयाल खन्ना; कार्य: सम्पादक दैनिक 'विजय' (दिल्ली 'राजस्थान केसरी' (नागपुर) दैनिक 'मारवाड़ी', 'प्रणबीर' (नागपुर), 'नवयुग' (अकोला), दैनिक 'स्वतन्त्र' (कलकत्ता), दैनिक 'विश्वमित्र' (कलकत्ता), दैनिक 'हिन्दुस्तान' (दिल्ली) के प्रथम सम्पादक, दैनिक 'विश्वमित्र' (दिल्ली), अमर भारत'

(दिल्ली) के सम्पादक और दैनिक 'नवप्रभात' (उज्जैन, इन्दौर,भोपाल)के प्रथम सम्पादक; र० गाँधीजी का मुकदमा, दयानन्द दर्शन, जनरल अवारी, आर्यसमाज किस ओर, स्वामी श्रद्धानन्द, आर्य सत्याग्रह, जयहिन्द (तीन खंडों में), लालकिले में, टोकियो से इंफाल, जीवन संघर्ष (महाशय कृष्ण का परिचय), धुन के धनी (जयनारायण व्यास का जीवन परिचय), वसंतलाल मुरारका स्मृति ग्रंथ, आज का मध्य भारत, परदा, राष्ट्रधर्म, हमारे राष्ट्रपति, लाला देवराज, राष्ट्रवादी दयानन्द, आदि; वि० छात्रावस्था में ही पत्रकारिता के प्रति रुचि होने के कारण गुरुकुल में 'राजहंस' 'अद्भुत' 'विजयदशमी' (दैनिक) तथा 'समालोचक' (दैनिक) हस्तलिखित पत्रों का सम्पादन, और स्वामी श्रद्धानन्द जी के 'सद्धर्म प्रचारक' एवं 'श्रद्धा' नामक पत्रों में कार्य करते हुए पत्रकारिता की दीक्षा प्राप्त, १९२० में महात्मा गांधी और जमनालाल बजाज के निकट सम्पर्क में आकर वर्धा आश्रम मे निवास, १९२१ में 'राजस्थान केसरी' में आपत्तिजनक लेख लिखने के कारण, १९२३ में राष्ट्रध्वज आन्दोलन में, १९३० में नमक-सत्याग्रह तथा १९३२ में 'अवज्ञा आन्दोलन' में १-१ वर्ष की जेल यात्रा, १९३४ में विहार के भूकंप से पीड़ितों की सेवा, 'परदा' व 'राष्ट्रधर्म' पर अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा राधामोहन गोकुल जी पुरस्कार से सम्मानित, १९५४ में प्रज्ञाचक्षु होने के बावजूद भी धुन के धनी होने के कारण अपना लेखन-कार्य जारी रखा और जीवन पर्यन्त इसी में लगे रहे। ३१ मार्च १९३५ को पंजाब सरकार ने उनके सम्मान में 'जय साहित्य' नामक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया। निधन २५ जून १९६५, दिल्ली।

संवत् १९७७ (सन् १९२१)

अर्जुनदेव विद्यालंकार

ज० २१ जनवरी १९००, अमीपुर(लायलपुर, पंजाब); पि० श्री रायसाहब अमृतराय; कार्य: अम्बाला छावनी में रवि वर्मा स्टील वर्क्स नाम से लोहे की मशीनरी के कारखाने की स्थापना, लाहौर में साइन्टिफिक इन्जीनियरिंग कार्पोरेशन के कारखाने की शुरुआत, गुरुकुल कुरुक्षेत्र के अवैतनिक मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष, मद्रास में तथा अन्य स्थानों पर आईस फैक्टरियों की स्थापना, इन्टर साइंस कालेज गुरुकुल कांगड़ी के अवैतनिक मैनेजर; वि० आर्यसमाज तथा गुरुकुलों की सेवा में विशेष अभिरुचि, स्नातक मंडल के प्रधान, चार वर्ष अम्बाला छावनी में आर्यसमाज के मंत्री तथा गुरुकुल की विद्यासभा के सदस्य, गुरुकुल कांगड़ी में अपने पू० पिता जी की स्मृति में 'अमृतवाटिका' की स्थापना। प० आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर(सहारनपुर)।

आत्मदेव विद्यालंकार

ज० ८ जनवरी १९०१, मुलतान शहर, पि० श्री कन्हैयालाल जी; कार्य : कई वर्ष तक रामाश्रम हाईस्कूल अमृतसर में प्रधानाध्यापक, अमृतसर में अध्यापन कार्य र० स्वस्थवृत्त, देहतत्वविज्ञान, रोगविकृतिविज्ञान (तीनों अंग्रेजी पुस्तकों के अनुवाद), संस्कृत स्वयं शिक्षक (तीन भाग); वि० गुरुकुल में आयुर्वेद का अध्ययन, आयुर्वेद की प्रगति व अनुसंधान में रुचि, आर्यसमाज के कार्यकलापों में योगदान। प० ७/४ रघुनाथपुरा, मजीठा रोड अमृतसर

धनराज विद्यालंकार

ज० १ जनवरी १९००, रायपुर (सहारनपुर); पि० श्री जादोराय; कार्य : स्नातक बनने के तत्काल बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी के निजी सचिव, गुरुकुल कांगड़ी में भारतीय दर्शन के उपाध्याय, देहरादून में पुस्तक-व्यवसाय, इस समय पर्ल्स एण्ड बीड्स इण्डिया, अलीगढ़ में कार्यरत; र० रामकृष्ण परमहंस (रोमा रोलां कृत अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद), महापुरुषों के साथ (दिलीपराय कृत बंगला पुस्तक का अनुवाद), सांस्कृतिक मानवशास्त्र (हर्स्कोविट्स कृत अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद); वि० राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय

योगदान, १९३६ के चुनावों में कांग्रेसी प्रत्याशी, पठन-पाटन, समाज-सेवा व साहित्य-सृजन में विशेष अभिरुचि। प० मोतीमहल कम्पाउन्ड, ८/५५ जी० टी० रोड, अलीगढ़।

धर्मदेव सिद्धान्तालंकार (धर्मानन्द सरस्वती)

ज० १२ फरवरी १९०१, दुनियापुर(मुलतान); **पि०** श्री नन्दलाल; **शि०** विद्यावाचस्पति(गुरुकुल), विद्यामार्तण्ड (मानद उपाधि, गुरुकुल); **कार्य :** दक्षिण भारत में वैदिक धर्म का प्रचार, समाज सुधार व हिन्दी प्रचार, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सहायक मंत्री, सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के मंत्री एवं प्रधान, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में वेदोपाध्याय, गुरुकुल पत्रिका व अंग्रेजी-संस्कृत कोष के संपादक, इस समय सार्वभौम वैदिक परिवार संघ के आचार्य और विश्व वेद परिषद् के प्रधान, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य विभाग में मानद प्रोफेसर, र० वेदों का यथार्थ स्वरूप (आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा पुरस्कृत), धर्मशिक्षा, (डी० ए० वी० कालेज कमेटी द्वारा पुरस्कृत) महर्षि दयानन्द और अन्य वेदभाष्यकार (चौ० प्रतापसिंह ट्रस्ट द्वारा पुरस्कृत), वैदिक कर्तव्यशास्त्र, भारतीय समाजशास्त्र, स्त्रियों का वेदाध्ययन और वैदिककर्मकाण्ड में अधिकार, वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी, आर्य धर्म निबन्धमाला, अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द, वेदों का महत्त्व, उदारतम आचार्य महर्षि दयानन्द, वैदिक ईश्वरवाद और वर्तमान विज्ञान, बौद्ध मत और वैदिक धर्म, हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि, साम संगीत सुधा, भक्ति कुसुमाञ्जलि, महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी, वेदमूलक आर्य राजनीति, वेदभाष्यों का तुलनात्मक अनुशीलन भूमिका, एक मंत्र के अनेकार्थ, श्रीमध्वाचार्य और ऋषि दयानन्द, गोरक्षा परम कर्तव्य—गोहत्या महापाप, अंग्रेजी भाषा में हिम्स आफ द सामवेद (सामवेद का अंग्रेजी भाष्य), होली ऋग्वेद—ए कॉमेन्टरी इन इंगलिश (ऋग्वेद का अंग्रेजी भाष्य), महात्मा बुद्ध ऐन आर्य रिफार्मर, कॉन्सेप्शन ऑफ गॉड इन क्रिश्चियनिटी ऐंड वैदिक धर्म, ह्वाट इज इन्डियन कल्चर, महर्षि दयानन्द ऐन्ड सत्यार्थप्रकाश, कन्नड़ भाषा में—जाति भेद विचार, वैदिक ईश्वर कल्पने, श्रीमन्मध्वाचार्यरु, ऋषिदयानन्द सरस्वतियवरु, इवर सिद्धान्तगल तुलनात्माक विचार, अस्पृश्यता निवारणे, पशुबलि निषेध, वैदिक संध्यावन्दन, संस्कृत भाषा में—महापुरुष-कीर्तनम् एवं महिलामणिकीर्तम् (दोनों उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत), अप्रकाशित-वेद द्वारा समस्त समस्याओं का समाधान, वैदिक संस्कृत-मदर ऑफ ऑल लैंग्वेजेज, ऋग्वेद भाष्य—संस्कृत व आर्य-भाषा में (मण्डल ७-६२-१०४); **वि०** विद्वत्ता के कारण अनेक संस्थाओं से स्वर्ण-पदक व उपाधि प्राप्त, ख्याति-प्राप्त वक्ता व लेखक, वैदिक धर्म के प्रचार व उत्कृष्ट साहित्य के निर्माण में अभिरुचि, विविध वेद व संस्कृत सम्मेलनों के सभापति, कई भारतीय व विदेशी भाषाओं के जानकार, अन्तर्राष्ट्रीय विश्व संघ की विश्व परिषद् के सदस्य। प० आनन्द कुटीर, ज्वालापुर (सहारनपुर)।

धर्मपाल विद्यालंकार

ज० १८९८; बदायूं; **पि०** श्री कृष्णस्वरूप; **कार्य:** स्वामी श्रद्धानन्दजी के निजी मंत्री, दैनिक 'अर्जुन' (दिल्ली) के कुछ वर्षों तक प्रबन्धक व सदस्य डायरेक्टर, आर्यसमाज बदायूं के १५-२० वर्ष तक मन्त्री व प्रधान, आर्य-प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान कार्यालय के संचालक व उप मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री, गुरुकुल वृन्दावन विश्वविद्यालय के कुल-पति, 'आर्यमित्र' साप्ताहिक के अवैतनिक सम्पादक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सहायक मुख्याधिष्ठाता, रजिस्ट्रार व प्रशासक, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष, कुछ वर्ष तक आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के अध्यक्ष, इस समय बदायूं में आर्यसमाज तथा सार्वजनिक क्षेत्र में कार्यरत; **वि०** स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान के समय घातक को पकड़ा, आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेश से गुरुकुल कांगड़ी तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय के संविधान व नियमावली का संकलन व संशोधन, हरिद्वार में आर्यसमाज मंदिर का निर्माण कराने में योगदान, स्वाध्याय व आर्य-समाज के कार्य में विशेष अभिरुचि। प० टिकैतगंज, बदायूं।
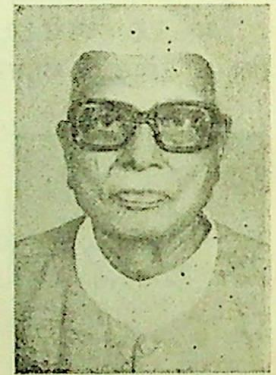
भीमसेन विद्यालंकार (स्व०)

ज० २२ अक्टूबर १६००, जम्मू; पि० श्री विशन दास; कार्य : मद्रास में आर्यसमाज का प्रचार, गुरुकुल कांगड़ी में इतिहास व अर्थशास्त्र के उपाध्याय, वीर अर्जुन दैनिक के प्रधान संपादक, साप्ताहिक 'सत्यवादी' के प्रकाशक व सम्पादक, कौमी महाविद्यालय में अध्यापक, पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में मंत्री, 'वन्देमातरम्' व 'पंजाब केसरी' के सम्पादक, नमक-सत्याग्रह में जेल-यात्रा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लम्बे समय तक मंत्री, मासिक 'अलंकार' (जिसका बाद में 'हिन्दी संदेश' नाम रखा) के सम्पादक, साप्ताहिक 'आर्य' के सम्पादक, मृत्यु पर्यन्त अंबाला छावनी में निजी आर्य प्रेस का संचालन; र० वीर मराठे, वीर शिवाजी, वीर पंजाबी, बाल महाभारत, दयानंदोपनिषद्, लाला लाजपतराय की आत्मकथा, वर्तमान भारत; वि० गणेश शंकर विद्यार्थी के मुकदमे का विवरण प्रकाशित करने के कारण जेलयात्रा, महात्मा गांधी के आह्वान पर पंजाब में हिन्दी-प्रचारार्थ गमन, राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय सहयोग तथा कई बार जेलयात्रा, आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगन, लोकप्रिय पत्रकार व लेखक और आर्यनेता के रूप में ख्यातिप्राप्त, गुरुकुल की विद्यासभा व सीनेट के सदस्य। **निधन** १८ जुलाई १६६२, दिल्ली।

मदनगोपाल विद्यालंकार (स्व०)
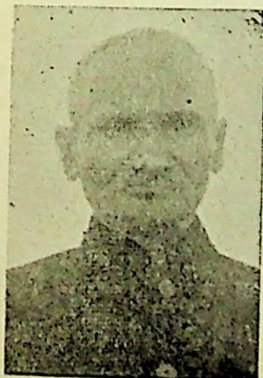
ज० ५ नवम्बर १८६७ हल्दौर (बिजनौर); पि० पं० भवानी प्रसाद; कार्य : अपने पैतृक ग्राम हल्दौर में जमींदारी किया करते थे; वि० आर्य-समाज के पुराने सेवक, स्वामी श्रद्धानन्द जी के परम भक्त, स्वाध्याय मनन, चिन्तन में विशेष अभिरुचि।

महेन्द्रनाथ विद्यालंकार (स्व०)

खिलाड़ी, कृषि-प्रेमी, व्यायाम प्रदर्शक, पुण्यभूमि में बाघ को मारने वाले। इनके सुपुत्र श्री वेदपाल विद्यालंकार भी गुरुकुल के स्नातक हैं। **निधन** अफ्रीका, मोटर दुर्घटना।

विद्यानन्द विद्यालंकार

ज० २३ मार्च १८८८ घोघड़ीपुर (करनाल), पि० श्री पं० गीताराम; शि० भिषगाचार्य, वैद्यवाचस्पति (कलकत्ता); कार्य : करनाल में आयुर्वेद का स्वतंत्र चिकित्सा कार्य, सुयोग्य व सफल वैद्य; र० अध्यात्म विषयक तीन पुस्तकें—खोज, चैन, स्वरूप दर्शन; वि० आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान, अध्यात्म मार्ग में विशेष अभिरुचि। प०आनन्द भवन, करनाल (हरियाणा)।
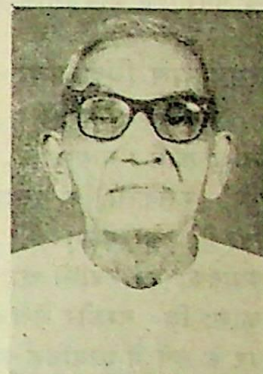
विद्यानिधि सिद्धांतालंकार

ज० ८ मार्च १६००, नरवरगढ़ (म० प्र०); पि० श्री महताबराय; कार्य : लेखन तथा वन-यात्रा, कन्या गुरुकुल देहरादून के अवैतनिक प्रबन्धक; र० शिवालिक की घाटियों में (पुरस्कृत), मालिनी के वनों में, सूनसान नालों में, जंगल की ओर (सुरेश वैद्य कृत अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद), द्वापर की एक दोपहर (प्रेस में), पौलस्त्य (अप्रकाशित), महा-वारहपुराण (संस्कृत ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद), 'धर्मयुग' 'नवनीत' 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' 'कंचनप्रभा' आदि पत्र-पत्रिकाओं में लेखक के रोमांच तथा साहसपूर्ण वन पर्यटनों पर आधारित लगभग ७५ लघु रचनाएं प्रकाशित; वि० वनों तथा वन्य पशुओं के स्वभाव आदि के अध्ययन में विशेष रुचि होने के कारण भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों-उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बम्बई, हैदरा-बाद, काश्मीर, पेशावर आदि के वनों की यात्रा और वहां

सूक्ष्म निरीक्षण से प्राप्त अनुभवों के आधार पर उत्कृष्ट वन-साहित्य की रचना, गुरुकुल की विद्यासभा व सीनेट के सदस्य । प० वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (सहारनपुर) ।

विद्यारत्न विद्यालंकार (स्व०)

कार्य : पटियाला में निजी व्यवसाय करते थे; वि० विद्यार्थी जीवन में अध्ययन के अतिरिक्त खेलों में विशेष रुचि, आर्यसमाज के कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान, निरन्तर कई वर्षों तक आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्त्ता ।

रामगोपाल विद्यालंकार (स्व०)

ज० १६००, हल्दौर (बिजनौर); पि० श्री भवानीप्रसाद; कार्य : नागपुर से 'प्रणवीर' का शुभारम्भ, 'विश्वमित्र' (कलकत्ता) के सम्पादक, २० वर्ष तक 'वीर अर्जुन' (दिल्ली) के सम्पादक, 'नवभारत टाइम्स' (दिल्ली) के सम्पादक; र० स्वामी श्रद्धानन्द, आचार्य रामदेव, संस्कार प्रकाश; वि० गम्भीर लेखक, पत्रकार और आलोचक; पत्रकार के रूप में अत्यधिक ख्याति । निधन १९६३, दिल्ली ।

शाँतिस्वरूप विद्यालंकार (महता)

ज० २० दिसम्बर १८९९, क्वेटा; पि० श्री ज्ञानचंद महता; कार्य : गुरुकुल मुलतान के सहायक मुख्याधिष्ठाता, सर गंगाराम ट्रस्ट सोसायटी लाहौर के सहायक मंत्री, इस समय गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के लखनऊ क्षेत्र के मुख्य एजेण्ट; वि० आर्यसमाज के कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान, अखिल भारतीय स्नातक मंडल के वर्षों तक मंत्री व उपप्रधान । प० एस० एस० महता एंड कम्पनी, २०२१, श्रीराम रोड, लखनऊ ।

सुरेन्द्रनाथ विद्यालंकार

ज० ११ जून १९०१, पिण्डी भट्टियां (पाकिस्तान); पि० श्री तुलसीदास आर्य; कार्य : गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्यापक, लाहौर में 'सत्यवादी' साप्ताहिक का प्रकाशन, कलकत्ता में ग्राफिक आर्ट कम्पनी की स्थापना और ब्लाक निर्माण एवं छपाई के कार्य का संचालन, १९४२ में इसी संस्था की दूसरी शाखा की पटना में स्थापना, कलकत्ता में द इन्डिया इंश्योरेन्स कम्पनी की स्थापना; वि० आर्यसमाज के कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान — आर्यसमाज कलकत्ता में मंत्री से प्रधान तक के सभी पदों पर कार्य, आर्यसमाज कलकत्ता की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष में आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना तथा उसके मंत्री के रूप में चार वर्ष तक कार्य, आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल द्वारा संचालित गुरुकुल वैद्यनाथ धाम में लगातार ६ वर्ष तक मंत्री, असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण सपत्नीक जेलयात्रा, शहीद भगतसिंह के कार्यकलापों में सक्रिय सहयोग तथा उनके मुकदमे के लिए हजारों रुपए एकत्रित, व्यवसाय में विशेष अभिरुचि, बिहार में ब्लाक-निर्माण के व्यवसाय का शुभारम्भ एवं ५० से अधिक व्यक्तियों को इस कार्य में प्रशिक्षण, सफल शिक्षक एवं सुवक्ता । प० अरोड़ा सदन, पो० कदमकुआँ, पटना–३ ।

संवत् १६७८ (सन् १६२२)

अमीचन्द्र विद्यालंकार (स्व०)

ज० श्रावण वदी दशमी सं. १६५७ वि०, कानपुर; पि० श्री जीवनलाल; शि० डिप्लोमा ऑव एजुकेशन (न्यूजीलैंड), एम.ए. (न्यूजीलैंड); कार्य : गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता, १६२६ में फीजी-प्रस्थान, फीजी में लातुका के निकट नसोवा में आर्यसमाज के गुरुकुल में अध्यापक, सूवा (फीजी) में आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में कन्या-पाठशाला की स्थापना, आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना तथा उसके मुख्याध्यापक एवं मुख्याधिष्ठाता (१६३७-५१), रात्रि पाठशाला की स्थापना एवं उसके मुख्याध्यापक (१६५०), सूवा व सामाबूला में विभिन्न संस्थाओं एवं संगठनों का संचालन; र० हिन्दी रीडर (पाँच भाग), हिन्दी बातचीत, हिन्दी व्याकरण, आदि; वि० सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री, आर्यसमाज व वैदिक धर्म के सुप्रसिद्ध प्रचारक, उच्चकोटि के विद्वान्, १६२४ में गोलागोकर्णनाथ में पं० शंकरलाल जी के साथ सफल शास्त्रार्थ, फीजी में स्काउट आंदोलन को प्रोत्साहन, १६३३-३४ में स्काउट काउण्टी के सदस्य निर्वाचित, १६४६-४७ में फीजी सरकार की ओर से सरकारी शिक्षा बोर्ड के सदस्य मनोनीत, फीजी अध्यापक संघ के अध्यक्ष, फीजी धारा-सभा के सदस्य (१६४७-५०), फीजी में भारत हित-चिन्तक सभा के प्रधान, लोकप्रिय मजदूर नेता, लेबर एडवाइजरी बोर्ड के सदस्य, इन्डस्ट्रियल वर्कर्स कांग्रेस के अध्यक्ष, १६४६ में 'पेसिफिक साइंस कांग्रेस' में फीजी के प्रतिनिधि, महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के राज्याभिषेक के अवसर पर फीजी सरकार द्वारा स्वर्णपदक से सम्मानित। निधन १४ मार्च १६५४, हवाई जहाज दुर्घटना।

ईश्वरदत्त मेधार्थी विद्यालंकार (स्व०)

ज० कानपुर; पि० डॉ० फकीरेराम; शि० एल. टी; कार्य : कुछ साल वैद्यक, सन् १६३० में जेल यात्रा, आर्य बौद्ध भिक्षु, बुद्धपुरी हाईस्कूल कानपुर में हैड मास्टर।

जनकदेव विद्यालंकार (स्व०)

चान्दनी चौक, दिल्ली में फार्मेसी का व्यवसाय करते थे, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के आदि संचालक।

जनमेजय विद्यालंकार

ज० ३ मार्च १६०३, कानपुर; शि० शास्त्री (पंजाब), एम० ए० (आगरा), कार्य : कई वर्षों तक लाहौर में अध्यापन कार्य, डी. ए. वी. कालेज कानपुर में संस्कृत विभाग में प्रवक्ता, अब स्वाध्याय में व्यस्त; र० अभिनव-काव्यम् (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत), सामाजिक क्रांति, संस्कृत शिक्षाविधि (तीन भाग), वैदिक वर्णव्यवस्था; वि० संस्कृत के सुयोग्य विद्वान्, काव्य रचना में विशेष अभिरुचि, आर्यसमाज के कार्यकलापों में सक्रिय योगदान। प० ७१/८३ स्वरूप नगर, कानपुर।

नित्यानन्द विद्यालंकार

शि० वैद्यवाचस्पति (कलकत्ता), एल० सी० पी० एस० (बम्बई), कार्य : बी० सी० जी० ए० खानेवाल (पाकिस्तान) में चिकित्साधिकारी, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में चिकित्सक, आयुर्वेदिक कालेज गुरुकुल कांगड़ी में प्रोफेसर व प्रधानाचार्य, सर गंगाराम हॉस्पिटल में हाउस सर्जन तथा सहायक सर्जन, इस समय गुड़गांवा में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य। प० ८५ आर, न्यू कॉलोनी, गुड़गांवा।

वंशीधर विद्यालंकार (स्व०)

ज० २२ जून १६००, डेरागाजीखां [पाकिस्तान], कार्य : गुरुकुल सूपा के आचार्य, बर्मा में प्रचार कार्य एवं धन संग्रह, तत्पश्चात् जामिया मिलिया में अध्यापक, वर्षों तक उस्मानिया विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, नानकराम भगवानदास विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य; र० मेरे फूल [काव्य], साहित्य [निबन्ध], बालापद [गीत], फल-वन [संपादित], शाकु-

तल एण्ड अदर्स [अंग्रेजी-निबन्ध]; वि० हिन्दी के प्रख्यात पत्रकार, विचारक, लेखक व सुकवि, आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान, प्राच्य महा-विद्यालय और राधाकृष्ण अनुसंधान केन्द्र हैदराबाद के संस्थापक, हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद के अध्यक्ष, साहित्य-मंत्री एवं रजिस्ट्रार, सभा की साहित्यिक पत्रिका 'अजन्ता' के सम्पादक, साहित्य सेवा के प्रति आदर प्रकट करने के लिए गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा 'विद्यामार्तण्ड' की मानद उपाधि से सम्मानित। निधन २२ फरवरी १९६६, नई दिल्ली।

सत्यपाल सिद्धान्तालंकार

ज० ३ दिसंबर १८९८, धर्मपुर (होशियारपुर); पि० श्री रघुवीरदत्त शास्त्री; कार्य : आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से मद्रास में हिन्दी-प्रचार, बर्मा व पंजाब में आर्य धर्म का प्रचार-कार्य, अफ्रीका में नैरोबी आर्य प्रति-निधि सभा की ओर से तीन वर्ष तक केनिया व युगांडा में आर्य समाज व वैदिक धर्म का प्रचार, १९३० में स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान तीन वर्ष के लिए जेल-यात्रा, १९३५ में पुन: पूर्वी अफ्रीका-गमन और वहां १९६० तक आर्यसमाज के संचालन में व्यस्त, इस समय ज्वालापुर के निकट आर्यनगर में स्वाध्याय, मनन, चिन्तन; वि० राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत-१९२१ में क्रान्तिकारी भगतसिंह व शहीद चन्द्रशेखर आजाद के सम्पर्क में रहकर उनके कार्यों में योगदान तथा महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग, नैरोबी में वर्धा की हिन्दी परीक्षाओं के केन्द्र की स्थापना तथा अपने व्यय से हिन्दी की शिशु पाठशाला और संस्कृत की किशोर व प्रौढ़ पाठशालाओं का संचालन, निर्भीक व उत्साही—छात्रावस्था में ११ वीं कक्षा में गुरुकुल वाटिका में चीते से भिड़न्त तथा हथियार रहित होते हुए भी उसे मारा, उच्चकोटि के वक्ता व उपदेशक। प० आर्यनगर, ज्वालापुर (सहारनपुर)।

सोमदत्त विद्यालंकार :

ज० राहों (जालन्धर); पि० पं० विष्णुमित्र; कार्य : स्नातक बनने के बाद वर्षों गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आचार्य, अर्जुन प्रेस दिल्ली में मैनेजर, गुरुकुल कांगड़ी में सहा० मुख्याधिष्ठाता तथा व्यवसायाध्यक्ष, कन्या गुरुकुल देहरादून में सहा० मुख्याधिष्ठाता, विजय प्रेस दिल्ली मे मैनेजर, श्री जयदयाल जी डालमिया के यहां बच्चों के संरक्षक व शिक्षक, आर्य प्रचार समिति बम्बई के मंत्री उड़ीसा में सीमेंट फैक्टरी के सोशल वेलफेयर आफीसर, इस समय दिल्ली में आर्यसमाजों के साप्ताहिक सत्संगों मे व्याख्यान,स्वाध्याय आदि में व्यस्त; वि० विनोदप्रिय, ख्यातिप्राप्त वक्ता, लेखक, विचारक तथा प्रबन्धपटु। प० एच-३११ न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली।

सम्वत् १९७९ (सन् १९२३)

अर्जुनदेव विद्यालंकार

ज० सतधरा (मिन्टगुमरी); पि० श्री पोखरदास; कार्य : कुछ दिन प्रचारक, फिर वैद्य।

इन्द्रजीत विद्यालंकार (स्व०)

कार्य : कुछ वर्ष इन्द्रप्रस्थ में अध्यापक, तदनन्तर बुलन्दशहर में दंत चिकित्सक; वि० आर्यसमाज और जन-संघ के सक्रिय कार्यकर्ता।

केशवदेव सिद्धांतालकार

ज० बहावलपुर; कार्य : दक्षिण भारत में सार्व-देशिक सभा की ओर से प्रचार-कार्य, १४ आर्यसमाजों की स्थापना, बाद में स्वतन्त्र व्यवसाय; वि० उत्तम वक्ता। प० श्री पं० केशवदेव ज्ञानी, प्लॉट नं० १, न्यू कालोनी, भेलूपुरा, वाराणसी।

जयदेव विद्यालंकार (स्व०)

जा० मुलतान; पि० श्री इन्द्रजीत; शि० आयुर्वेद का पाश्चात्य चिकित्सा के साथ चार वर्ष अध्ययन, आयुर्वेदाचार्य; कार्यः लेखन व अनुवाद-कार्य; र० भैषज्य-रत्नावली, चरक संहिता, चिकित्सा कलिका का हिन्दी अनुवाद, रसहृदयतंत्र एवं रसेन्द्रचूड़ामणि, चक्रदत्त के संशोधित एवं सटीक संस्करण आदि; वि० सुयोग्य अनुवादक, विद्यालंकार के बाद लाहौर में कुछ वर्ष कविराज नरेन्द्रनाथ मित्र के यहां कर्माभ्यास, आयुर्वेद के पारंगत विद्वान् एवं लेखक।

गंगादत्त विद्यालंकार

दिवंगत

दीनदयालु सिद्धांतालंकार (स्व०)

शि० शास्त्री; कार्य: वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष, गुरुकुल कांगड़ी में सहायक मुख्याधिष्ठाता, उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य, श्री चन्द्रभानु गुप्त मंत्रिमंडल में उपशिक्षामन्त्री, पुनः गुरुकुल फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष (१९६७–७२); र० अपनी भाषाएं; वि० गुरुकुल की विद्यासभा व सीनेट के सदस्य, रुड़की विश्वविद्यालय की सीनेट के सम्मानित सदस्य, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के मनोनीत सदस्य, अनेक सरकारी व गैरसरकारी संस्थाओं के प्रमुख कार्यकर्ता, कई वर्ष तक सहारनपुर जिला कांग्रेस के प्रधान, स्वतंत्रता सेनानी, इतिहास, भूगोल, राजनीति, तथा विधान के प्रसिद्ध विद्वान्, सुवक्ता, सुलझे हुए लेखक, अनेक पत्रों के संपादक, काश्मीर से कैलाश मानसरोवर तक नगाधिराज हिमालय के भौगोलिक तथा धार्मिक महत्त्व वाले सभी प्रदेशों की अनेक बार साहसिक यात्राएं करने वाले उत्साही पर्यटक, राष्ट्रीय आंदोलनों में अनेक बार जेलयात्रा, कई बार अखिल भारतीय स्नातक मंडल के प्रधान व मंत्री निर्वाचित, पिछले चार दशक से निरन्तर हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में सामयिक राजनीतिक प्रसंगों पर लेख प्रकाशित।

देवदत्त विद्यालंकार

दिवंगत

देवराज विद्यालंकार (स्व०)

ज० अमृतसर; पि० मेलाराम; कार्य: अच्छे वक्ता, अमृतसर में व्यापारी, कांग्रेस कार्यकर्ता, सन् १९३० में जेल गये और जेल से आने के कुछ समय बाद देहान्त।

नवरत्न विद्यालंकार (स्व०)

ज० गुजरात (पाकिस्तान); पि० जगन्नाथ; कार्यः कुछ वर्ष तक गंगाराम ट्रस्ट मे कार्य, तदनन्तर गुरुकुल फार्मेसी के इलाहाबाद मे एजेन्ट; वि० सामाजिक कार्यों में बड़ी दिलचस्पी लेते थे, इलाहाबाद आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धक, अनेक सामाजिक संगठनों के संचालक, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी।

प्रभाकर विद्यालंकार(स्व०)

ज० मुकेरियां; पि० मुन्शीराम; कार्यः व्यापार करते थे।

बृहस्पति सिद्धान्तालंकार (स्व०)

सिन्ध में प्रचारक और अध्यापक रहे।

महाव्रत विद्यालंकार (स्व०)

कार्य: सन् १९२३ से १९३१ तक सोवियत रूस में रहे, बाद में दिल्ली में पत्रकार, दैनिक 'समाचार' के सम्पादक, १९४२ में कुछ समय के लिए नजरबन्द, सफल आर्किटैक्ट।

यशःपाल सिद्धान्तालंकार (स्व०)

ज० बैजवाड़ा, पि० आचार्य रामदेव; कार्यः १९२३ से मृत्युपर्यन्त आर्यसमाज के प्रचारक, असम, बर्मा में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए गए, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में वेद विभाग के अधिष्ठाता और सभा के सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ता, कन्या गुरुकुल देहरादून के प्रबन्धक; र० शक्ति रहस्य वैदिक कोष (संकलन); वि० या० प्रचारार्थ बर्मा यात्रा; वि० ख्यातिप्राप्त वक्ता, लेखक एवं विचारक, गुरुकुल की विद्यासभा के सदस्य। निधन १९६३।

रामेश्वर सिद्धान्तालंकार

ज० नरवाणा (हरियाणा); पि० जयराम; कार्य: आर्य पुरोहित और उपदेशक, गांधी सेवा संघ के सदस्य

ग्रौर कांग्रेस कार्यकर्ता, तीन बार जेलयात्रा, कुछ दिन ग्रर्जुन कार्यालय व गुरुकुल में कार्य, ग्रब नरवाणा में व्यापार ग्रौर कांग्रेस के कार्य में व्यस्त। प० नरवाणा (हरियाणा)।

विक्रमादित्य सिद्धान्तालंकार (स्व०)

ज० ग्रारा (विहार); पि० स्वामी ब्रह्मानन्द; कार्य: गुरुकुलों में–विशेष रूप से इन्द्रप्रस्थ-में लोकप्रिय ग्रध्यापक; वि० हर विषय के विद्वान् एवं सफल तैराक व खिलाड़ी। निधन गुरुकुल झज्जर में सर्पदंश से।

वीरेश्वर विद्यालंकार (स्व०)

ज० मांडले (बर्मा); कार्य: बर्मा में बौद्ध साधुग्रों में संस्कृत का प्रचार कार्य; वि० हॉकी के ग्रच्छे खिलाड़ी। निधन १९४२ में बर्मा पर जापानी ग्राक्रमण के दिनों में।

श्रीकृष्ण विद्यालंकार (स्व०)

ज० पीलीभीत; पि० श्री जानकीदास; कार्य: व्यापार करते थे।

सुधन्वा विद्यालंकार (स्व०)

पहले ग्रलवर में राजवैद्य, तदनन्तर दिल्ली में सरकारी चिकित्सक।

हरिशरण सिद्धान्तालंकार

ज० कमालिया(पाकिस्तान);पि०श्री लक्ष्मणदास; कार्य: वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी तथा इन्द्रप्रस्थ में ग्रध्यापनादि द्वारा सेवा, ग्रब दिल्ली में ग्रार्य संस्कृति का प्रचार; र० चारों वेदों का हिन्दी भाष्य; वि० ग्राजन्म ब्रह्मचारी, ग्रच्छे व्याख्याता ग्रौर लेखक, संस्कृत व्याकरण के अच्छे पंडित, चारों वेदों के भाष्यकार, उद्भट्ट विद्वान्। प० २२३५, चूनामण्डी, पहाड़गंज, नई दिल्ली–१।

संवत् १९८० (सन् १९२४)

ग्रत्रिदेव विद्यालंकार (स्व०)

ज० सहारनपुर; शि० भिषग्रत्न; कार्य: गुरुकुल कांगड़ी ग्रायुर्वेद महाविद्यालय ग्रौर जामनगर ग्रायुर्वेद संस्थान में उपाध्याय, डी० ए० वी० कालेज जालन्धर के प्रिंसिपल, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी की ग्रायुर्वेदिक फार्मेसी के वर्षों तक अध्यक्ष, ग्रायुर्वेदशास्त्र के पारंगत विद्वान् तथा प्रसिद्ध लेखक; र० लगभग ३० ग्रन्थों की रचना–जीवन विज्ञान, ग्रात्रेय वचनामृत, उपचारपद्धति, न्यायवैद्यक और विषतंत्र, शल्यतंत्र, चरक संहिता, प्रत्यक्ष-शारीरम्, सुश्रुत संहिता, अष्टांगसंग्रह, ग्रष्टांगहृदय एवं जीवानन्दम् का हिन्दी ग्रनुवाद, चरक संहिता का ग्रनुशीलन, संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद, क्लिनिकल मेडिसिन, धात्री शिक्षा, शिशुपालन, स्वास्थ्यविज्ञान, भैषज्यकल्पना, ग्रायुर्वेद का इतिहास, शल्यतंत्र, योगचिकित्सा, भारतीय रसपद्धति, घर का वैद्य, स्वास्थ्य ग्रौर सद्वृत्त, हमारे भोजन की समस्या, स्त्रियों का स्वास्थ्य ग्रौर रोग, संस्कारविधि विमर्श, परिवार नियोजन, प्राचीन भारत में प्रसाधन; वि० ग्रनेक पुस्तकों पर पुरस्कार प्राप्त, कुशल एवं सफल चिकित्सक।

ग्रानन्दस्वरूप विद्यालंकार (स्व०)

ज० १९ ग्रगस्त १९०१, माछीवाड़ा (लुधियाना); पि० श्री धनीराम; शि० बी० ए० (दिल्ली), बी० टी० (जयपुर); कार्य: हिन्दू स्कूल मनेवा (वर्मा) में मुख्याध्यापक (१९२४-२५), बम्बई में ठेकेदारी (१९२५-२९), गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में ग्रध्यापक(१९३३-४५), स्वतंत्र भारत मिल्स हायर सेकेन्डरी स्कूल में सहायक मुख्याध्यापक (१९५१-६२), भवन-निर्माण सामग्री के विक्रेता, लोकमान्य (साप्ताहिक) तथा सम्पदा (मासिक) में सम्पादक; वि० या० मनेवा (बर्मा); वि० मनेवा (बर्मा) में ग्रार्यसमाज की स्थापना, लेखन कला में रुचि, व्यंग्य व शब्द चित्र के कुशल लेखक।

गुरुदत्त सिद्धांतालंकार (स्व०)

वर्षों तक ग्रार्यप्रतिनिधि सभा पंजाब तथा आर्य प्रादेशिक सभा के ग्रधीन महोपदेशक एवं प्रचारक।

नारायणदत्त विद्यालंकार

ज० १२ अगस्त १६०१, दिल्ली; पि० श्री रामजीदास; कार्य : पानीपत में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० या० भ्रमणार्थ अमेरिका-यात्रा; वि० कुशल व पीयूषपाणि वैद्य, आर्यसमाज के प्रभावशाली कार्यकर्ता तथा अन्य सार्वजनिक जन-सेवा के कार्यों में अग्रणी। प० ५६८ मॉडल टाउन पानीपत।

प्रेमचन्द्र विद्यालंकार

कार्य : भोगपुर (जिला बिजनौर) में फार्म सुपरिन्टेण्डेण्ट का कार्य करते हैं; **वि०** छात्रकाल में हॉकी के माने हुए खिलाड़ी थे। प० फार्म सुपरिन्टेन्डेन्ट, भोगपुर जट्टी वाला, नजीबाबाद (बिजनौर)।

भद्रसेन विद्यालंकार

शि० एम० ए०, **कार्य:** विभिन्न स्कूलों में अध्यापन। प० अड़गड़े की गली, दाल बाजार, लश्कर (ग्वालियर)।

रामचन्द्र विद्यालंकार

ज० १० ज्येष्ठ १६५८ विक्रमी, स्यालकोट; **पि०** श्री पूर्णचन्द्र; कार्य : रंगून-मांडले (बर्मा) में पुरोहित एवं शिक्षण कार्य, हिन्दी साहित्य सम्मेलन वर्धा (नागपुर) की ओर से एवं शिक्षक परीक्षा-प्रबन्धक, संप्रति आर्य-समाज आदर्श नगर (जयपुर) में पुरोहित तथा दयानन्द पब्लिक स्कूल जयपुर में शिक्षक; र० बर्मी लिपि में सत्संग गुटका; वि० भारत-बर्मा मैत्री सभा के सम्मानित सदस्य, शिक्षण एवं पौरोहित्य-कार्य में विशेष अभिरुचि। प० ३ ज ८, जवाहरनगर, जयपुर-४।
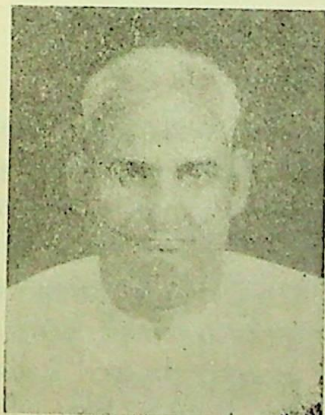
विराट विद्यालंकार(स्व०)

पेशावर व नागपुर के सरकारी विभागों में कार्य करते थे।

विवेकानन्द विद्यालंकार (डा०सिन्हा)(स्व०)

ज० आरा; पि० स्वामी ब्रह्मानन्द; छात्रकाल में हिन्दी और संस्कृत के अच्छे कवि; वि०धनुर्विद्या और अंग बल के प्रयोग करते हुए समस्त भारत और ब्रह्मदेश में खूब यश कमाया, योगविद्या के प्रयोगों में कौशल प्रदर्शित किया, होमियोपैथी तथा योग चिकित्सा द्वारा अच्छी ख्यातिप्राप्त, बम्बई में यौगिक चिकित्सा करते थे।

विष्णुमित्र विद्यालंकार

कार्य: लुधियाना में स्वतंत्र व्यवसाय। प० द्वारा जैनिथ इलैक्ट्रिक कम्पनी, कमेटी बाग, लुधियाना।

सत्यकेतु विद्यालंकार

ज० १६ सितम्बर १६०३, आलमपुर (सहारनपुर); पि० श्री आशाराम; शि०डी०लिट्० (पेरिस), विद्यामार्तण्ड (गुरुकुल); **कार्य** : दैनिक 'अर्जुन' के सहायक सम्पादक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में इतिहास के उपाध्याय, विविध व्यवसाय व साहित्य सृजन, 'सरस्वती सदन' नामक प्रकाशन सस्था की स्थापना व संचालन, स्नातक निर्वाचन क्षेत्र रुहेलखड से विधान परिषद् के लिए चुनाव संघर्ष, विधान परिषद् की सदस्यता (१६६२-६८), साहित्य-रचना, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति (१६७४-७५), इस समय साहित्य-सृजन में व्यस्त; र०मौर्य साम्राज्य का इतिहास (मंगलाप्रसाद पुरस्कार, जोधासिंह पुरस्कार एवं राधाकृष्ण पदक प्राप्त), प्राचीन भारत की शासन संस्थाएं और राजशास्त्र (उ० प्र० सरकार द्वारा ५००० रुपये के गो० ब० पन्त तथा म० प्र० शासन द्वारा १५०० रुपये के मोतीलाल नेहरू पुरस्कार से सम्मानित), आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य (उपन्यास) (बंगाल हिन्दी मंडल

कलकत्ता तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा १०००-१००० रुपये का पुरस्कार), यूरोप का आधुनिक इतिहास (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा १५०० रुपये का पुरस्कार), राजनीतिशास्त्र (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा १००० रुपये का पुरस्कार), सेनानी पुष्पमित्र (उपन्यास) (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा १००० रुपये का पुरस्कार), एशिया का आधुनिक इतिहास (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ८०० रुपये का पुरस्कार), भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ८०० रुपये का पुरस्कार), मध्य एशिया और चीन में भारतीय संस्कृति, दक्षिण-पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति, प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन, विदेशी राज्यों की शासन विधि, भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास, स्वतन्त्र भारत का संविधान, भारत का प्राचीन इतिहास, पाटलिपुत्र की कथा, भारत का सांस्कृतिक इतिहास, समाजशास्त्र, विश्व इतिहास प्रवेशिका, संसार का सरल इतिहास, भारत का इतिहास, फ्रेन्च स्वयं शिक्षक, नागरिक शास्त्र के सिद्धान्त, भारत की शासन व्यवस्था और नागरिक जीवन, प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग, अपने देश की कथा, बौद्ध काल का राजनीतिक इतिहास, अग्रवाल जाति की उत्पत्ति और उसका प्राचीन इतिहास, अन्तर्दाह (उपन्यास), होटल मॉडर्न (उपन्यास), वसीयतनामा (मोपासा की कहानियों का अनुवाद), नागरिकशास्त्र, विश्व की राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (१९१९-१९४५), अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (१९३९-१९७४), भारत का सरल इतिहास, डेमोक्रेटिक एलिमेन्ट्स इन एंशियन्ट इंडियन पोयट्री; वि० या० उच्च शिक्षा के लिए पेरिस यात्रा (१९३६-३८), भारत सरकार के शिष्टमंडल के सदस्य के रूप में चीन की यात्रा (१९५४); वि० नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी के आजीवन सदस्य, अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सदस्य, उत्तर प्रदेश की सूबा कांग्रेस कमेटी के सदस्य (१९२८-३१), राष्ट्रीय श्रम संस्थान के भारत सरकार द्वारा मनोनीत सदस्य (१९७४ से), सुविख्यात वक्ता, सुलेखक। प० लक्स माउन्ट, मसूरी।

सोमकीर्ति विद्यालंकार

ज० २४ फरवरी १९५९, मियाणी (पाकिस्तान); पि० श्री हरिराम हकीम; कार्य : आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी में रसायनशास्त्र का अध्यापन, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में तथा अन्य फार्मेसियों में व्यवस्था सम्बन्धी कार्य; वि० या० निजी व्यापार के सिलसिले में केनिया और टाँगानीका की यात्रा; वि० विद्यालंकार-परीक्षा में रसायनशास्त्र विषय में सर्वप्रथम रहने के कारण अनन्तराय पदक प्राप्त, आर्यसमाज के क्षेत्र में व्यापक कार्य, कई वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सदस्य, अखिल भारतीय श्रद्धानन्द सेवा संघ जोरबाग में सेवा-कार्य, औद्योगिक क्षेत्र में विशेष अभिरुचि। प० ६६, नया गाँधी नगर गाजियाबाद (मेरठ)।

संवत् १९८१ (सन् १९२५)

अमरनाथ विद्यालंकार

ज० ८ दिसम्बर १९०२, भेड़ा (पाकिस्तान); कार्य: सर्वेन्ट्स ऑफ पीपल सोसायटी के आजीवन सदस्य, 'पंजाब केसरी' के संपादक (१९३०-३३), अक्टूबर १९४८ में डॉ० राजेन्द्रप्रसाद की प्रेरणा से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के स्थायी सचिव, पंजाब विधानसभा के सदस्य (१९५०-५१), नया विधान बनने पर लोकसभा के सदस्य (१९५२-५६), पंजाब के श्रम व स्वास्थ्य मंत्री (१९५६), पुन: पंजाब विधान सभा के सदस्य तथा श्रम, शिक्षा व भाषा मंत्री (१९५७-६२), लोकसभा के सदस्य (६२-६७ और ७० से अब तक); र० आज की दुनिया, आज का मानव सैनोर, मानव संघर्ष, भारत का इतिहास, मैन थ्रू द इवोल्यूशनरी प्रोसेस, यूनिवर्सिटी एजुकेशन, सोशियल एजुकेशन इन इंडिया; वि० राष्ट्रीय आंदोलन (१९३०-३२), किसान आंदोलन (१९४१) और 'भारत छोड़ो' आंदोलन (१९४२-४६) के सिलसिले में जेलयात्राएं, इंटक के ट्रेड यूनियन शिष्ट मंडल के सदस्य के रूप में चीन (१९५४), अन्तर्राष्ट्रीय लेबर कांफ्रेंस में भारतीय शिष्टमंडल के नेता के रूप में जेनेवा (मई १९५७), सद्भावना मिशन पर भारतीय शिष्टमंडल के नेता के रूप में युगोस्लाविया (१९५७) तथा अफगानिस्तान (१९६१) की यात्रा, छात्रावस्था में ही पत्रकारिता

में विशेष रुचि। प० ८७ शाहजहां रोड, नई दिल्ली–११।

ईश्वरदत्त सिद्धान्तालंकार

ज० स्यालकोट; कार्य: गुरुकुल कुरुक्षेत्र व जामिया मिलिया में अध्यापन। प० द्वारा श्री ज्ञानेन्द्रकुमार शर्मा, क्वार्टर नं० २१, एस० डी० वर्क्स, पो० सी आर आर आई, मथुरा रोड, नई दिल्ली-२०।

कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

ज० लुधियाना; कार्य: औद्योगिक कार्यों में रुचि होने के कारण इसी क्षेत्र में कार्य, मिलिटरी के टेक्निकल विभाग में कार्य, के. सी. नाम से प्रसिद्ध।

गौतमदेव सिद्धांतालंकार

ज० १८ मार्च १९०३, मेरठ; पि० श्री शंकरलाल; कार्य: देहरादून में सर्राफे का व्यापार; वि० आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता, १९२७ में आर्यकुमार सभा देहरादून के प्रधान, कई वर्षों तक आर्यसमाज देहरादून के मंत्री व प्रधान, १८-१९ वर्ष तक शिवाजी सेवा-समिति देहरादून के मंत्री पद पर सफलतापूर्वक कार्य, १९३० के नमक सत्याग्रह आंदोलन में सक्रिय भाग लिया और उसी समय ५०० स्वयं सेवकों को संगठित करके शराब व सिगरेट की दुकानों पर पिकेटिंग कराया, फलत: जेलयात्रा की, १९४२ के 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आंदोलन में पुन: जेलयात्रा, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देहरादून की अनेक धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक संस्थाओं के प्रतिष्ठित पदों पर कार्य करते हुए लोकसेवा में तत्पर। प० २०, पुरुषोत्तमदास टंडन मार्ग, लक्ष्मण चौक, देहरादून।

चैतन्यदेव विद्यालंकार (स्व०)

कार्य: ब्रह्मदेश में फोटोग्राफी का स्वतंत्र व्यवसाय, युद्धकाल में लाहौर में फोटोग्राफी, विभाजन के पश्चात् पूना में यही व्यवसाय; वि० खिलाड़ी, कुशल फोटोग्राफर।

देवदत्त सिद्धान्तालंकार (स्व०)

कार्य: गुरुकुल रामताल (महरौली) के संस्थापक तथा आचार्य; वि० विनोद प्रिय, आशुकवि, तैराक, भ्रमण-प्रेमी, लोकसेवक।

धीरेन्द्रकुमार सिद्धान्तालंकार (स्व०)

ज० पलसाणा (जि० सूरत); शि० पीएच० डी० मनोविज्ञान एवं शिक्षाशास्त्र, (म्यूनिक); कार्य: सार्वदेशिक सभा की ओर से बेलगांव (कर्नाटक) में आर्य धर्म प्रचारक, गुरुकुल सूपा में अध्यापन, म्यूनिक विश्व-विद्यालय में दो वर्ष भारतीय विद्याओं के उपाध्याय, बड़ौदा राज्य के शिक्षा विभाग में क्रमश: एजुकेशनल इन्सपेक्टर तथा ट्रेनिंग कालेज के उपाध्याय (१९३७-४१), अहमदाबाद टीचर्स ट्रेनिंग कालेज में आचार्य (१९४२), पूना के तिलक कालेज ऑफ एजुकेशन में प्रोफेसर, बम्बई की चिल्ड्रन्स एड सोसायटी के प्रधान अधिकारी, भारतीय विद्याभवन (बम्बई) के प्रस्तोता और व्याख्याता; वि०या० दक्षिणी व पूर्वी अफ्रीका, जर्मनी व यूरोप के अनेक देशों की ज्ञानयात्रा; वि० अंग्रेजी, हिन्दी, तथा गुजराती के सुलेखक, कुशल तैराक व हॉकी के खिलाड़ी, रोडेशिया में एक विद्यालय की स्थापना व सचालन, १९३१ में मोटर द्वारा दक्षिणी व पूर्वी अफ्रीका के अनेक देशों व वनों का भ्रमण, जर्मनी में हॉकी में क्रीड़ा कौशल के लिए पुरस्कृत।

नारायणदत्त सिद्धान्तालंकार

ज० अगस्त १९०३, रोहड़ी (सिन्ध); पि० श्री दर्यानामल; शि० आयुर्वेद विशारद (कलकत्ता), आयुर्वेद-उपाध्याय (जयपुर); कार्य: उपदेशक विद्यालय गुरुदत्त भवन लाहौर में दर्शन व संस्कृत के अध्यापक (१९२५–२७), आयुर्वेद का अध्ययन (१९२७–३०), बिड़ला जूट मिल कलकत्ता में चिकित्सक (१९३०–३२), बिड़ला जूट मिल दिल्ली में प्रधान चिकित्सक (१९३२–६३), नि:शुल्क चिकित्सा–परामर्श तथा पुस्तक लेखन (१९६४ से); र० शंकराचार्य-जीवन और दर्शन, गुरुनानक-जीवन और दर्शन, महर्षि दयानन्द–जीवन और दर्शन, जपुजी (हिन्दी व्याख्या), संध्या (हिन्दी व्याख्या), वैदिक साम्यवाद, ओंकार उपासना; वि० बिड़ला मिल क्षेत्र में आर्यसमाज के प्रचार व शिक्षा के प्रसार में उल्लेखनीय

योगदान, कांग्रेस पार्टी की ओर से दिल्ली नगरपालिका और नगर निगम के सदस्य (१९५१–६२), कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता, सफल चिकित्सक, धार्मिक व दार्शनिक पुस्तकों के लेखन में विशेष रुचि, पत्र–पत्रिकाओं में भी विविध विषयों पर लेख प्रकाशित। प० विद्याभवन, ४/५९ रूपनगर दिल्ली-७।

मनुदेव विद्यालंकार (स्व०)

ज० डेरागाजी खां; कार्य: विविध व्यापारिक क्षेत्रों में कार्य करते रहे दिल्ली में एक डच कंपनी के उत्तरी भारत के सोल एजेन्ट, दिल्ली में स्वतन्त्र व्यवसाय।

सत्यकाम विद्यालंकार

ज० १९०५, लाहौर; पि० श्री धनीराम; कार्य: 'वीर अर्जुन' दैनिक (१९२४), 'नवयुग' (१९३१), 'आपबीती', धर्मयुग (१९५०–६०) तथा 'नवनीत हिन्दी डाईजेस्ट' और इसी के गुजराती--मराठी संस्करण (१९६१–७१) के संपादक, इस समय स्वतन्त्र लेखन तथा चारों वेदों के अंग्रेजी अनुवाद–कार्य में व्यस्त; र० चरित्र निर्माण, जीवन साथी, सोमा (पंजाब सरकार द्वारा पुरस्कृत), मुक्ता, चेयरमैन, देवता का दान, राष्ट्रपुरुष, मानसिक शक्ति, वैदिक वन्दना गीत, आठ सर्वश्रेष्ठ कहानियां, सफलता के सूत्र, जीवन रश्मि, शिवाजी, सरदार पटेल, देश-देशान्तर, ईरान, सरल महाभारत आदि; वि० सफल पत्रकार, हिन्दी के प्रख्यात लेखक व कवि, अग्रणी पत्र–पत्रिकाओं में लेख व यात्रा वृतांत प्रकाशित, देश-विदेश का व्यापक भ्रमण, अखिल भारतीय स्नातक मण्डल के प्रधान १९२६, में 'अर्जुन' में सरकार की दृष्टि में आपत्तिजनक लेख व समाचार छापने के कारण जेल यात्रा। प० चन्द्रशेखर भुवन, २/१७८ सायन (वेस्ट), बम्बई–२२।

सत्यदेव विद्यालंकार

ज० पटियाला; पि० श्री मुरारीलाल; कार्य: गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के अध्यक्ष एवं प्रधान वैद्य (१९२९-६३); र० आसव-अरिष्ट; वि० अपनी श्रेणी में सदा प्रथम, अनेक पदक प्राप्त, आर्य समाज की गतिविधियों में रुचि, वर्षों तक गुरुकुल की आर्यसमाज के प्रधान, मंत्री आदि; प० मकान नं० १३३२/२ जंड गली, पटियाला।

हरिश्चन्द्र विद्यालंकार (स्व०)

ज० ३ सितम्बर १९०३, फरमाना (रोहतक); कार्य: कुछ वर्ष तक गुरुकुल मुलतान और कुरुक्षेत्र में मुख्याध्यापक, 'हिन्दू' व 'लोकमान्य' आदि साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन, दिल्ली में निजी प्रेस का संचालन; र० बालरामायण, माता का संदेश, शिष्टाचार, आर्यसमाज का इतिहास, महर्षि दयानन्द सरस्वती, मिल जुलकर काम करो, सामवेद भाष्य, ऋग्वेद भाष्य; वि० सुयोग्य शिक्षक, प्रख्यात पत्रकार व लेखक, सफल दन्त चिकित्सक।

सम्वत् १९८२ (सन् १९२६)

इन्द्रसेन विद्यालंकार (स्व०)

शि० अनेक सरकारी संस्कृत परीक्षाएं उत्तीर्ण व अर्थशास्त्र में एम० ए०; कार्य: कुछ वर्ष दयालसिंह कालेज लाहौर में संस्कृत के प्रोफेसर, विभाजन के बाद अनुसंधान कार्य, र० दी स्टेट्स आफ वूमेन इन एन्शेन्ट इंडिया, वार एन्ड पीस इन एन्शेन्ट इंडिया, 'अहिंसा योग' विद इंगलिश ट्रान्सलेशन।

कृष्ण चन्द्र विद्यालंकार

ज० २८ नवम्बर १९०४, बसीड़ा (मुजफ्फरगढ़); पि० चौ० जेसाराम जी; कार्य : श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा जी के निर्देशन में राजपूताने के इतिहास का लेखन, कुछ वर्ष विड़ला मिल दिल्ली में लेबर वेलफेयर ऑफीसर, 'त्यागभूमि' के सहायक सम्पादक, दैनिक 'वीर अर्जुन' के संपादकीय विभाग में कार्यकर्ता (१९३२), साप्ताहिक 'वीर अर्जुन' के संपादक (१९५१ तक), 'संपदा' मासिक के संचालक व संपादक (१९५२ से अब तक); र० इतिहास, राजनीति तथा अन्य विषयों पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित–चीन का स्वाधीनता युद्ध, कांग्रेस का इतिहास, वर्तमान जगत्, आधुनिक संसार, किसानों के सवाल, भारतीय संस्कृति, मुक्ति पत्र: एक अध्ययन, प्रबन्ध प्रकाश, आधुनिक हिन्दी निबन्ध, हिन्दी व्याकरण, सरल रचना विधि, (दो भाग), आविष्कार और आविष्कारक, भ्रमण और साहस की कहानियां, साहसी मानव; वि० निर्भीक व सत्यनिष्ठ पत्रकार, आर्यसमाज, हिन्दी साहित्य सम्मेलन और कांग्रेस में विविध पदों पर कार्य किया. साहित्य व समाज के प्रति विशेष अभिरुचि तथा उसी की सेवा के लिए जीवन समर्पित । प० २८/११ शक्तिनगर दिल्ली–७ ।
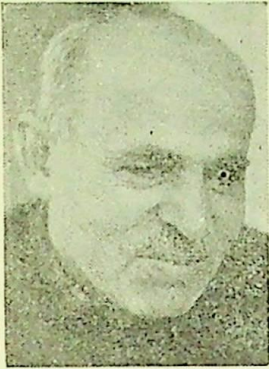
कृष्णदत्त विद्यालंकार (स्व)

ज० लय्या (प० पंजाब); कार्य : बिरला मिल्स' देहली में कार्य करते थे; वि० आपने सदा मजदूरों के हितों का ध्यान रखा, जिससे अन्त में उन्हें वह स्थान छोड़ना भी पड़ गया । दिल्ली कांग्रेस की ओर से मजदूर संगठन के कार्यकर्ता रहे, व्यायाम, वनभ्रमण, खेल और मिष्ठान्न प्रेमी थे ।

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार :

ज० ४ दिसम्बर १९०४, कोट अद्दू (पाकिस्तान); पि० ला० टेकचन्द जी, कार्य : इतिहास में अनुसन्धान तथा 'ज्योति' के सह सम्पादक (१९२६–३०), लाहौर से दैनिक 'जन्मभूमि' का प्रकाशन व संपादन, लाहौर में 'विश्व साहित्य ग्रन्थमाला' का संगठन, संचालन व सम्पादन (१९३२–४७), भारत सरकार के विदेशी मामलों के मासिक पत्र 'विश्वदर्शन, के सम्पादक (१९४८-५४), भारत सरकार के सांस्कृतिक मासिक पत्र 'आजकल' के सम्पादक (१९५५–६३), बम्बई में 'सारिका' मासिक के सम्पादक (मई १९६३–६७), दिल्ली में सृजनात्मक रचनाओं के अतिरिक्त भारत तथा अन्य देशों के सम्बन्ध में नियमित लेखन (१९६७ से अब तक); र० कहानी संग्रह— चन्द्रकला, भय का राज्य अमावस, तीन दिन, वापसी, पहला नास्तिक, गहरे अन्धेरे में, मेरी प्रिय कहानियां, नाटक— अशोक (एक लाख से ऊपर छप चुका है), रेवा, न्याय की राह, हिन्दुस्तान जाकर कहना, शिव सती, गौरीशंकर, अन्य— आजकल, आज का मानव समाज, बच्चन, उत्कीर्ण पथ चिन्ह, स्वीडन, चौथी दुनियां और उसके आसपास, संपादन व अनुवाद— संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियां पाप (चेखव की पुस्तक का अनुवाद), चरागाह (हार्डी की पुस्तक का अनुवाद), तारों भरी रात (रूसी कहानी–संग्रह), रोबिन्सन क्रूसो, पं० नेहरू के ३० भाषणों का सम्पादन, सरदार पटेल की 'भारत की एकता का निर्माण' का सम्पादन आदि; वि० या० विभिन्न देशों के जन–जीवन, चिन्तन तथा आर्थिक व सामाजिक आदि परिस्थितियों का अध्ययन करने हेतु स्वीडन, रूस, इगलैंड, जर्मनी, फ्रांस, आस्ट्रिया, डेनमार्क, हॉलैंड फिनलैंड का भ्रमण, रूस में सुप्रसिद्ध सोवियत लेखक संघ के अतिथि, इन यात्राओं के सम्बन्ध में दो पुस्तकें और ३५ लेख प्रकाशित; वि० प्रख्यात लेखक, पत्रकार व विचारक के रूप में लोकप्रिय, लाहौर में हिन्दी की प्रमुख संस्था 'हिन्दी समाज' का संगठन और संचालन, १९४५ में महात्मा गांधी द्वारा 'भारतीय साहित्य परिषद्' की कार्य समिति में पंजाब का प्रतिनिधि मनोनीत, भारत सरकार की केन्द्रीय सूचना सेवा के सम्मानित सदस्य, विभाजन के दिनों में शरणार्थी शिविरों में सेवा कार्य, राजधानी में सभी भाषाओं के लेखकों की सुप्रसिद्ध संस्था 'भारती के संयोजक, कुछ रचनाओं का भारत की सब भाषाओं के अतिरिक्त रूसी, अंग्रेजी, जर्मन, तथा चैकोस्लोवाक भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित, सभी कहानी-संग्रह और नाटक विभिन्न संस्थाओं व सरकारों द्वारा पुरस्कृत, दिल्ली राज्य द्वारा

१९७३ के सर्वश्रेष्ठ लेखक के पुरस्कार और सोवियत लैंड के १९७४ के नेहरू एवार्ड से सम्मानित, पंजाब सरकार द्वारा १९७५–७६ के सर्वश्रेष्ठ हिन्दी लेखक के रूप में सार्वजनिक अभिनन्दन । पं० १३ बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली–१, टेलि०–३८१९९६ ।

जयदेव वेदालंकार

ज० १५ मार्च १९०४, सीतपुर (मुजफ्फरगढ़, पाकिस्तान); पि० श्री चन्दूराम बजाज; **कार्य** : गाँधी जी के रचनात्मक कार्यों को बढ़ावा देने के लिए कांग्रेस के पूर्णकालिक कार्यकर्ता (१९२६–३९), सार्वदेशिक सभा की ओर से दक्षिण हैदराबाद में आर्यसमाज व हिन्दी के प्रचार–प्रसार का कार्य (१९४०–४१), गुरुकुल मुलतान के आचार्य व मुख्याधिष्ठाता (१९४२–४७), गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में मुख्याध्यापक(४८-४९), जिला सूचना अधिकारी व विकास अधिकारी (१९४९–६१), आजकल जयपुर में आर्यसमाज का कार्य; वि० आर्यसमाज के कार्यों में रुचि । प० अरविन्द बुक हाउस, चौड़ा रास्ता, जयपुर ।

धर्मदेव सिद्धान्तालंकार

ज० ३० नवम्बर १९०५, बस्ती गुजरात (मुजफ्फरगढ़, पाकिस्तान); पि० श्री लोकूराम; शि० वेदवाचस्पति (गुरुकुल विश्व०), एम० ए० (आगरा विश्व०); **कार्य** : आर्यप्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से पं० चमूपति जी की अध्यक्षता में प्रकाशित होने वाले 'वेदार्थ कोष' का संपादन (१९२८), गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में अध्यापन, गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में संस्कृताध्यापक, सहायक मुख्याध्यापक, और मुख्याध्यापक, गुरुकुल विश्वविद्यालय में वेदोपाध्याय एवं पुस्तकालयाध्यक्ष(१९२८-६७), आर्य गर्ल्स कालेज अम्बाला छावनी में अध्यापन (१९६७–७६), इस समय स्वाध्याय, चिन्तन, मनन में व्यस्त; र० त्याग की भावना, सरल शब्दरूपावली, सरल धातुरूपावली, छात्रोपयोगी कई अन्य पुस्तकें; वि० समय-समय पर विविध पत्र-पत्रिकाओं में भारतीय संस्कृति और वैदिक साहित्य विषयक शोधपूर्ण लेख प्रकाशित, कई वर्षों तक आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी के मन्त्री । प० द्वारा–डा० सुरेशकुमार विद्यालंकार, रीडर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा–५ ।

धर्मवीर वेदालंकार

ज० ८ अप्रैल १९०५, दुनियांपुर (मुलतान), पि० श्री नन्दलाल; **कार्य** : आर्य समाज शिमला में पुरोहित व आचार्य (५ वर्ष), अखिल भारतीय श्रद्धानन्द ट्रस्ट के मंत्री, रांची नगरपालिका के म्यूनिसिपल कमिश्नर (१९३७ में), गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य व मुख्याधिष्ठाता, इस समय पांडिचेरी अरविन्द आश्रम में अध्यात्म साधना; र० श्रद्धानन्द दर्शन, वेद अपौरुषेय हैं, वेद में गोपालन, वैदिक विवाह संस्कार, आर्यसमाज और विश्वशांति, वेद रहस्य (उत्तरार्ध), श्री अरविन्द के अंग्रेजी साहित्य का हिन्दी अनुवाद; वि० इसाइयों के मुख्य गढ़ छोटा नागपुर के रांची (बिहार) में श्रद्धानन्द मिशन की स्थापना तथा इसके माध्यम से हजारों इसाइयों को वैदिक धर्म में दीक्षा, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में सक्रिय भाग और चांदा शिविर के इंचार्ज मनोनीत, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की विद्यार्य सभा के कई वर्षों तक मंत्री, बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, पंजाब व मद्रास के अतरंग–सदस्य, अहमदाबाद आर्यसमाज के प्रधान, देश में धर्मशिक्षा की परीक्षाओं के केन्द्रों की स्थापना, १९३४ में मुजफ्फरपुर (बिहार) में आए भूकंप से पीड़ितों की सहायता के लिए सहायता–शिविरों का सफल संचालन, स्वतंत्रता–संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान–१९३० में गुरुकुल के स्नातकों के सत्याग्रही जत्थे के साथ रुड़की में नमक सत्याग्रह में भाग तथा ६ मास का सश्रम कठोर कारावास, १९३२ व १९४२ में राजनैतिक आंदोलनों में भाग लेने के कारण जेलयात्रा, १९७२ में भारत सरकार द्वारा इस स्मरणीय योगदान के लिए सम्मानित तथा ताम्रपत्र प्राप्त, छोटा नागपुर में स्कूल, छात्रावास, अनाथालय व उपदेशक विद्यालय की स्थापना, अरविन्द आश्रम के सुयोग्य साधक व विचारक । प० अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी ।

प्रियव्रत वेदवाचस्पति

ज० १ आश्विन १९६३ विक्रमी, भाऊपुर (पानीपत); पि० श्री विजयसिंह जी; **कार्य** : आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
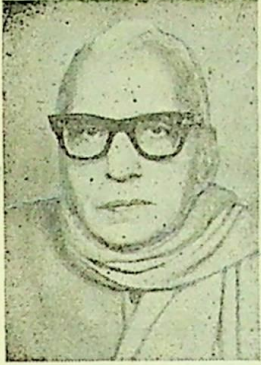
(लाहौर) में 'आर्य' मासिक का संपादन, वैदिक धर्म का प्रचार और दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय में वेद का अध्यापन (१९२६-३५). दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय में प्रधानाचार्य (१९३५-४३), गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में वेदविभागाध्यक्ष, आचार्य एवं उपकुलपति (१९४३-६७), गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति (१९६८-७१), इस समय स्वाध्याय व लेखन; र० वरुण की नौका, वेदोद्यान के चुने हुए फूल (उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत), वेद का राष्ट्रीय गीत (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा ५००-५०० रुपए के पुरस्कार से पुरस्कृत), मेरा धर्म, वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त (लेखनाधनी); वि० मधुरभाषी व ओजस्वी वक्ता, आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वानों में गणना, सुयोग्य शिक्षाशास्त्री, विद्यालंकार परीक्षा में चार स्वर्णपदक प्राप्त, संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की सीनेट तथा चयन-समिति के सदस्य, उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा संस्कृत की पुस्तकों पर पुरस्कार देने वाली चयन-समिति के कई वर्षों तक सदस्य, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा उसकी धर्मार्य सभा के सदस्य, आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब की अंतरंग सभा व विद्यार्य सभा के ४५ वर्ष तक सदस्य, गहरी विद्वत्ता और गुरुकुल की स्मरणीय सेवाओं को ध्यान में रखकर १९७६ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सर्वोच्च मानद उपाधि 'वेदमार्तण्ड' से सम्मानित । प० यश निवास, आर्यनगर, ज्वालापुर (सहारनपुर), उ. प्र. ।

महावीर सिद्धान्तालंकार

ज० अमृतसर, कार्य : कैमिस्ट और ड्रगिस्ट; वि० वैदिक ग्रंथों के स्वाध्याय में विशेष अनुराग, आर्यसमाज और स्त्री शिक्षा के प्रचार में बहुत कार्य किया । प० माधोवस की बिल्डिंग कूचा जहाँ, कटरा खज़ाना, अमृतसर।

यज्ञदत्त विद्यालंकार

ज० गुरमानी (मुजफ्फरगढ़); पि० श्री मेघराज; कार्य : गुरुकुल मुलतान तथा सूपा में अध्यापन, आजकल बम्बई में स्वतंत्र उद्योग; वि० विज्ञान में विशेष रुचि, र० विज्ञान प्रवेशिका (दो भाग) । प० श्याम निवास, बिट्ठल बाड़ी, रानाडे रोड ऐक्सटेशन, दादर (वेस्टर्न रोड), बम्बई–२८ ।

शिवदत्त आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० कैमलपुर (पाकिस्तान); कार्य : कैमलपुर में चिकित्सा कार्य, फिर कैराना (मुजफ्फनगर) में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; वि० आयुर्वेद महाविद्यालय के प्रथम छात्र, व्यायाम में विशेष अभिरुचि ।

सत्यदेव विद्यालंकार

ज० ७ अप्रैल १९०४, सरहाला कलां (होशियारपुर); पि० पं० ठाकुरदास जी; शि० शास्त्री, एम० ए० संस्कृत व हिन्दी (पंजाब विश्व०); कार्य: डी० ए० वी० स्कूल मिन्टगुमरी में अध्यापक (१९३०-३९), डी० ए० वी० कालिज जालन्धर में प्राध्यापक (१९३९–६६), इस समय अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय टंकारा (गुजरात) के आचार्य; र० प्लेटो तथा शंकराचार्य की तुलना (अंग्रेजी में); वि० आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान । प० महर्षि आश्रम, टंकारा (राजकोट), गुजरात ।
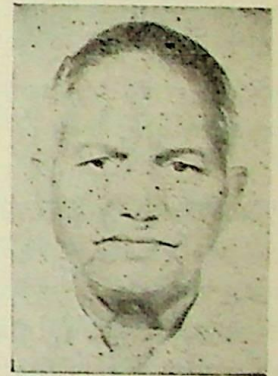
सुखदेव दर्शनवाचस्पति (स्व०)

ज० मुलतान; पि० शोभराज; कार्यः श्री वैद्यनाथ धाम गुरुकुल (बिहार) में दो वर्ष आचार्य, कुछ वर्ष कलकत्ता आर्यसमाज में प्रचार, गुरुकुल विश्वविद्यालय में दर्शन विभाग के अध्यक्ष एवं कार्यवाहक आचार्य; वि० आर्य सामाजिक जगत् में आपके विद्वतापूर्ण दार्शनिक विषयों पर व्याख्यानों का बहुत आदर किया जाता है, प्रभावशाली वक्ता, दर्शन जैसे गूढ़ विषय को सुबोध बनाने में दक्ष; र० वेद तत्त्व प्रकाश, पुराणालोचन, नमस्ते । निधन २३ जनवरी १९७७, दिल्ली ।

संवत् १९८३ (सन् १९२७)

ओम्प्रकाश विद्यालंकार

ज० अगस्त १९०५, शिकारपुर (मुजफ्फरनगर); पि० ला० दाताराम; **कार्य**: मुजफ्फरनगर में सरला मोटर वर्क्स के नाम से वर्कशाप की स्थापना, माल व यात्री परिवहन हेतु ट्रक व बसें चलवाना, कृषि फार्म की व्यवस्था (१९४८-६४), मेरठ में ठेकेदारी का व्यवसाय, इस समय पुनः यात्री परिवहन व्यवसाय में व्यस्त; **वि०** छात्रावस्था में मूक पार्लियामेंट और वादविवाद आदि में भाग लिया करते थे। **प०** २४ कृष्णापुरी, मथुरा; ४७२ पश्चिमी न्यायालय मार्ग, मेरठ।

कृष्णदत्त आयुर्वेदालंकार

ज० १५ अगस्त १९०३, फैजाबाद; **पि०** श्री सरयू प्रसाद जी; **कार्य** : गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय में चरक के उपाध्याय (१९४५), फैजाबाद में 'श्रद्धानन्द औषधालय' की स्थापना तथा रोगियों की सफलतापूर्वक चिकित्सा; **वि०** आर्यसमाज फैजाबाद के कई वर्षों प्रधान, मंत्री आदि, आर्यसिद्धान्तों व वैदिक धर्म का व्याख्यानों के माध्यम से प्रचार, 'आर्यमित्र' में अनेक लेख प्रकाशित, गुरुकुल अयोध्या के कई वर्षों तक मंत्री व अंतरंग सदस्य, काशी में डी० ए० वी० कालेज की प्रवन्धकर्त्री विद्यासभा के सदस्य, मथुरा शताब्दी, ऋषि निर्वाण शताब्दी अजमेर, आर्य महासम्मेलन कलकत्ता और संस्कृत विश्व परिषद् वाराणसी में सक्रिय भाग, स्वराज्य प्राप्ति के लिए कांग्रेस द्वारा चलाए गए कार्यक्रमों में महत्त्वपूर्ण योगदान।

दिलीपचन्द्र आयुर्वेदालंकार (स्व०)

कार्य : नरवाणा में आयुर्वेद की स्वतंत्र चिकित्सा; **वि०** छात्रकाल में साहित्य सेवी, संस्कृत व हिन्दी दोनों भाषाओं के अच्छे कवि, शृंगार रस की कविताएं करने का शौक। आंत्रज्वर से पीड़ित होने के कारण दिवंगत।

दीपचन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० सांपला; (रोहतक) **शि०** स्नातक होने के बाद दिल्ली के पूसा संस्थान में पशुपालन की शिक्षा प्राप्त; **कार्य**: गुरुकुल की गौशाला में प्रबन्धक, बाद में अपनी जन्मभूमि में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य। **प०** सांपला (रोहतक)।

निरंजनदेव आयुर्वेदालंकार

ज० १९०३, बदायूं; **पि०** श्री गंगासहाय जी; **कार्य**: अर्जुन (दिल्ली, १९२८), लोकमत (जबलपुर, १९३०) और जन्म-भूमि (लाहौर, १९२९) के सहायक संपादक, बदायूं में स्वतंत्र चिकित्सा व्यवसाय(१९३२-५२), गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के आयुर्वेद महाविद्यालय में प्रधानाचार्य (१९५२-६५), आयुर्वेदिक कालेज बरेली में प्रधानाचार्य (१९६७-७१), इस समय स्वाध्याय आदि में व्यस्त; **र०** प्रमुख हिन्दी कवि, हिन्दी वेणीसंहार, हिन्दी दशकुमार चरित, प्राकृत दोष विज्ञान, प्राकृत अग्निविज्ञान, द्रव्य गुणविज्ञानम् (संस्कृत), प्राकृत धातु मल विज्ञान, आयुर्वेदोपयोगी पदार्थ विज्ञान; **वि०** काव्य रचना में रुचि, 'प्रियहंस' व 'सव्यसाची' के नाम से कविताओं व गद्य प्रबन्ध के लेखक, आर्यसमाज के कार्यों में सक्रिय योगदान, कई वर्षों तक आर्यसमाज बदायूं के मन्त्री, अच्छे खिलाड़ी, गायक, अभिनयपटु, संगीत, वादन व चित्रकला में विशेष अभिरुचि। **प०** सत्य ज्ञान निकेतन, ज्वालापुर(सहारनपुर)।
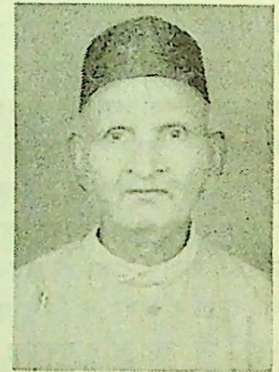
पूर्णानन्द वेदालंकार

ज० २७ ज्येष्ठ १९६१ वि०, कमालिया (लायलपुर);

पि० श्री गंगासिंह जी; कार्यः गुरुकुल कमालिया में मुख्याध्यापक (१९२७), शांति-निकेतन व कलकत्ता में चित्र-कला व फोटोग्राफी का अध्ययन (१९२८-२९), मंटगुमरी (पाकिस्तान) में फाइन आर्ट्स व फोटोग्राफी का व्यवसाय तथा डी०ए०वी० स्कूल में अध्यापन (१९३०–४७), बनारसी दास हाईस्कूल अम्बाला छावनी में अध्यापन (१९४८-६६), चंडीगढ़ की सेक्टर २२ के आर्यसमाज में पुरोहित (१९६७-७०), इस समय एस०डी० सैनी माडल स्कूल चंडीगढ़ में अध्यापन (१९७१ से); वि० आर्यसमाज के कार्यकलापों में महत्त्वपूर्ण योगदान, सेक्टर १६ चंडीगढ़ की आर्यसमाज में उपमन्त्री, चित्रकला व फोटोग्राफी में विशेष अभिरुचि, वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयत्नशील, मंटगुमरी नगर की हॉकी टीम के कई वर्षों तक प्रशिक्षक। प० म० नं० २१, सेक्टर नं० १६ ए, चंडीगढ़।

ब्रह्मदत्त आयुर्वेदालंकार

ज० बावली (मुजफ्फरनगर); कार्य : स्नातक बनते ही जाट हाईस्कूल मुजफ्फरनगर में स्वास्थ्य अधिकारी एवं क्रीड़ा-शिक्षक, मुजफ्फरनगर में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य (१०-१२ वर्ष), संप्रति अपने गांव में स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० छात्रकाल में व्यायाम के शौकीन, कुश्ती में विशेष प्रवीण, पुष्ट एवं सुगठित शरीर के कारण अच्छे पहलवानों में गणना, गुरुकुल में हॉकी और फुटबाल के खेलों में कुशल होने से दल के सफल बैक, शल्य चिकित्सा में निपुण एवं सफल। प० बावली (मुजफ्फरनगर)।

योगेन्द्रपाल आयुर्वेदालंकार

कार्य : सरहिन्द में फार्मेसी का कार्य, पाँच वर्ष अमृतसर की सुप्रसिद्ध पंजाब आयुर्वेदिक फार्मेसी में उत्साही कार्यकर्ता, अमृतसर में निजी 'रसेन्द्र फार्मेसी' का संचालन; वि० छात्रकाल में पढ़ाई के साथ साथ खेलकूद और साहित्यिक विषयों में अधिक रुचि, सफल वैद्य, आर्यसमाजों की गतिविधियों में सक्रिय योगदान।

रघुनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० विजलपुर (सूरत); पि० श्री भीनाभाई देवाभाई आर्य; कार्यः कुछ वर्ष गुरुकुल सूपा में मुख्य चिकित्सक, तत्पश्चात् अपने वतन में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, कुशल चिकित्सक। प० जलालपुर (सूरत)।

विश्वनाथ आयुर्वेदालंकार (स्व०)

कार्य : बहावलपुर रियासत में घरेलू व्यापार; वि० रियासत की हिन्दू जनता की दीन दशा को सुधारने तथा उन्हें संगठित करने के कारण अनेक कष्ट सहे और इसी कारण बीमार होने के कारण निधन, सेवाभावी, लोक-सेवक। निधन १९४०।

विष्णुमित्र आयुर्वेदालंकार

ज० श्री हरगोविन्दपुर; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य।

सत्यपाल आयुर्वेदालंकार

ज० मार्च १९०५, कामोकी (पाकिस्तान); पि० डॉ० रामरक्खामल जी; कार्य : गुरुकुल कांगड़ी में स्वास्थ्य अधिकारी, चिकित्सक एवं आयुर्वेद महाविद्यालय में उपाध्याय (१९३०–६५), इस समय देहरादून में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० गुरुकुल में लोकप्रिय व सफल चिकित्सक, आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी के कई वर्ष प्रधान, मंत्री, आर्य इन्टर कालेज मायापुर (हरिद्वार) के प्रबन्धक, गुरुकुल विश्वविद्यालय की शिक्षापटल के स्नातकों के प्रतिनिधि–सदस्य। प० १२ डी रेसकोर्स, देहरादून।

सुबन्धु आयुर्वेदालंकार

कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य—पहले शाहदरा में, फिर इटावा में; वि० छात्रकाल में सांप पालने का शौक था, भयंकर से भयंकर सांप बेझिझक पकड़ लेते थे।

हरिवंश वेदालंकार (कोचर)

ज०१५ ज्येष्ठ वि० संवत् १९६२, पंचनदीय (गुजरात); पि० लाला ताराचन्द जी; शि० एम० ए० संस्कृत (इलाहा-

बाद). एम. ए. हिन्दी (आगरा), पी०एच०डी० हिन्दी (दिल्ली)—'अपभ्रंश साहित्य'; **कार्य** : सेंट एण्डयूज कालिज गोरखपुर, सेंट स्टीफन्स कालिज दिल्ली, राजकीय महाविद्यालय नैनीताल तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन (१६३७–७२), इस समय स्वाध्याय में व्यस्त; र० अपभ्रंश साहित्य, वैताल-पंचविंशति (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत); वि० खेलकूद में विशेष योग्यता, विश्वविद्यालयों में स्पोर्ट्स चैम्पियन, कई वर्ष नैनीताल आर्यसमाज के प्रधान, दिल्ली विश्वविद्यालय एकेडेमिक कौंसिल के भूतपूर्व सदस्य, अपने विषय के जाने माने विद्वान्, भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की विशेषज्ञ परामर्श दात्री समिति के कई वर्षों तक सदस्य । प० ७० बाबर रोड, नई दिल्ली ।
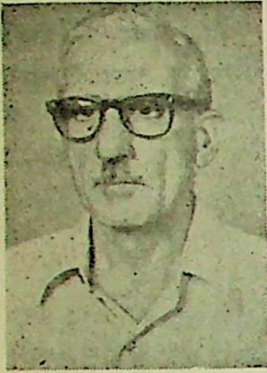
संवत् १६८४ (सन् १६२८)

अवनींद्रकुमार विद्यालंकार

ज० २२ मार्च १६०७, दानापुर, पटना (बिहार); **कार्य**: आर्य (लाहौर) के प्रधान संपादक (१६२८ से ३४), दैनिक नवयुग के प्रधान संपादक (१६३४-३६), दैनिक हिन्दुस्तान के संयुक्त संपादक (१६३६-४४), साप्ताहिक नवयुग के संपादक (१६४४-४६), दैनिक नवभारत के संयुक्त सपादक (१६४६-५०), मासिक जनरुचि के प्रधान संपादक, इस समय स्वतत्र पत्रकार व लेखक; र० सरल अर्थशास्त्र, पंचवर्षीय सिंचाई-बिजली योजना, सामुदायिक योजना, हमारे राष्ट्रपति राधाकृष्णन, मालवीय जी, भारत ज्ञान कोश (वार्षिक), विश्व ज्ञान कोश, हिन्दुस्तान वार्षिकी (संपादन) आदि; वि० सफल पत्रकार एवं ख्यातिप्राप्त सुलेखक, राजनीति, अर्थशास्त्र, भूगोल और इतिहास के अच्छे ज्ञाता, १६३०-३१ में बिहार कांग्रेस कमेटी तथा दानापुर कांग्रेस कमेटी के प्रमुख कार्यकर्ता, कई वर्षों तक विविध आर्यसमाजों के प्रधान, काफी समय तक बिहार विद्यापीठ में अध्यापन, दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सस्थापकों में प्रमुख, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की स्थायी समिति के प्रतिष्ठित सदस्य, हिन्दी साहित्य परिषद् दिल्ली के संस्थापक । प० ए-२३६ पंडारा रोड, नई दिल्ली-३ ।

इन्द्रसेन आयुर्वेदालंकार

ज० २३ जुलाई १६०८, भेरा (सरगोधा); **पि०** डॉ० मय्यादास जेतली; **शि०** बी० ए० (पंजाब), हिन्दी प्रभाकर (पंजाब), एम० बी० बी० एस० (पंजाब), डी० टि० एम० (कलकत्ता), काव्य तीर्थ (कलकत्ता); **कार्य** : पंजाब आयुर्वेदिक कालेज में अध्यापन (१६३८), गुरुकुल कांगड़ी के आयुर्वेद कालेज में अध्यापन (१६३६-४०), सेना में कैप्टन के रूप में चिकित्सक (१६४०), मलाया जाकर जापानी आंदोलन में सक्रिय भाग तथा कम्पनी कमांडर के रूप में कार्य (१६४१-४७), पंजाब सरकार की चिकित्सा सेवा (१६४७-६६), सिविल सर्जन (१६६२), मस्तनाथ आयुर्वेद कालेज अस्थलबोहर में अध्यापन (१६६७), हरियाणा विद्युत परिषद् में मुख्य चिकित्साधिकारी (१६६८-७०), गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वेद महाविद्यालय में अध्यापन (१६७१-७६), इस समय स्वतंत्र लेखन व स्वाध्याय में व्यस्त; **र०** रसधारा, सूक्तिधारा, हृदयहर धारा, करुण धारा, रंजन धारा, राजधारा, उद्गार धारा, मनोहर धारा, मनोरम धारा, अभिराम धारा, हिन्दी राष्ट्रभाषा कैसे बने, थ्योरी ऑफ नम्बर्स, आई० एन० के० युद्धवीरसिंह, हिन्दी से जापानी शिक्षक, ललाम धारा, जेतल जी का छन्दोज्ञान, आर्यसमाज का गीति काव्य, आदि; **वि०** **या०** मलाया, सिंगापुर, जापान; **वि०** आजाद हिन्द फौज में सक्रिय कार्यकर्ता, १६४२-४५ तक प्रिज़नर ऑफ वार रहे, उसी दौरान हिन्दी जापानी कोश तथा हिन्दी से जापानी शिक्षा संबंधी लगभग २० पुस्तकों का लेखन जो विभाजन के दौरान

पाकिस्तान में ही नष्ट, छात्रावस्था से ही वनस्पतियों के प्रति विशेष रुचि, गुरुकुल कांगड़ी में वनस्पतिवाटिका की स्थापना, १६७२ में २५०० वनस्पतियों का संग्रह, प्रतिभाशाली एवं ख्यातिप्राप्त कवि,लेखक, आर्यसमाज और गुरुकुल के प्रचार-प्रसार के प्रति रुचि एवं सक्रिय योगदान । प० १३२७, २२-बी चंडीगढ़ ।

जगदीश वेदालंकार (स्व०)

ज० थोल (करनाल); **कार्य:** निजी खेती का व्यवसाय करते थे; वि० कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता, सन् १६३०,३२ और ४२ के स्वतंत्रता-आंदोलनों में भाग लेने के कारण जेलयात्रा, पंजाब की विधान सभा के २० वर्ष तक सदस्य, आर्यसमाज के कार्यों में विशेष रुचि, सच्चे लोकसेवक ।

जनार्दनदेव विद्यालंकार

ज० पटियाला स्टेट; **कार्य :** गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में अंग्रेजी के अध्यापक, गुरुकुल पुस्तकालय में कार्य, संप्रति सेवानिवृत्ति के बाद स्वाध्याय; वि० अपने समय के हॉकी के खिलाड़ी, अभिनयपटु, संगीतज्ञ, श्री अरविन्द के भक्त, ओमाश्रम ज्वालापुर के कर्मठ कार्यकर्ता । प० वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर, (सहारनपुर)

तडित्कांत वेदालंकार (सेठ मंगलदास)

ज० १६०७, कच्छ (महागुजरात); पि० श्री पुरुषोत्तम; **कार्य :** स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग तथा जेलयात्रा (१६२६-३१), गुरुकुल सूपा की संचालक सभा के मंत्री व अध्यापक (१६३२-३५), स्वाध्याय मंडल (औंध) के मंत्री व 'वैदिक धर्म' मासिक के संपादक (१६३६-४०), इस समय आर्य समाज व वैदिक धर्म का प्रचार तथा गृहनिर्माण व्यवसाय; र० वेदों में यम व पितर, वेदों में महिला ऋषि, स्वर विज्ञान, गायत्री मंत्रों का महत्त्व; **वि० या०** वैदिक साहित्य के प्रचार के लिए स्वाध्याय मंडल औंध की ओर से पूर्वी व दक्षिणी अफ्रीका की यात्रा; वि० आर्यसमाज व कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता, शास्त्रीय संगीत, शारीरिक व्यायाम व यौगिक प्रक्रियाओं में विशेष रुचि । प० ६, ला टेरेसा हाउसिंग सोसायटी, ४ बंगला रास्ता, अन्धेरी (पश्चिम), बम्बई-४०००५८ ।
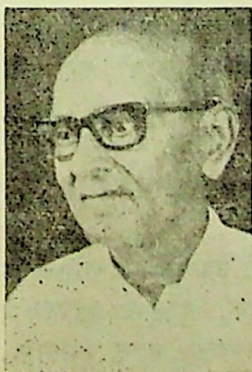
धर्मदत्त आयुर्वेदालंकार

ज० २ जुलाई १६०३, सोलन (शिमला); पि० लाला रामशरणदास वैश्य; **कार्य :** आर्य गर्ल्स स्कूल पटियाला, पब्लिक स्कूल सामाना और कैम्ब्रिज स्कूल पटियाला में अध्यापक (१६५६ से अब तक); वि० आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता, वर्षों तक आर्यसमाज के मंत्री । प० आर्य भवन, मोहल्ला प्रेमनगर, लहल, पटियाला ।

धर्मानन्द आयुर्वेदालंकार

ज० २ अक्टूबर १६०६, कराची; शि० एम० डी० (रायल यूनिवर्सिटी, रोम), टी० डी० डी० (म्यूनिख), जेड० टी० टी० डी० (रोम), जेड० शियर (बर्लिन), जेड० टी० (वियना), विद्यामार्तण्ड (गुरुकुल वश्व०); **कार्य :** कुछ समय कराची में चिकित्सा कार्य, गुरुकुल सूपा में चिकित्सक, देहरादून में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य, टी० बी० सेनिटोरियम भोवाली में सुपरिन्टेंडेंट(१६४८-५१), इलाहाबाद में अतिरिक्त सिविल सर्जन (१६५१-५५), स्टेट आयुर्वेदिक कालेज लखनऊ में प्रिंसिपल(१६५६-५८), जी०के० आयुर्वेदिक कालेज जामनगर(गुजरात)में प्रिंसिपल (१६५६-६२), मूलचन्द खैरातीराम हास्पिटल नई दिल्ली में निदेशक (१६६५-६७), रोहतक आयुर्वेदिक कालेज में प्रिंसिपल (१६६८-७०), आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल काँगड़ी में प्रोफेसर (१६७१-७६), संप्रति दिल्ली में स्वतंत्र कार्य; **वि० या०** सम्पूर्ण यूरोप, रूस व स्पेन सहित दो सौ अस्पतालों में गए और २६ से अधिक बड़े अस्पतालों में हाउस सर्जन के रूप कार्य में किया; वि० क्षय रोग की चिकित्सा के शल्यकर्म में विशेष निपुणता प्राप्त, सफल

चिकित्सक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की 'आयुर्वेदालंकार' उपाधि को मान्यता दिलवाने के लिए संघर्ष करने वाले प्रथम स्नातक, डॉ० केसरवानी के नाम से प्रसिद्ध, छात्र जीवन में चित्रकला व सुलेख में रुचि, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी। **प०** १०/१३ प्राबिन रोड (माल रोड), दिल्ली-५४।

नरेन्द्र विद्यालंकार (स्व०)

ज० विजलपुर (जिला सूरत); **कार्य** : गुजरात विद्यापीठ, राजाराम कालेज कोल्हापुर में अध्यापन, वनिता विश्राम नामक संस्था में अध्यापन; **वि० या०** फोटोग्राफी का उच्च प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए म्यूनिख (जर्मनी) गमन, इटली, फ्रांस आदि देशों का परिभ्रमण; **वि०** हिन्दी और गुजराती के सुलेखक, कई पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित, मराठी, गुजराती के अतिरिक्त जर्मन भाषा का अच्छा ज्ञान, संगीत, भूगोल, प्रकृति विद्या और फोटोग्राफी में विशेष अभिरुचि, छात्रावस्था में अच्छे गायक और स्काउट दल के नायक।

प्रकाशचन्द्र वेदालंकार (स्व०)

कार्य : गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग व गुरुकुल कुरुक्षेत्र में ड्राइंग के अध्यापक; **वि०** छात्रकाल में वाद्यदल एवं स्काउट के नायक, अच्छे चित्रकार और शिक्षाप्रेमी, होमियोपैथी का विशेष शौक, कुछ समय होमियोपैथी चिकित्सा, संगीतप्रेमी, मधुरभाषी।

प्रभुदत्त आयुर्वेदालंकार (स्व०)

कार्य : पहले सरायसिद्धू (मुलतान) में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य, बाद में वहीं अपनी निजी फार्मेसी का संचालन, विभाजन के बाद भारत में स्वतंत्र व्यवसाय।

भीमसेन आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० सांपला (रोहतक); **कार्य** : गोरखपुर में वर्षों तक आयुर्वेद का स्वतत्र चिकित्सा-व्यवसाय; **वि०** सार्वजनिक कार्यों में विशेष रुचि, बड़े हंसमुख, मिलनसार, विनोदप्रिय एवं सेवाभावी। निधन १९४७।

योगीराज आयुर्वेदालंकार

कार्य : अमृतसर सेवा समिति के चिकित्सालय में १०·१५ वर्ष तक चिकित्सक, निजी व्यवसाय एवं समाज सेवा कार्य; **वि०** सफल चिकित्सक, लोकसेवा में अत्यधिक रुचि।

रणधीर आयुर्वेदालंकार

कार्य : नवसारी में भारत फार्मेसी नामक संस्था तथा ओषधि-निर्माण-उद्योग का संचालन, स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; **वि०** सफल वैद्य एवं ओषधि-निर्माता, छात्रकाल में हॉकी के अच्छे खिलाड़ी। **प०** भारत फार्मेसी, मोटा बाजार, नवसारी (बलसाड़)।

रामस्वरूप आयुर्वेदालंकार

कार्य : स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; **वि०** सफल वैद्य, आर्यसमाज एवं सार्वजनिक कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान, छात्रावस्था में सभाओं की व्यवस्था में निपुण, लोकप्रिय समाज सेवक। **प०** निकट सिटी पोलिस, रोहतक (हरियाणा)।

लोकपति आयुर्वेदालंकार (स्व०)

जीवन पर्यन्त फैजाबाद में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य करते रहे।

वासुदेव विद्यालंकार (स्व०)

ज० अगस्त १९०७, सीतपुर (मुजफ्फरगढ़, मुलतान); **पि०** श्री चन्दुराम; **कार्य** : गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय में गणित, व्याकरण, आदि के अध्यापक (मृत्युपर्यन्त); **वि०** स्वतंत्रता सग्राम के दिनों में नमक सत्याग्रह आदि आंदोलनों में भाग लेकर कई बार जेल यात्रा, तैराकी के विभिन्न करतबों में निष्णात, तैराकी में कई पुरस्कार प्राप्त, गणित व व्याकरण जैसे दुरूह विषयों के प्रति छात्रों की रुचि उत्पन्न करने में कुशल। निधन २६ सितम्बर १९६४, गुरुकुल कांगड़ी।

विश्वनाथ विद्यालंकार

ज० सियालकोट; **कार्य** : वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में मुख्याध्यापक, गुरुकुल कांगड़ी के सहायक मुख्याधिष्ठाता, कनखल में स्वतंत्र मुद्रण व्यवसाय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र में मुख्याधिष्ठाता, संप्रति गाजियाबाद में स्वतंत्र व्यवसाय; **वि०** कुशल प्रबंधक, छात्रकाल में हॉकी

के कुशल खिलाड़ी, अपने व्यवहार के कारण सभी गुरुकुल वासियों एवं स्नातकों में लोकप्रिय, आर्यसमाज व गुरुकुल-के कार्यकलापों में सक्रिय योगदान । प० १३०-बी मॉडल टाउन, गाजियाबाद ।

वेदव्रत वेदालंकार

ज० २७ जुलाई १९०६, केसरी (अम्बाला); पि० लाला पुन्दीराम; शि० एम०ए०हिन्दी व संस्कृत (आगरा); कार्य : कन्या गुरुकुल देहरादून तथा हिन्दू नेशनल इन्टर कालेज देहरादून में हिन्दी संस्कृत के अध्यापक (१९३५-७०); वि० आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार में कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय योगदान, सामाजिक सेवा में विशेष अभिरुचि तथा सेवानिवृति के बाद इसी में व्यस्त, अध्ययन काल में उनका नाम शिव-प्रसाद था । प० १-अ नैशविला रोड, देहरादून ।

शंकरदेव विद्यालंकार

ज० १९०७, मलवाड़ा (सूरत); पि० श्री मुकुन्द जी भाई आर्य; शि० एम० ए० हिन्दी-संस्कृत (आगरा विश्व०); कार्य : सूपा गुरुकुल में अध्यापक (१९२८-४३), गुरुकुल कांगड़ी में आश्रमाध्यक्ष तथा अध्यापक (१९४३-५७), महिला कालेज पोरबन्दर में संस्कृत के प्राध्यापक व उपाचार्य तथा कन्या गुरुकुल पोरबंदर के प्रबन्धक (१९५७-७६); र० रवीन्द्रकथा (कथा-संग्रह), नैवेद्य (गद्यकाव्य), चित्रांगदा (नाटिका), फूलों की डाली (गद्यकाव्य), भूले पंछी (गद्यकाव्य) [ये सभी गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की कृतियों के प्रामाणिक हिन्दी भाषान्तर हैं], अंतिम पाठ (कथा-संग्रह), प्राचीन भारत के विद्यापीठ (इतिहास), सेठ नानजी भाई कालिदास मेहता स्मृति ग्रन्थ, पंडित आनन्द-प्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ, और आर्यसमाज स्थापना शताब्दी स्मारिका का संपादन; वि० या० सूपा गुरुकुल के शिष्ट मंडल के साथ पूर्व अफ्रीका की ज्ञानयात्रा (१९४१); वि० नागपुर में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में अहिन्दीभाषी हिन्दी लेखक के रूप में हिन्दी की सेवा करने के लिए सम्मानित, नागरी प्रचारिणी सभा काशी के प्रतिष्ठित सदस्य, सुवक्ता, सुलेखक, मनोविनोदी स्वभाव, पक्षी निरीक्षण व बागवानी में विशेष अभिरुचि, समय-समय पर नवनीत, कादम्बिनी आदि पत्रिकाओं में लेख आदि प्रकाशित । प० गुरुकुल महिला कालेज, पोरबन्दर (गुजरात)।

सुरेन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० वैशाख वदी ११, १९६२ विक्रमी, हरदोई; पि० श्री जमुनाप्रसाद; कार्य : वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में अध्यापन (१९५९ तक), संप्रति शाहजहांपुर में स्वतंत्र व्यवसाय; वि० अध्ययन काल में हॉकी की फर्स्ट इलेवन टीम के दलनायक व माने हुए खिलाड़ी, बैन्ड वादन में पटु, मधुमक्खी पालन के विशेषज्ञ, सन् १९३० में महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये नमक सत्याग्रह आंदोलन में आचार्य अभयदेव जी के नेतृत्व में छः मास का सश्रम कारावास, विशुद्ध आयुर्वेदिक चिकित्सा में रुचि । प० सदर बाजार शाहजहांपुर ।
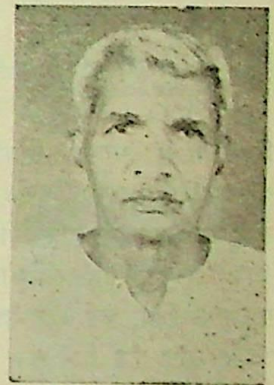
संवत् १९८५ (सन् १९२९)

धर्मवीर आयुर्वेदालंकार

ज० डेरागाजीखां; कार्य : स्वतंत्र चिकित्सा कार्य एवं गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के एजेण्ट; वि० सफल एवं कुशल चिकित्सक, आर्य समाज के कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान, आर्यसमाज मुरादाबाद के सक्रिय सदस्य । प० एजेण्ट गुरुकुल फार्मेसी, चौमुखा पुल, मुरादाबाद ।

नारायणदत्त आयुर्वेदालंकार (स्व०)

शि० एम० डी० (म्यूनिक); **कार्य :** सर्वप्रथम हैदराबाद में स्वतंत्र औषधालय का संचालन एवं चिकित्सा कार्य, एम० डी० करके वापस आने के बाद बम्बई में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; **वि०** जर्मनी में हॉकी के खिलाड़ी के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त, छात्र-जीवन में भी हॉकी के प्रति विशेष रुचि एवं जाने-माने खिलाड़ी । नि० १९४३ ।

पूर्णचन्द विद्यालंकार

ज० आश्विन पूर्णिमा १९६४ विक्रमी, केसरी (अम्बाला); **पि०** लाला खुशीराम जी; **कार्य :** तपस्वी राष्ट्रीय नेता; **वि०** स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेलयात्रा-१९३० से १९४२ तक देश की स्वतंत्रता के लिए हुए प्रत्येक आंदोलन में सत्याग्रह करके जेलयात्रा, नमक सत्याग्रह में गुरुकुल स्नातक दल के जत्थे के साथ रुड़की में आंदोलन। गांधी सेवा संघ के सदस्य, सहारनपुर जिला कांग्रेस कमेटी और गांधी सेवाश्रम हरिद्वार के अध्यक्ष, विधानसभा सदस्य निर्वाचन क्षेत्र से उत्तरप्रदेश विधान परिषद् के सदस्य (१९५२-६२) । हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करवाने, हरिजनों को कुएं से पानी भरने का अधिकार दिलवाने, विद्यार्थियों में अनुशासन की भावना उत्पन्न करने के लिए कई बार उपवास, १९४३ में महात्मा गांधी जी के साथ १९ दिन का उपवास । सहारनपुर से 'प्रतिनिधि' साप्ताहिक का संपादन, 'चरखे का अर्थशास्त्र' शीर्षक लेख प्रकाशित, गुरुकुल में वैदिक शब्दकोष का संपादन । प्रदेश की जनजागृति में महत्वपूर्ण योगदान, ग्रामोद्योग, खादी, चरखा, हरिजन सेवा, ग्राम-शिक्षा में विशेष रुचि । जीवन भर अपने हाथ से कती खादी पहनने का व्रत । सात्विक चरित्र, आडम्बरहीन सेवा, त्यागी समाजसेवक । प० चुड़ियाला (सहारनपुर) ।

बलराम आयुर्वेदालंकर (स्व०)

शि० एम० डी० (म्यूनिक); **कार्य :** कुछ समय अफ्रीका में समाज सेवा तथा चिकित्सा-कार्य, एम० डी० करने के बाद भारत में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; **वि०** सफल व प्रख्यात चिकित्सक, छात्र जीवन में अच्छे खिलाड़ी, सभा-संचालक और सुवक्ता ।

भीमसेन विद्यालंकार (स्व०)

ज० डेरागाजीखां; **कार्य :** स्नातक होने के बाद से सीमाप्रान्त के कई नगरों में आर्यसमाज के कार्य में व्यस्त; **वि०** छात्रकाल में वॉलीबॉल के अच्छे खिलाड़ी, सेवाभावी, वैदिकधर्म व आर्यसमाज के प्रति गहरी आस्था, सुवक्ता । क्वेटा भूकंप में दिवंगत ।

विष्णुदत्त विद्यालंकार

ज० लैय्या (मुजफ्फरगढ़); **शि०** एम० ए० (संस्कृत); **कार्य:** स्नातक बनने के बाद से ही गुरुकुल के विद्यालय विभाग में संस्कृत, हिन्दी, धर्मशिक्षा आदि के अध्यापक, सहायक मुख्याध्यापक, कुछ समय मुख्याध्यापक एवं आश्रमाध्यक्ष; **वि०** आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी के कई वर्षों तक मंत्री, छात्रों में दुरूह समझे जाने वाले विषयों के प्रति रुचि उत्पन्न करने की कला के ज्ञाता, अनुशासन प्रिय, स्वाध्याय में विशेष अभिरुचि । **प०** वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर (सहारनपुर) ।

वेदप्रकाश वेदालंकार (स्व०)

सर गंगाराम ट्रस्ट विधवा विवाह सहायक सभा के कार्यकर्ता, कुछ समय आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में व्यस्त ।

समरसिंह वेदालंकार

ज० १८ श्रावण १९६४ विक्रमी, सींख (करनाल); **पि०** श्री बख्तावरसिंह जी; **कार्य:** आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में महोपदेशक (१९२८-४५), दो वर्ष 'बलिदान' का संपादन, पंजाब विधान सभा के सदस्य (१९४६-५६), पंजाब कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष (पांच वर्ष), जिला कांग्रेस कमेटी करनाल के
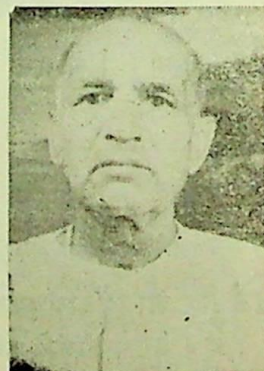
अध्यक्ष, कुछ मास पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी, पुनः आर्य प्रतिनिधि सभा में उपदेशक तथा हरियाणा वेद प्रचार मंडल के अध्यक्ष (१९५७-७४), संप्रति कन्या गुरुकुल खानपुर में व्याकरण, साहित्य व दर्शन के उपाध्याय; वि० वैदिक धर्म व वैदिक आर्य राजनीति का प्रचार करके आर्य राष्ट्र के पुनः निर्माण का प्रयास, ओजस्वी एवं ख्यातिप्राप्त व्याख्याता, धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक सुधार में विशेष रुचि। प० कन्या गुरुकुल खानपुर कलां (सोनीपत)।

संवत् १९८६ (सन् १९३०)

केशवदेव विद्यालंकार

ज० दोहद; पि० श्री सुखदेव; कार्य: वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी में अर्थशास्त्र के उपाध्याय, गुरुकुल सूपा में आचार्य, आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा में कर्मठ कार्यकर्ता, संप्रति अमेरिका में; वि० बड़े साधु-प्रकृति के सेवा-परायण और निरभिमानी विद्वान्, सेवा कार्यों में सदा अग्रसर। प० 1876, Churchill Drive, Dubuque, 52001, U.S.A.

चन्द्रकान्त वेदवाचस्पति (स्व०)

ज० सूरत; पि० श्री नर्मदाशंकर; कार्य: कुछ वर्ष गुरुकुल सोनागढ़ (काठियावाड़) में आचार्य, तदनन्तर गुरुकुल सूपा में आचार्य; वि० हिन्दी व संस्कृत के सुलेखक और अच्छे वक्ता, विद्वान्, आर्यसमाज के कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान।

देवनाथ विद्यालंकार

ज० १५ जुलाई १९०८, रांदेर (सूरत); पि० श्री नरोत्तम भाई माधव भाई पटेल; कार्य : आचार्य देवशर्मा जी के व्यक्तिगत सचिव (१९३०-३२), गुरुकुल सूपा में अध्यापन (१९३२-४७), आर्य गर्ल्स सीनियर स्कूल नैरोबी (अफ्रीका) में अध्यापन (१९४८-७६), संप्रति वैदिक धर्म व आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में व्यस्त; वि० छात्रावस्था में हॉकी के मंजे हुए खिलाड़ी, अनेक मैचों में दलनायक, हिन्दी व धर्मशिक्षा के प्रचार में विशेष रुचि। प० १८, कोलेब्रुक रोड, नॉरबरी, लन्दन एस०डब्ल्यू० १६, डब्ल्यू० के।
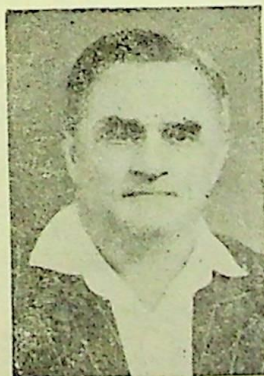
धर्मपाल आयुर्वेदालंकार

ज० रोपड़; पि० श्री गंडाराम; कार्य: रोपड़ में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० सेवाभावी व ख्यातिप्राप्त सफल वैद्य। प० धर्म औषधालय, रोपड़ (अम्बाला)।

प्राणनाथ आयुर्वेदालंकार

मोगा में 'प्राण औषधालय' नाम से निजी चिकित्सा कार्य में व्यस्त, सफल एवं कुशल वैद्य, मोगा के सामाजिक कार्यों में प्रमुख। प० प्राण औषधालय, मोगा मण्डी (फिरोजपुर)।

राजेन्द्रनाथ विद्यालंकार

ज० १३ जून १९०८, नगीना (बिजनौर); पि० श्री लाला कल्लूमल जी; कार्य: खेती-वाड़ी व भवन निर्माण; वि० गोपालन व मौनपालन में विशेष रुचि, विश्व हिन्दू परिषद् व आर्य समाज के सक्रिय सदस्य तथा इनके कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान, आर्य समाज नगीना के कई वर्षों तक मंत्री व प्रधान, जनसंघ की नगीना शाखा के प्रधान। प० मुहल्ला शाह जहीर, नगीना (बिजनौर)।
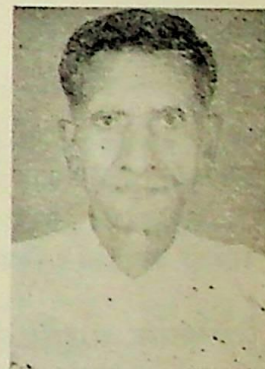
विद्याधर आयुर्वेदालंकार

ज० बटाला; कार्य: पहले बटाला में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य कुछ वर्ष ब्रह्मदेश में चिकित्सा-कार्य, रामपुर (हि० प्र०) में चिकित्सा व्यवसाय; वि० कुशल एवं सफल चिकित्सक।

वीरेन्द्र विद्यावाचस्पति

ज० १३ फरवरी १९०९, हाटा गांव (देवरिया); पि० श्री इन्द्रजित् जी; शि० एम० ए० संस्कृत व हिन्दी (पटना विश्व.), डी०लिट् (पटना), (अपभ्रंश भाषा का अध्ययन: ध्वन्यात्मक, अर्थात्मक), काव्यतीर्थ, सांख्यतीर्थ, वेदान्ततीर्थ, दर्शनतीर्थ (बंगाल संस्कृत ऐसो०); कार्य: गुरुकुल आर्मोला (बरेली) में आचार्य (१९३३-३६), गुरुकुल वैद्यनाथ के आचार्य (१९३६-४३), रामकृष्ण कालेज मधुवनी में हिन्दी-संस्कृत के व्याख्याता (१९४३-४४), राजेन्द्र कालेज छपरा में हिन्दी के व्याख्याता (१९४४-४६), रांची कालेज में हिन्दी के व्याख्याता (१९४६-५३), भागलपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर (१९५३-७३), संप्रति विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधीन पटना विश्वविद्यालय में अध्यापन व शोधकार्य; र० अपभ्रंश भाषा का अध्ययन (बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा पुरस्कृत), पद्माभरण और पद्माकर, हिन्दी साहित्य: परम्परा और परख, विद्यापति : अनुशीलन एवं मूल्यांकन; वि० विद्यावाचस्पति परीक्षा में 'त्रैतवाद' विषय पर निबन्ध प्रस्तुत, भारतीय दर्शन के अच्छे विद्वान्, हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर लेख प्रकाशित, शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान, विभिन्न विश्वविद्यालयों में विशिष्ट भाषणों के लिए आमन्त्रित, आर्यसमाज के कार्यकलापों में विशेष रुचि, भारत सरकार के तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दावली आयोग के तत्त्वावधान में पारिभाषिक शब्द-निर्माण समिति के सदस्य और नृ-विज्ञान-शब्दावली के निर्माण में सहयोग, हिन्दी में विश्वविद्यालय स्तरीय पुस्तक-निर्माण हेतु भारत सरकार द्वारा गठित 'भाषाविज्ञान समिति' के सदस्य, स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान आयोजित आंदोलनों में भाग लेने के कारण जेल यात्रा। प० इन्द्र निकेतन, रामपुर रोड, पटना–६।

श्वेतकेतु विद्यालंकार

ज० ४ अक्टूबर १९१०, बिसौली (जम्मू); पि० श्री ठाकुरदास जी; कार्य: वर्षों तक सर गंगाराम ट्रस्ट की ओर से विधवा विवाह सहायक सभा के आश्रमों में अध्यक्ष, आर्य इंटर कालेज मायापुर (हरिद्वार) में संस्कृत-हिन्दी के अध्यापक, संप्रति शिक्षण कार्य से सेवामुक्त होकर निजी व्यापार में व्यस्त; त्रि० तीन वर्ष आर्यसमाज मायापुर के मन्त्री, अर्धकुम्भ व कुम्भ मेले पर वैदिक धर्म व आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान, छात्रावस्था में क्रीड़ामन्त्री। प० ३ रेलवे रोड, हरिद्वार (सहारनपुर)।

संवत् १९८७ (१९३१ ई०)

इन्द्रचन्द्र विद्यालंकार (स्व०)

ज० क्वेटा; कार्य: वैदिक धर्म के प्रचार कार्य में उत्साही कार्यकर्ता। निधन क्वेटा भूकम्प में।

दिलीपचन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० १ वैशाख १९६६ विक्रमी; पि० श्री मुन्शीराम जी; कार्य: कई वर्षों तक अमृतसर में पंजाब आयुर्वेद फार्मेसी में सफलतापूर्वक कैमिस्ट का कार्य, संप्रति सरहिन्द में पटियाला आयुर्वेदिक फार्मेसी नामक निजी औषधि निर्माणशाला का संचालन; वि० आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार में विशिष्ट रुचि। प० पटियाला आयुर्वेदिक फार्मेसी, सरहिन्द (पटियाला)।

धर्मेन्द्रनाथ वेदालंकार

ज० ६ अक्टूबर १९०८, मुलतान; पि० श्री देवीदास जी वधवा; शि० शास्त्री, बी० ए० (पंजाब); कार्य: गुरुकुल में उपाचार्य (१९३१-३७), बिड़ला हाईस्कूल दिल्ली में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष (१९३७-३९), आर्य गर्ल्स सीनियर स्कूल नैरोबी में मुख्याध्यापक (१९३९-५०), सरकारी विद्यालय सिटी

प्राइमरी स्कूल, नैरोबी में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष (१९५०-६०), जम्हूरी हाईस्कूल, नैरोबी में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष (१९६१-६४), आर्य कन्या पाठशाला, नैरोबी में मुख्याध्यापक (१९६५-६९) आर्यकुमारशाला, नैरोबी में मुख्याध्यापक (१९६९-७५); संप्रति आर्यसमाज बर्मिंघम (इंगलैंड) में अवैतनिक आर्य प्रचारक; र० हिन्दुज्म (अंग्रेजी पुस्तिका), आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्व अफ्रीका के मासिक पत्र 'प्रतिनिधि' के संपादक, आर्य-स्त्री-समाज, नैरोबी के पचासवर्षीय इतिहास का संपादन; वि० हैदराबाद सत्याग्रह, गुरुकुल सूपा, गुरुकुल कांगड़ी, बंगाल दुर्भिक्ष तथा स्थानीय आर्यसमाज की प्रगति के लिए धन-संग्रह में सक्रिय सहयोग, केनिया में सरकारी पाठशालाओं में हिन्दी भाषा की शिक्षा के लिए सफल प्रयास, आर्य समाज नैरोबी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा (पूर्व अफ्रीका) के तत्त्वावधान में आवश्यकतानुसार अवैतनिक प्रचारक एवं पुरोहित के रूप में सराहनीय योगदान, आर्य समाज नैरोबी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, पूर्व अफ्रीका द्वारा आयोजित आर्य सम्मेलन तथा रजतजयन्ती तथा स्वर्ण जयन्ती समारोहों की सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान, १९३० में महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए नमक-सत्याग्रह में स्नातक रामेश्वर जी सिद्धांतालंकार के नेतृत्व में भाग, लेखन तथा वैदिक एवं सामाजिक विषयों पर प्रवचन देने में रुचि, आर्यसमाज की प्रवृत्तियों में विशेष उत्साह । प० १९ फर्थ पार्क क्रैसैण्ट, हैल्सोवन, बर्मिंघम, बी० ६२, ९ पीजी।

धीरेन्द्रनाथ विद्यालंकार

ज० १९६८, कालंद (मेरठ); पि० श्री रामप्रसाद जी; कार्य : दैनिक 'अर्जुन' में कुछ महीने तक सम्पादन सहयोग (१९३१), गुरुकुल बिरालसी में आचार्य (१९३२), आर्य अनाथालय बरेली में प्रबन्धक (१९३३-३५), गांधी आश्रम मेरठ के अन्तर्गत खादी प्रचार का कार्य (१९३७ से); वि० सन् १९३२ में स्वतन्त्रता-आन्दोलन के सिलसिले में जेल-यात्रा, खादी के प्रचार और सामाजिक सुधार के कार्यों में रुचि और महत्त्वपूर्ण योग-दान। प० गांधी आश्रम, खादी भंडार, हाथरस, जिला अलीगढ़ ।

मनोहर आयुर्वेदालंकार

ज० ९ फरवरी १९०९, बलसाड़; पि० श्री कृष्णशंकर जी; कार्य: अपने प्रदेश में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य में व्यस्त; वि० आयुर्वेद सम्बन्धी अनुसंधान में विशेष अभिरुचि प०; द्वारा श्री मनुभाई जी के भट्ट, जैन धर्मशाला, बलसाड़, गुजरात ।

रणजीतराय आयुर्वेदालंकार

ज० २ अक्टूबर, १९१०, मलवाड़ा (सूरत); पि० नारणजी कीका भाई देसाई; शि० आयुर्वेदाचार्य (नि० भा० आ० विद्यापीठ, लाहौर); कार्य : गुरुकुल सूपा में व्याकरण और संस्कृत साहित्य का अध्यापन तथा स्थानापन्न चिकित्सक (१९३१-३८), पोदार मेडिकल कालेज बंबई में अध्यापक (१९३९-४५), आयुर्वेद महा विद्यालय सूरत में उपाचार्य (१९४६-६४), आयुर्वेद महाविद्यालय सूरत में आचार्य तथा उससे सम्बद्ध चिकित्सालय में अधीक्षक (१९६५-७२), आयुर्वेद महाविद्यालय सूरत में पार्ट टाइम चिकित्सा कार्य (१९७३-७४), संप्रति लेखन तथा वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन की सूरत स्थित एजेन्सी में परामर्शदाता; र० आयुर्वेदीय क्रिया शरीर (अखिल भारतीय आयुर्वेदीय महासम्मेलन तथा निखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ से स्वर्ण पदक प्राप्त, देहली के लाला मदनमोहनलाल आयुर्वेद अनुसंधान पीठ से एक हजार रुपए का पारितोषिक प्राप्त), निदान चिकित्सा हस्तमलक (२ खण्ड), आयुर्वेदीय हितोपदेश आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान, वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन की मासिक पत्रिका 'सचित्र आयुर्वेद' में प्रतिमास लेख प्रकाशित; वि० आचार्य यादव जी त्रिकम जी के प्रिय शिष्य, भाषा शास्त्र और संस्कृत साहित्य के अनुशीलन में अच्छी अभिरुचि, ख्यातिप्राप्त
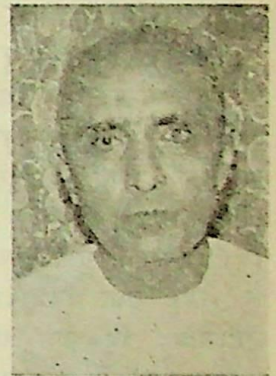
लेखक एवं सफल वैद्य के रूप में प्रख्यात, अविभक्त बंबई राज्य की राजकीय आयुर्वेदिक अनुसंधान परिषद् के कई वर्ष तक प्रतिष्ठित सदस्य, केन्द्रीय सरकार की वैदेशिक समिति के सदस्य, एक पुस्तक आयुर्वेदीय क्रिया शरीर का तेलगू भाषा में भी अनुवाद प्रकाशित। प० ५० महादेव नगर, संग्रामपुरा, सूरत-२।

विद्यारत्न आयुर्वेदालंकार

ज० जालंधर; पि० श्री नन्दलाल जी; **कार्यः** सर गंगाराम ट्रस्ट में कई वर्ष तक सेवा कार्य, संप्रति आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से चींचिया कांगड़ा में धर्मार्थ औषधालय का संचालन; वि० आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार में विशेष योगदान, सफल और पीयूषपाणि चिकित्सक। प० धर्मार्थ औषधालय, चीचिया कांगड़ा, (हिमाचल प्रदेश)।

सुरेन्द्रनाथ वेदालंकार

ज० २२ अक्टूबर १९०८, विदिशा (भेलसा); पि० श्री द्वारका प्रसाद; शि० एम० ए० संस्कृत (आगरा), एम० ए० हिन्दी (नागपुर); **कार्यः** राजकीय हाई स्कूल ग्वालियर राज्य में हिन्दी और संस्कृत के अध्यापक (१९३१-४५); डी० ए० वी० कालेज शोलापुर में प्रवक्ता (१९४५-४९), बुन्देलखण्ड कालेज झाँसी में हिन्दी विभाग के रीडर तथा विभागाध्यक्ष (१९४९-७१), संप्रति स्वाध्याय; वि० पूना और कानपुर विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम समिति के सदस्य, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम संचालन समिति के सदस्य, आर्यसमाज सदर बाजार झांसी के प्रधान पद पर रहते हुए ९ वर्ष तक वैदिक धर्म के प्रचार तथा अन्य सामाजिक कार्यों का संपादन, १९६५ में विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कालिदास-निबंध-प्रतियोगिता में लिखित शोध-प्रबन्ध में १५० रुपए का पुरस्कार प्राप्त, काव्यरचना, आलोचना, विशेषकर कालिदास की कृतियों की, करने में विशेष अभिरुचि। प० ३७२/७५, सिविल लाइन्स, झांसी।

हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

ज० १८ सितम्बर १९०९; पि० श्री छज्जूराम जी; **कार्यः** गुरुकुल मुलतान तथा मुलतान शहर में स्थापित निजी विद्यालय में अध्यापन कार्य (१९३१-४२), धर्मयुग और नवभारत टाइम्स (बम्बई) में उप-सम्पादक; र० पापुलर साइंस, धर्म, योग और भारतीय दर्शनशास्त्र इत्यादि पर लगभग ३५० लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित; वि० या० सं० राज्य अमेरिका (पिट्सबर्ग); वि० विदेशों में योग तथा धर्म और विज्ञान पर व्याख्यान, फोटोग्राफी व दस्तकारी, धर्म और विज्ञान तथा आर्यसमाज के कार्यों में विशेष अभिरुचि, संप्रति योग के क्षेत्र में सक्रिय तथा योग सम्बन्धी आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान पर १५ लेख प्रकाशित। प० २६ पत्रकार नगर बाँद्रा, (पूर्व) बम्बई-५१।
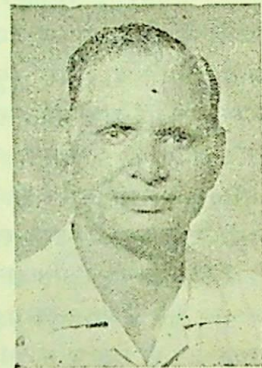
संवत् १९८८ (सन् १९३२)

अविनाशचन्द्र वेदालंकार (स्व०)

ज० भोगपुर (सहारनपुर); **कार्यः** स्नातक होने के बाद कुछ समय सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया नामक संस्था में कार्यकर्ता, कई वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के उपाध्याय एवं आश्रमाध्यक्ष, गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय के अध्यक्ष; वि० स्वाध्याय में विशेष रुचि, मृत्युपर्यन्त स्वाध्याय में रत।

चित्रांगद आयुर्वेदालंकार (देवीदत्त छिमवाल)

ज० २२ दिसम्बर १९१०, ढिकुली, रामनगर (नैनीताल); पि० श्री भवानीदत्त छिमवाल; **कार्य :** उत्तर प्रदेश शासन के अधीन आयुर्वेद चिकित्सालयों में चिकित्साधिकारी (१९३७-६६), संप्रति अपने ग्राम में ग्रामसेवा में व्यस्त; वि० आर्यसमाज की सेवा व प्रचार एवं प्रसार में विशेष अभिरुचि। प० श्री देवीदत्त

छिमवाल (चित्रांगद), ढिकुली, रामनगर, जिला नैनीताल ।

परम वेदालंकार

ज० रोपड़; पि० श्री काशीराम; **कार्य :** गुरुकुल सोनगढ़ तथा वैद्यनाथ धाम के आचार्य, दिल्ली के विभिन्न समाचारपत्रों के संपादकीय विभाग में कार्य, दिल्ली से 'दैनिक समाचार' नामक निजी पत्र का प्रकाशन, मांडले में निजी प्रिंटिग प्रेस का संचालन, कलो(ब्रह्मदेश)मे एक फोटो कम्पनी लेकर स्वयं संचालन, संप्रति दिल्ली में स्वतंत्र कार्य; **वि०** १९३९ में श्री सत्यपाल विद्यालंकार के साथ साइकिल पर सारे भारत और ब्रह्मदेश की ज्ञानयात्रा, अच्छे लेखक, पत्रकार एवं प्रबन्धपटु, फोटोग्राफी का शौक। **प०** बी—११२ गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली —४९

पूर्णचन्द्र वेदालंकार

ज० बरनाला (अम्बाला); **पि०** लाला काशीनाथ; **कार्य** : स्नातक होने के पश्चात् आर्यकुमार सभा बड़ौदा द्वारा संचालित भील-आश्रम अमृतपुरा में आचार्य (१९३२-३५), गांधी आश्रम कनखल में कांग्रेस के कार्यकर्ता, गांधी जी द्वारा संस्थापित ग्रामोद्योग सघ तथा अखिल भारतीय चर्खा संघ वर्धा में आडीटर, एस० एन० सुदर्शन कम्पनी तथा अन्य प्राइवेट कम्पनियों में एकाउन्टेन्ट तथा मैनेजर; वि० स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान ३ मास की जेल यात्रा, भील आश्रम अमृतपुरा में कार्य करते हुए भीलों में वैदिक धर्म और शिक्षा के प्रचार और प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान, कांग्रेस के कार्यों में विशेष अभिरुचि । **प०** ३०५ न्यू गांधीनगर, गाजियाबाद ।
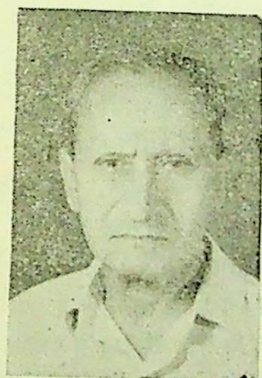
प्रेमसागर आयुर्वेदालंकार

ज० २३ दिसम्बर १९०९, ढोल कुरुक्षेत्र (करनाल); **पि०** श्री तेलूराम; **कार्य :** अम्बाला में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; **वि०** आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक सस्थाओं के उत्साही कार्यकर्ता, आर्यसमाज अम्बाला छावनी के उपमंत्री (१९४५), आर्य कुमार सभा तथा हरिजन उद्धारक सभा के मंत्री, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सक्रिय कार्यकर्ता (१९४७-६९), कई वर्षों तक अम्बाला छावनी में जनसंघ के उपप्रधान, हिन्दी रक्षा समिति पंजाब के प्रधान, संघ के सत्याग्रह आंदोलनों मे भाग लेकर कई बार जेल यात्रा, जिला अम्बाला के आयुर्वेद मंडल के १०वर्ष तक प्रधान एव मंत्री। **प०** वैद्य प्रेमसागर आयुर्वेदालंकार, दुर्गाचरण रोड, सदर बाजार, अम्बाला छावनी ।

रामप्रसाद (ब्रह्मनाथ) वेदालंकार

ज० खगड़िया; **कार्य :** बिहार की अनेक शिक्षा-संस्थाओं में पर्यटक प्रोफेसर एवं प्रचारक, गुरुकुल फार्मेसी के पटना में प्रमुख एजेन्ट; **वि०** प्रभावशाली व्याख्याता, सुलेखक एवं सुकवि, आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में रुचि एवं महत्त्वपूर्ण योगदान । **प०** द्वारा आचार्य जी, गुरुकुल वैद्यनाथ धाम, (बिहार)।

शिवदत्त आयुर्वेदालंकार

ज० गुजरात; **पि०** श्री चतुरभाई पटेल; **कार्य** : कुछ वर्षों तक गुरुकुल सोनगढ़(सौराष्ट्र)में मुख्य चिकित्सक एवं अध्यापक तदनन्तर बड़ौदा में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य,आजकल नागपुर में स्वतन्त्र व्यवसाय;वि०छात्रकाल में अच्छे खिलाड़ी तथा प्रबन्धपटु युवक, सफल चिकित्सक । **प०** द्वारा श्री मरघाभाई बाबरभाई पटेल, हंसापुरी सर्कल, नागपुर ।

सत्यदेव विद्यालंकार

ज० २ अक्टूबर १९१०, अमृतसर; **पि०** पं० शंकर-दास शर्मा, **कार्य:** विभाजन से पूर्व लाहौर में लोहे के बहुत बड़े व्यापारी,संप्रति दिल्ली में लोहे का व्यवसाय; वि० मिलनसारिता, मधुरभाषिता, सेवा एवं सहानुभूति आदि गुणों के कारण सार्वजनिक कार्यों में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त, आर्य-समाज के कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व दिल्ली की अंतरंग सभाओं के सदस्य,गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सीनेट व

विद्यासभा तथा गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के व्यवसाय पटल के प्रतिष्ठित सदस्य,कई वर्षों तक अखिल भारतीय स्नातक मंडल के मंत्री, संप्रति इसी मंडल के वरिष्ठ उपप्रधान, कुलमाता और कुलबंधुओं के प्रति विशेष अनुराग, दुःख-सुःख के सबके साथी, आर्य समाज की विभिन्न संस्थाओं के संचालन व संगठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका । प० एन-३१ ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली-४८; एस० डी० शर्मा एण्ड कम्पनी ५८ श्रद्धानन्द मार्ग, दिल्ली-६; टेलीफोन दुकान ५२४८२३, घर ६६७४६७ ।

सत्यदेव विद्यालंकार (दलपति)

ज० लुधियाना, कार्य: पूर्व अफ्रीका में आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्थापित पाठशालाओं में शिक्षक व प्रचारक, अफ्रीका के देशों—नाइजीरिया, केनिया, टंजानिया, कमूर आदि—में निजी टैक्स्टाइल एवं हॉजरी की मिलों के संचालक, वि० या० अफ्रीका, यूरोप आदि, वि० सन् १९३० में रुड़की में हुए नमक सत्याग्रह आन्दोलन के सिलसिले में जेल यात्रा, आर्यसमाज की प्रवृत्तियों में विशेष योगदान, छात्रकाल में विश्वविद्यालय की वाक् प्रतियोगिताओं में अनेक पुरस्कार प्राप्त, प्रभावशाली वक्ता, सुलेखक, तथा कुशल प्रबन्धक. अफ्रीका व भारत में आर्यसमाज के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा। प० अफ्रीका: पो० बा० न० ४१६२७ नैरोबी,केनिया;भारत: ई१८ ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली-४८ ।

सुधीर कुमार विद्यालंकार (स्व०)

ज० उमराख दारडोली; कार्य: स्नातक होने के बाद ९ वर्ष तक गुरुकुल सूपा में अध्यापक, १९३८ में दक्षिण अफ्रीका में जोहानिसबर्ग में गांधी भारत विद्यालय के आचार्य; वि० दक्षिण अफ्रीका में शिक्षा प्रसार, हिन्दी प्रचार और आर्यसमाज के कार्यों द्वारा बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त, पाटीदार सोसायटी के प्रमुख कार्यकर्ता, अफ्रीका में हजारों मील तक प्रचार कार्य हेतु यात्रा, छात्रकाल में हॉकी के कुशल खिलाड़ी और अनेक टूर्नामेन्टों में विजयी । निधन १९४६, दक्षिण अफ्रीका ।

संवत् १९८९ (सन् १९३३)

आत्मानन्द आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० गुरुकुल कांगड़ी; पि० स्वामी ब्रह्मानन्द, कार्य: अलीनगर, गोरखपुर में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य करते रहे, एक सफल तथा उच्च कोटि के वैद्य थे ।

नित्यानन्द वेदालंकार

ज० १३ अगस्त १९१३, सातेम गांव गुजरात; पि० श्री हीराभाई उकाभाई पटेल, शि० एम० ए० संस्कृत (दिल्ली), एम० ए० हिन्दी (पंजाब); कार्य : डी० एम० कालेज मोगा में संस्कृत तथा हिन्दी विभाग के अध्यक्ष (१९४४-५४), महिला आर्ट्स कालेज पोरबन्दर में प्रधानाचार्य (१९५५-६०), गाडा कालेज नवसारी में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष (१९६०-७४), संप्रति पी-एच० डी० उपाधि के लिए मार्गदर्शन तथा ग्रन्थलेखन; र० संध्या सुमन, संध्या विनय, मनोविज्ञान की रूपरेखा (पंजाबी में भी रूपांतर), छायावाद: नया मूल्यांकन, पूर्व और पश्चिम, प्रभावशाली व्यक्तित्व: मार्ग दर्शन के लिए सच्चे इन्सान बनो, प्रार्थना दीप, जीवन की राहें, सुराज्य की रूपरेखा; वि० दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय की सीनेट के मनोनीत सदस्य (१९७३ में), दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय की सिंडीकेट के ३ वर्ष के लिए सदस्य निर्वाचित (१९७६ में), दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय की विद्वत् परिषद् के ३ वर्ष के लिए सदस्य निर्वाचित (१९७६ में) १९६७ से दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय के कला संकाय के प्रतिष्ठित सदस्य, अध्ययन, अध्यापन तथा साहित्य-रचना में विशेष अभिरुचि, गुजरात में हिन्दी अभ्यास समिति के सदस्य, प्रभावशाली वक्ता, सुलेखक और छात्रों के प्रिय प्रोफेसर । प० गुलकाटेज लुनीकुइ, नवसारी, गुजरात ।
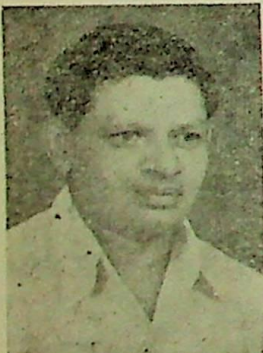
ब्रह्मानन्द वेदालंकार

ज० डलवाल (जेहलम); पि० श्री महता ज्ञानचन्द्र; कार्य: गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्यापक, गुरुकुल फार्मेसी में

कार्य। प० द्वारा अलंकार औषधालय, आर्यसमाज के निकट, पटियाला।

भारतभूषण वेदालंकार (स्व०)

ज० सुनाम (पटियाला); कार्य: कुछ दिन गुरुकुल में सेवा, फिर अफ्रीका में शिक्षक, केनिया रेलवे में गार्ड; वि० आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान।

रविदत्त वेदालंकार

कार्य: अध्यापन, गुरुकुल भैंसवाल में अध्यापक; वि० स्वतन्त्रता आंदोलन के सिलसिले में १९३२ में जेल यात्रा। प० गुरुकुल भैंसवाल (सोनीपत)।

रामेश्वर आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० बहराइच; कार्य: वैद्यक करते थे।

विद्यानिधि आयुर्वेदालंकार

कार्य : पहले होशियारपुर में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य, अब रामसिंहपुर (बीकानेर) में निजू चिकित्सा व्यवसाय; वि० होमियोपैथी के ज्ञाता, कुशल व सुयोग्य शिक्षक। प० पो० रामसिंहपुर (गंगानगर)।

विनोदचन्द्र विद्यालंकार (स्व०)

कार्य : कुछ वर्ष गुजरात विद्यापीठ में अध्यापक, तदन्तर कच्छ के गुरुकुल में कई वर्ष तक आचार्य; वि० भावनाशील एवं कर्मठ कार्यकर्ता, सुवक्ता एवं सुयोग्य शिक्षक।

विश्ववीर आयुर्वेदालंकार

ज० सीसामऊ (कानपुर); कार्य: स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य। प० पाकर मंडी, १०४ ए/३१०पी० रोड सीसामऊ, कानपुर।

वीरसेन विद्यालंकार (पृथ्वीसिंह मेहता)

ज० उदयपुर; कार्य: स्नातक होने के बाद श्री पंडित जयचन्द्र जी के साथ भारतीय इतिहास पर शोध कार्य, १९३७ से भारतीय इतिहास परिषद् में गवेषणा कार्य; र० विहार का ऐतिहासिक दिग्दर्शन, राजस्थान का इतिहास; वि० ऐतिहासिक विषयों पर शोधपूर्ण लेख लिखने में तथा अनुसंधान करने में विशेष अभिरुचि। प० ३ हाउसिंग सोसायटी, साउथ एक्सटेंशन, नई दिल्ली-२४।

सत्यपाल विद्यालंकार

ज० ३१ अगस्त १९१०, मुलतान; कार्य: लाहौर में बोपाल आर्ट्स कालेज के संचालक तथा हिन्दी व अंग्रेजी के अध्यापक, १९४७ से दिल्ली में स्वतन्त्र पत्रकारिता, कतिपय विदेशी पत्र-पत्रिकाओं के संपादक, नई दिल्ली के विदेशी राजदूतों के पत्रकार परामर्शदाता (१९६०-७२), संप्रति स्वतन्त्र लेखन कार्य; र० दीपदान (काव्यसंग्रह), कामायनी का सरल अध्ययन, लगभग एक दर्जन उपन्यास प्रकाशित; वि० या० १९६२ में भारतीय पत्रकार मंडल के नेता के रूप में योरोप यात्रा, १९६७ में अमेरिका यात्रा; वि० गीता, योगशास्त्र एवं उपनिषदों का गम्भीर अध्ययन, इन विषयों पर प्रवचन हेतु प्रतिवर्ष विभिन्न स्थानों पर आमंत्रित, हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी के धाराप्रवाह वक्ता, १९३३ में श्री परम वेदालंकार के साथ साइकिल द्वारा संपूर्ण विश्व की यात्रा, गुरुकुल जीवन में 'उन्मुख' उपनाम से प्रसिद्ध, योग में विशेष अभिरुचि। प० ३ फ़ान्सिस बिल्डिंग, निकलसन रोड, देहली।

सुधाकर आयुर्वेदालंकार

ज० कराची; कार्य : पहले कराची में, फिर बम्बई में स्वतन्त्र व्यवसाय। प० इटोला (बड़ौदा)।

सोमदत्त आयुर्वेदालंकार

ज० ब्रह्मपुर (होशियारपुर); पि० श्री बेलीराम; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य।

हरिदत्त आयुर्वेदालंकार (स्व०)

जीवन पर्यन्त जींद में स्वतन्त्र कार्य करते रहे।

हरिदेव आयुर्वेदालंकार

ज० मोरमंडी (पंजाब); **कार्य** : अफ्रीका में परिवहन का स्वतन्त्र व्यवसाय। प० अलंकार ट्रेडिंग कम्पनी, १२, एवेन्यू, रोड्स स्ट्रीट, बुलावर्गो, रोडेशिया।

संवत् १९९० (सन् १९३४)

जगद्भानु विद्यालंकार (जयसिंह)

ज० १३ फरवरी १९१२, अजमेर; पि० श्री शिवनाथ सिंह जी मेहता; **कार्य** : राजस्थान राज्य में राजपत्रित अधिकारी के रूप में सेवा कार्य, वर्षों तक जिला समाज कल्याण अधिकारी, संप्रति अवकाशप्राप्त जीवनयापन; वि० छात्रकाल में वाद्य दल के कप्तान तथा हॉकी के उत्तम खिलाड़ी। प० शिवकुटी, फतेहसागर की पाल, उदयपुर।

देवकीर्ति आयुर्वेदालंकार

कार्य : बोकानेर गुजरात में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; **वि०या०** सं० रा० अमेरिका, वि० सफल एवं ख्यातिप्राप्त चिकित्सक, समाज सेवक। प० बोकानेर, बाया बारडोली (सूरत)।

प्रबुद्धकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० सोनारनपारा (चौबीस परगना); पि० श्री अम्बिका चरण जी; **कार्य** : स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य, कुछ समय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आश्रमाध्यक्ष एवं आयुर्वेद महाविद्यालय की श्रद्धानन्द चिकित्सालय शाखा नं० २ में चिकित्सक, अब जिला बिजनौर में वैद्य; वि० अपने समय के एकमात्र बंगाली स्नातक, आर्यसमाज के कार्यों में रुचि, कुशल प्रवन्धक एवं सफल वैद्य।

प्रभाकर आयुर्वेदालंकार

ज० १० अप्रैल १९१०, सिसोदा, तालुका नवसारी (बलसाड़); पि० श्री कुंवर जी राम भाई; **कार्य** : स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; **वि०या०** इंगलैण्ड तथा अमेरिका; वि० गुरुकुल के शिक्षण और संस्कार से पूर्णतः प्रभावित। प० पो० वराड़, बाया बारडोली (सूरत)।

ब्रह्मवीर (ब्रह्मदत्त) वेदालंकार

ज० ४ जुलाई १९११, धारनगर; पि० श्री बिहारीलाल जी; **कार्य** : धार स्टेट में १० वर्ष पैलेस स्टोर आफीसर पद पर कार्य, मध्य भारत में ८ वर्ष विकास विभाग में पंचायत एवं सहकारिता निरीक्षक के पद पर कार्य, पंचायत विभाग में जिला अन्वेक्षक के पद पर ९ वर्ष कार्य, ३ वर्ष पंचायत विभाग में जिला पंचायत अधिकारी के पद पर कार्य, संप्रति सेवा-निवृत्त होकर समाज सेवा में व्यस्त; **वि०** वैयक्तिक एवं सामाजिक कार्यों में अभिरुचि, हाकी के उत्तम खिलाड़ी। प० २४ धारेश्वर मार्ग, गली न० २, धार (मध्य प्रदेश)।
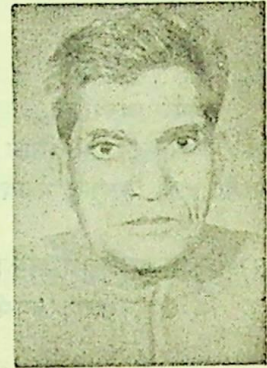
युधिष्ठिर वेदालंकार (स्व०)

पि० श्री बीरबल; **कार्य** : कुछ वर्षों तक अर्जुन दैनिक में प्रबन्धक, तदनन्तर बम्बई में स्वतन्त्र कार्य; वि० आर्यसमाज के कार्यों तथा समाज सेवा में रुचि, फिल्म-निर्माण में प्रमुख कार्य।

योगिराज आयुर्वेदालंकार

ज० १० अगस्त १९१०, सकरगढ़ (सियालकोट); पि० श्री मगधर मल जी, महाजन; **कार्य** : दीनानगर में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० आर्यसमाज के कार्यों में विशेष अभिरुचि। प० दीनानगर, जिला गुरदासपुर।

वासुदेव आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० खानेवाल; **कार्य** : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय करते थे।

राजेश्वर वेदालंकार (स्व०)

ज० कुंजाहा (पाकिस्तान); कार्य : कुछ वर्षों तक दैनिक अर्जुन और दैनिक नवराष्ट्र में संपादक, तत्पश्चात् बंबई में स्वतन्त्र व्यवसाय; वि० १९३२ में स्वतन्त्रता संग्राम के सिलसिले में हुए आंदोलन के कारण जेल यात्रा, आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे, फिल्म निर्माण में प्रमुख कार्य, अनेक फिल्मी कहानियों के लेखक ।

विद्यानन्द विद्यालंकार

ज० खगड़िया (मुंगेर); पि० श्री रामेश्वरप्रसाद जी गुप्त; शि० डिप्० इन० एड० (रांची), वैद्याचार्य (पारड़ी) इतिहासाधिस्नातक, एम० ए० (सागर); कार्य : १९४६ में दैनिक लोकमान्य (कलकत्ता) के संपादक, १९४७ में विश्व सर्वधर्म सम्मेलन कलकत्ता में आर्य समाज के प्रतिनिधि, गुरुकुल कालेज बैरगनिया के प्रधानाचार्य (१९६०-७३), संप्रति स्वाध्याय एवं स्वतत्र कार्य; वि० भिन्न-भिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित, ज्योतिष के सम्बन्ध में एक छोटी सी पुस्तक प्रकाशित, दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय बिहार की सीनेट, फैकल्टी तथा विद्वत्-परिषद् के सम्मानित सदस्य । प० द्वारा डा० नरेन्द्रदेव जायसवाल, दिगम्बर जैन मंदिर के पास, भागलपुर -२; हाजीपुरयंत्र डाकखाना रोड पो० ग्रा० खगड़िया (मुंगेर) बिहार ।

विनयकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० १० सितम्बर १९१०, क्वेटा; पि० श्री द्वारकादास जी मदन; कार्य : क्वेटा में आयुर्वेद में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य (१९३४-४२), आर्य गर्ल्स सैकेन्डरी स्कूल नैरोबी (पूर्व अफ्रीका) में अध्यापन कार्य(१९४३ से अब तक); वि० आर्यसमाज नैरोबी के निमंत्रण पर अध्यापन कार्य हेतु अफ्रीका यात्रा, वहां अध्यापन कार्य के अतिरिक्त आर्यसमाज, वैदिक धर्म एवं हिन्दी के प्रचार और प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान । प० पो० ग्रा० बा० ४४१५६, नैरोबी, पूर्व अफ्रीका ।

वीरभद्र आयुर्वेदालंकार

ज० खड़सुपा (गुजरात; पि० श्री जीवणभाई माधव भाई पटेल; कार्य : अपने वतन में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० सफल वैद्य एवं समाजसेवक, श्री अरविंद सोसायटी पांडिचेरी के सम्मानित सदस्य; वि० या० पूर्वी अफ्रीका और जंजीबार । प० पो० कराड़ी, बाया नवसारी (सूरत)।

वेदव्रत वेदालंकार

ज० ११ फरवरी १९१२, जफरवाल (स्यालकोट); पि०श्री चेतराम; शि० एम० ए० (पंजाब), एलएल० बी० (दिल्ली); कार्य : 'अर्जुन' दैनिक में संपादक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में इतिहास के उपाध्याय एव उपाचार्य, 'हिन्दी मिलाप, व 'अर्जुन' के संपादक, संप्रति दिल्ली में निजी मुद्रण और प्रकाशन का व्यवसाय; वि० छात्र-अवस्था में सदा सर्वप्रथम' बनारस, इलाहाबाद, पटना, लखनऊ आदि में विश्वविद्यालय-स्तरीय प्रतियोगिताओं में गुरुकुल का प्रतिनिधित्व एवं प्रथम पुरस्कार प्राप्त, वेदालंकार परीक्षा में सर्वप्रथम आने पर अनेक पदक प्राप्त,सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि, लायन्स क्लब दिल्ली के प्रधान व सदस्य, दिल्ली प्रशासन की अनेक समितियों व बोर्डों—इंडस्ट्रियल ऐडवाइज़री बोर्ड, लेबर ऐडवाइज़री बोर्ड आदि—के सदस्य एवं पदाधिकारी, दिल्ली प्रिन्टर्स ऐसोसिएशन के प्रधान, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की विद्यासभा, सीनेट, सिण्डीकेट आदि के सदस्य, अखिल भारतीय स्नातक मडल के वर्षों तक प्रधान, स्वाध्याय-प्रिय, सुलेखक, 'प्राचीन भारतीय राजशास्त्र' विषयक शोधपूर्ण ग्रन्थ के लेखक, सुवक्ता, प्रबन्धपटु । प० रायसीना प्रेस, ४, चमेलियान रोड, दिल्ली-६; टेली० कार्यालय: ५१४२०३, ५१५२६७, घर: ५१४४८५ ।

सत्यपाल विद्यालंकार

ज० ५ नवम्बर १९११, मोगराल, कोटा; पि० श्री महाराजसिंह जी; कार्य : निजी व्यापार (१९३४-३८), राजकीय सेवा में जिला रसद अधिकारी, सहायक खाद्य

कमिश्नर (१९३८-५२), रामगंज मंडी मेंनिजी व्यापार (१९५२ से); वि० नगरपालिका रामगंज मंडल के अध्यक्ष (१९५४-५८), पंचायत समिति के प्रधान (१९५४-६१), जिला परिषद् कोटा के अध्यक्ष, मंडल कांग्रेस कमेटी व जिला कांग्रेस कमेटी के वर्षों तक मंत्री व प्रधान, आर्यसमाज कोटा के मंत्री, कोटा की अन्य अनेक सस्थाओं के मंत्री व प्रधान, कोटा में हुए शराबबन्दी सत्याग्रह में महत्त्वपूर्ण योगदान, आर्यसमाज व अन्य सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं के कार्यों में विशेष अभिरुचि। प० महात्मा गांधी मार्ग, रामगंज मंडी, जिला कोटा।

सत्यप्रिय वेदालंकार

कार्य : कुछ समय गुरुकुल सूपा (गुजरात) में शिक्षक, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में अध्यापक, भारत-सरकार के सुरक्षा विभाग में कार्यकर्ता, वि० व्याकरण विशारद। प० द्वारा एस०डी०शर्मा एण्ड कम्पनी,५८श्रद्धानन्दमार्ग, दिल्ली-६।

सुभाषचन्द्र वेदालंकार

पि० श्री प्रभुदत्त; **कार्यः** कुछ समय गुरुकुल सोनगढ़ में अध्यापक, अखिल भारतीय चर्खा संघ की ओर से वर्धा और अहमदाबाद में कार्य, संप्रति गांधी आश्रम मेरठ के मुख्य कार्यकर्ता; **वि०** १९३२, १९४०, १९४२ के राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लेकर जेल यात्रा, खादी के प्रति विशेष रुचि। **प०** भारतीय चर्खा संघ, गांधी आश्रम, मेरठ।

सुरेन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० १ अक्टूबर १९१३, डेरागाजीखां(पश्चिमी पाकिस्तान);**पि०**पं० वेदव्रत जी; **कार्यः** डेरागाजीखाँ में चिकित्सा कार्य, राजस्थान आयुर्वेद महाविद्यालय में अध्यापन एवं चिकित्सा कार्य (१९४८-५८ तथा १९७५ से अब तक), गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में औषध निर्माण-कार्य (१९५९-७४); **वि०** आर्यसमाज के कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान, आर्यसमाज डेरागाजीखां के कई वर्षों तक मंत्री, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी की आर्यसमाज के ३ वर्ष तक प्रधान, भ्रमण में विशेष अभिरुचि-मार्च-अप्रैल १९६९ में साइकिलद्वारा श्रीनगर (काश्मीर) से देहली तक लगभग ५५०मील की यात्रा,काश्मीर से कन्याकुमारी तक की यात्रा पूरी करने का लक्ष्य एवं उत्साह, धुन के धनी एवं उत्साही कार्यकर्ता। प० ६६३आदर्श नगर, जयपुर।

सुरेशचन्द्र विद्यालंकार

शि० पीएच० डी० (पेरिस); **कार्य**: फ्रांस में भारतीय दूतावास में कार्यकर्ता, लोकसभा के सदस्य, उस्मानिया विश्वविद्यालय में फ्रेंच-अध्यापक; **वि०**१९३० में राष्ट्रीय आंदोलन के सिलसिले में जेल यात्रा, इतिहास के अच्छे विद्वान्, विचारक कुशल राजनीतिज्ञ।

सूर्यकान्त वेदालंकार

ज० ११ मई १९१७, दत्तावली (अलीगढ़); **पि०** श्री श्यामलाल; **शि०** एम० ए० इतिहास (दिल्ली), एम० ए० राजनीतिशास्त्र (आगरा) एलएल०बी० (आगरा), पीएच० डी० राजनीतिशास्त्र (लंदन)–'द नेचर एण्ड ओरिजिन ऑफ एच० जे० लास्कीस ओपिनियन्स ऑन इन्टरनेशनल पॉलिटिक्स'; **कार्य** : दैनिक 'अर्जुन' हिन्दुस्तान' और 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के सहसंपादक, भारत सरकार के सुरक्षा-मंत्रालय में कानूनी सहायक, अब मेरठ कॉलिज मेरठ में राजनीतिशास्त्र विभाग के रीडर एवं अध्यक्ष; **वि०** **या०** रूस, फ्रांस, जर्मनी, पोलैण्ड, रोम, इटली व हालैण्ड आदि की ज्ञान-यात्रा; **वि०** आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, मेरठ विश्वविद्यालय की बोर्ड ऑफ स्टडीज़ के सदस्य, अध्ययन-अध्यापन में विशेष अभिरुचि। प० मेरठ कालेज, प्रोफेसर्स क्वार्टर्स, विक्टोरिया पार्क, मेरठ।

सुदर्शन आयुर्वेदालंकार

ज० खरकड़कलां झण्डाजी ग्राम (जालन्धर); **शि०**

आयुर्वेदाचार्य (अ० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ); कार्य : देहरादून में स्वतंत्र चिकित्सा-कार्य,वर्षों तक भारत सरकार के आमन्त्रण पर उत्तरप्रदेश व राजस्थान में ग्रामोद्योग-प्रसार का कार्य, जयपुर में आर्यकन्या महाविद्यालय, दयानन्द पब्लिक स्कूल, बेसिक प्राइमरी कन्या विद्यालय के अवैतनिक संचालक, संप्रति देहरादून में आयुर्वेदिक चिकित्सा-कार्य; वि० निर्भीक व राष्ट्रभक्त, बचपन सरदार भगतसिंह के साथ व्यतीत, सेवाभाव, 'सादा जीवन उच्च विचार' उक्ति को सार्थक करने के कारण गुरुकुल में 'साधु जी' के नाम से विख्यात, छात्रकाल में कबड्डी, रस्साकसी, कुश्ती, हॉकी, फुटबाल आदि के अच्छे खिलाड़ी, व्यायाम व योगासन-प्रिय, मोटर रोकने, दांतों से आदमियों से भरी गाड़ी खींचने, जंजीर तोड़ने, आंख व गले से ४ सूत का सरिया मोड़ने आदि करतबों के कारण सर्वप्रथम 'गुरुकुलीय भीम' के नाम से प्रसिद्ध, अध्ययनशील, कई पदक प्राप्त, देहरादून में आर्य वीर दल, आर्यकुमार सभा, आर्यसमाज, मडल कांग्रेस कमेटी, जिला वैद्य मंडल, नगर वैद्य मंडल, हिन्दी साहित्य समिति आदि संगठनों के प्रमुख पदाधिकारी, देसी खेलों को बढ़ावा देने के लिए निजी प्रयास से कई वर्षों तक एक साथ १६ खेल-प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन, कई वर्षों तक वादविवाद, सुलेख व निबंध प्रतियोगिताओं का संचालन, सन् १६३० व १६४२ में गांधी जी द्वारा संचालित आंदोलनों में सक्रिय भाग, जयपुर की आर्यसमाज आदर्शनगर के वर्षों तक पदाधिकारी, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान, आर्यपद्धति से संस्कार कराने में पटु, कुशल वैद्य,विशुद्ध आयुर्वेदिक चिकित्सा में विशेष रुचि, प्रसिद्ध सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यकर्ता। प० २७ केशव मार्ग, लक्ष्मण चौक, देहरादून; ३२ मनु मार्ग, अलवर (राजस्थान)।

सोमदत्त वेदालंकार

ज० १३ मई १६१३, क्वेटा (बिलोचिस्तान); पि० श्री हीरालाल जी; कार्य : सन् १६३६ से गांधी आश्रम के कार्यकर्ता, पहले उत्तर प्रदेश में फिर १६४८ से पंजाब में तथा अब पानीपत में कार्यरत, वि० खादी उत्पादन की बिक्री करने वाली संस्था के मन्त्री, खादी ग्रामोद्योग कमीशन के सदस्य तथा सदस्य-सचिव, १६३२ तथा १६४२ में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हुए आन्दोलनों में जेल यात्रा। प० खादी आश्रम, पानीपत।

हरिदत्त आयुर्वेदालंकार

ज० १३ जून, १६१३, सुरजननगर (मुरादाबाद); पि० चौ० करोड़ीसिंह जी; कार्य : जिला परिषद् मैसूर स्टेट में सेवा कार्य (१६३४-३६), दिल्ली में (१६३६-३८) तथा सुरजननगर में (१६३८ से अब तक) निजी चिकित्सा कार्य; वि० स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान कांग्रेस के कार्यक्रमों में भाग लेने के कारण १६३०, १६३२ और १६४२ में जेल यात्रा, खादी के प्रचार और प्रसार में विशेष अभिरुचि-प० सुरजननगर, मुरादाबाद।

संवत् १६६१ (सन् १६३५)

अभयशरण आयुर्वेदालंकार

ज० १६१२,खुशा.. (सरगोधा); पि० लाला दौलतराम गुलाटी; कार्य : जबलपुर में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य एवं गुरुकुल फार्मेसी की एजेन्सी; वि० मध्यप्रदेश में आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान् और मूक कार्यकर्ता, मध्य-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्मानित सदस्य, राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक कार्य-कलापों में छात्र जीवन से ही विशेष रुचि, शुद्धि, अछूतोद्धार, वैदिक धर्म का प्रचार व कांग्रेस के कार्य कलापों में महत्त्वपूर्ण योगदान, काव्य, भाषण व अध्यात्म में विशिष्ट अभिरुचि, छात्र जीवन में गुरुकुल में 'योगेन्द्र' नाम से जाने जाते थे। प० अभय औषधालय; बड़ी ओमती, जबलपुर।

अवनिमोहन विद्यालंकार

पि० श्री शेरसिह; कार्यः चर्खा संघ की काश्मीर शाखा के मंत्री, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान कार्यालय

दिल्ली के प्रमुख कार्यकर्ता, गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रबन्धमंडल के मंत्री, संप्रति हरिद्वार में स्वाध्याय में व्यस्त; वि० आर्य समाज व कांग्रेस के कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान, गुरुकुल की उन्नति के लिए सदा चिंतित एवं प्रयत्नशील, कई वर्ष गुरुकुल की विद्यासभा के सदस्य। प० मोहन आश्रम, खड़खड़ी, हरिद्वार।

ऋषिदेव (कृष्णमोहन) वेदालंकार

ज० १० अगस्त १९१३, जामपुर (डेरागाजीखां); पि० श्री सेठ ऊधोदास ग्रोवर; शि० एम० ए०, एम० एस० (कलकत्ता), रूसी प्रमाणपत्र परीक्षा (लखनऊ); कार्यः अमेठी राज्य (सुलतानपुर) में व्यक्तिगत सचिव (१९३६-३७), 'हिन्दी मिलाप' (लाहौर) के उपसंपादक (१९३७-४२), उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के साप्ताहिक पत्र 'आर्यमित्र' के संपादक (१९४२-४५), चिकित्सा कार्य (१९४५-५५), संप्रति साहित्य-सजन व चिकित्सा कार्य में व्यस्त; र० आलोचनादर्श, आर्यसमाज जिन्दाबाद, मानव विज्ञान (बिहार सरकार द्वारा पुरस्कृत), मानव विज्ञान व नृतत्त्वशास्त्र, मनोविज्ञानम् (संस्कृत ग्रन्थ), समाजशास्त्र (प्रश्नोत्तरी), सामाजशास्त्र के सिद्धान्त (प्रश्नोत्तरी), सामाजिक विचारणा का इतिहास, ओरिजिन ऑफ मैन (अंग्रेजी शोधपत्र); वि० हैदराबाद के हिन्दी आन्दोलन में सक्रिय योगदान, मानव विज्ञान परिषद् लखनऊ के प्रधान, अनेक भारतीय विश्वविद्यालयों तथा प्रशिक्षणालयों द्वारा सम्मानित, समय-समय पर अंग्रेजी, हिन्दी व संस्कृत में भाषण देने के लिए आमन्त्रित, आर्यसमाज की प्रवृत्तियों में सक्रिय योगदान। प० ई २/ई० २ रिवर बैंककालोनी, लखनऊ; टेलि० २५८९८।

ओम्प्रकाश वेदालंकार

ज० ८ अप्रैल १९१३, बिशनपुरा (बिजनौर); पि० श्री गौरीलाल राजवंशी; शि० एम० ए० संस्कृत (नागपुर), एम० ए० हिन्दी (आगरा); कार्यः प्रवर प्राध्यापक एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय रोहतक, संप्रति स्वाध्याय एवं शिक्षण; र० 'नागानन्दम्' हिन्दी-संस्कृत टीका; वि० पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ के एकेडैमिक कौंसिल के भूतपूर्व सदस्य, स्वाध्याय एवं वैदिक साहित्य के अनुसंधान में रुचि। प० ओल्ड काटन मिल्स, नरवाणा (हरियाणा)

गणपति वेदालंकार

ज० चन्दौसी; पि० श्री तोताराम; कार्यः स्नातक बनने के बाद गुरुकुल कांगड़ी में कई वर्ष तक वस्तुभंडारी, कटक व दिल्ली में स्वतन्त्र व्यवसाय, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के मैनेजर एवं सहायक व्यवसायाध्यक्ष, संप्रति सेवा निवृत्ति-जीवनयापन; वि० हॉकी के उत्तम खिलाड़ी, असाधारण स्मरणशक्ति सम्पन्न, बाल्यावस्था में संपूर्ण यजुर्वेद कण्ठस्थ, प्रबन्धपटु, कार्यकाल में फार्मेसी की पर्याप्त प्रगति, हसमुख व मिलनसार, आर्य समाज के कार्यों में विशेष योगदान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वर्षों तक क्रियाशील सदस्य। प० गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)।

गुरुदेव विद्यालंकार

ज० ६ नवम्बर १९१०, डेरागाजीखां; पि० श्री मिलापचन्द; शि० मांटिसरी शिक्षण पद्धति का डिप्लोमा (अड्यार मद्रास); कार्य : विभाजन से पूर्व लाहौर में अध्यापन, तदनन्तर वाराणसी, सीतापुर, अहमदाबाद, पिलानी में मांटिसरी शिक्षाकेन्द्रों में शिक्षण, संप्रति नैनीताल में निजी प्रेस का संचालन; र० महावीर शिवाजी; वि० बाल शिक्षण में विशेष अभिरुचि, आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, कुमाऊं विद्यार्थी समिति के आजीवन सदस्य। प० जनता प्रेस, नैनीताल।

चन्द्रकिरण आयुर्वेदालंकार

पि० श्री मुख्तारसिंह; कार्य : रुड़की में सफल वैद्य एवं औषध निर्माता; वि० सार्वजनिक कार्यों में सोत्साह भाग, रुड़की की आर्यसमाज और कांग्रेस कमेटी के मंत्री रहे हैं। प० पुराने थाने के सामने, रुड़की (सहारनपुर)।

जगदीश वेदालंकार

ज० १५ मई १९१३, ठरू आल्देपुर (सोनीपत); पि० चौ० फतेहसिंह; कार्य : स्नातक बनने के बाद भटिण्डा व नरेला में शिक्षण (१९३५-३८), अखिल भारतीय चर्खा संघ में सेवा कार्य (१९३८-४४), बम्बई में फोटो-ग्राफरी का स्वतंत्र व्यवसाय (१९४४-४८), सोनीपत में होमियोपैथी की प्रैक्टिस (१९४८-५०), सचल सिनेमाका सचालन (१९५०-५२), खादी ग्रामोद्योग कमीशन में एसिस्टेन्ट के रूप में कार्य (१९५३-५५), खादी ग्रामोद्योग कमीशन में इन्टरनल आडिट के अधिक्षक (१९५६-७१), संप्रति सेवा-

निवृत्ति का जीवनयापन और होमियोपैथी में स्वतन्त्र चिकित्सा वि० १९३२ में असहयोग आंदोलन मे भाग लेकर गिरफ्तार, सहारनपुर जिले में जनजागृति का कार्य, भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार से स्वतन्त्रता-सेनानी-पेन्शन प्राप्त। प० डी १३/६ पेपर मिल कालोनी, लखनऊ।
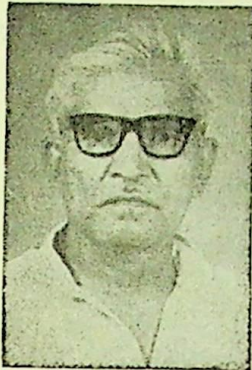
निरंजनदेव आयुर्वेदालंकार

ज० सरगोधा; पि० श्री नृसिंहदास; कार्य : लायलपुर में कैमिस्ट व ड्रगिस्ट का व्यवसाय, अब दिल्ली में 'नारंग मेडिकल हाल' के नाम से यही व्यवसाय; वि० कुशल चिकित्सक। प० एन १९, कीर्तिनगर, नई दिल्ली।

बलदेव आयुर्वेदालंकार

ज० २५ अक्टूबर १९१०, कानपुर; पि० श्री माधवप्रसाद; कार्य : कानपुर में आयुर्वेदिक ओषधिनिर्माण-व्यवसाय एवं गुरुकुल फार्मेसी के प्रमुख एजेन्ट; वि० या० सन् १९६७ में पर्यटन हेतु इंग्लैण्ड, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, हालैण्ड डेनमार्क, स्वीडन, नार्वे आदि वि० कांग्रेस के कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान—१९३९ से १९४७ तक कांग्रेस के कार्यकर्ता, पं० जवाहरलाल नेहरू के सन् १९४० से ४२ तक कानपुर से दिल्ली तक अगरक्षक, ११४२ के असहयोग आंदोलन में जेलयात्रा, राजनैतिक पेंशन प्राप्त, कानपुर के उत्साही सार्वजनिक कार्यकर्ता, बागवानी-विशेष रूप से गुलाबों की बागवानी—का शौक, गुरुकुल फार्मेसी के व्यवसाय-पटल के सदस्य, अखिल भारतीय स्नातक मंडल के कोषाध्यक्ष, प्रबन्धपटु, व्यवहारकुशल। प० अलंकार फार्मेसी, ४६/१५७ हाल्सी रोड, कानपुर।

बलदेव वेदालंकार (स्व०)

ज० शुजाबाद (मुलतान); पि० श्री शिवदयाल; वि० गणित शास्त्र में अच्छी रुचि थी।

बालकृष्ण वेदालंकार

ज० ५ सितम्बर १९१५, जामपुर (डेरागाजीखां); पि० श्री भांगीराम दिवान; शि० एम० ए० हिन्दी-संस्कृत (पंजाब विश्व०); कार्य : पंजाब के राजकीय महाविद्यालयों में प्राध्यापक (१९४६-७१), राजकीय महाविद्यालयों में प्रधानाचार्य (१९७१-७३), संप्रति पंजाब विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में कार्यरत; र० शिक्षाशास्त्र; वि० या० कनाडा; वि० 'षड्दर्शनों में मूलभूत एकता' पर अनुसंधान में रुचि, सुवक्ता, सुयोग्य लेखक, विचारक एवं शिक्षाशास्त्री, अनेक पदक प्राप्त, स्नातक परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त। प० मकान नं० १८, सेक्टर १०-ए, चंडीगढ़।

ब्रह्मानन्द आयुर्वेदालंकार

ज० १९१३, होडल (गुडगांवा); पि० श्री ब्रजभूषण-स्वरूप; कार्य : दिल्ली में स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय, जाट हाईस्कूल संगरिया मंडी (राजस्थान) में आयुर्वेद का अध्यापन व चिकित्सा, पंजाब आयुर्वेदिक फार्मेसी की खारी बावली (दिल्ली) शाखा का संचालन व व्यवस्था, संप्रति सन् १९४९ से पटियाला आयुर्वेदिक, फार्मेसी सरहिन्द के भागीदार एवं इसकी जबलपुर-शाखा के संचालक; वि० आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता। प० पटियाला आयुर्वेदिक फार्मेसी, जवाहरगंज, जबलपुर-२ (म० प्र०)।

भगवद्दत्त वेदालंकार

ज० १० आश्विन १९६९, नेक (मेरठ); पि० हकीम रिसालसिंह; शि० एम० ए० संस्कृत (आगरा); कार्य : आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (लाहौर) के तत्त्वावधान में वैदिक अनुसंधान-गुरुकुल कांगड़ी वेद-अनुसंधान--विभाग के प्रमुख कार्यकर्ता वेदोपाध्याय एवं आश्रमाध्यक्ष, गुरुकुल पत्रिका के संपादक, संप्रति स्वाध्याय एवं लेखन; र० ऋभु देवता, वैदिक स्वप्नविज्ञान (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गंगानाथ झा पुरस्कार से सम्मानित), वैदिक अध्यात्म विद्या, आत्म-समर्पण, विष्णुदेवता (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), ऋषि रहस्य, वेदविमर्श (दोनों पुरुषोत्तम मेमोरियल ट्रस्ट हैदराबाद द्वारा पुरस्कृत), ऋषि देव

विवेचन; वि० पत्र-पत्रिकाओं में शोधपूर्ण लेख प्रकाशित, वेदसेवा के कारण १९७६ में गुरुकुल द्वारा वेद-मार्तण्ड की उपाधि से सम्मानित, आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी के कई वर्ष तक प्रधान। प० गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)।

भद्रसेन आयुर्वेदालंकार

पि० श्री चेतराम; कार्य : गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ और दीवानचन्द्र धर्मार्थ औषधालय जेहलम में प्रधान चिकित्सक, लाहौर में स्वततंत्र चिकित्सा-कार्य, विभाजनोपरांत दरियागंज दिल्ली में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० राष्ट्रीय नेशनल मेडिकल ग्रेजुएट्स ऐसोसिएशन के निर्माण और उसकी प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाने में प्रशंसनीय प्रयास, सफल चिकित्सक। प० ११/३७१० सुभाष मार्ग, दिल्ली-६।

भीमसेन वेदालंकार

ज० १८ मार्च १९१८, मटिण्डू (सोनीपत); पि० श्री शिवकरणसिंह; कार्य : कमालिया में अध्यापन (१ वर्ष), ऑल इंडिया स्पिनर्स ऐसोसिएशन के प्रमुख कार्यकर्ता (१९३८-५३), अखिल भारतीय खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड में निदेशक (१९५४-७६), संप्रति सेवानिवृत्त; वि० रचनात्मक कार्यों और खादी में विशेष अभिरुचि, खादी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान। प० ४६ एल, मॉडल टाउन, रोहतक।

मधुसूदन वेदालंकार

कार्य : पूर्वी अफ्रीका के टांगानीका प्रदेश की राजधानी दारेसलाम में स्वतन्त्र व्यवसाय; वि० आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

यशःपाल विद्यालंकार (स्व०)

ज० नाहन; पि० श्री बहादुरसिंह; कार्य : सिरमौर स्टेट के राजवंशी कुंवर, अनेक वर्ष तक बड़ौदा स्टेट में नायब धर्माधिकारी और तहसीलदार, बम्बई सरकार के अधीन रेवेन्यू ऑफीसर; र० महापुरुष मुहम्मद।

रविशंकर विद्यालंकार :

पि० श्री अम्बाईदास; कार्य : लगभग ६ वर्ष गुरुकुल सूपा में अध्यापन कार्य, आजकल जाम्बिया में सफल व्याख्याता, प्रचारक व शिक्षक; वि० हॉकी के अपने समय के अच्छे खिलाड़ी, हिन्दी व आर्यसमाज और वैदिकधर्म के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान। प० पो० बा० १५६९ किटवे, जाम्बिया।

लक्ष्मण आयुर्वेदालंकार

ज० दोहद (गुजरात); पि० श्री जेठालाल; कार्य : गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ एवं गुरुकुल सूपा में चिकित्सक। प० द्वारा/श्री जगदीशचन्द्र एल० त्रिवेदी, स्कूल टीचर, सोनीपुरा तालुका-बलासिनोर (गुजरात)।

विजयकुमार आयुर्वेदालंकार

पि० श्री कबूलसिंह; कार्यः पुरकाजी व नारसन (मुजफ्फरनगर) में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य। प० नारसन (मुजफ्फरनगर)।

विनायकराव विद्यालंकार

ज० नवम्बर १९१२, मुरादाबाद; पि० श्री जयकृष्णदास पारेख; कार्यः पहले मुरादाबाद में अध्यापन, फिर बिड़ला कॉलेज पिलानी में शिक्षण, संप्रति बिड़ला पब्लिक स्कूल पिलानी में वाइस प्रिंसिपल, वि० अध्यापन कला एवं मौंटीसरी शिक्षा पद्धति के विशेष ज्ञाता। प० वाइस प्रिन्सिपल, बिड़ला पब्लिक स्कूल, पिलानी (राजस्थान)

वीरेन्द्र वेदालंकार

पि० श्री गिरिवरसिंह; कार्य : पुरकाजी में कृषि कार्य; वि० छात्र जीवन में अच्छे वक्ता, विदेश में वैदिक धर्म प्रचार; प० पुरकाजी (मुजफ्फरनगर)।

वेदप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० २ चैत्र १९६७ वि०, डलवाल (जेहलम); पि० श्री महता ज्ञानचन्द्र; कार्य : पटियाला में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता, २०-२२ वर्ष से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सदस्य, पटियाला आर्यसमाज के मंत्री, उपप्रधान, प्रधान के पद पर सेवा कार्य, आर्यसमाज की अनेक शिक्षा संस्थाओं के प्रधान, उपप्रधान एवं प्रबन्धक। प० अलंकार औषधालय आर्यसमाज के निकट, पटियाला; प्लाट नं० १९ जगदीश आश्रम के अन्दर, राजेन्द्र अस्पताल के पास, पटियाला।

शिवकुमार वेदालंकार

ज० मार्च १९१४, सनावां (मुजफ्फरगढ़); पि० श्री
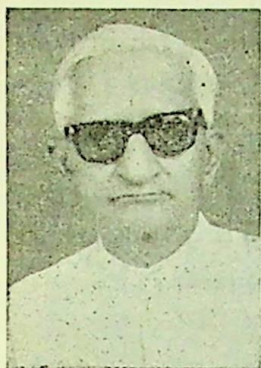
रामचन्द्र कुकड़ेजा; **कार्य**: प्रारम्भ में जमीदारी, गुरुकुल मुलतान में अध्यापन, 'वीर अर्जुन' में उप संपादक, 'हिन्दुस्तान' दैनिक में उप संपादक (१९३६-६८) एवं मुख्य उप संपादक (१९६८से१९७६तक), वि० उच्चकोटि के लेखक—नया समाज, सरस्वती, आजकल, विश्वदर्शन, साप्ताहिक हिन्दुस्तान आदि पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर लेख प्रकाशित, ट्रेड यूनियनों में सक्रिय कार्यकर्ता— पांच वर्ष हिन्दुस्तान टाइम्स कर्मचारी संघ, दिल्ली न्यूजपेपर कर्मचारी संघ की देख रेख में विविध समाचार पत्रों के कर्मचारियों में रचनात्मक कार्य, इंडो-सोवियत सांस्कृतिक परिषद् के सदस्य, कांग्रेस के आंदोलनों में भाग लेने के कारण जेलयात्रा, साम्यवादी आंदोलन में सक्रिय योगदान, कम्युनिस्ट साहित्य के गंभीर अध्ययन में रुचि, हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान। **निधन** १ जनवरी १९७७, दिल्ली ।

सुखदेव वेदालंकार (स्व०)

पि० श्री महता ज्ञानचन्द्र; **कार्य**: मृत्यु पर्यन्त लखनऊ में गुरुकुल फार्मेसी के एजेन्ट रहे ।

सुयोधन आयुर्वेदालंकार

पि० श्री निहालचन्द्र; **कार्य**: स्वतंत्र व्यवसाय में व्यस्त। प० १८/१० करेला बाग, इलाहाबाद ।

सोमकीर्ति वेदालंकार (स्व०)

विभिन्न स्थानों में पुरोहित एवं शिक्षक के रूप में कार्य किया ।

संवत् १९९२ (सन् १९३६)

ओम्प्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० ६ जनवरी १९१४, पलवाड़ा; पि० श्री हरदयाल; **कार्य**: देहरादून में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; वि० सफल चिकित्सक । प० ५, रामलीला बाजार, देहरादून ।

गुरुदत्त आयुर्वेदालंकार

ज० १९१३, डरमुरा किरार (शिकोहाबाद); पि० डॉ० सरनामसिह; **कार्य**: स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख सेनानी, १९३२ में सत्याग्रह-आंदोलन में भाग लेने के कारण जेलयात्रा, मंडल कांग्रेस कमेटी के प्रधान (१९४६-५१), अखिल भारतीय कांग्रेस के कमंठ कार्यकर्ता, आर्यसमाज के दार्शनिक व सामाजिक आदर्शों के प्रचार प्रसार में योगदान, आर्यसमाज द्वारा संचालित 'दयानन्द बाल मन्दिर' के प्रबन्ध मंडल के सदस्य, आर्यसमाजी साहित्य व हिन्दी साहित्य के अध्ययन में रुचि, शिकोहाबाद के जन समुदाय में अपनी सेवाभावी प्रकृति के लिए प्रसिद्ध । प० १३७ मोहम्मदमाह, शिकोहाबाद (मैनपुरी) ।

चन्द्रकेतु आयुर्वेदालंकार

ज० १३ दिसम्बर १९१० कोथमड़ी (गुजरात); पि० श्री गोपाल भाई उकाभाई पटेल; **कार्य**: अफ्रीका की एक बड़ी कम्पनी में नौकरी (१९३४-४६), अलंकार ब्रदर्स नाम से अफ्रीका में व्यापारिक संस्था का संचालन (१९४७-६९), संप्रति अपने वतन में सेवानिवृत्ति जीवन यापन; वि० छात्र-जीवन में हॉकी-फुटबाल के कुशल खिलाड़ी । प० कोथमड़ी, तालुका नवसारी (बलसाड़) ।

चन्द्रगुप्त वेदालंकार (स्व०)

पहले गुरुकुल मुलतान में शिक्षा प्राप्त की। फिर गुरुकुल कांगड़ी में आये । महाविद्यालय में आपका जीवन बहुत प्रगतिशील रहा। निबन्ध, वाद-विवाद, तैराकी आदि में

पर्याप्त कुशल रहे। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की संस्कृत वादविवाद प्रतियोगिता में विजयी। गढ़मुक्तेश्वर के तैराकी साम्मुख्य में भी जीतकर आये। स्नातक होने के बाद आपने सार्वजनिक जीवन बिताना आरम्भ किया। पहले कुछ समय पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उपदेशक रहे। फिर आपने हिन्दू महासभा में प्रवेश किया। हिन्दू महासभा में बड़ा यश प्राप्त किया। ओजस्वी भाषण जनता को बहुत पसन्द थे। **र०** बृहत्तर भारत, राष्ट्रभाषा हिन्दी। **निधन** १९४४, बिहार।

धर्मराज वेदालंकार (स्व०)

ज० सढौरा (अम्बाला); **पि०** श्री मुकन्दीलाल आर्य; **शि०** शास्त्री, एम०ए०संस्कृत (पंजाब विश्व०); **कार्य** : कुछ समय गुरुकुल में वैदिक अनुसंधान कार्य, फिर वेद महाविद्यालय में व्याकरण के प्रोफेसर, कुछ वर्ष दिल्ली के रामजस हाईस्कूल में संस्कृत व हिन्दी के अध्यापक, फिर होशियारपुर के डी०ए०वी०कालेज में हिन्दी के प्रोफेसर; **वि०** बड़े साधु स्वभाव के, शांतकर्मी और स्वाध्यायशील स्नातक, पंजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा में तथा देहली विश्वविद्यालय की एम० ए० (संस्कृत) परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त, सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में बराबर लेख प्रकाशित, गुजराती, बंगला और उर्दू भाषा का अच्छा परिज्ञान। **निधन** १५ जनवरी १९५० होशियारपुर।

प्रभुदत्त आयुर्वेदालंकार

पि० श्री संवाईराम; **कार्य** : स्नातक होने के पश्चात् झंग में व्यापार तथा चिकित्सा-कार्य, विभाजन के बाद देहली में व्यापार कार्य; **वि०** अध्ययन काल में प्रथम आते रहे, छात्रकाल में आयुर्वेद परिषद् के मन्त्री भी रहे, दिल्ली में श्मशान घाट पर अपने पू० पिता जी की स्मृति में ५० हजार की लागत से 'चौ० संवाईराम प्रार्थना भवन' का निर्माण। **प०** चौधरी ब्रदर्स, केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट, भगीरथ पैलेस, चांदनी चौक, दिल्ली; २८ नेशनल पार्क; लाजपतनगर-४, नई दिल्ली।

बलभद्र आयुर्वेदालंकार (स्व०)

स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य प्रारम्भ किया था। पर अकाल में ही भरी जवानी में १९३७ में दिवंगत।

बलवीर आयुर्वेदालंकार (स्व०)

कार्य : स्वतन्त्र रूप से चिकित्सा कार्य, कुछ समय गुरुकुल कांगड़ी के श्रद्धानन्द सेवाश्रम में भी गृह चिकित्सक। **निधन** अकाल में रोगग्रस्त होकर स्वर्गवासी।

भीमसेन वेदालंकार

ज० २५ नवम्बर १९१६, जामपुर (डेरागाजीखां); **पि०** लाला ठाकुराम; **शि०** बी० ए०, शास्त्री (पंजाब विश्व०); **कार्य** : शाहू दयानन्द फ्री हाईस्कूल कोल्हापुर स्टेट में अध्यापक (१९३६-४२), माडर्न कालेज फॉर वूमन अमृतसर में संस्कृत के प्रोफेसर (१९४३-४४), लाहौर में फल-व्यापार (१९४४-४७), दिल्ली में तेल-व्यापार (१९५३-५७), 'एटलस रबर वर्क्स' नाम से रबड़-निर्माण का व्यवसाय (१९६०-७१), संप्रति कृषि-कार्य; **वि०** वेद-अनुसंधान और कृषि सम्बन्धी कार्यों में विशेष अभिरुचि। **प०** भीमसेन कॉलोनी, बल्लबगढ़ (गुड़गांवा)।

मेधाव्रत आयुर्वेदालंकार (व्यास)

ज० ४ फरवरी १९११, सरसवणी (खेड़ा); **पि०** श्री रविशंकर व्यास; **कार्य** : उत्तर गुजरात, कराची और हैदराबाद में चिकित्सा कार्य (१९३६-३७), संप्रति बोचासन में चिकित्सा कार्य (१९३८ से अब तक); **र०** आयुर्-होमियो समन्वय; **वि०** सार्वजनिक स्वास्थ्य-सेवा, जनसेवा, ग्राम्य-जनसेवा में विशेष रुचि, सेवाव्रती, तपस्वी एवं साधु प्रकृति के लोकसेवक, राष्ट्रीय आन्दोलनों में १९३२, १९३८ एवं १९४०-४२ में जेलयात्रा, कांग्रेस की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, अपनी सेवाओं के कारण अत्यधिक लोकप्रिय। **प०** श्री मेधाव्रत रविशंकर व्यास, बोचासन (खेड़ा), गुजरात।

रामनाथ वेदालंकार

ज० ७ जुलाई १९१४, फरीदपुर (बरेली); पि० श्री गोपालराम; शि० एम० ए० संस्कृत (आगरा), पीएच० डी० संस्कृत (आगरा)-'वेदों की वर्णनशैलियां'; कार्य : रूपगढ़ (जयपुर) में ग्राम-सेवाश्रम की स्थापना तथा उसके प्रधानाध्यापक (१९३७-३८), गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में गणित, संस्कृत, व्याकरण आदि विषयों के अध्यापक (अप्रैल १९३८-३९), गुरुकुल विश्वविद्यालय के वेद महाविद्यालय में वेदोपाध्याय (१९३९-५८), तत्पश्चात् संस्कृत विभाग में उपाध्याय एवं अध्यक्ष (१९५८-७६), इसके साथ ही गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार (१९५८-६२), अप्रैल १९७४ से वेद एवं कला महाविद्यालय के आचार्य एवं विश्वविद्यालय के प्रोवाइसचांसलर, संप्रति पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ के नवस्थापित महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष (अगस्त १९७६ से); र० वैदिक वीर गर्जना, वैदिक सूक्तियां, वेदों की वर्णनशैलियां, (शोध प्रबन्ध), विचार और झांकियां (श्री अरविन्द के 'थॉट्स एण्ड ग्लिम्सेज़' का अनुवाद), वेदरहस्य १म भाग (श्री अरविन्द के 'सीक्रेट ऑफ दि वेद' का अनुवाद), नलचम्पू (संस्कृत-हिन्दी टीका); वि० महाविद्यालय में अपनी श्रेणी में सदा सर्वप्रथम, स्नातक परीक्षा में सर्वप्रथम रहने के कारण अनेक स्वर्णपदक प्राप्त, छात्रावस्था में 'संस्कृतोत्साहिनी परिषद्' के मंत्री एवं कुलमंत्री, वैदिक साहित्य के सुलझे हुए लेखक, वेद-उपनिषद् आदि पर विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में शोधपूर्ण लेख प्रकाशित, गुरुकुल विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका 'शोधभारती के प्रधान संपादक, छात्र-जीवन से ही लेखन में रुचि और उस समय 'देवगोष्ठी' नामक संस्कृत की हस्तलिखित पत्रिका का संपादन, मेरठ, गढ़वाल, कुमाऊं आदि विश्वविद्यालयों की शोध एवं पाठ्यक्रम समिति के विशेषज्ञ-सदस्य, वर्षों तक वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की शिष्टपरिषद् के सम्मानित सदस्य, गुरुकुल विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार, आचार्य एवं प्रोवाइसचांसलर के रूप में योग्यता एवं कुशलतापूर्वक कार्यसंपादन, समय-समय पर कार्यवाहक कुलपति के रूप में कार्य, प्रबन्धपटु, उच्चकोटि के वक्ता एवं वैदिक विद्वान् के रूप में ख्यातिप्राप्त। प० एफ-१९, सैक्टर १४, चंडीगढ़।
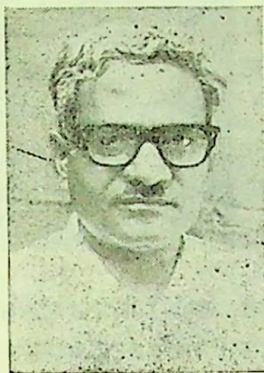
लक्ष्मणसिंह वेदालंकार

कार्य : संयुक्त प्रांत के रेलवे विभाग में वकील रहे; वि० आर्यसिद्धांत विषयक शोधपूर्ण निबन्ध लिखने पर प्रतिष्ठित स्नातक, महाविद्यालय जीवन में वैदिक साहित्य में विशेष रुचि, गुरुकुलीय साहित्य परिषद् के मन्त्री, लंदन की रॉयल एशियाटिक सोसायटी के सदस्य रहे। प० श्री लक्ष्मणसिंह कोठारी, मोहनपुरा, जोधपुर।

वीरेश्वर आयुर्वेदालंकार

ज० १० जनवरी १९१५, खड़सुपा (गुजरात); पि० श्री हीरा भाई दुर्लभ भाई; कार्य : गुजरात के नागधरा नामक स्थान में वर्षों तक सरकारी चिकित्सक, संप्रति वहीं स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० वैद्य के रूप में अच्छी ख्याति, विद्यार्थी अवस्था में हॉकी के अच्छे खिलाड़ी। प० डॉ० वीरेश्वर हीराभाई पटेल, नागधरा, ता० नवसारी (बलसाड़)।

वेदव्रत वेदालंकार (स्व०)

ज० बुलन्दशहर; कार्य : स्नातक होने के बाद पांडिचेरी के श्री अरविन्दाश्रम में साधक; र० वेद-गीतांजलि; वि० विशेष साहित्यिक रुचि के स्नातक, अच्छे कवि, छात्र जीवन में साहित्यगोष्ठी के मंत्री, वेद-गीतांजलि में निजी कविताओं के अतिरिक्त अन्य उच्चकोटि के कवियों की रचनाओं का भी संग्रह। निधन १९४४।

संतोषकुमार वेदालंकार

ज० १७ नवम्बर १९१३, बांकानेर (सूरत); कार्य : दैनिक 'अर्जुन' में सहायक संपादक, फिल्म क्षेत्र में कार्य,

ठेकेदारी, पॉकिट बुक्स का संपादन, आयात-निर्यात व्यापार; वि० या० पाकिस्तान, यूराक, लेबनान, साइप्रस, दक्षिण अफ्रीका, रोडेशिया, जाम्बिया, मोजांबिक, तनजानिया, कांगो, नाइजेरिया, इजिप्ट, इटली, स्विट्जरलैंड, फ्रांस, पूर्व जर्मनी, बेलजियम, नीदरलैंड, डेनमार्क, इंगलैंड, अमेरिका, कनाडा, जापान आदि देशों की व्यापार यात्रा; वि० साहित्यिक रुचि के व्यक्ति, अच्छे कहानीलेखक एवं कवि, सामाजिक कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान। प० १२ ए न्यू राजेन्द्र अपार्टमेंट, १ क्रॉस लेन, लेडी जमशेदजी रोड, बम्बई-१६।

सोमप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० १४ जून १६१४, सांगला (पाकिस्तान); पि० ला० सुखरामदास; कार्य: क्वेटा में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य (१६३६-४७), विभाजन के बाद बीसलपुर (पीलीभीत) में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य (१६४७-६५), गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वेद महाविद्यालय में मुख्य चिकित्साधिकारी एवं स्वास्थ्य-विज्ञान के उपाध्याय (१६६५-७५), संप्रति सेवा-निवृत्ति जीवनयापन; वि० छात्रावस्था से ही क्रीडा में रुचि, गुरुकुल के कार्यकाल में श्रद्धानन्द हॉकी टूर्नामेंट का पुनः शुभारम्भ कराने में महत्त्वपूर्ण योगदान, छात्र-काल में गुरुकुल के वाद्यदल के नायक, आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता, विभिन्न आर्यसमाजों के मंत्री-प्रधान, अच्छे वक्ता, प्रवन्धपटु, लोकप्रिय सफल चिकित्सक। प० ४० ई सत्य लक्ष्मी हाउसिंग सोसायटी, पेस्टन सागर, चैम्बूर, बम्बई।

हरिकृष्ण विद्यालंकार (स्व०)

ज० सुरजन नगर (मुरादाबाद); पि० श्री करोड़ीमल; कार्य: कुछ वर्ष गुजरांवाला गुरुकुल में अध्यापक, तदनन्तर गुरुकुल के विद्यालय विभाग में अध्यापक (१६४४-४६); वि० कुशल शिक्षक, शांतिप्रिय एवं साधुचरित्र। निधन जुलाई १६४६।

सम्वत् १६६३ (सन् १६३७)

अमरनाथ वेदालंकार

ज० पौष १६७३ विक्रमी, भूड़बराल (मेरठ); पि० चौ० दलेलसिंह; कार्य: कुछ वर्ष गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापक, फिर मोदी सोप फैक्टरी मोदीनगर में कैमिस्ट, संप्रति इसी फैक्टरी में इंचार्ज। प० गांव भूड़बराल, पो० परतापुर (मेरठ)।

अमृतपाल वेदालंकार

ज० १४ मार्च १६१६, लाहौर; पि० डॉ० सलामतराय; कार्य: पंडित जयचन्द्र विद्यालंकार के सान्निध्य में वाराणसी में भारतीय इतिहास परिषद् में व्रती (१६३७-४२), जालंधर के साप्ताहिक 'आकाशवाणी' के संपादक (१६४७-५०), पं जयचन्द्र विद्यालंकार के साथ उनके ग्रन्थों के शोधकार्य-सहायक एवं लेखक (१६५०-५३), केनिया (पूर्वी अफ्रीका)–गमन (१६५३ के अन्त में), नैरोबी रेलवे हैडक्वार्टर्ज में रेलवे-सर्विस (१०वर्ष), केनिया में १७ वर्ष तक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पत्र 'अमर भारती' के सम्पादक, पिछले तीन वर्ष से युनाइटेड किंगडम की विश्व हिन्दू परिषद के 'हिन्दू विश्व' के संपादक, लीड्स (यू० के०) में हिन्दी-संस्कृत शिक्षण एवं पौरोहित्य; वि० हिन्दी के सफल पत्रकार, सुलेखक एवं समालोचक, भारतीय स्वयं सेवक संघ तथा आर्यसमाज के कार्यों में सक्रिय योगदान, भारत विभाजन के समय रा०स्व०संघ की ओर से पंजाब रिलीफ कमेटी के अधीन विस्थापितों की सेवा, इतिहास व धार्मिक ग्रन्थों में रुचि, स्वाध्यायप्रिय एवं अध्यवसायी। प० २७, मेलविले प्लेस, लीड्स6 (LS6-2LZ), यॉर्कशायर, यू०के०।

आनन्द विद्यालंकार

ज० ३ सितम्बर १९१७, मुरादाबाद; **पि०** श्री नरोत्तमदास पारेख; **कार्य** : पत्रकारिता—'नवराष्ट्र'(बंबई १९३८-४०), 'विश्वमित्र' (बम्बई, १९४०-४१), 'अर्जुन' (दिल्ली, १९४२-४६) के उपसंपादक, 'नवभारत टाइम्स' (दिल्ली, १९४७ से) के वरिष्ठ सहसंपादक एवं अग्रलेख लेखक; **र०** दिल्ली चलो; **वि०** मूक एवं निष्ठावान् पत्रकार, सुलेखक, छात्रावस्था से ही लेखन व पत्रकारिता में रुचि, विविध प्रकार का साहित्य पढ़ने का शौक। **प०** ई १३, मॉडल टाउन, दिल्ली-९।

ओमदत्त आयुर्वेदालंकार (स्व०)

कार्य : डी० ए० वी० आयुर्वेद कालिज लाहौर में कुछ वर्ष प्रोफेसर, कोटा के एक धर्मार्थ चिकित्सालय में चिकित्सक; **वि०** विनोदी प्रकृति के सज्जन व्यक्ति।

कृष्णराव वेदालंकार

ज० ११ नवम्बर १९१६, जीजामगांव (धमतरी); **पि०** श्री नेमराम गायकवाड़; **कार्य** : गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ और गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षक, धमतरी में मेडिकल हॉल की स्थापना एवं संचालन,नाथूराम मोतीलाल संस्कृत पाठशाला में अध्यापन, संप्रति दाजी मराठी उच्चतर माध्यमिक शाला धमतरी में संस्कृत शिक्षक; **वि०** आर्यसमाज के कार्यकलापों में रुचि, अग्निदेव आर्य कन्या शाला की प्रबन्ध समिति के सदस्य, आर्यसमाज धमतरी के प्रधान, तैराकी एवं वन्य-भ्रमण में रुचि, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की पहाड़ियों को समतल करने के कारण प्रोत्साहनार्थ पदक प्राप्त। **प०** कृष्णराव गायकवाड़, मराठ पारा, धमतरी (रायपुर),म० प्र०।

केशवदेव वेदालंकार

ज० रामामण्डी; **पि०**श्री रोशनलाल;**कार्य** : भटिण्डा में स्वतन्त्र व्यवसाय;**वि०**साहित्यप्रेमी,१४वीं श्रेणी में ब्रह्मा की यात्रा, हिन्दी वादविवाद प्रतियोगिता, मेरठ में विजयी होने के कारण चलविजयोपहार प्राप्त, अध्ययन काल में अपना खर्च छोटे-मोटे व्यापारों से स्वयं चलाकर आत्मनिर्भर, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भटिण्डा के जत्थे का नेतृत्व, आर्य कन्या पाठशाला (भटिण्डा) और गुरुकुल भटिण्डा के प्रमुख कार्यकर्ता, आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता। **प०** मकान नं०३/७३ गांधी स्ट्रीट, चौक आर्यसमाज, भटिण्डा।

केशवचन्द्र सिंह आयुर्वेदालंकार

ज० १९१६,शाहपुर (शाहजहांपुर);**पि०** श्री साधुसिंह; **कार्य** : शाहजहाँपुर जिले में कृषि एवं राजनीति; **वि०**कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता,उत्तरप्रदेश की राजनीति में प्रमुख स्थान राष्ट्रीय आंदोलनों में कई बार सम्मिलित, सार्वजनिक कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान, अपने इलाके के लोकप्रिय नेता, वर्षों तक उत्तरप्रदेश विधानसभा के सदस्य, विभिन्न समितियों में सरकार की ओर से मनोनीत सदस्य, समय-समय पर गुरुकुल की प्रगति के लिए सरकार से मिलने वाले शिष्ट-मंडलों में सम्मिलित। **प०** सदर बाजार, शाहजहांपुर।

जगदीश आयुर्वेदालंकार (स्व०)

कार्य : पहले लाहौर प्रदेश में गुरुकुल फार्मेसी के मुख्य एजेन्ट, विभाजन के बाद कानपुर में चिकित्सा कार्य, तत्पश्चात् जीवन-पर्यन्त चंडीगढ़ में निजी व्यवसाय, 'चरक' के नाम से विख्यात।

जगन्नाथ वेदालंकार

कार्य : अरविन्दाश्रम पाण्डिचेरी में 'अदिति' के संपादक तथा 'श्री अरविन्द' के साहित्य के अनुवाद में व्यस्त; **र०** संस्कृत कथा मंजरी, मातृसूक्ति मुक्तावलि; **वि०**सत्यनिष्ठ, सात्त्विक प्रवृत्ति के साधक, साहित्यसेवी, सभी विषयों में योग्य, संस्कृत साहित्य में विशेष रुचि, ख्यातिप्राप्त लेखक; **वि०या०** युनाइटेड किंगडम,अमरीका व जर्मनी की यात्रा। **प०**अरविन्दाश्रम, पाण्डिचेरी।

पुरुषोत्तम आयुर्वेदालंकार

ज० हाथुका; **पि०** श्री रणछोड़ भाई पटेल; **कार्य** : गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में अध्यापक एवं आश्रमाध्यक्ष (१९४२-६३, १९६७-६९), संप्रति अपने वतन में खेतीबाड़ी; **वि०** हॉकी के उत्तम खिलाड़ी, कर्तव्य-निष्ठ एवं नियमपरायण अध्यापक, महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों की शिक्षा के लिए गुरुकुल के प्रतिनिधि के रूप में वर्धा-गमन, हाथ से कागज बनाने व तेलघानी

के उद्योग में प्रशिक्षित, शांतवृत्ति के प्रबन्धक, 'सादा जीवन उच्च विचार' पर विश्वास । प० हाथुका (सूरत) ।

ब्रह्मदत्त आयुर्वेदालंकार

पि० श्री गुरुदित्ताराम; कार्य : पहले लायलपुर में और विभाजन के बाद अजमेर में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० सफल एवं ख्यातिप्राप्त चिकित्सक, स्नातक परीक्षा में अनेक विषयों में प्रथम रहने के कारण अनेक पदक प्राप्त । प० पार्वती मेडिकल हॉल, अजमेर ।

महेन्द्रनाथ वेदालंकार

ज० २७ जनवरी १९१६, हांसोट (भरुच); पि० श्री कालिदास दयाराम सुखड़िया; कार्य : गुरुकुल सोनगढ (सौराष्ट्र) में १२ वर्ष तथा भरुच के हाईस्कूलों में ११ वर्ष शिक्षक, १० वर्ष मिठाई का व्यवसाय, इस समय सेवा-निवृत्त; र० हिन्दुस्तानी पाठमाला; वि० राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भरुच के संस्थापक, गुजरात एवं सौराष्ट्र की विभिन्न आर्यसमाजों के प्रधान व मन्त्री, स्व० प्राणजीवन-दास जमुनादास ट्रस्ट के ट्रस्टी, गुजरात प्रांतीय आर्यप्रति-निधि सभा के सदस्य, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विद्वत्तापूर्ण लेख प्रकाशित, वैद्यक की परीक्षाएं उत्तीर्ण, चित्रकला में विशेष अभिरुचि, 'किरण' हिन्दी छमाही के संपादक, रजिस्टर्ड वैद्य । प० वैद्य महेन्द्रनाथ वेदालंकार, ऊंडी बखार, एद्रुस रोड, भरुच (गुजरात) ।

मेधाव्रत वेदालंकार (स्व०)

ज० १५ माघ १९७० वि०, नवसारी (गुजरात); पि० श्री कल्याणजी भाई; कार्य : गुरुकुल सूपा में अध्यापक, आश्रमाध्यक्ष एवं उपाचार्य (१९४०-५५), चरथावल के हाईस्कूल में अध्यापक (१९५५-६१), श्री अरविन्द निकेतन के व्यवस्थापक (१९६१-६३), श्री अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी में साधक; र० श्री अरविन्द की अंग्रेजी पुस्तकों के अनुवाद; वि० अच्छे खिलाड़ी, संगीत-कला के मर्मज्ञ तथा वादनपटु, भावुक भक्त हृदय, चित्रकला एवं साहित्यानुशीलन में पारंगत, गुजराती तथा हिन्दी में लेख प्रकाशित, सन् १९३२ के सत्याग्रह-आंदोलन में भाग लेकर जेलयात्रा । निधन २४ जनवरी १९७५ ।
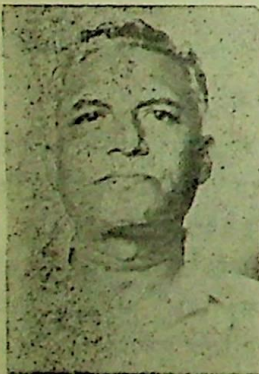
रमेशचन्द्र आयुर्वेदालंकार (स्व०)

कार्य : मृत्यु पर्यन्त दिल्ली में गुरुकुल फार्मेसी के लोकप्रिय एवं बड़े एजेन्ट; वि० मिलनसार, सेवाभावी, मिष्टभाषी, व्यवहारकुशल, वर्षों तक स्नातक मंडल की दिल्ली शाखा के मंत्री व अग्रणी कार्यकर्ता, दिल्ली के सार्वजनिक कार्यों में उत्साह से सम्मिलित गुरुकुल की विद्यासभा के सदस्य ।

रामेश वेदी आयुर्वेदालंकार

ज० २० जून १९१५, कालाबाग (पाकिस्तान); पि० श्री दीवानचन्द्र बेदी; कार्य : विभाजन से पूर्व लाहौर में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य एवं आयुर्वेदिक फार्मेसी का संचालन (१९३९-४७), 'गुरुकुल पत्रिका' के संपादक तथा गुरुकुल मुद्रणालय के प्रबन्धक (१९४७-६०), भारत सरकार के स्वास्थ्य-विभाग में अनुसंधान-अधिकारी (१९६०-७०), इसी विभाग में वरिष्ठ अनुसंधान - अधिकारी (१९७०-७३), संप्रति लेखन, अनुसंधान आदि में व्यस्त; र० लगभग ३५ पुस्तकें प्रकाशित—अंजीर, आंवला, अशोक (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), बहेड़ा, बरगद, भिलावा, चलमुग्रा, देहात की दवाइयां (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), देहाती इलाज, हरड़, खैरा, लहसुन: प्याज (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), मिर्च (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), नारियल, नीम : बकायन, पलाश, पपीता, पीपल, सर्पगंधा, शहद (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), सोंठ (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), तोरी, त्रिफला (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), तुलसी (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), अजगर, सांपों की दुनियां, सिंह, गेंडा, गजराज, एलिफैन्ट-लॉर्ड ऑफ द जंगल, गजराज (कन्नड़ भाषा में), तेन्दुआ और चीता, शेर; वि० या० यूनेस्को के विशेष निमन्त्रण पर अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ के रूप में मेडिसिनल प्लाण्ट्स सिम्पोजियम में व्याख्यान देने हेतु कैंडी (श्रीलंका) की
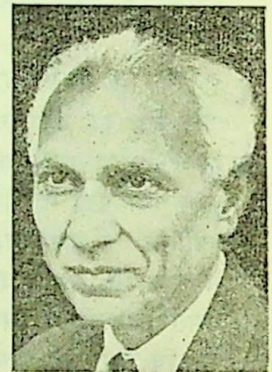
यात्रा; वि० द्रव्य गुण ग्रन्थमाला, हिमालय हर्बल इंस्टिट्यूट के संस्थापक, विद्वान् एवं प्रख्यात वनस्पतिविज्ञानी, विभिन्न संस्थाओं एवं संगटनों द्वारा व्याख्यानों के लिए आमन्त्रित, भारतीय एवं विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में वनस्पतियों एवं वन्य पशुओं के सम्बन्ध में सैकड़ों सचित्र एवं खोजपूर्ण लेख प्रकाशित, फोटोग्राफी-कला में निष्णात—रंगबिरंगे एव श्वेतश्याम फोटोग्राफ इलस्ट्रेटेड वीकली, धर्मयुग, इडियन हॉर्टीकल्चर, वैल्थ ऑफ इंडिया, इडियन फार्मिंग, आवर ट्रीज़, इकौनोमिक बौटनी (संयुक्त राज्य अमेरिका) आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित, विविध वनस्पतियों के नमूने और तरह-तरह के फोटोग्राफ अनेक संग्रहालयों में संगृहीत, ओषधीय पौधों की खोज में हिमालय के ऊपरी भागों (१४,२५० फुट) की यात्रा, ओषधीय पौधों की खेती में दक्ष-गुरुकुल कांगड़ी के संग्रहालय में अनेक वनस्पतियों को उगाने के परीक्षण-संपादित, भारत सरकार द्वारा गठित अनेक विशेषज्ञ-समितियों के सदस्य, टेलीविजन केन्द्र दिल्ली व अमृतसर से वन्यजीवन से सम्बन्धित हिन्दी व पंजाबी में कार्यक्रम प्रस्तुत, विविध संस्थाओं में द्रव्यगुण के परीक्षक, तैराकी एवं भ्रमण के शौकीन, किसी समय सांप पालने में अत्यधिक रुचि, जर्नल ऑफ आयुर्वेद (अंग्रेजी मासिक, दिल्ली) के वर्षों तक सहसंपादक, कलात्मक प्रवृत्तियों के कारण स्नातक परीक्षा में पदक प्राप्त। प० डी २९ राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-२७।

लक्ष्मीनारायण आयुर्वेदालंकार

ज० १ जून १९१६, मुलतान; पि०श्री रामचन्द्र कपूर; कार्य : विभाजन से पूर्व मुलतान के एक कस्बे में चिकित्सा कार्य, फिर मध्य भारत के एक गांव में औषधालय के मुख्य चिकित्सक,संप्रति गाजियाबाद में कपूर फार्मेसी का संचालन एवं स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य। प० कपूर फार्मेसी, १० रेलवे रोड, गाजियाबाद।

वेदप्रकाश विद्यालंकार

कार्य : स्नातक होने के बाद लाहौर में आयुर्वेद का अध्ययन करके अपने गांव मणिमाजरा (चंडीगढ़)में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य में व्यस्त; वि० हॉकी के उत्तम खिलाड़ी, सफल चिकित्सक, आर्यसमाज के कार्यों में रुचि। प० मणिमाजरा (चंडीगढ़)।

सत्यभूषण वेदालंकार

ज० १९ अप्रैल १९१६, मिठाटिवाना (सरगोधा);पि० श्री गोपीचन्द; कार्य : गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्यापक(१९३७-३९), शुगर मिल छितौनी (गोरखपुर) में लैब कैमिस्ट (१९३९-४०), आर्य माडल स्कूल सरगोधा में अध्यापक (१९४०-४२), दौराला शुगर वर्क्स में सहायक कैमिस्ट (१९४२-४५), निजी व्यवसाय (१९४५-४७), मोदी शुगर मिल में लैब कैमिस्ट (१९४७-४८), दौराला डिस्टलरी दौराला में कैमिस्ट (१९४९ से अब तक); वि० सामाजिक एवं राजनैतिक प्रवृत्तियों में प्रमुख योगदान, सन् १९५५ में श्री मल्हूसिंह आर्य कन्या विद्यालय मटौर की स्थापना, आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता, विभिन्न आर्यसमाजों में मंत्री, प्रधान आदि के रूप में कार्य, दौराला शुगर मिल में आर्यसमाज की स्थापना, धार्मिक प्रवृत्तियों और सत्संग आदि में विशेष अभिरुचि, आर्यसमाज के सत्संगों में प्रवचन एवं कथा करने में रुचि। प० सी-३, बंगला कॉलोनी (थाने के सामने), दौराला शुगर वर्क्स, दौराला (मेरठ)।

सदानन्द आयुर्वेदालंकार

ज० २६ मार्च १९१२,कालावली मण्डी; कार्य : अफ्रीका में सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों में सेवा कार्य (१९३७-४७), तदनन्तर भारत में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० या० पूर्वी अफ्रीका; वि० छात्र जीवन में दौड़ की प्रतियोगिता में हमेशा प्रथम, हॉकी के कुशल खिलाड़ी, सफल चिकित्सक। प० श्री सदानन्द अग्रवाल, मण्डी पदमपुर (गंगानगर), राजस्थान।

सूर्यप्रकाश वेदालंकार(मदनमोहन विद्यासागर)

पि० लाला नन्दलाल; कार्य : दक्षिण में सार्वदेशिक सभा की ओर से आर्यसमाज के प्रमुख प्रचारक तथा अनेक संस्थाओं के प्रधान व संचालक; र० वेदों में अन्त: साक्षी का महत्त्व, जनकल्याण का मूलमंत्र, आर्य सिद्धान्त दीप, आर्य सिद्धांत मुक्तावली, तेलगु—आर्यसमाज मुं, आर्यतमेतिफेस्टो, आर्य गृहिणी, वैदिक संध्या, शुद्धि संस्कारविधि,

अन्त्येष्टि विधि,संस्कार समुच्चयमु(दो भाग),वैदिक विवाह पद्धति;वि०छात्र जीवन में गल्प लेखक तथा कवि, हॉकी के खिलाड़ी, धार्मिकविषयों के सफल लेखक, ऋषि दयानन्द के ग्रंथों एवं मन्तव्यों के अनन्य भक्त, चित्रकला में अभिरुचि, वैदिक साहित्य के प्रख्यात विद्वान् एवं लेखक, हैदराबाद के प्रसिद्ध आर्यनेता, कुशल व्याख्याता, केनिया में उपदेशक एवं प्रचारक । प०प्रेममन्दिर, नारायणगुड़ा,हैदराबाद(आ०प्र०)।

सोमदेव आयुर्वेदालंकार

ज० ८ चैत्र १९७३ वि०, रूपनगर (रोपड़); पि० श्री चूहड़सिंह; कार्य : गुरुकुल मुलतान में चिकित्सक (१९४०-४१), बिहार में गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के एजेन्ट(१९४१-४७), विभाजन के बाद दिल्ली व सोनीपत में धर्मार्थ औषधालय में चिकित्सा व आयुर्वेदिक फार्मेसी में निर्माण वैद्य, संप्रति राजपुरा में चिकित्सा कार्य एवं गुरुकुल फार्मेसी की राजपुरा शाखा कार्यालय की व्यवस्था; वि०आर्यसमाज के कार्यों में रुचि, कुशल एवं सफल वैद्य । प० शाखा कार्यालय'गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी'राजपुरा(पंजाब)।
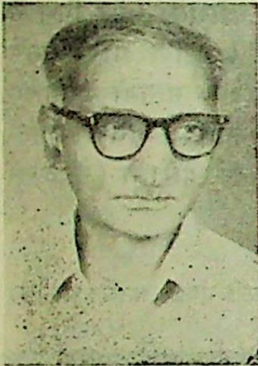
हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० कमालिया पाकिस्तान; पि०श्री लक्ष्मणदास;कार्य : गुरुकुल इंद्रप्रस्थ में चिकित्सक(१९३९),गुरुकुल फार्मेसी के सहायक व्यवसायाध्यक्ष(१९४०-४४),अम्बाला छावनी में गुरुकुल फार्मेसी के प्रमुख एजेन्ट, संप्रति गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष;वि० विद्यार्थी काल में सन् ३८ के सत्याग्रह आंदोलन में जेलयात्रा,गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के हॉकी तथा वालीवॉल के उत्तम खिलाड़ी, रुड़की व अम्बाला के सार्वजनिक क्षेत्रों के प्रमुख कार्यकर्ता, वर्षों तक आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री एवं अंतरंग सदस्य, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सीनेट,विद्यासभा,चयन-समिति,शिक्षापटल,व्यवसायपटल आदि के सम्मानित सदस्य, अखिल भारतीय स्नातक मंडल के कई वर्ष तक मन्त्री व उपप्रधान, १९४७ में शरणार्थी सेवा में दत्तचित्त होकर योगदान एवं रुड़की में शरणार्थी शिविर के संचालक, प्रबन्ध पटु,इनके कार्यकाल में फार्मेसी की बिक्री में कई गुणा वृद्धि, सच्चे लोकसेवक एवं लोकप्रिय आर्यनेता । प०गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) ।
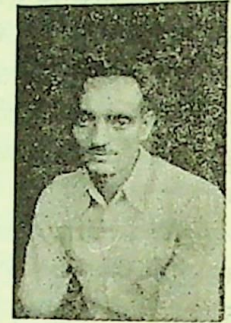
संवत् १९९४ (सन् १९३८)

अर्जुनदेव आयुर्वेदालंकार

ज० नरसंडा (खेड़ा); पि० श्री नारायण बेहचरदास; कार्य : स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; वि० स्नातक परीक्षा में शल्यचिकित्सा (सर्जरी) में प्रथम रहने के कारण 'हीरानन्द रोशनलाल पदक' प्राप्त, पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित।

अशोक वेदालंकार

ज० खगाई (बदायूं); पि० श्री मुंशीसिंह; कार्य : गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, जोबनेर (जयपुर) तथा बरेली कालेज में व्यायाम शिक्षक, संप्रति कृषि-व्यवसाय; वि० व्यायाम के शौकीन, छात्रावस्था में उत्तम प्रहसन लेखक, आर्यसमाज के कार्यकलापों में विशेष योगदान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अधीन वैदिक धर्म का प्रचार । प० ग्राम खगाई पो० सिंघा (बरेली) ।

ओंकारनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० २० जनवरी १९१६, कुजोह (पाकिस्तान); पि० डॉ० हरिश्चन्द्र पुरी; कार्य : लाहौर में औषधि-निर्माण का व्यवसाय, सन् १९५५ से गांधी स्मारक निधि के अधीन कुष्ठ चिकित्सा एवं नियंत्रण का कार्य, संप्रति गोरखपुर में स्वतन्त्र चिकित्सा; वि०बक्सर(मेरठ)में कन्या विद्यालय की स्थापना,गोरखपुर में मूकबधिर विद्यालय की स्थापना,भारतीय लिपियों और भाषाओं के अध्ययन में विशेष रुचि;वि०या० तिब्बत(चीन),कैलाश-भ्रमण। प०दुर्गाबाड़ीके सामने,गोरखपुर

कृष्णचन्द्र वेदालंकार

ज० २८ जुलाई १९१७, खैरपुर टामेवाली (बहावलपुर); पि० श्री गनपतराय मेहता; कार्य : पहले 'माहेश्वरी' (बम्बई) के सपादक, दैनिक 'वीर अर्जुन' (दिल्ली) के सह संपादक एवं अग्रलेख–लेखक (१९३८-४९), 'हिन्दुस्तान' दैनिक (नई दिल्ली) के सह संपादक (१९५० से अब तक); वि० स्नातक परीक्षा में दर्शन में प्रथम रहने के कारण 'श्रद्धानन्द' पदक प्राप्त, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू एवं बंगला भाषाओं का अच्छा ज्ञान; वि० या० अमेरिका। प० एस–२९८ ग्रेटर कैलाश–१, नई दिल्ली–४८।

कुसुमकुमार वेदालंकार (कांतिदेव पटेल)

ज० २३ जनवरी १९१५, कम्पाला (पू० अफ्रीका); पि० श्री जेठाभाई पटेल; कार्य : बिलीमोरा (गुजरात) में 'एन० एस० पी० स्ट्रॉ ऐंड पेपर प्रोडक्टस (प्राइवेट) लिमिटेड' में प्रबन्ध निदेशक; वि० या० सामाजिक कार्यों और व्यवसाय के निमित्त दो बार केनिया और युगांडा की यात्रा; वि० 'दिग्रेन्द्रनगर विभाग केलवनी मण्डल' नाम की शिक्षा संस्था के प्रबन्ध-मडल के अध्यक्ष, व्यवसाय और शैक्षिक क्रियाकलापों में विशेष अभिरुचि, छात्रजीवन में गुरुकुलीय साहित्य परिषद् के मन्त्री, अनेक पदक व पुरस्कार प्राप्त। प० पो० बा० न० ९, बिलीमोरा (बलसाड़), गुजरात।

जयपाल आयुर्वेदालंकार

ज० कोथमड़ी (सूरत); पि० श्री कालाभाई हीराभाई पटेल; कार्य : स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय, गुरुकुल सूपा में चिकित्सक। प० गुरुकुल सूपा वाया नवसारी (सूरत)।

प्रशांतकुमार वेदालंकार (धरणीधर) (स्व०)

ज० १६ फरवरी १९१६, हलधरू (गुजरात); पि० श्री लल्लुभाई पटेल; कार्य : गुरुकुल सूपा, बम्बई और सूरत आदि स्थानों पर शिक्षण कार्य; वि० भारतीय साम्यवादी दल के सक्रिय सदस्य, अत्यन्त परिहास पटु, खेलकूद और नाटक में रुचि।

नरदेव वेदालंकार

ज० १९ सितम्बर १९१५, तुंडी (सूरत); पि० श्री नरोत्तम शंकर देसाई; कार्य : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के तत्त्वावधान में सूरत (गुजरात) में हिन्दी-प्रचार कार्य (१९३८-४७), संप्रति दक्षिण अफ्रीका में हिन्दी व आर्यसमाज का प्रचार कार्य तथा डरबन पेस्टविल विश्वविद्यालय (द० अफ्रीका) में पार्ट टाइम गुजराती लेक्चरर, टेकनिकल कालेज डरबन में हिन्दी लेक्चरर तथा सूरत एजुकेशनल सोसायटी दक्षिण अफ्रीका में मुख्याध्यापक; र० राष्ट्रभाषा का सरल व्याकरण (दो भाग), धर्मशिक्षा पाठावली (गुजराती में), इनके अतिरिक्त हिन्दी व्याकरण और भाषा शिक्षा विषयक ८ पुस्तकें, आर्यसमाज से सम्बन्धित ३ पुस्तकें तथा धार्मिक पुस्तिकाएं (१२); वि० शांतभाव के ठोस रचनात्मक कार्यकर्ता, दक्षिणी अफ्रीका में आर्यसमाज के प्रमुख कर्णधार, हिन्दी शिक्षा संघ डरबन के संस्थापक एवं सभापति, वेद निकेतन द० अफ्रीका के सभापति, वैदिक पुरोहित मंडल द० अफ्रीका एवं गुर्जर संस्कृति केन्द्र डरबन के अध्यक्ष, स्वाध्यायशील, उत्साही एवं सक्रिय आर्य नेता, शिक्षा-धर्म एवं समाज-संगठन आदि के प्रति विशेष अभिरुचि, विदेशों में आर्य-संस्कृति के प्रचारकों में प्रमुख, हिन्दी व अंग्रेजी के अच्छे लेखक, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित। प० फ्लैट ६, ३५ ऑज स्ट्रीट, डरबन (द० अफ्रीका)।

पृथ्वीनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० तेन (बारडोली); पि० श्री भीमभाई प्रभुभाई; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय। प० चलथाणा, वाया बारडोली (सूरत)।

पृथ्वीराज आयुर्वेदालंकार

ज० पेशावर; **पि०** श्री विष्णुदत्त सेठी; **कार्य** : पहले पेशावर में, फिर दिल्ली में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; **वि०** कहानी लेखन तथा अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियों में विशेष अभिरुचि । **प०** श्री पृथ्वीराज सेठी, मेडिकल प्रेक्टीशनर, रेडियो कॉलोनी के निकट, धीरपुर, किंग्जवे कैम्प, दिल्ली ।

बलवीर वेदालंकार (स्व०)

ज० दूघली (मुजफ़्फ़रनगर); **पि०** श्री अमीचन्द; **वि०** हॉकी के अच्छे खिलाड़ी। स्नातक बनने के कुछ वर्ष बाद दिवंगत ।

मतिमान् वेदालंकार

ज० १६ मार्च १९१४, अमरोली (सूरत); **पि०** श्री नागरजी भाई; **कार्य** : गुरुकुल सूपा में अध्यापक (१९३८-५०), गुरुकुल सूपा में प्रभारी मुख्याध्यापक एवं मुख्याध्यापक (१९५१-१९६२), सोल्सवरी हिन्दू गुजराती स्कूल रोडेशिया में अध्यापक (१९६२-६८), गुरुकुल सूपा में अध्यापक एवं सहा० मुख्याधिष्ठाता (१९६९–जून ७६), संप्रति आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ोदरा में अध्यापन; **वि० या०** शिक्षक एवं प्रचारक के रूप में पोर्तुगी, पूर्वी अफ्रीका तथा रोडेशिया-यात्रा; **वि०** खेलकूद तथा व्यवस्था-कार्यों में विशेष रुचि, क्रिकेट के अच्छे खिलाड़ी, वैदिक धर्म और हिन्दी के प्रचार में महत्त्वपूर्ण योगदान । **प०** आर्य कन्या महाविद्यालय, कारेली बाग, बड़ोदरा–१ ।

मनोहर विद्यालंकार

ज० दिल्ली; **पि०** श्री श्यामसुन्दर; **कार्य** : दिल्ली में स्वतंत्र व्यवसाय; **वि० या०** १९५३ में रानी एलिजाबेथ के राज्याभिषेक में सम्मिलित होने के लिए इंगलैंड–यात्रा, तथा सारे यूरोप का भ्रमण, १९५७ में विश्व युवक समारोह में मास्को यात्रा, १९६१ में टोकियो में आयोजित विश्व सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित; **वि०** प्रारम्भ से ही आर्यसमाज की गति-विधियों में रुचि, वर्षों आर्यसमाज नयाबांस के उपप्रधान व प्रधान, आर्य-प्रतिनिधिसभा पंजाब के कई वर्ष तक गुरुकुलीय उपप्रधान, गुरुकुल विश्वविद्यालय की विद्यासभा, सीनेट, सिण्डीकेट के सदस्य, गुरुकुल विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष (ट्रेजरार), आर्य सार्वदेशिक सभा (दिल्ली) की अंतरंग सभा के सदस्य, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल फार्मेसी की व्यवसायपटल के सदस्य, दिल्ली के अनेक व्यापारिक संगठनों के सक्रिय कार्यकर्ता–'दिल्ली सूत विक्रेता संघ' तथा 'दिल्ली तम्बाकू व्यापार मण्डल' के वर्षों तक प्रधान, आजकल 'दिल्ली सूत-विक्रेता दातव्य न्यास' तथा 'अरोड़ा सहकारी बैंक' के प्रधान, यात्रा-भ्रमण का विशेष शौक, सम्पूर्ण भारत के दर्शनीय स्थलों की यात्रा, पर्वतयात्रा में विशेष अनुराग के कारण हिमालय की अनेक यात्राएं, दर्शन और वेद के अध्ययन में रुचि, कई बार चतुर्वेद-पारायण पाठ तथा यज्ञ करवाए, वेद-गोष्ठियों तथा वेद-सम्मेलनों में वेद सम्बन्धी शोधपूर्ण निबन्धों का वाचन, अनेक पत्र-पत्रिकाओं में वेद विषयक लेख प्रकाशित, वैदिक साहित्य के प्रकाशन के लिए मुक्तहस्त से सहयोग, खेलों में रुचि के कारण डी० डी० सी० ए० तथा एन० एस० सी० आई (भारत राष्ट्र) क्रीड़ा संस्थान के आजीवन सदस्य, तैराकी में विशेष रुचि । **प०** घर : १७०, छत्ता भवानीशंकर, फतेहपुरी, दिल्ली–६; **दुकान** श्यामसुन्दर राधेश्याम, सूत के व्यापारी, ५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली–६

रणधीर वेदालंकार (स्व०)

ज० इटोला (बड़ौदा); **पि०** श्री तलजाभाई वसन जी; **कार्य** : पूर्वी अफ्रीका में शिक्षक और वैदिक धर्म के प्रचारक; **वि०** स्नातक परीक्षा में सर्वप्रथम आने के कारण पदक प्राप्त ।

रवीन्द्र आयुर्वेदभूषण

पि० श्री बनवारीलाल; **कार्य** : स्नातक होने के बाद से श्री अरविन्दाश्रम पाण्डिचेरी में आध्यात्मिक साधक, आश्रम के भोजनालय के प्रबन्धक, श्री अरविन्द अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र पाण्डिचेरी में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष, श्री अरविन्द सोसायटी पांडिचेरी की मासिक पत्रिकाओं 'पुरोधा' एवं 'अग्निशिखा' के संपादक; **र०** श्री मां की

पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद और अध्यात्म पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित; वि० फ्रेंच भाषा के ज्ञाता। प० श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी।

विद्यारत्न वेदालंकार

ज० होशियारपुर; पि० श्री चुन्नीलाल; कार्य : पहले गुरुकुल कैमिकल इंडस्ट्रीज में तथा बाद में लाहौर की कई फर्मों में कैमिस्ट, 'नेता जी' (दिल्ली) में सह सपादक, संप्रति 'नवभारत टाइम्स' (दिल्ली) में सह संपादक; वि० उद्यमी एवं कुशल पत्रकार। प० १०१७२ अब्दुल अजीज स्ट्रीट नं० २, करोल बाग, नई दिल्ली।

विद्याव्रत आयुर्वेदालंकार

ज० येवला (नासिक); पि० श्री ज्येष्ठालाल चांपसिंह; कार्य : गुरुकुल कुरुक्षेत्र में चिकित्सक, संप्रति गुरुकुल सूपा में शिक्षक एवं चिकित्सक; वि० चित्रकारी में विशेष रुचि, स्नातक परीक्षा में शिल्प का पदक प्राप्त, संगीतप्रेमी तथा अभिनय-पटु। प० गुरुकुल सूपा, बाया नवसारी (सूरत)।

वीरसेन आयुर्वेदालंकार

ज० ६ जुलाई १९१७, भोजपुर (मेरठ); पि० श्री पं० चम्पतलाल; कार्य : प्रारम्भ से ही उत्तर प्रदेश के राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में चिकित्साधिकारी, सम्प्रति सेवानिवृत्ति के बाद स्वतन्त्र चिकित्साकार्य; वि० सफल एवं लोकप्रिय चिकित्सक। प० द्वारा-श्रीमती लज्जावती जी, शामली रोड, गऊशाला के पास, मुजफ्फरनगर।

वेदव्रत आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० कमालिया (लायलपुर); पि० श्री पृथ्वीराज; कार्य : स्वतन्त्र वैद्यक करते थे।

सत्यभूषण विद्यालंकार (स्व०)

ज० नरसंडा (खेड़ा); पि० श्री माणिक जी बेहचरदास; कार्य : मृत्युपर्यन्त मद्रास में होटल का स्वतन्त्र व्यवसाय करते रहे।

सूर्य्यदेव आयुर्वेदालंकार

ज० १९ अगस्त १९१३, गोरखपुर; पि० श्री खोखनराम आर्य; कार्य: गोरखपुर में 'जीवन शक्ति फार्मेसी' के नाम से स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० कांग्रेस के कार्यों में सक्रिय योगदान, आर्यसमाज के प्रधान आदि पदों पर कार्य, नेशनल मेडिकल ऐसोसियेशन एवं आयुर्वेद मंडल के वर्षों तक अध्यक्ष, गोरखपुर नगर पालिका के ११-१२ वर्ष तक प्रधान, नगरपालिका की स्वास्थ्य उपसमिति के अध्यक्ष, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अनेक रचनाएं प्रकाशित, सामाजिक एवं राष्ट्रोत्थान के कार्यों तथा वैदिक साहित्य के अध्ययन में रुचि, कुशल चिकित्सक। प० जीवन शक्ति फार्मेसी, आर्यसमाज रोड, बक्शीपुर, गोरखपुर।

हरिदत्त वेदालंकार

ज० १९१७, जम्मू; पि०श्री अतरचन्द; शि०एम०ए० संस्कृत एवं इतिहास (आगरा); कार्य: गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में तुलनात्मक धर्म विज्ञान के उपाध्याय (१९४०-४६), इतिहास तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के अध्यक्ष (१९४७-१९६९), गुरुकुल विश्वविद्यालय में पुरातत्त्व संग्रहालय के संस्थापक एवं अध्यक्ष (१९५०-६८), क्षेत्र विकास समिति सदस्य प्रशिक्षण केन्द्र गुरुकुल कांगड़ी के संचालक (१९६०-६८,) संप्रति गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर के अनुवाद तथा प्रकाशन निदेशालय के निदेशक (१९६९ से); र० अन्तर्राष्ट्रीय कानून (भारत सरकार के विधि मंत्रालय द्वारा १० हजार रुपए के प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत), भारत की सांस्कृतिक दिग्विजय (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), भारत का सांस्कृतिक इतिहास, हिन्दू विवाह का इतिहास (बंगाल हिन्दी मंडल द्वारा पुरस्कृत), प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त इतिहास, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (म० प्र०

एवं उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), आधुनिक राजनीतिक चिंतन का इतिहास (उ० प्र० शा० द्वारा पुरस्कृत), प्रमुख राजनीतिक विचारक, हिन्दू परिवार मीमांसा (बंगाल हिन्दी मंडल द्वारा पुरस्कृत), भारतीय जनता तथा संस्थाएं, कालिदास के पक्षी (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन (म० प्र० शा० द्वारा पुरस्कृत), ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का संक्षिप्त इतिहास (म्यूर की अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद), भारतस्य सांस्कृतिको दिग्विजय:; वि० स्नातक परीक्षा में सर्वप्रथम रहने के लिए 'नत्थूमल' स्वर्णपदक, एवं 'रुक्मिणी बाई मेवा पदक' प्राप्त, स्नातक होने के बाद वर्धा शिक्षा-योजना के विशेष अध्ययन के लिए वर्धा-गमन, १६ मौलिक एवं शोधपूर्ण पुस्तकों के रचयिता, गम्भीर विद्वान्, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में ऐतिहासिक विषयों पर खोजपूर्ण लेख प्रकाशित 'मोतीलाल नेहरू', 'कौटिल्य' सहित १२ पुरस्कारों से सम्मानित, भारत सरकार के विधि मंत्रालय द्वारा १९७२-७३ में 'अन्तर्राष्ट्रीय कानून' पर दस हजार रुपये के प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत, सभी कृतियां विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में निर्धारित, वैज्ञानिक साहित्य के सृजन में में महत्त्वपूर्ण योगदान—पंतनगर विश्वविद्यालय में आपके निर्देशन में कृषि एवं पशु-चिकित्साविज्ञान की लगभग ४५ मौलिक व अनूदित पुस्तकें प्रकाशित, पंतनगर विश्वविद्यालय के गांधी स्वाध्याय मंडल के शिक्षक परामर्शदाता, सामयिक विषयों पर सूचनाप्रद एवं ज्ञानवर्धक भाषण देने में निष्णात, साहित्यसेवा के प्रति आभार प्रकट करने के लिए गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा १९७६ में विद्यामार्तण्ड की मानद उपाधि से सम्मानित। प० V/१३५८ पंतनगर (नैनीताल)।

सूर्यप्रकाश विद्यालंकार (स्व०)

ज० क्वेटा; **पि०** श्री सीताराम; **कार्य** : विभाजन से पूर्व करांची में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अधीन हिन्दी सेवा का कार्य, तदनन्तर माटुंगा (बम्बई) में आर्य समाज के एक स्कूल में अध्यापन कार्य; **वि०** सेवाप्रेमी, हिन्दी-प्रेमी, ज्ञानपिपासु, देशसेवा की लगन, दक्षिण भारत की लगभग २२०० मील की पदयात्रा, कैलाश व मानसरोवर की साहसिक यात्रा, विद्याव्यसनी।

हरिवंश वेदालंकार

ज० जन्माष्टमी १९१४, पटना; **पि०** श्री प्रह्लादसिंह; **शि०** एम० ए० हिन्दी-संस्कृत (आगरा), साहित्यरत्न (प्रयाग), काव्यतीर्थ (कलकत्ता), साहित्याचार्य (पटना ; **कार्य** : 'गुरुकुल' पत्र का संपादन (१९३८-४२), 'आर्य' का संपादन (१९४२-४३), गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में अध्यापन (१९४३-५३), दिल्ली के हायर सेकेण्डरी स्कूल में अध्यापन (१९५३-७४), संप्रति गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में दर्शन व धर्मशिक्षा का अध्यापन (१९७४ से); **वि०** वनभ्रमण तथा निसर्ग-विद्या में निष्णात, हाकी-फुटबाल के उत्तम खिलाड़ी, जीवन के प्रभात में ही महाकवि कालिदास के काव्यों से प्रेरित होकर हिमालय-प्रेमी बने, दार्जिलिंग से काश्मीर तक सम्पूर्ण हिमालय में पैदल यात्रा, गंगोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ की यात्रा के बाद हिमगिरि के उस पार तिब्बत में स्थिति कैलाश-मानसरोवर की दुर्गम साहसिक यात्रा, वन यात्रा एवं वन्य जन्तुओं के सम्बन्ध में सारगर्भित लेख हिन्दी की श्रेष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित, गुरुकुल में वन-यात्राओं के व्यवस्थापक अध्यक्ष। **प०** गुरुकुल कांगड़ी, (सहारनपुर)।

संवत् १९९५ (सन् १९३९)

अनन्तानन्द आयुर्वेदालंकार

ज० गुरुकुल कांगड़ी; **पि०** स्वामी श्रद्धानन्द; **कार्य** : गांधी आश्रम चिकित्सालय, बदरपुर (दिल्ली) में प्रधान चिकित्सक, मोगा चिकित्सालय में आंखों के ऑपरेशन का अभ्यास, गुरुकुल कांगड़ी में श्रद्धानन्द सेवाश्रम चिकित्सालय में चिकित्सक, ऐक्सरे विभाग के अध्यक्ष तथा आयुर्वेद

महाविद्यालय में एनॉटमी के उपाध्याय, संप्रति इसी महाविद्यालय के प्रधानाचार्य; र०ए हैंडबुक ऑफ फिजियोलोजी का हिन्दी में अनुवाद; वि० हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने के कारण तीन मास का कारावास, आर्यसमाज के कार्यकलापों में सक्रिय योगदान, गुरुकुल आर्यसमाज के कई वर्ष तक प्रधान, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सीनेट एवं विद्यासभा के सदस्य, लोकप्रिय एव सफल उपाध्याय एवं चिकित्सक, वर्षों तक गुरुकुल के क्रीडाध्यक्ष, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, साहित्यिक प्रवृत्तियों में रुचि, आयुर्वेद-सम्बन्धी विषयों पर विविध पत्र-पत्रिकाओं में शोधपूर्ण लेख प्रकाशित । प० गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) ।

आनन्दप्रिय आयुर्वेदालंकार

ज० २ जून १९१७, इटोला (बड़ौदा); पि० श्री फूलाभाई हीराभाई पटेल; कार्य : राजकीय चिकित्सालयों में चिकित्सक (९ वर्ष), टी० बी० हॉस्पिटल में सहायक चिकित्सा-अधिकारी (१० वर्ष), गुजरात नेत्र राहत एवं आरोग्य मडल बोचासन की ओर से नेत्रयज्ञ में निःशुल्क सेवा (२० वर्ष), संप्रति खेतीवाड़ी व्यवसाय; वि० कांग्रेस के सक्रिय सदस्य, सेवाभावी एवं लोकप्रिय चिकित्सक । प० डॉ० आपाभाई एफ० पटेल 'विश्राम', भालेज रोड, आणंद (गुजरात) ।

धीरेन्द्रकुमार विद्यालंकार

ज० १ मई १९१७, रहरा (मुरादाबाद); पि० चौ० दिलीपसिंह त्यागी; कार्य : 'वीर अर्जुन' दैनिक के संपादकीय विभाग में विविध पदों पर कार्य (१९३९-५१), अमेरिकन दूतावास के हिन्दी पाक्षिक 'अमेरिकन रिपोर्टर' में कार्य और अन्त में हिन्दी संपादक (१९५१-७३), संप्रति पत्रकारिता, स्वतत्र लेखन और हिन्दी अनुवाद में व्यस्त; र० अमेरिकी दूतावास की अनेक पुस्तकों का अनुवाद व संपादन; वि० आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग लेने पर १९३९ में ६ मास का कारावास, संस्कृत व हिन्दी साहित्य के अध्ययन व देश के विविध दर्शनीय स्थलों के भ्रमण में रुचि, कुशल लेखक, पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, चित्रकला में विशेष रुचि, अपने समय के हॉकी के अच्छे खिलाड़ी प० 'अलंकार', डी १/१६ मॉडल टाउन, दिल्ली–९ ।

ब्रह्मदत्त आयुर्वेदालंकार

ज० २१ मई १९१७, सणसोली (गुजरात); पि० श्री चुनीभाई; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० भस्म तथा कूपीपक्व-रसायन में अग्निमात्रा का निर्णय विद्युत् भट्टी व थर्मोकपल पाइडोमीटर की सहायता से करने के विषय में अनुसंधान, तहसील वैद्य सभा के प्रधान तथा जिला स्तरीय वैद्य सभा की कार्यकारिणी के सदस्य, आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान, स्वाध्यायप्रेमी एवं सफल वैद्य । प० आर्य औषधालय, पो० सावली (वड़ौदा), गुजरात ।

भारतेन्दु वेदालंकार

ज० १८ अप्रैल १९१८, धमड़ाछा (सूरत); पि० श्री रघुनाथ मेहता; कार्य : गुरुकुल कांगड़ी और गुरुकुल सूपा में शिक्षक, जंजीबार (पूर्वी अफ्रीका) में शिक्षक, पुन: गुरुकुल सूपा में शिक्षक; वि० या० अफ्रीका; वि० पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, प्रवास-पर्यटन के शौकीन आर्यसमाज के क्रियाकलापों में विशेष रुचि । प० गुरुकुल सूपा, वाया नवसारी, (बलसाड़) गुजरात ।

रघुनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० १७ नवम्बर १९१७, पिंडदादन खाँ (झेलम); पि० श्री लक्ष्मणदास ओबेराय; कार्य : पत्तोकी मण्डी (लाहौर) में (१९४०-४७), खेखड़ा(मेरठ) में (१९४८-५६) तथा संप्रति कोटा (राजस्थान) में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय (१९५६ से); वि०या० मलाया व सिंगापुर; वि० आर्यसमाज के कार्यकलापों में रुचि–आर्यसमाज खेखड़ा के प्रधान(१९५१-५४), आर्यसमाज कोटा जंक्शन व महर्षि दयानन्द विद्यालय कोटा के उपप्रधान, तैरने में

विशेष दक्षता—१९३८ में गढ़मुक्तेश्वर में आयोजित अखिल भारतीय तैराकी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त, सफल एवं कुशल चिकित्सक। प० नाथ मेडिकल हाल, कोटा जंक्शन (राजस्थान)।

विनयकुमार विद्यालंकार

ज० १४ मई १९१६, अम्बाला छावनी; पि० श्री श्यामसुन्दर; शि० प्रभाकर (पंजाब); कार्य: अध्यापन कार्य एवं पुस्तक लेखन आदि (१९३९-४०), निजी विभागों में सेवा कार्य (१९४०-४१), केन्द्रीय सरकार के विभिन्न सैन्य लेखा नियंत्रक कार्यालयों में लेखा-परीक्षा अधिकारी के रूप में कार्य (१९४२-७४), संप्रति सेवानिवृत्ति के बाद स्वाध्याय में व्यस्त; वि० विविध संस्थाओं के माध्यम से आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान, हिन्दी व संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन में विशेष अभिरुचि। प० २६३३ बंगाली मुहल्ला, कालीबाड़ी रोड, सदर बाजार, अम्बाला छावनी।
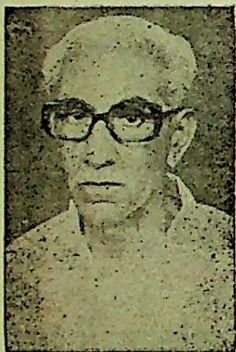
वेदभूषण वेदालंकार

ज० ९ जून १९२०, गंगोह (सहारनपुर); पि० स्व० श्री रामचन्द्र शर्मा; कार्य: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अंतर्गत दलीय कार्य (१९३९-४९), उत्तर प्रदेश शासन के अधीन विभिन्न पदों पर सेवा (१९४९ से), इस समय अलीगढ़ में जिला पंचायतराज अधिकारी; वि० स्वाधीनता संग्राम के दौरान १९४२ में डेढ़ वर्ष के लिए सहारनपुर जिला जेल में नजरबंद (९अगस्त १९४२ से ५ फरवरी १९४४ तक), आर्यसमाज के कार्यों में सक्रिय योगदान, आर्यसमाज गंगोह के दो बार प्रधान रहे (१९४०-४१), संगीत, राजनीति, अर्थशास्त्र—विशेषकर अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं—के अध्ययन में विशेष अभिरुचि, संगीत प्रेमी। प० १६४, रघुवीरपुरी, अलीगढ़।

वेदरत्न आयुर्वेदालंकार (स्व०)

पि० श्री मोहनलाल; कार्य: गुरुकुल कुरुक्षेत्र और गांधी ग्राम चिकित्सालय बदरपुर (दिल्ली) में मुख्य चिकित्सक, तदनन्तर जीवन पर्यन्त बल्लभगढ़ (गुड़गावां) में स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० वालीबाल के अच्छे खिलाड़ी थे।

सत्यदेव वेदालंकार

ज० ५ मई १९२०, हसुआ (गया); पि० श्री योगेश्वर प्रसाद; शि० विद्यावाचस्पति (गुरुकुल), साहित्याचार्य (बिहार), बी० एल० (पटना), एम० ए० संस्कृत-हिन्दी (पटना), डी० लिट्० हिन्दी (पटना)—'अद्वैत वेदान्त के भामतीप्रस्थान तथा विवरणप्रस्थान का तुलनात्मक अध्ययन'; कार्य: पटना विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के प्राध्यापक (१९४९-६४), मगध विश्वविद्यालय बोध गया (बिहार) में स्नातकोत्तर संस्कृत एवं प्राकृत विभाग के रीडर एवं अध्यक्ष (१९६४ से); वि० बिहार रिसर्च सोसायटी पटना, मिथिला रिसर्च इंस्टीट्यूट दरभंगा, नालन्दा पाली इंस्टीट्यूट के सम्मानित सदस्य, दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय एवं मगध विश्वविद्यालय की सीनेट और एकेडेमिक कौंसिल के सदस्य, समय-समय पर विविध पत्र-पत्रिकाओं में शोध-लेख प्रकाशित, वैदिक वर्णव्यवस्था तथा गांधीवादी विचार धारा के प्रबल समर्थक, स्वाध्याय एवं पर्यटन में विशेष अभिरुचि, 'मनोविश्लेषणशास्त्र तथा मानसिक स्वास्थ्य-विज्ञान' पर शोधप्रबन्ध लिखकर गुरुकुल विश्वविद्यालय की विद्यावाचस्पति उपाधि प्राप्त, १९५७-५८ में केन्द्रीय विदेश छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत लन्दन विश्वविद्यालय में 'तुलनात्मक भाषाविज्ञान' पर शोधकार्य के लिए केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा उच्चकोटि के विद्वान् के रूप में चयन। प० तेलबिगहा, राजेन्द्रपथ, गया (बिहार)।

सत्यभूषण योगी वेदालंकार

ज० १४ नवम्बर १९१७, गुरुकुल कांगड़ी (पुण्यभूमि); पि० आचार्य रामदेव; शि० शास्त्री (पंजाब), एम० ए० संस्कृत-हिन्दी (दिल्ली); कार्य: स्नातक होने के बाद प्रभात आश्रम, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, हिन्दी मिलाप में

विविध रूपों में कार्य, गुरुकुल कांगड़ी प्रेस के अध्यक्ष, गुरुकुल विश्वविद्यालय में तुलनात्मक धर्मविज्ञान के उपाध्याय, 'प्रदीप' (शिमला) के सहायक संपादक, संप्रति कई वर्षों से सेन्ट स्टीफन्स कालिज, दिल्ली में संस्कृत एवं हिन्दी के प्राध्यापक एवं अध्यक्ष; र० कामायनी का सश्रद्ध मनन, योगी का वीर काव्य, योगी की मधुशाला, सीमा, योगी का सोऽहं काव्य, निरुक्त (डा० सरूप के अंग्रेजी संस्करण का हिन्दी अनुवाद,) मनुस्मृति (प्रथम, द्वितीय अध्याय) का हिन्दी अनुवाद, मण्डूक सूक्त पर विशेष अध्ययन, पुरुष सूक्त का विशेष अध्ययन, वेद तथा निरुक्त में देव तथा देवता; वि० हिन्दी के अच्छे कवि एवं लेखक, अनुसंधान में विशेष रुचि, आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, सुयोग्य एवं ओजस्वी वक्ता, विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में व्याख्यानों के लिए आमन्त्रित, होमियोपैथी चिकित्सा में रुचि। प० द्वारा मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली–७।

सुरेन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० २४ मार्च १९१९, भादरण, ता० बोरसद (गुजरात); पि० श्री चुनी भाई जीवाभाई पटेल; शि० आयुर्वेदाचार्य (निखिल भा० आयुर्वेद विद्यापीठ, दिल्ली); कार्य: सूपा गुरुकुल में चिकित्सक-अध्यापक एवं अधिष्ठाता (१९३९-४०), गुजरात राज्य के लोकल बोर्ड के चिकित्सालय के एक केन्द्र पिजरत में मुख्य चिकित्सक (१९४०-४८), निजी चिकित्सा कार्य एवं नाडियाद आयुर्वेद महाविद्यालय और उत्तरसंडा महाविद्यालय में प्राध्यापक (१९४९-६३), आर्य कन्या शुद्ध आयुर्वेद महाविद्यालय बड़ौदा में निदान चिकित्सा के प्राध्यापक (१९६३-७३) तथा आचार्य (१९७४ से); र० आयुर्वेद सिद्धान्त, बृहत्त्रयी–ये दोनों पुस्तकें गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय के अनुरोध पर सरकारी अनुदान से प्रकाशित; वि० पुराने श्वास रोग ग्रस्त रोगियों के स्वास्थ्य-लाभ तथा निःसंतानों को संतान प्राप्ति कराने के लिए ११-१२ वर्ष तक अथक परिश्रम करके एक महान् रत्न 'सहस्रपुटी अभ्रक भस्म' का निर्माण किया, बालीबॉल के अच्छे खिलाड़ी, पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित। प० ४४/१ साधना नगर, कारेली बाग, बड़ौदा–१।
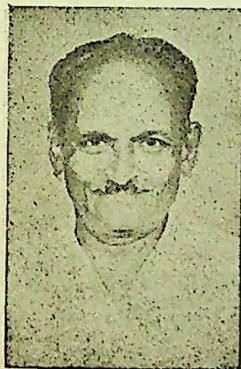
सुरेशचन्द्र वेदालंकार

ज० १७ अक्टूबर १९१७, हाटा (गोरखपुर); पि० श्री हुब्बीप्रसाद; शि० एम० ए० हिन्दी (आगरा), एल० टी० (उत्तर प्रदेश); कार्य: गांधी सेवक संघ द्वारा संचालित मजदूर सेवक संघ अहमदाबाद तथा हरिजन सेवक गोरखपुर में कार्य (१९३९-४०), गुरुकुल महाविद्यालय बैद्यनाथ धाम (बिहार) में अध्यापक एवं प्रधानाचार्य (१९४०-४६), गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में अध्यापक (१९४६-४८), गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्यापक (१९४८-४९), 'आरोग्य' मासिक के संपादकीय विभाग में कार्य (१९४९-५१), डी० बी० कालेज गोरखपुर में हिन्दी प्राध्यापक (१९५१ से); र० प्रार्थना-मंत्र, मन की अपार शक्ति, मातृभूमि वंदना, आकर्षक व्यक्तित्व, यम-नियम, साहसी बनो, सखी की सीख, हंसते-हंसते जीना, मां की लोरियां, भाषा दर्पण, अप्रकाशित: वैदिक राजनीति, सत्यार्थप्रकाश की व्याख्या, प्रभात वन्दन, आर्यसमाज के दस नियम, पंच-महायज्ञ का महत्त्व, ईशोपनिषद्-लेखमाला, कठोपनिषद्-लेखमाला, बालविनोद; वि० आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में तथा संगठनात्मक दृष्टि से आर्यसमाज को सुदृढ़ बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान, विविध पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, आर्यसमाजों तथा अन्य स्थानों पर ओजस्वी व्याख्यानों के लिए आमन्त्रित। प० १७५ जाफरा बाजार, गोरखपुर।

क्षितीशकुमार वेदालंकार

ज० १० अक्टूबर १९१७, दिल्ली; पि० श्री मानकचंद; शि० एम० ए० (आगरा); कार्य: पंजाब तथा अन्य प्रदेशों में आर्यसमाज का प्रचार-कार्य, (१९४०-४७) 'वीर अर्जुन' दैनिक में संपादन कार्य, संप्रति 'दैनिक हिन्दुस्तान'

में सहायक संपादक; र० आर्य सत्याग्रह में गुरुकुल की आहुति, जातिभेद का अभिशाप, मधुर आकांक्षा (अनूदित उपन्यास), जलबिन्दु (अनु०), स्वेतलाना (उपन्यास), गांधी जी के हास्य-विनोद, सातवलेकर अभिनन्दन ग्रन्थ, मारीशस-स्मारिका, बंगलादेश : स्वतन्त्रता के बाद; वि० या० नेपाल, तिब्बत, बंगला देश, मारीशस; वि० प्रभावशाली लोकप्रिय वक्ता, पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, हैदराबाद आर्य-सत्याग्रह में ६ मास का सश्रम कारावास, कैलाश–मान-सरोवर की यात्रा, भारतीय साहित्यकार संघ के प्रधान, प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन दिल्ली के प्रचारमंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व उपमंत्री, धर्मार्य सभा के सदस्य, पर्यटन, लेखन, पठन-पाठन में विशेष रुचि। प० १५६५, हरध्यानसिंह रोड, करौल बाग, नई दिल्ली–५।

संवत् १९९६ (सन् १९४०)

अरविन्द वेदालंकार

ज०४ अगस्त १९२०, गणेशवड सिसोदरा (गुजरात); पि० श्री मणिभाई देसाई; शि० एम०ए०संस्कृत (आगरा), एम० ए० हिन्दी - गुजराती (बड़ौदा), पीएच० डी० हिन्दी (आगरा) – 'भारतेन्दु और नर्मद का तुलनात्मक अध्ययन'; कार्य : कच्छ में हिन्दी-प्रचार का कार्य (१९४३-४४), नड़ियाद हाईस्कूल व कॉलेज में अध्यापन (१९४५-५५), एम० टी० बी० कॉलेज सूरत में प्रोफेसर एवं हिन्दी-विभागाध्यक्ष (१९५५से); र० भारतेन्दु और नर्मद का तुलनात्मक अध्ययन, हिन्दी भाषा प्रवेश, सुबोध हिन्दी व्याकरण (तीन भाग), भारतीय इतिहासनी विकास रेखा (गुजराती), भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (गुजराती), भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (मदनगोपाल की अंग्रेजी पुस्तक का गुजराती अनुवाद); वि० या० लंका यात्रा; वि० १९४२ में 'भारत छोड़ो' आंदोलन के सिलसिले में ८ महीने साबरमती जेल-यात्रा, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय सूरत में हिन्दी अभ्यास समिति के अध्यक्ष, समय-समय पर हिन्दी-गुजराती पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर लेख प्रकाशित, साहित्य लेखन, अध्ययन एवं प्रवास में विशेष अभिरुचि, सच्चे लोकसेवक। प०१७ महादेवनगर, संगरामपुरा, सूरत–२।

इन्द्रसेन आयुर्वेदालंकार

ज० १७ अप्रेल १९१५, नाहरा गांव; पि०श्री बदलुराम; कार्य : सोनीपत में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि०हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में ६ मास की जेलयात्रा, सफल एवं कुशल चिकित्सक। प० सोनीपत मण्डी (हरियाणा)।
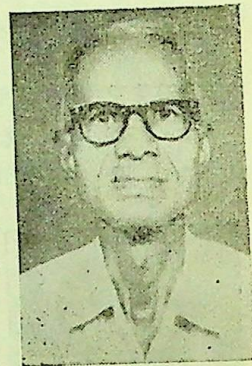
ओम्प्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० बम्बई; पि० हरिलाल मायाराम; कार्य : स्वतंत्र चिकित्साव्यवसाय – पहले किला पारडी में और अब बम्बई में।

ओम्प्रकाश वेदालंकार

पि० श्री कन्हैयालाल; कार्य : दौराला की चीनी मिल में कैमिस्ट, फिर डी० सी• एम० कैमिकल वर्क्स दिल्ली के वनस्पति-विभाग में कैमिस्ट।

गोविन्दसिंह आयुर्वेदालंकार

ज० १७ अगस्त १९१७, मणिकपुर; पि० श्री डाह्याभाई नरसिंह भाई पटेल; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा

व्यवसाय; वि० आयुर्वेद की विभिन्न औषधियों पर शोधकार्य करने में रुचि—१९६४-६५ में आयुर्वेद कालेज में यह कार्य संपन्न, १९४२ के स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान घायल लोगों की निःशुल्क सेवा, राष्ट्रीय आंदोलन में तीन वर्ष तक सक्रिय सहयोग, सामाजिक व राजनैतिक प्रवृत्तियों में विशेष अभिरुचि, वैद्यकीय सेवा कार्य में विशेष आनन्द की अनुभूति। प० माणिकपुर, वाया मठी, सूरत (गुजरात)।

दयाशंकर आयुर्वेदालंकार

ज० गोंडल (काठियावाड़); पि० श्री कल्याण जी महाशंकर; कार्य : स्वतन्त्र व्यवसाय।

दिनेशकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० अकोट; पि० श्री रघुवर जी छेदीलाल; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय एवं समाज सेवा। प० गोल बाजार, अकोट (अकोला)।

देवराज आयुर्वेदालंकार

ज० जडावाला (लायलपुर); पि० श्री हरनामदास; कार्य : दिल्ली में स्वतन्त्र-व्यवसाय।

धर्मवीर वेदालंकार

ज० ११ जनवरी १९२०, मुलतान; पि० श्री खुशीराम; शि० हिन्दी प्रभाकर, शास्त्री (पंजाब), एम० ए० संस्कृत (दिल्ली); कार्यः गुरुकुल कमालिया के आचार्य, विभिन्न विद्यालयों में अध्यापन, राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय नं० २ सरोजनी नगर दिल्ली में प्रधानाचार्य; वि० आर्यसमाज की गतिविधियों में विशेष अभिरुचि एवं महत्त्वपूर्ण योगदान। प० सी—९९ किदवई नगर (पूर्व), नई दिल्ली—२३।

धर्मप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० १५ अगस्त १९१८, चरथावल (मुजफ्फरनगर); पि० श्री बनारसीदास; कार्य: गुरुकुल फार्मेसी के सोल एजेन्ट, चिकित्सक तथा आयुर्वेदिक ओषधियों के निर्माता; वि० १९४२ में स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान मेरठ के उत्साही एवं सक्रिय कार्यकर्ता, इंडियन मेडिकल ऐसोसियेशन के सदस्य एवं कई वर्ष तक मंत्री, आयुर्वेदिक ओषधियोंके निर्माण में विशेष अभिरुचि, आर्यसमाज के कार्यकलापों में महत्त्वपूर्ण योगदान। प०१४२/२ शिवाजी रोड, मेरठ शहर।

नरेन्द्र वेदालंकार

ज० ९ वैशाख १९७६ विक्रमी, रहरा (मुरादाबाद); पि० श्री दलीपसिंह; शि० विद्यावाचस्पति (गुरुकुल, १९४३); कार्यः दैनिक एवं साप्ताहिक लोकमत (नागपुर), दैनिक हिन्दुस्तान (बाद में लोकमान्य), साप्ताहिक छाया (बम्बई) तथा मासिक प्रतिभा (नागपुर) आदि पत्रों के संपादक, संप्रति साप्ताहिक हिन्दुस्तान के सह संपादक; र० भूमध्यसागर का रणक्षेत्र; वि० नागपुर और दिल्ली में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय योगदान, अच्छे पत्रकार, विचारक एवं सुलेखक, 'ब्रिटिश काल में देशी राज्य' विषय पर अनुसंधान। प० अभ्युदय, बी-२२, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली—४९।

नवरत्न विद्यालंकार (सुमन्तराय म० देसाई)

ज० २७ नवम्बर १९१५, अबाड़ा (बलसाड़); पि०श्री मणिभाई जीवनजी देसाई; शि०एम०ए०, हिन्दुस्तानी शिक्षक प्रमाणपत्र; कार्य : दक्षिण अफ्रीका में शिक्षण-कार्य,

संप्रति बारडोली में हायर सेकेण्डरी के शिक्षक; र० प्रार्थना, गांधी बानी (दोनों संग्रह); वि० या० धर्म प्रचारार्थ मोजाम्बीक (पू० अफ्रीका); वि० विदेश व देश में वैदिक धर्म व आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान, अच्छे वक्ता, लेखक एवं प्रचारक। प० ३४ ए, गौरी स्मृति, जनता नगर, बारडोली (सूरत)।

पुरुषोत्तमदेव आयुर्वेदालंकार

ज० १९ नवम्बर १९१९, खानपुर (बहावलपुर स्टेट); पि० श्री ला० बिहारीलाल; शि० भिषगाचार्य, एम० ए० एम० एस० (कलकत्ता), आयुर्वेद बृहस्पति (झांसी); कार्य : 'आयर्वेद सम्मेलन पत्रिका' के मुख्य संपादक (१९५०-५३), राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय हैदराबाद के संस्थापक अध्यक्ष (१९५१-५६), भारत सरकार के औषधि मानकीकरण अनुसंधान संस्था के प्रभारी अधिकारी (इंचार्ज), आंध्रप्रदेश के राज्यपाल के चिकित्सक, आंध्रप्रदेश के भारतीय औषधि-विभाग के उपनिदेशक (१९७२-७४), राजकीय आयुर्वेदिक फार्मेसी हैदराबाद के अध्यक्ष, संप्रति स्वतन्त्र आयुर्वेद चिकित्सा और 'आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका' के संपादक; र० आयुर्वेद विषयक २०० लेख; वि० या० भंडारनायके मैमोरियल आयुर्वेदिक रिसर्च इंस्टिट्यूट के उद्घाटन के अवसर पर १९६२ में लंका तथा आयुर्वेदिक कॉलेज, चिकित्सालय और फार्मेसी के उद्घाटन के लिए १९७४ में बैंकॉक (थाइलैण्ड); वि० विभिन्न विश्वविद्यालयों–उस्मानिया, बनारस, जामनगर आदि-की विभिन्न समितियों के सम्मानित सदस्य, अखिल भारतीय आयुर्वेदिक विद्यापीठ, अखिल भारतीय आयुर्वेदिक कांग्रेस तथा भारत सरकार द्वारा गठित अन्य समितियों के सदस्य, विभिन्न आयुर्वेद-गोष्ठियों एवं अधिवेशनों में सभापति के रूप में आमन्त्रित, ख्यातिप्राप्त वैद्य, आर्यसमाज मुलतान के भू० पू० मन्त्री, आयुर्वेद महामण्डल के आजीवन सदस्य, आयुर्वेद-विषयों के गंभीर विचारक एवं स्वाध्यायप्रिय। प० बालविहार, ३–४–१६/५ बरकतपुरा, हैदराबाद–२७।

बुद्धदेव आयुर्वेदालंकार

ज० सातेम (सूरत); पि० श्री गोविन्द जी हीराभाई; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय। प० मु० पो० अंभेटी, वाया वेस्मा (सूरत)।

ब्रह्मदत्त आयुर्वेदालंकार

ज० १७ जुलाई १९१९, कमरमिशानी (बन्नू); पि० डॉ० नित्यानन्द आर्य; शि० आयुर्वेदाचार्य (नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ), यूनानी पद्धति का दो वर्षीय प्रशिक्षण, फ्रेंच भाषा की त्रिवर्षीय शिक्षा, आयुर्वेद-बृहस्पति (मानद, झांसी), प्राणाचार्य (मानद, दिल्ली), वैद्यधुरीण (मानद, काशी); कार्य : कांगड़ा जिले में दलित जातियों की चिकित्सा-सेवा (१९४०-४२), गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वेद महाविद्यालय में अध्यापन (१९४२-४६), रावलपिण्डी में स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय (१९४६-४७), लखनऊ में चिकित्सा कार्य एवं मूलचन्द रस्तोगी आयुर्वेदिक कालेज में अध्यापन (१९४७-५३), अयोध्या शिवकुमारी आयुर्वेद महाविद्यालय बेगूसराय के प्रधानाचार्य (१९५४-५९), मस्तनाथ आयुर्वेद महाविद्यालय अस्थलबोहर के प्रधानाचार्य (१९५९-६०), जामनगर में 'सेन्ट्रल इंस्टिट्यूट फॉर रिसर्च इन इन्डिजीनस सिस्टम ऑफ मेडीसिन', इंस्टिट्यूट फॉर आयुर्वेदिक स्टडीज ऐण्ड रिसर्च तथा गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय में आयुर्वेदानुसंधान वरिष्ठ चिकित्सक, आयुर्वेद- अनुसंधान के अध्यक्ष, निदेशक, उपनिदेशक, अनुसंधान-प्रशिक्षक, स्नातकोत्तर-अध्यापक आदि पदों पर कार्य (१९६०-६९), आयुर्वेदिक यूनानी तिब्बिया कालेज दिल्ली में प्रधानाचार्य

(१९६९-७२), स्वतन्त्र-चिकित्सा–व्यवसाय (१९७२-७५), संप्रति अहिंसा आयुर्वेद प्रतिष्ठान दिल्ली में अनुसंधान-अध्यक्ष एवं पूर्ववत् स्वतन्त्र-चिकित्सा-व्यवसाय (१९७५ से); र० तुलसी (अखिल भारतीय तुलसी ग्रन्थ प्रतियोगिता में पुरस्कृत), विकृति विज्ञान, अर्शो रोग, नेत्रविज्ञान, अगदतंत्र, शरीररचनाविज्ञान, अष्टांगहृदय दीपिका, आयुर्वेद-रहस्य-बोधनी; वि० वातव्याधि, पंचकर्म, पांडुरोग, ग्रहणी-रोग, प्लीहवृद्धि आदि रोगों पर अनुसंधान-कार्य पूर्ण, एकेडेमी ऑफ इंडियन मेडिसिन मद्रास के फैलो, गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय जामनगर की अनुसंधान एवं स्नातकोत्तर अध्ययन के मूल्यांकन हेतु गठित समिति के सदस्य, अन्य अनेक समितियों के सदस्य-सचिव, बिहार सरकार की फार्माकोपिया समितियों में विशेषज्ञ सदस्य, अनेक विश्वविद्यालयों एवं विद्यापीठों के परीक्षक, अनेक संस्थाओं/विभागों में विशेषज्ञ परामर्शदाता, अनेक ग्रन्थों को लिखने की योजना को कार्यरूप में परिणत करने के लिए कृतसंकल्प, आयुर्वेद के मर्मज्ञ विद्वान्, प्राच्य व पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली के तुलनात्मक अनुशीलन में अत्यधिक रुचि, अध्ययन-अध्यापन, लेखन, अनुसंधान-निर्देशन, चिकित्सा और बागवानी में विशेष अभिरुचि। प० २८५/१३/ सी-४ बी जनकपुरी, नई दिल्ली-५८ ।

महेन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० कानपुर; पि० श्री रामलाल; कार्य: कानपुर में स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय । प० चौक बाजार, कानपुर ।

महेशचन्द्र वेदालंकार

ज० पसगवां (खीरी); पि० श्री पं० हीरालाल शर्मा; शि० साहित्यरत्न (प्रयाग), एम० ए० (आगरा); कार्य : प्रभात आश्रम मेरठ में कार्य (१९४०-४१), बलदेवप्रसाद वैदिक इन्टर कालेज पलिया की स्थापना और अध्यापन (१९४२-४४), गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में अध्यापन (१९४६-४७), कानपुर में अध्यापन (१९४८-५०), संप्रति जगन्नाथप्रसाद इंटर कालेज मोहम्मदी में अध्यापन (१९५१ से); वि० आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, समय-समय पर आर्यसमाज मोहम्मदी के मन्त्री, उपप्रधान व प्रधान के रूप में कार्य, आर्यसमाज के सिद्धांतों एवं संस्कारों के प्रचार-प्रसार में रुचि, मथुरा एवं दिल्ली शताब्दियों में आर्यसमाज के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित । प० मोहल्ला भीतर मोहम्मदी, मोहम्मदी (लखीमपुर खीरी) ।

रामचन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० १ जनवरी १९१४, गणेशबड (सिसोदरा); पि० श्री जीवन भाई माधव भाई पटेल; शि० दंत चिकित्सा का प्रशिक्षण; कार्य: स्वतंत्र चिकित्सा कार्य (१९४०-४६, १९५१-६०), कैमिस्ट की दुकान (१९४७-५०), संप्रति दंत चिकित्सक का स्वतंत्र व्यवसाय (१९६१ से); वि० रोटरी क्लब के सदस्य, औषध-निर्माण-यांत्रिकी और कारीगरी में निपुण । प० डॉ० रामभाई जे० पटेल, मार्केट के सामने, बारडोली–१ (सूरत)।

लेखराज आयुर्वेदालंकार (स्व०)

पि० श्री काशीराम; कार्य: जिला कांगड़ा में धर्मार्थ चिकित्सालय में प्रधान चिकित्सक थे; वि० पत्र-पत्रिकाओं में आयुर्वेद-विषयों पर लेख प्रकाशित ।

वासुदेव चैतन्य आयुर्वेदालंकार

ज० ८ मई १९१९, नागरवाड़ी (उदयपुर); पि० श्री पं० हरिदत्त नागर; कार्य : गुरुकुल नारसन में आचार्य (१९४०-४६), मुजफ्फरनगर में फार्मेसी के एजेन्ट, गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वेद महाविद्यालय में शारीरशास्त्र के प्रवक्ता, आश्रमाध्यक्ष एवं कुछ समय कार्यवाहक सहायक मुख्याधिष्ठाता; र० चैतन्यनीतिशतकम् (गुरुकुल पत्रिका में क्रमशः प्रकाशित); वि० आर्यसमाज के सक्रिय कार्य-कर्ता, लोकसेवा के कार्यों में रुचि, कर्मठ एवं उत्साही, प्रबन्धपटु, संस्कृत के अच्छे कवि एवं लेखक, सुवक्ता, अपने विषय के अच्छे ज्ञाता । प० गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) ।

विद्यासागर विद्यालंकार

ज० १८ अक्टूबर १९१९, जामपुर; पि० श्री मनसाराम औदीच्य; कार्य : रसायन-विज्ञान के क्षेत्र में

महत्त्वपूर्ण कार्य (१९४०-४४), हिन्दी-पत्रकारिता के क्षेत्र में-कुछ दिन 'अर्जुन' में संपादक एवं प्रबन्धक, हिन्दुस्तान टाइम्स में कार्य; र० लगभग ३०० से अधिक लेख सामयिक विषयों पर तथा ५० लेख वैज्ञानिक विषयों पर प्रकाशित, ६ मौलिक पुस्तकें तथा एक दर्जन पुस्तकों का अनुवाद प्रकाशित; वि० द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत में स्टार्च से ग्लुकोज तैयार करने और इमली से टार्टरिक एसिड तैयार करने की परियोजनाओं पर अनुसंधान, अनेक धार्मिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के सम्मानित सदस्य, 'प्रकर' मासिक के संपादक, शास्त्रीय संगीत, नृत्य एवं भाषाविज्ञान में विशेष अभिरुचि, गुरुकुल विश्वविद्यालय की विद्यासभा के कई वर्षों तक सदस्य, अखिल भारतीय स्नातक मंडल के मंत्री उत्तम वक्ता, लेखक एवं पत्रकार, कुछ समय तक बंगाल में आर्य-समाज के प्रचारक, मधुरभाषी एवं मिलनसार, नवभारती सहकार प्रकाशन प्रतिष्ठान दिल्ली के कई वर्ष तक मंत्री। प० ए ८/४२ राणाप्रताप बाग, दिल्ली-७।

वीरेन्द्र वेदालंकार

ज० ३१ अक्टूबर १९१८, जगदेव खुर्द (अमृतसर); पि० श्री जगन्नाथ; कार्य : गुरुकुल कमालिया (लायलपुर) में अध्यापन (१९४०-४१), अपने ग्राम में कपड़े, सर्राफे तथा कृषि का व्यवसाय (१९४२-४३), लखनऊ में गुरुकुल फार्मेसी के एजेन्ट (१९४४), साइकिल रिक्शा चलवाने के साथ-साथ वस्त्र-धुलाई की दुकान का संचालन (१९४५), लखनऊ की प्रसिद्ध कढ़ाई-कार्य करने वाली विविध दुकानों पर नौकरी (१९४६-५६), अमृतसर पंजाब आयुर्वेदिक फार्मेसी की तरफ से टूरिंग-एजेन्ट (१९६१), विविध आयुर्वेदिक फार्मेसियों की दुकानों पर कार्य तथा अस्थल-बोहर (रोहतक) के आयुर्वेद कालेज से सम्बद्ध फार्मेसी के प्रतिनिधि रूप में हरयाणा में कार्य (१९६२ से) संप्रति दिल्ली में आयुर्वेदिक औषधियों की बिक्री। प० डब्ल्यू.जेड्. १९६८, रानीबाग, शकूरबस्ती, दिल्ली–३४।

सत्येन्द्रकुमार वेदालंकार

ज० १६ जुलाई १९१८, झांसी; पि० श्री हरनारायण मेहरा; कार्य : 'अर्जुन' दैनिक में अवैतनिक उपसंपादक (१९४१), दौराला शूगर मिल्स के अनुसधान विभाग में औद्योगिक समस्याओं पर शोधकार्य (१९४१-४३), विज्ञान कला भवन दौराला की ओर से विभिन्न विषयों पर संकलित वैज्ञानिक पुस्तकों का संपादन व प्रकाशन (१९४४-४५), जसवन्त शूगर मिल मेरठ में कैमिस्ट तथा गुरुकुल फार्मेसी में रिसर्च कैमिस्ट (१९४७-५२), श्री जानकी शूगर मिल डोईवाला में प्रयोगशाला-इंचार्ज (१९५३), संप्रति साधारण चिकित्सा-कार्य एवं आर्यसमाज का कार्य; र० कार्बनिक रसायन (दो भाग); वि० रसायन-शास्त्र के अध्ययन एवं तत्संबन्धी अनुसंधान में विशेष रुचि, घी की गाद का उपयोग, साबुन, फीनाइल तथा अन्य औद्योगिक वस्तुओं के निर्माण के तरीकों आदि पर वर्षों तक अनुसंधान, विविध औषधियों पर अनुसंधान, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग लेने पर ६ मास का सश्रम कारावास, आर्यसमाज के कार्यों में सक्रिय एवं महत्त्वपूर्ण योगदान, आर्यसमाज झिलमिल कालोनी के प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सदस्य, आर्यसमाज झिलमिल कालोनी की स्थापना और प्रगति में तत्पर, भारत सरकार द्वारा स्वतंत्रता-सेनानी के रूप में सम्मानित एवं पेंशन-प्राप्त, गंभीर रूप से अस्वस्थ रहते हुए भी देश, धर्म व जाति के उत्थान की लगन। प० ए १६७, झिलमिल कालोनी, शाहदरा, दिल्ली–३२।
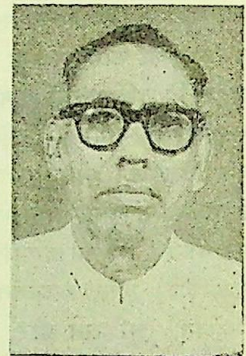
संवत् १९९७ (सन् १९४१)

आदित्यरंजन विद्यालंकार

ज० मलवाड़ा (सूरत); पि० श्री मुकुन्द जी भाई आर्य; कार्य : पहले गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्यापन, संप्रति कृषि-व्यवसाय; वि० संगीत, चित्रकला और साहित्य में विशेष अभिरुचि। प० मु० पो० मलवाड़ा, वाया चीखली, (वलसाड़), गुजरात।

आनन्दवर्धन विद्यालंकार

ज० २९ दिसम्बर १९१९, हलिखेड़ (बिदर); पि० श्री रामचन्द्र; कार्य : विभिन्न विद्यालयों में अध्यापन, समाचार पत्रों में सहसंपादक के रूप में कार्य, संप्रति राज्यसभा सचिवालय संसद भवन में संसदीय युगपद् भाषांतरणकार; र० विहग, रश्मिहास, सान्ध्यरव (तीनों काव्यसंग्रह), संवादमाला (संस्कृत एकांकी संग्रह), कुसुमलक्ष्मी: (संस्कृत उपन्यास) (गंगानाथ झा पुरस्कार से सम्मानित); वि० या० भगवान् पशुपतिनाथ का पंचामृताभिषेक कराने हेतु नेपाल यात्रा; वि० विभिन्न भाषाओं तथा उनके साहित्य के अध्ययन में रुचि, संस्कृत, अंग्रेजी, मराठी, कन्नड़, तेलगु तथा बंगाली भाषाओं के अच्छे जानकार, अच्छे कवि एवं लेखक, पत्र-पत्रिकाओं में लेख व कविताएं प्रकाशित, साधुचरित्र, शांतकर्मी। प० एफ-२९, नौरोजीनगर नई दिल्ली-१६।
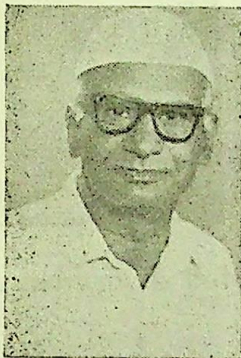
उदयवीर 'विराज' वेदालंकार

ज० ७ नवम्बर १९२१, मोहाना (बुलन्दशहर); पि० श्री नारायणराव; शि० एम० ए० हिन्दी (आगरा); कार्य : 'वीर अर्जुन', 'हिन्दी मिलाप', और 'धर्मयुग' के संपादन विभाग में कार्य, भारत सरकार में हिन्दी शिक्षक व हिन्दी अधिकारी(१९५५-६४), संप्रति स्वतंत्र लेखन; र० लगभग ३० पुस्तकें—नेपालेश्वर, वनराज के राज में, हाथियों का खेदा (उ०प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), जंगल के रहस्य, वसन्त के फूल (उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत), हम हिन्दू हैं, तिरंगा, हिन्दी निबन्ध लेखन, प्रेमदूती, नया आलोक नई छाया, सम्राट् विक्रमादित्य, रतिविलाप; वि० या० नेपाल व बंगला देश; वि० १९३९ में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग लेने पर जेल यात्रा, कनखल में साहित्य मन्दिर का सचालन, वनभ्रमण एवं तत्संबन्धी साहित्य-लेखन में विशेष रुचि, लब्धप्रतिष्ठित कवि एवं लेखक, फोटोग्राफी का अत्यधिक शौक, रंगीन व श्यामश्वेत फोटोग्राफ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित विविध पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित। प० २५।१५४ शक्ति नगर, दिल्ली-७।

ओम्प्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० १२ नवम्बर १९१९, तारापुर (मुंगेर); पि० श्री देवव्रत; कार्य: गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम में चिकित्सक, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में चिकित्सक, गुरुकुल महाविद्यालय मेंहियां (छपरा) में चिकित्सक, तारापुर में स्वतंत्र चिकित्सा व्यवसाय, सप्रति १९६४ से अभ्रक खान श्रम कल्याण संस्था करमा (झुमरीतिलैय्या के निकट) में आयुर्वेद-चिकित्सक; र० पूजा के फूल, क्रांति का आलोक (दोनों अप्रकाशित); वि० वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक विषयों में रुचि, श्री अरविन्द सोसायटी के साधारण सदस्य, वैदिक साहित्य एवं श्री अरविन्द-साहित्य के अध्ययन में रुचि, अच्छे चिकित्सक, वैदिक-मंत्रों का पद्यानुवाद-संग्रह प्रकाशित करवाने के इच्छुक। प० ग्राम महेशपुर, पो० लौना परसा, मुंगेर (बिहार)।

ओम्प्रकाश वेदालंकार

ज० १९२०, खानगढ़ (मुजफ्फरगढ़); पि० श्री छबीलदास; शि० शास्त्री, एम० ए० हिन्दी-संस्कृत,प्रभाकर (पंजाब);कार्य : गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापन–कार्य (१९४१-५०), संप्रति डी०ए०वी०कालेज हिसार में हिन्दी-संस्कृत विभाग में वरिष्ठ प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष; वि० छात्रावस्था अपनी कक्षा में सदा सर्वप्रथम, स्नातक परीक्षा में सभी विषयों में प्रथम आने के उपलक्ष में अनेक स्वर्ण एवं रजत पदक प्राप्त, आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार-कार्यों में सक्रिय योगदान,भाषणों और लेखों द्वारा आर्यजगत् में अच्छी ख्याति प्राप्त, डी० ए० वी० कालेज हिसार में आर्य युवक समाज के अध्यक्ष। प० अध्यक्ष हिन्दी-संस्कृत विभाग, डी० ए० वी० कालेज, हिसार (हरियाणा)।

धर्मवीर विद्यालंकार

ज० १५ अगस्त १९२०, मुलतान (पाकिस्तान); पि० श्री बन्नाराम; शि० प्रभाकर, बी० ए० (पंजाब), ए०आई० आई० बी० (बम्बई); कार्य : गुरुकुल कुरुक्षेत्र में विज्ञान शिक्षक (१९४१),पंजाब नेशनल बैंक में सेवा (१९४४-५१), स्वतंत्र कृषि-व्यवसाय (१९५२ से), गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में कृषि–निदेशक (अक्टूबर ७४-अगस्त ७५), सम्प्रति सहायक मुख्याधिष्ठाता (१९७५ से); र० कृषि में विज्ञान का महत्त्व(अप्रकाशित), वि० सेवाग्राम वर्धा में पशुपालन व कृषि का अध्ययन, कांग्रेस के सक्रिय सदस्य, आर्यसमाज की गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण योगदान, आर्यसमाज अशोकनगर (पीलीभीत) की स्थापना एवं उसके मंत्री व प्रधान, जिला उपप्रतिनिधि सभा पीलीभीत के कई वर्ष तक प्रधान, गुरुकुल की प्रगति में तन-मन से संलग्न, कनखल की हीरादेवी कन्या पाठशाला के भू० पू० संचालक, उत्साही एवं उद्यमी सामाजिक कार्यकर्ता, गन्ना सहकारी समिति एवं सहकारी चीनी मिल के संचालक मंडल के सदस्य,फोटोग्राफी में विशेष अनुराग। प० भंडारा मॉडल कृषि फार्म, मझोला (पीलीभीत); सहायक मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)।

धर्मेन्द्रनाथ वेदालंकार

ज० २५ सितम्बर १९१९, बोरभाठा (सूरत); पि० श्री नारायण गोपाल जी; कार्य : अनाथाश्रम सिनांजी स्कूल रंगून (बर्मा) में मुख्याध्यापक, सम्प्रति दयानन्द आदर्श विद्यालय अहमदाबाद में मुख्याध्यापक; वि०या० रंगून(बर्मा); वि०आर्यसमाज के क्रियाकलापों में सक्रिय योगदान, आर्यसमाज अहमदाबाद के उपमंत्री एवं अंतरंग-सदस्य, समाजसेवा में रुचि, दयानन्द आदर्श विद्यालय अहमदाबाद की कार्यकारिणी के सदस्य। प० आर्यसमाज मंदिर, महर्षि दयानन्द मार्ग, कांकरिया रोड, अहमदाबाद।

पुरुषोत्तम आयुर्वेदालंकार

ज० लाहौर; पि०श्री बद्रीप्रसाद; कार्य : पहले लाहौर में स्वतंत्र चिकित्सा व्यवसाय, फिर किंग्सवे कैम्प दिल्ली में और अब कई वर्षों से बड़ौत (मेरठ) में स्वतंत्र चिकित्सा-कार्य; वि०सफल चिकित्सक, मिलनसार एवं बंधुत्व-भावना से ओतप्रोत। प० पोस्ट ऑफिस के सामने बड़ौत (मेरठ)।

महेन्द्रसिंह आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० सिसोदरा (सूरत); पि० श्री डाह्याभाई गोविन्द जी; वि० व्यायाम प्रिय।

योगेश्वर आयुर्वेदालंकार

ज० २३ फरवरी १९२०,पेशावर; पि०श्री ताराचन्द्र; शि० एम०ए० हिन्दी (आगरा), एम०ए० संस्कृत (पंजाब), पीएच० डी० हिन्दी (कुरुक्षेत्र)–'केशव की रामचन्द्रिका का साहित्यिक,सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन'; कार्य :

सनातन धर्म कालेज पानीपत में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष; र० जागरण, ज्योत्स्ना (हरियाणा सरकार द्वारा पुरस्कृत); वि० लेखन में रुचि, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी। प० ६७० मॉडल टाउन, पानीपत।

रघुनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० बस्ती गुजां (जालन्धर); पि० श्री जमनादास; कार्य: बस्ती गुजां में वन-ओषधियों के व्यापारी । प०डब्ल्यू जे–२४४ बस्तीगुजां, जालन्धर शहर ।

रणवीर विद्यालंकार

ज० १ वैशाख १९७७ वि० संवत्, कमालिया (लायलपुर); पि० श्री सुखदयाल रहेजा; शि० एम० ए० हिन्दी (आगरा); कार्य : गुरुकुल कमालिया (लायलपुर) में अध्यापक (१९४१-४४), आर्य हाईस्कूल पाकपटन (माण्टगुमरी) में अध्यापक (१९४४-४७), नानकचन्द शिक्षा-सदन, मॉण्टेसेरी स्कूल मेरठ में अध्यापक (१९४८-५३), सी० ए० बी० इन्टर-मीडिएट कालेज मेरठ में हिन्दी-संस्कृत के प्रवक्ता (१९५३ से); वि० पत्रकारिता व शिक्षा-प्रसार में विशेष अभिरुचि । प० ८ रमा कुटीर, तिलक रोड, बेगम बाग, मेरठ ।
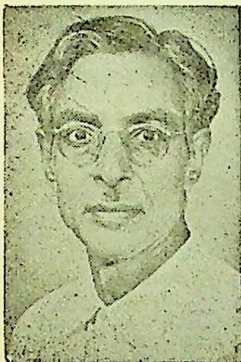
रमेशचन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० कराड़ी (सूरत); पि० श्री रामजी जयरामभाई; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० सफल एवं कुशल चिकित्सक । प० कराड़ी (सूरत) ।

रामदेव आयुर्वेदालंकार

ज० उगत (सूरत); पि० श्री दुर्लभभाई बल्लभभाई; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० सफल वैद्य, ग्रामोद्धार, लोकसेवा तथा आर्यसमाज के कार्यों में उत्साही कार्यकर्ता, स्नातक परीक्षा में सभी विषयों में सर्वप्रथम रहने के कारण अनेक स्वर्ण एवं रजत पदक प्राप्त, शिल्प कला एवं शल्य क्रिया में दक्षता के कारण विशेष पुरस्कार प्राप्त । प० उगत (सूरत) ।

विजयसिंह आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० रतनपुर (कोटद्वार); पि० श्री भक्तराम; कार्य : पहले दिल्ली में बिरला मिल में वैद्य और उसके बाद नहटौर (बिजनौर) में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य करते रहे; वि० हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में जेलयात्रा, सफल चिकित्सक ।

विद्यारत्न आयुर्वेदालंकार

ज० दिल्ली; पि० श्री रामकृष्णदास; कार्य : दिल्ली में निजी व्यवसाय; वि० हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग लेने पर जेलयात्रा, कई वर्षों तक दिल्ली नगर निगम के सदस्य, कर्मठ एवं उत्साही कार्यकर्ता, सार्वजनिक कार्यों में रुचि, सच्चे लोकसेवक, आर्यसमाज की गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण योगदान । प० ४०० नया बांस, दिल्ली ।

वेदराज वेदालंकार

ज० २ नवम्बर १९२०, मुलतान; पि०श्री सत्यनारायण राजपाल; कार्य : आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक (१९४१-४३), गुरुकुल चुनचुनकुटटे में मुख्याध्यापक (१९४४-४५), सात्विक जीवन (बनारस और कलकत्ता) के संपादक (१९४५-४७), कलकत्ता के जनरल प्रिंटिंग वर्क्स लिमिटेड के प्रकाशन विभाग में लेखन, अनुवाद एवं संपादन कार्य, टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस के जॉब सेक्शन में उच्च पदों पर कार्य (१९४८-५५), संप्रति केन्द्रीय समाज कल्याण मंत्रालय के प्रचार और प्रकाशन विभाग में प्रोडक्शन-एसिस्टेंट; र० अनूदित : गांधी और गांधीवाद, सत्य की खोज में, कस्तूरबा, रवीन्द्र प्रतिभा, भगवान बुद्ध की शिक्षाएं, रमण महर्षि आदि लगभग १ दर्जन पुस्तकें; वि० अध्ययन, लेखन व भ्रमण में रुचि । प० ई डी ९४, टैगोर गार्डन, नई दिल्ली–२७ ।

शंकरदेव (हरिशंकर) आयुर्वेदालंकार

ज० ११ मार्च १९१८, डरबन (अफ्रीका); पि० श्री गजाधर; शि०सीनियर कैम्ब्रिज, बी०ए०, एम०ए० अर्थशास्त्र; कार्य : अफ्रीका व भारत में स्वतन्त्र व्यापार; वि० या० अफ्रीका के अनेक देशों, द्वीपों व योरोप का भ्रमण; वि०

दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा, हिन्दी शिक्षा संघ, वैदिक पुरोहित मंडलतथा अनेक शिक्षण व सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय सेवा में संलग्न, अपने समय के हॉकी के अच्छे खिलाड़ी। प० २१ बाग फरजाना, सिविल लाइन्स, आगरा।

श्रीकांत आयुर्वेदालंकार

ज० खुर्जा; पि० श्री गिरवरसिंह; कार्य : स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० कुशल एवं सफल चिकित्सक, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी। प० युसूफ सराय, दिल्ली।

सतीश (दत्तात्रेय) विद्यालंकार

ज० ८ जनवरी १९२१, आम्बे साध्वी (बीदर); पि० श्री मुरारीप्रसाद तिवारी; कार्य : आर्यभानु (शोलापुर) के संपादक (१९४१-४३), प्रभात (जयपुर) के संपादक (१९४३-४४), गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्यापक (१९४४-४५), लोकवाणी (जयपुर), अमर भारत (दिल्ली), वीर अर्जुन (दिल्ली) के संपादकीय विभाग में कार्य (१९४५-५१), संप्रति दैनिक हिन्दुस्तान (दिल्ली) में मुख्य उप-संपादक (१९५२ से); वि० हैदराबाद आर्य सत्याग्रह और १९४२ के राष्ट्रीय आंदोलन में जेलयात्रा, धार्मिक व साहित्यिक कार्यों में विशेष अभिरुचि, सुलेखक, कुशल पत्रकार। टी-८, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली—१६।

सत्यव्रत वेदालंकार (स्व०)

ज० २३ अक्टूबर १९१८, बडावली (गुजरात); पि० श्री त्रिकमलाल हरिलाल आर्योपदेशक; कार्य : श्री सेठ चौ० न० विद्यालय में अध्यापन कार्य करते थे; वि० आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान्, वक्ता, प्रचारक, सामाजिक कार्यकर्ता, वैदिक व सामाजिक विषयों पर अनेक लेख प्रकाशित, वैदिक सिद्धान्तों तथा संस्कारों का परिवारों में प्रचार करने में विशेष रुचि, हिन्दू महासभा अहमदाबाद के उपप्रधानादि पदों पर कार्य, बृहद् गुजरात संस्कृत परिषद्, भारतीय विद्या भवन बम्बई और संस्कृत परीक्षा परिषद् पारड़ी (सूरत) के सम्मानित सदस्य। निधन ४ सितम्बर १९६९, जूनागढ़ (सौराष्ट्र)।

सुरेन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० ६ अप्रैल १९१९, बटाला (गुरदासपुर); पि० श्री पं० शालिग्राम शर्मा; शि० एम०ए० संस्कृत (आगरा); कार्य : गुरुकुल मुलतान, गुरुकुल कमालिया और गुरुकुल नारसन में अध्यापन (१९४१-४४), आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब में उपदेशक एवं पुरोहित (१९४४-४६), गुरुकुल नारसन के कार्याधिकारी (१९४६-४९), दिल्ली नगरपालिका में प्रौढ़ शिक्षा कार्यकर्ता, समाज शिक्षा कार्यकर्ता और जनसंपर्क अधिकारी (१९५०-७३), संप्रति स्वाध्याय; वि० भारतीय प्रौढ़ शिक्षा बोर्ड इन्द्रप्रस्थ स्टेट के प्रतिष्ठित सदस्य, आर्यसमाज करोलबाग के सदस्य, संस्कृत, वैदिक व आयुर्वेद-ग्रंथों के अध्ययन-अध्यापन में रुचि। प० ५२/२८ ओल्ड राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली—६०।

संवत् १९९८ (सन् १९४२)

अशोककुमार आयुर्वेदालंकार

ज० २०दिसम्बर १९२०, मुलतान; पि०श्री रैमलदास; कार्य : पहले मुलतान में और विभाजन के बाद ग्वालियर में स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० सफल एवं कुशल चिकित्सक, मिश्रित चिकित्सा प्रणाली के मध्यप्रदेशीय एवं केन्द्रीय संगठन के प्रमुख संगठक, आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्ता, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश के प्रमुख मासिक पत्र 'आर्यावर्त' के प्रधान संपादक, नेशनल मेडिकल ऐसो-

सिएशन के प्रमुख पत्र 'नेशनल मेडिकल गजट' के संपादक, मध्यप्रदेश के साहित्यिक एवं सामाजिक संगठनों के प्रमुख पदों पर कार्य, छात्रावस्था में गुरुकुल की आयुर्वेद परिषद् के मंत्री, पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, अच्छे लेखक, पत्रकार। प० नया बाजार, लश्कर (म० प्र०)।

गिरधर विद्यालंकार

ज० बस्ती गुजां (जालन्धर); **पि०** श्री श्यामलाल; **कार्य** : शूगर मिल छितौली में कैमिस्ट; वि० अच्छे तैराक, रसायनविज्ञान में रुचि। प०श्री जी०डी०सोनी, शूगर कैमिस्ट, एल०डी० शूगर मिल्स प्राइवेट लि०, छितौली, (देवरिया)।

गुरुदत्त वेदालंकार

ज० २१ सितम्बर १९२१, मुलतान; **पि०** श्री दयालदत्त; **कार्य** : ब्रुक बांड (ब्रिटिश फर्म) खानेवाला में कार्य (१९४२-४५), अमृतसर में स्वतन्त्र व्यापार (१९४५-४८), १९४८ से सरकारी सेवा में—कई वर्ष 'योजना' के संपादक, संप्रति भारत सरकार की केन्द्रीय सूचना सेवा में ग्रेड I अधिकारी; **वि०** अच्छे एवं कुशल पत्रकार, अर्थशास्त्र के अध्ययन में रुचि। प० एन-७२ कीर्तिनगर, नई दिल्ली—१५।
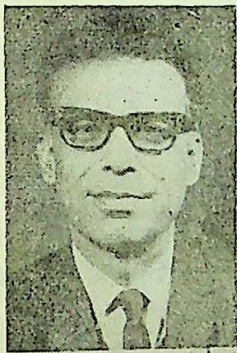
चन्द्रगुप्त आयुर्वेदालंकार

ज० २ मई १९१८, केसरी (अम्बाला); **पि०** श्री खुशीराम; **कार्य** : स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य, वर्षों तक उत्तर प्रदेश सरकार के आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में चिकित्सक, संप्रति सेवानिवृत्ति के बाद केसरी में स्वतन्त्र चिकित्सा-सेवा; **वि०** १९३९ में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह और १९४२ में स्वतन्त्रता-संग्राम के आंदोलनों में भाग लेने के कारण जेलयात्राएं, स्थानीय राजनीति एवं सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय योगदान। प०केसरी(अम्बाला)।

दिलीपचन्द्र आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० बछड़ौता (मेरठ); **पि०** श्री भगवानदास; **कार्य** : पहले स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य, फिर जिला परिषद् चिकित्सालय में चिकित्सा अधिकारी, **वि०** हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, कुशल चिकित्सक।

देवेन्द्रकुमार वेदालंकार

ज० ३० सितम्बर १९२२ सुरजननगर (मुरादाबाद); **पि०** श्री सूरजसिंह; **शि०** एम० ए० हिन्दी (दिल्ली), पीएच० डी० हिन्दी (दिल्ली)-'संस्कृतनाटकों के हिन्दी अनुवाद : आलोचनात्मक एवं ऐतिहासिक विवरण', एल० एल० बी० (दिल्ली); **कार्य** : गुरुकुल नारसन में अध्यापन, 'वीर अर्जुन' और 'जनसत्ता' में सहसंपादक, डी०ए०वी० कालेज दिल्ली में प्रवक्ता, अमेरिकी दूतावास में अनुवाद एवं प्रकाशन सम्बन्धी कार्य, संप्रति दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रवक्ता; **र०** संस्कृत नाटकों के हिन्दी अनुवाद (शोधग्रन्थ), 'अन्डरस्टैंडिंग साइन्स' नामक पुस्तक का हिन्दी अनुवाद; **वि०** अनेक पुस्तकों के अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद प्रकाशित, १९६२ में यूनेस्को के २०० डालर के पुरस्कार से सम्मानित, कई वर्ष तक दिल्ली पत्रकार संघ के महामन्त्री, आर्यसमाज के कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान, अच्छे समालोचक और वैज्ञानिक विषयों के ज्ञाता, सुवक्ता, सुलेखक, गुरुकुल की विद्यासभा के सदस्य। प० ए ७/४७ कृष्णनगर, दिल्ली—५१।

धर्मपाल आयुर्वेदालंकार

ज० सामरखा (गुजरात); **पि०** श्री पुरुषोत्तमभाई कीशीभाई पटेल; **कार्य** : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय। **प०** मु० पो० सामरखा (खेड़ा), गुजरात।

धर्मवीर आयुर्वेदालंकार

ज० तरसाडी (सूरत); **पि०** श्री कालाभाई नृसिंहभाई; **कार्य**: स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; **वि०** सफल एवं कुशल

चिकित्सक। प० मु० पो० ननसाड़, तालुका बारडोली (सूरत)।

नित्यदेव आयुर्वेदालंकार

ज० हसवा (गया); पि० श्री योगेश्वरप्रसाद; कार्य : निजू व्यवसाय। प० द्वारा/ डॉ० सत्यदेव विद्यावाचस्पति, तेल बिगहा, राजेन्द्रपथ, गया (बिहार)।

प्रभाकर वेदालंकार

ज० १८ सितम्बर १९१७, खडसुपा (गुजरात); पि० श्री जीवनभाई माधवभाई; कार्य : नैरोबी (अफ्रीका) में मेहता पटेल ऐण्ड कम्पनी में कार्य; वि० आर्यसमाज की गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण योगदान। प० पोस्ट बॉक्स ४१६५२, नैरोबी, केनिया (पू०अफ्रीका)।

बलदेवराज आयुर्वेदालंकार

ज० १९ मार्च १९२०, कढुआ (गुजरांवाला), पि० श्री निहालचन्द्र; कार्य : इन्डो फार्मा फार्मेस्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, बम्बई के प्रतिनिधि के रूप में स्वतन्त्र व्यवसाय। प० १११ए, ४८ अशोकनगर, कानपुर।

बलराम आयुर्वेदालंकार

ज० गुजरात; पि० श्री भाणाभाई माकन जी; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० अपने समय के हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, कुशल चिकित्सक। प० श्री बलराम जी भाई भीणाभाई, मु० पो० उमराट, वाया मरोली (सूरत)।

भवभूति वेदालंकार (श्री नटवरलाल पटेल)

ज० इटोला (बड़ौदा); पि० श्री तलजाभाई पटेल; कार्य : कृषि व्यवसाय; वि० गुजरात में अनेक प्रकार की शैक्षणिक, सामाजिक एवं राजनैतिक प्रवृत्तियों में महत्त्व पूर्ण योगदान, अनेक संस्थाओं के मंत्री, प्रधान, निदेशक व ट्रस्टी, गुजरात की आर्यकुमार महासभा के आजीवन सदस्य, बहुविध सेवाओं के प्रति आभार प्रकट करने के लिए गुजरात सरकार द्वारा द्वितीय श्रेणी के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट के पद पर मनोनीत, आर्य कन्या व्यायाम महाविद्यालय इटोला के मुख्याधिष्ठाता, बड़ौदा तालुका कांग्रेस कमेटी के मंत्री, जय किसान सेवा सहकारी मंडली इटोला के प्रधान, आर्यकुमार महासभा बड़ौदा के अंतरंग सदस्य, कर्मठ एवं उत्साही कार्यकर्ता। प० श्री नटवरलाल पटेल, इटोला (बड़ौदा)।

भीष्मदेव वेदालंकार (स्व०)

ज० नवसारी (गुजरात); कार्य : कुछ वर्ष गुरुकुल सूपा में अध्यापन; वि० विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, दार्शनिक, स्वाध्यायप्रेमी।

राजकुमार विद्यालंकार

ज० २१ फरवरी १९२१, गिरिडीह (बिहार); पि० श्री बैजनाथ शर्मा; कार्य : स्वतन्त्र व्यापार–अभ्रक और शास्त्रास्त्रों के व्यापारी; र० धारा (काव्यसंग्रह); वि० विद्यालंकार परीक्षा में सर्व प्रथम तथा सात पदक प्राप्त, क्षेत्रीय पुस्तकालय संघ के सभापति, आर्यसमाज गिरिडीह के मंत्री, आर्यसमाज तथा हिन्दी साहित्य के विकास के लिए प्रयत्नशील, साहित्य, काव्य, स्वाध्याय एवं समाज सेवा के प्रति विशेष अभिरुचि, सुकवि। प० काली मंडा मार्ग, गिरिडीह (बिहार)।

वासुदेव आयुर्वेदालंकार

पि० श्री पूनमचन्द्र; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय। प० माली मुहल्ला, सुरजापाल गेट, ब्यावर (राजस्थान)।

विद्यानन्द आयुर्वेदालंकार

ज० दरभंगा; पि० श्री विष्णुदेव नारायण; कार्य : पहले सूरत में और अब दरभंगा में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; वि० सफल चिकित्सक। प० ग्राम अटेर्नल, कांसी सिमरी, दरभंगा (विहार)।

विद्यासागर वेदालंकार

ज० २४ अप्रैल १९२०, मसाका (युगाण्डा); पि० श्री जेठाभाई मोतीभाई पटेल; शि० बी० फार्मा (बनारस); कार्य : गत्ता-उद्योग का निजी व्यवसाय (१९४९ से), एन० एस० पी० स्ट्रॉ ऐण्ड पेपर प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड के संयुक्त प्रबन्ध निदेशक; वि० १९५९ से दिगेन्द्रनगर में शैक्षिक ट्रस्ट के प्रबन्ध-ट्रस्टी एवं कोषाध्यक्ष, छात्रावस्था में रसायन-विज्ञान प्रिय विषय। प० श्री विद्यासागर जे० पटेल, पो० बॉक्स नं० ९, दिगेन्द्रनगर, बलसाड़ (गुजरात)।

विमलचन्द्र विद्यालंकार

ज० अजमेर; पि० श्री जेठालाल डाह्याभाई; कार्य : अजमेर में स्वतन्त्र-व्यवसाय, वि० प्रबन्ध पटु एवं सफल व्यापारी। प० दीपक आयुर्वेदिक फार्मेसी, निकट रेलवे स्टेशन, अजमेर।

वीरेन्द्रकुमार विद्यालंकार

ज० २५ सितम्बर १९२३, नहटौर (बिजनौर); पि० चौ० मन्नूसिंह; शि० एम० ए० इतिहास (दिल्ली); कार्य : कुछ समय दैनिक हिन्दुस्तान के संपादकीय विभाग में कार्य; १९४८ से भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में सेवारत; वि० सुलेखक, अच्छे वक्ता, छात्र-जीवन में अनेक वाक्प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त, सामयिक विषयों के अध्ययन एवं चिन्तन में विशेष अभिरुचि। प० ५४-सी बंगला साहिब रोड, नई दिल्ली-१।

वीरेन्द्र वेदालंकार

ज० १५ अप्रैल १९२०, जंजीबार (अफ्रीका); पि० श्री लल्लूभाई भगवान जी देसाई; कार्य : गुरुकुल सूपा में उच्चकक्षाओं में अंग्रेजी-संस्कृत का अध्यापन-कार्य (१९४२-४५); जंजीबार में स्वतन्त्र व्यापार (१९४५-६५), बैंगलूर में व्यापार (१९६८-७४), संप्रति सालेजमें पारिवारिक कृषि कार्य; वि० जंजीबार में आर्यसमाज कीगतिविधियों में महत्त्वपूर्ण योगदान, जंजीबार आर्यसमाज के प्रथम मंत्री और उसके बाद १५ वर्ष तक प्रधान, जंजीबार की सामाजिक प्रवृत्तियों में सोत्साह भाग, भारतमे जाने वाले आर्य नेताओं के स्वागत-सत्कार तथा उनके लिए गायत्रीयज्ञों, प्रचार-सभाओं के आदि के आयोजन में सक्रिय, लेखन के प्रति विशेष अभिरुचि। प० श्री वीरेन्द्र एल० देसाई, सालेज, वाया गणदेवी (बलसाड़), गुजरात।

वेदप्रकाश वेदालंकार

ज० डेरागाजीखाँ: पि० श्री लालचन्द्र; कार्य विभिन्न विद्यालयों में अध्यापन कार्य। प० श्री वेदप्रकाश विरमानी, बीसरू वाया पुन्हाना (गुड़गांवा)।

सत्यदेव आयुर्वेदालंकार

ज० मेरठ; पि० श्री मिट्ठनलाल; कार्य : गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में चिकित्सक, फिर स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय।

सत्यदेव विद्यालंकार

पि० श्री निहालचन्द्र; कार्य : पहले गुजरांवाला में स्वतन्त्र व्यवसाय, विभाजन के बाद भारत में स्वतन्त्र अध्यापन कार्य। प० ग्राम पो० छावड़ा, वाया नजबगढ़, दिल्ली।

सुरेन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० आश्विन शुक्ला द्वादशी १९७८ विक्रमी, सढौरा (अम्बाला); पि० श्री मुकुन्दीलाल आर्य; कार्य : गुरुकुल

मुलतान और गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में चिकित्साधिकारी, सेठ नाथूराम धर्मार्थ औषधालय किरठल (मेरठ) में चिकित्सक, दयानन्द धर्मार्थ औषधालय जींद में चिकित्सक, उत्तरप्रदेश के राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में चिकित्साधिकारी (१९५०-६५), संप्रति सढौरा में स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; र० अथर्ववेदीय चिकित्सा; वि० पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, पर्यटन में विशेष रुचि—कैलाश मानसरोवर, यमुनोत्री, गंगोत्री, गोमुख आदि की यात्रा, केवल नाड़ी परीक्षा द्वारा रोगनिर्णय, आयुर्वेदीय पंचकर्म चिकित्सा एवं कल्प चिकित्सा का विशेष अभ्यास, आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के कारण जेलयात्रा, योग में रुचि, वैदिक मंत्रों के सस्वर पाठ का अच्छा अभ्यास। प० सुर निकेतन, सढौरा (अम्बाला)।

सूर्यदेव वेदालंकार

ज० गोरखपुर; पि० श्री महेशप्रसाद; कार्य : पहले वाराणसी के दैनिक 'आज' के संपादकीय विभाग में कार्य, संप्रति लखनऊ से प्रकाशित दैनिक 'नवजीवन' के समाचार संपादक; वि० सुलेखक, समालोचक, कुशल पत्रकार। प० १३५ नया हैदराबाद, लखनऊ।

संवत् १९९९ (सन् १९४३)

जयदेव वेदालंकार (स्व०)

ज० दिल्ली; पि० श्री गिरवरसिंह; कार्य : ऑल इंडिया रेडियो दिल्ली में कार्य करते थे।

देवमित्र वेदालंकार

ज० गुरुकुल कांगड़ी; पि० श्री मुकन्दलाल; कार्य : पहले गुरुकुल में सहायक रसायनोपाध्याय, फिर उत्तर प्रदेश शासन के अधीन राजकीय इन्टर कालेजों में प्रवक्ता, संप्रति प्रधानाचार्य; वि० प्रबन्धपटु, रसायनविज्ञान में रुचि, अच्छे शिक्षक।

धर्मपाल वेदालंकार

ज० टांगरां (अमृतसर); पि० श्री बाबूराम।

नरोत्तम विद्यालंकार

ज० लाहौर; पि० श्री बद्रीप्रसाद; कार्य : पहले लाहौर में और विभाजन के बाद दिल्ली में कैमिस्ट व ड्रगिस्ट का व्यवसाय, संप्रति राजकीय सेवा में; वि० दिल्ली स्नातकमंडल के वर्षों मंत्री, सार्वजनिक कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान। प० एफ-२५ निजामुद्दीन वेस्ट, नई दिल्ली-१३।

वेदपाल विद्यालंकार

ज० इटोला (बड़ौदा); पि० श्री नरसिंह भाई प्रागभाई; कार्य : इटोला में स्वतन्त्र व्यवसाय। प० इटोला (बड़ौदा), गुजरात।

शान्तिस्वरूप विद्यालंकार

ज० १० मार्च १९२३, बम्बई; पि० श्री लक्ष्मणनारायण महाजन; शि० शास्त्री (बम्बई), आई० जी० डी० (पंजाब), एम० ए० हिन्दी (दिल्ली); कार्य : जे० सी० मिल्स ग्वालियर में सहायक वीविंग मास्टर (१९४३-४४), जे० सी० मिल्स हाईस्कूल ग्वालियर में फिजिकल इंस्ट्रक्टर (१९४४-४५), आदर्श डेरी फार्म कुलैथ (ग्वालियर) में प्रबन्धक (१९४५-४६), धौलपुर मैच फैक्ट्री में मैनेजर (१९४६-४७), दिल्ली में फाइन आर्ट का स्वतन्त्र व्यवसाय (१९४७-४८), कस्तूरबा ट्रस्ट वर्धा के तत्त्वावधान में दिल्ली में शरणार्थियों में खादी ग्रामोद्योग, तेलघानी आदि के प्रबन्धक (१९४८-५३), बापू आदर्श विद्यालय शिक्षा संस्था दिल्ली के संस्थापक, प्रबन्धक व अध्यापक (१९५३ से); र० सुबोध संस्कृत व्याकरण; वि० 'सर्पदंश मुक्ति' औषधि की खोज व निर्माण जो शीघ्र
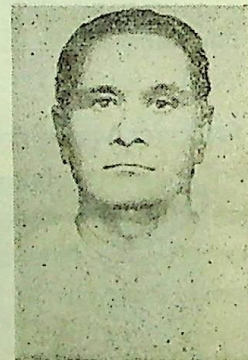
ही रजिस्टर्ड होकर विक्री के लिए सुलभ, साहित्य कला परिषद् करोल बाग और कला संगम दिल्ली के सम्मानित सदस्य, १९५४ से श्रीमती रामेश्वरी नेहरू के साथ हरिजन-कल्याण के कार्य में व्यस्त, १९४० में विहार में अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन पर आयोजित अखिल भारतीय चर्खा प्रतियोगिता में ५०० प्रतियोगियों में सर्वप्रथम, छात्रकाल में आत्मनिर्भर होने के लिए मधु-मक्खीपालन, आयुर्वेद-कालेज के चार्ट-निर्माण आदि द्वारा धनोपार्जन, अनेक हस्तकलाओं व चित्रकला में प्रवीण, व्यायाम के शौकीन। प० ७०८७, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू नगर, न्यू पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-५।

सत्यवीर वेदालंकार

ज०भरुच(गुजरात); पि०श्री छोटालाल; कार्य: गुरुकुल सूपा में अध्यापक। प० गुरुकुल सूपा, वायानवसारी (सूरत)।

हरिवंश वेदालंकार

ज० १ अक्टूबर १९२१, होशियारपुर; पि० श्री देवीदयाल सूद; शि० शास्त्री, प्रभाकर, एम०ए० हिन्दी-संस्कृत (पंजाब), वी० एड्० (दिल्ली); कार्य: स्ट्रॉ प्रोडक्ट्स लि० भोपाल में भंडारक, सूद सभा में उपदेशक, डी० ए० वी० स्कूल होशियारपुर में अध्यापक, संप्रति गोपालदास डी० ए० वी० हायर सेकेण्डरी स्कूल दिल्ली में वाइस प्रिंसिपल; र० आज का हिन्दी व्याकरण, हिन्दी निबन्ध रचना, संस्कृत सुबोध व्याकरण, वैदिक देवता; वि० संस्कृत परिषद् दिल्ली के कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज करोलबाग तथा लारेन्स रोड के प्रधान एवं सक्रिय कार्यकर्ता, पठन-पाठन तथा आर्यसमाज के कार्यकलापों में विशेष अभिरुचि। प० ए-१/२६५, लारेंस रोड, दिल्ली-३५।

सम्वत् २००० (सन् १९४४)

अमरसिंह विद्यालंकार (नटवरलाल शाह)

ज० १८ अक्टूबर १९२०, मोहरणेल (खेड़ा); पि० श्री छगनलालशाह; कार्य: अहमदाबाद में राशनिंग ऑफिस में कार्य, संप्रति तंबाकू की खेती में व्यस्त; र० कैसे लिखें?; वि०सुयोग्य सामाजिक कार्यकर्ता, आर्यसमाज के सक्रिय नेता, गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति के चिन्तक, महोरणेल गांव के सरपंच, नडीयाद तालुका पंचायत में शिक्षा-समिति के अध्यक्ष, ईस्ट अफ्रीकन ऐसोसिएशन के संस्थापक मंत्री, राष्ट्र जागरण के आजीवन सदस्य, खेड़ा जिला फेडरेशन के सदस्य, वासुदी वाला हाईस्कूल के मानद मंत्री, ज्योतिष में रुचि, बड़े विनोदी स्वभाव के और अभिनयपटु। प० श्री नटवरलाल शाह, कंसारा बाजार, कडवा सवाकी पोल नडीयाद (खेड़ा), गुजरात।

ओम्प्रकाश आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० झंग (पाकिस्तान); पि० श्री रामलाल; कार्य: कुछ समय झंग में, फिर जालन्धर और हैदराबाद में स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० स्नातक बनने के बाद रायबरेली के सिविल सर्जन के साथ नेत्र-चिकित्सा पर एक बृहद् पुस्तक की रचना, बड़े सेवाभावी, मिलनसार एवं मृदुभाषी, सफल वैद्य।

जगदीश आयुर्वेदालंकार

ज० लायलपुर (पाकिस्तान); पि० श्री शादीराम; कार्य: 'आर्य, साप्ताहिक के उप-संपादक, गुरुदत्त भवन लाहौर के वैदिक पुस्तकालय के कार्यवाहक अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश सचिवालय (लखनऊ) में स्क्रूटिनाइजर, संप्रति पंजाब के अंग्रेजी दैनिक 'ट्रिब्यून' में मुख्य सहायक संपादक; वि० कुशल पत्रकार, लेखक एवं वक्ता, सफल प्रबन्धक, स्वाध्यायप्रिय, अध्यवसायी, छात्रकाल में आयुर्वेद परिषद् के मंत्री। प० श्री जगदीश मिश्र शर्मा, मकान नं० ५४, सेक्टर ११ ए, चंडीगढ़।

दयानन्द आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० मुलतान शहर; पि० श्री खुशीराम; स्नातक होने के कुछ वर्ष बाद ही दिवगत।

धर्मचन्द आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० डेरा नवाब (बहावलपुर), पि० श्री अर्जुनदास; कार्य: सिंध में निजी व्यवसाय करते थे; वि० हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, स्नातक होने के एक वर्ष बाद ही दिवंगत।

नरेन्द्रदेव आयुर्वेदालंकार

ज० खडाणा (खेड़ा); पि० श्री अमथाभाई मनोहर भाई; कार्य : अपने वतन में दंत-चिकित्सक के रूप में स्वतंत्र चिकित्सा-कार्य; वि० मिलनसार, सेवाभावी, सफल चिकित्सक, गुरुकुल शिक्षा के प्रति विशेष अनुराग। प० सर्वोदय डिस्पेन्सरी ऐण्ड डेन्टल क्लिनिक, स्वामी नारायण चौक, मु० पो० धर्मज, ता० पेटलाद (खेड़ा), गुजरात।

प्रकाशचन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० वस्तीगुजां (जालन्धर); पि० श्री अनन्तराम; कार्य : अपने जन्म स्थान में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; वि० सफल वैद्य, बड़े सेवाभावी, आयुर्वेद-चिकित्सा में विशेष अभिरुचि। प० वस्तीगुजां (जालन्धर)।

मनोहरलाल विद्यालंकार

ज० २२ अगस्त १९२२, बमाल (पटियाला); पि० श्री दीनानाथ चौधरी; शि० शास्त्री (पंजाब), एम० ए० हिन्दी-संस्कृत (दिल्ली), पीएच० डी० संस्कृत (दिल्ली)—'नैषधे काव्य-वैचित्र्यं दर्शन-वादाश्च'; कार्य : देशबन्धु कालेज दिल्ली में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष; र० संस्कृत माधुरी, संस्कृत गौरवम्, संस्कृत गद्य मंजरी, संस्कृत सुषमा, काव्य सरिता, काव्य कुंज आदि; वि० विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में संस्कृत-हिन्दी में लेख प्रकाशित, आर्य-समाज व दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण योगदान, देशबन्धु कालेज की संस्कृत परिषद् के परामर्शदाता, 'देश' पत्रिका के संपादक, हिन्दी प्रचार मंडल दिल्ली के सक्रिय सदस्य, विद्यालंकार परीक्षा में सर्वप्रथम रहने के कारण स्वर्णपदक और रजत-पदक प्राप्त, संस्कृत एम० ए० में सर्वप्रथम, अच्छे लेखक, अध्ययन-अध्यापन में विशेष अभिरुचि। प० १६/३ काल-काजी, नई दिल्ली–१९।
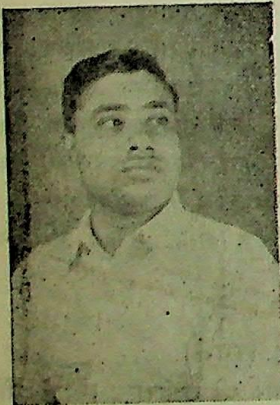
महेन्द्रसिंह आयुर्वेदालंकार

ज० बद्रीपुर (देहरादून); पि० श्री नैनसिंह; शि० प्राकृतिक चिकित्सा में एन०डी० (लखनऊ); कार्य : स्वतंत्र व्यवसाय; वि० हॉकी और वालीबाल के अच्छे खिलाड़ी। प० एफ-९ रेसकोर्स, देहरादून।

रमेशचन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० १९२०, गदिम (बस्तर); पि० श्री दुर्गाप्रसाद अवस्थी; शि० साहित्यरत्न (प्रयाग), एम० ए० संस्कृत-हिन्दी (आगरा); कार्य : लालगंज (रायबरेली) में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य (१९४९-५७), संप्रति १९५७ से जगदलपुर में स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० छात्रकाल में हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, तैराकी का शौक, पांचवी श्रेणी में पढ़ते हुए गढ़मुक्तेश्वर के मेले पर आयोजित अखिल भारतीय तैराकी प्रतियोगिता में पांचवां स्थान प्राप्त, व्यायाम प्रिय, स्नातक परीक्षा में 'क्षय रोग' पर निबन्ध लिखने पर प्रतिष्ठित स्नातक, लालगंज की टाउन कमेटी के १० वर्ष तक कार्यवाहक अध्यक्ष, जगदलपुर में भारतीय जनसंघ के कई वर्ष तक प्रधान, जगदलपुर में आर्यसमाज की स्थापना और उसकी गतिविधियों में सक्रिय योगदान। प० महारानी हॉस्पिटल रोड, जगदलपुर (बस्तर), म० प्र०।

विश्वनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० ३ सितम्बर १९२१, डेराईस्माइलखां; पि० श्री रामदास आहूजा; कार्य : करनाल में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० सार्वजनिक कार्यों और जनसेवा में विशेष अभिरुचि। प० एल–२५२, मॉडल टाउन, करनाल (हरियाणा)।

विश्वमूर्ति आयुर्वेदालंकार

ज० नेउली (एटा); पि० श्री रामचरण वरियार; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य । प० नेउली (एटा)।

वेदरत्न वेदालंकार

ज० कलकत्ता; पि० श्री छज्जूराम आर्य; कार्य : कलकत्ता में स्वतन्त्र व्यवसाय, आगरा इंडस्ट्रियल ऑफ उषा सेल्स में डिविजनल सेल्स मैनेजर संप्रति लखनऊ में कार्यरत; वि० अच्छे वक्ता, सुलेखक ।

सच्चिदानन्द (रजनीश) विद्यालंकार

ज० २२ अगस्त १९२३, पटना; पि० श्री रामावतार प्रसाद; कार्य : पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक, संप्रति पटना के 'प्रदीप' दैनिक के उपसंपादक; वि० १९४६ में नोआखाली (पू० बंगाल) में आर्यसमाज रिलीफ सोसाइटी के संयोजक के रूप में कार्य, आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान,सफल पत्रकार एवं सुलेखक, ओजस्वी वक्ता, सार्वजनिक कार्यों में रुचि । प० महेन्द्रू, पटना–६ ।

सत्यदेव आयुर्वेदालंकार

ज० शौशहरा थनवां (अमृतसर); पि० श्री ठाकुरदास; कार्य : पहले सनातन धर्म आयुर्वेद कालेज लाहौर और विभाजन के बाद सनातन धर्म आयुर्वेद कालेज अमृतसर में प्रोफेसर, संप्रति चंडीगढ़ में पंजाब के आयुर्वेद-चिकित्सा के सहायक निदेशक; वि० आयुर्वेद के पारंगत विद्वान्, प्रबन्धपटु, आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता, सार्वजनिक कार्यों में विशेष अभिरुचि । प० मकान नं० ५०५, सेक्टर १५ ए, चंडीगढ़ ।

सत्यप्रकाश वेदालंकार

ज० फरीदपुर (बरेली); पि० श्री भगवतीशरण; शि० एम० ए० हिन्दी (आगरा); कार्य : पहले गुरुकुल कुरुक्षेत्र, फिर फरीदपुर के इन्टर कालेज में अध्यापक, संप्रति तिलहर के जे०पी०इन्टर कालेज में हिन्दी के प्रवक्ता । प०पो० तिलहर, (शाहजहांनपुर) ।

सहदेव वेदालंकार (चक्रवर्ती)

ज० शकरगढ़; पि० श्री रामरखामल; शि० एम०ए०; कार्य : कुछ समय जम्मू तवी में अध्यापन, दिल्ली में दैनिक पत्र के संपादकीय विभाग में कार्य, संप्रति लुधियाना के आर्य कालेज में हिन्दी विभाग में अध्यापन; वि० अपने समय के अच्छे वक्ता, अनेक वादविवाद प्रतियोगिताओं में गुरुकुल के प्रतिनिधि के रूप में विजयी होकर विजयोपहार प्राप्त । प० आर्य कालेज, लुधियाना ।

सहदेव वेदालंकार

ज० भुनेर (मालेरकोटला), पि० श्री माधवराम शर्मा; शि० एम० ए० हिन्दी, भाषाविज्ञान (कुरुक्षेत्र); कार्य : गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्यापक, संप्रति कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में कार्य; वि०ज्योतिष के शौकीन, गभीर चिन्तक, 'संत' उपनाम से विख्यात, अपने समय के सुयोग्य छात्र, अध्ययन-प्रिय, अध्यवसायी । प० द्वारा विद्याविहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र, (हरियाणा) ।

संवत् २००१ (सन् १९४५)

कृष्णकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० १० फरवरी १९२५, मुरादाबाद; पि० श्री भूषण शरण; शि० एम० ए० संस्कृत (आगरा), साहित्याचार्य (वाराणसी), पीएच० डी० संस्कृत (आगरा)— 'पं० अम्बिकादत्त व्यास एक अध्ययन; कार्य : मुरादाबाद में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय, गुरुकुल काँगड़ी आयुर्वेद महाविद्यालय में प्रवक्ता, सनातन धर्म कालेज मुजफ्फरनगर में संस्कृत के प्रवक्ता (१९६२-६४), उत्तर प्रदेश के विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष (१९६४ से), इस समय बिड़ला संघटक कालेज गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर में संस्कृत विभागाध्यक्ष; र० ऋक् सूक्तसुधाकर, ऋक्सूक्तसंग्रह, वैदिक साहित्य का इतिहास, अलंकारशास्त्र का इतिहास, भारतीय संस्कृति के आधार तत्त्व, पं० अम्बिकादत्त व्यास : एक अध्ययन, ध्वन्यालोक

व्याख्या, प्राचीन कथाएं, रघुवंश टीका, हर्षचरित टीका, किरातार्जुनीयम् टीका, अभिज्ञानशाकुन्तलम् टीका; वि० हॉकी व बैडमिंटन का शौक, विद्वद् गोष्ठियों के आयोजन में विशेष रुचि, छात्र जीवन में आयुर्वेद परिषद् के मंत्री, आर्यसमाज मुरादाबाद और जिला उपप्रतिनिधि सभा में अनेक वर्षों तक मंत्री, कुमायूं और गढ़वाल विश्वविद्यालय की शिक्षासमितियों के सदस्य । प० बिड़ला संघटक कॉलिज, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल) ।

जगत्प्रिय वेदालंकार

ज० २८ मई १९२३, सोलन (हि० प्र०); पि० श्री दीनानाथ; शि० साहित्यरत्न (प्रयाग), एम० ए० संस्कृत (आगरा), आई० डी० जी० ई० (बम्बई); कार्य: शिमला में स्वतंत्र अध्यापन एवं चित्रकला व्यवसाय (१९४६-५५), बरेली में 'स्नातक चित्रशाला' के नाम से पेंटिंग-व्यवसाय(१९५६-५९), पंजाब विश्वविद्यालय पुस्तकालय में कार्य (१९६०-६१), पंजाब-हरियाणा के भाषाविभाग में अनुवादक (१९६१-६९), विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में प्राध्यापक (१९७० से), संप्रति राजकीय नेहरू महाविद्यालय, झज्जर में संस्कृत प्राध्यापक; वि० विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, आर्यसमाज तथा राष्ट्रीय गतिविधियों में सक्रिय भाग, वेद के स्वाध्याय, आत्मानुसंधान तथा चित्रकला में विशेष अभिरुचि । प० प्राध्यापक संस्कृत, राजकीय नेहरू महाविद्यालय, झज्जर (रोहतक), हरियाणा ।

जयदेव विद्यालंकार

ज० १७ जनवरी १९२५, जोधपुर; पि०श्री शिवजीराम; शि० एम० ए० संस्कृत (आगरा), पीएच० डी० संस्कृत (लन्दन)-'संस्कृत में प्रतीक साहित्य के विकास का अध्ययन'; कार्य : संपादन तथा सांस्कृतिक कार्य (१९५४-५८), पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ में संस्कृत विभाग में प्रवक्ता, संप्रति इसी विभाग में रीडर; र० आठ ग्रन्थ एवं १५ शोधपत्र प्रकाशित; वि० या० लंदन व ट्रिनीडाड; वि० वैदिक साहित्य, भारतीय दर्शन, भाषाविज्ञान में विशेष रुचि, पंजाब विश्वविद्यालय की लैंग्वेजेज़-फैकल्टी, बोर्ड ऑफ स्टडीज़ इन संस्कृत एवं रिसर्च डिग्री कमेटी के सदस्य, ऑल इंडिया ऑरियन्टल कांफ्रेंस के सदस्य, वैस्ट इंडीज के ट्रिनीडाड देश में भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए भारत सरकार के अधिकारी के रूप में कार्य, शैक्षणिक और सांस्कृतिक कार्यों में विशेष अभिरुचि, अच्छे लेखक, विद्वान्, मधुरभाषी, मिलनसार, लोकप्रिय शिक्षक, सुवक्ता । प० ई-१७, सेक्टर १४, चंडीगढ़ ।
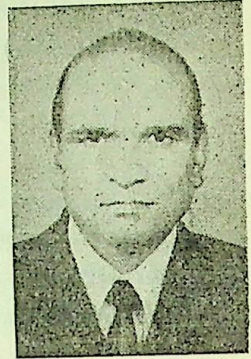
निरूपण विद्यालंकार

ज० १० जून १९२४, गुढ़ा (मैनपुरी); पि० चौधरी बाबूसिंह जी; शि० एम० ए० संस्कृत-हिन्दी (आगरा), साहित्यरत्न (प्रयाग), शास्त्री (वाराणसी), पीएच० डी० संस्कृत (आगरा)— 'प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्र साहित्य में शूद्रों की स्थिति'; कार्य : श्रीकृष्ण इन्टर कालिज बदायूं में हिन्दी-संस्कृत के प्रवक्ता(१९५०-५४), डी० ए० वी० कालिज अजमेर में हिन्दी-संस्कृत के प्रवक्ता (१९५४-५५), डी० ए० वी० कालिज जालन्धर में हिन्दी के प्रवक्ता (१९५५-५६), मेरठ कालिज में संस्कृत के रीडर (१९५६ से); र० अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्, काव्यदीपिका, साहित्यदर्पणः, प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्र साहित्य में शूद्रों की स्थिति (उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत); वि० आर्यसमाज सदर, मेरठ के आर्यसमाज, अंतरंग सदस्य एवं प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के अंतरंग सदस्य कई वर्षों से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की विद्यासभा व सीनेट के सदस्य, आगरा-मेरठ-कानपुर विश्वविद्यालयों की शोध समितियों के सदस्य, 'मेरठ विश्वविद्यालय संस्कृत अध्यापक परिषद्' के संस्थागत मंत्री,
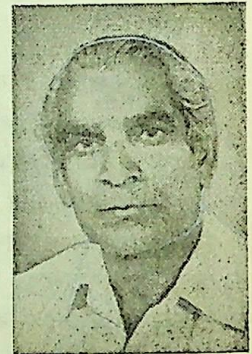
अखिल भारतीय स्नातक मंडल के कई वर्षों तक मंत्री, हॉकी व वालीवाल के अच्छे खिलाड़ी. आर्यसमाज व गुरुकुलों की प्रगति में विशेष रुचि व सक्रिय योगदान। प० ७० पर्ण-कुटी, नेहरू रोड, मेरठ,

रोहिताश्व वेदालंकार

ज० बड़े सीपत (बिलासपुर); पि० श्री रामदयाल मालगुजार; शि० सीनियर कैम्ब्रिज, एम० ए० राजनीति-शास्त्र (आगरा); वि० विनोदप्रिय, गद्य व व्यग्य-लेखन में पटु।

विश्वमित्र आयुर्वेदालंकार

ज० गुजरांवाला; पि० श्री जविन्दामल; कार्य: पहले श्रद्धानन्द सेवाश्रम गुरुकुल कांगड़ी में गृह चिकित्सक, फिर किसी देहात में स्वतंत्र चिकित्साकार्य, जालन्धर में कैमिस्ट व ड्रगिस्ट का व्यवसाय।

वेदप्रकाश वेदालंकार

ज० जालन्धर; पि० श्री बाबूराम खोसला; कार्य: कलकत्ता में सेवा-कार्य; वि० १९४२ में स्वतंत्रता-आंदोलन के कारण जेलयात्रा। प० १८ सरनामैया रोड, अम्हेर स्ट्रीट, कलकत्ता।

वेदभूषण आयुर्वेदालंकार

पि० श्री दुर्गाप्रसाद; कार्य: मुजफ्फरनगर जिले में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; वि० हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, कुशल चिकित्सक। प० पो० बरला (मुजफ्फरनगर)।

श्रवणकुमार विद्यालंकार

ज० देसरी (विहार); पि० श्री रघुनन्दनप्रसाद; कार्य: निजी व्यवसाय; वि० १९४२ में राष्ट्रीय आंदोलनों के कारण जेलयात्रा। प० पो० देसरी, (मुजफ्फरपुर), विहार।

सत्यभूषण वेदालंकार

ज० ८ सितम्बर १९२३, जामपुर (डेरागाजीखां); पि० श्री साधुराम; शि० एम० ए० हिन्दी-संस्कृत (आगरा); कार्य: गुरुकुल मुलतान, डी० ए० वी० इन्टर कालेज आगरा, कोइटा डी० ए० वी० मॉडल हायर सैकंड्री स्कूल निजामुद्दीन (दिल्ली) में अध्यापन; र० क्या वेद में इतिहास है, वैदिक धर्मशिक्षा (८ भाग), स्वामी दयानन्द, लाला लाजपतराय, झांसी की रानी, महाराणा--प्रताप, लोकमान्य तिलक, निबन्ध चंद्रिका, व्यापारिक पत्र; वि० आर्यसमाज के कुशल उपदेशक, प्रचारक एवं पुरोहित, प्राच्य विद्या परिषद्, दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सक्रिय सदस्य, कविता, संगीत व पुस्तक-लेखन में विशेष अभिरुचि, हिन्दी व संस्कृत साहित्य के प्रति अनुराग। प० एफ-२९ ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-१६।

संवत् २००२ (सन् १९४६)

अर्जुनदेव आयुर्वेदालंकार

ज० १२ अप्रैल १९२७, रावलपिण्डी; पि० श्री मिठनलाल कपूर; कार्य: अम्बाला में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य, एक वर्ष उत्तरप्रदेश शासन के राजकीय चिकित्सालयों सेवा-कार्य, पाकबड़ा (मुरादाबाद) में चिकित्सा कार्य, संप्रति १९५३ से कानपुर में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय योगदान, छात्रावस्था में अच्छे खिलाड़ी, राजनीतिक कार्य में भाग लेकर जेलयात्रा, साहित्य एवं काव्य-रचना-प्रेमी। प० ६, श्री कृष्ण भवन, हरबंस मुहाल, कानपुर।

अमरनाथ आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० मिशीन (बिलोचिस्तान); पि० श्री बहादुरचन्द्र; कार्य: चिकित्सा कार्य व व्यापार करते थे; वि० छात्र-

जीवन में आयुर्वेद-परिषद् के मंत्री, अच्छे खिलाड़ी, सेवा-भावी। निधन—पाकिस्तान के दंगों में कत्ल कर दिए गए।

ओमप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० ५ दिसम्बर १९२३, दलवाड़ी (कांगड़ा); **पि०** श्री हरिराम सूद; **कार्य :** स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय, कई वर्ष दयानन्द चैरिटेबल हॉस्पिटल होशियारपुर में चिकित्सा-धिकारी, संप्रति होशियारपुर में स्वतन्त्र-चिकित्सा कार्य; **वि०** आर्यसमाज के कार्यकलापों में सक्रिय योगदान, आर्यसमाज होशियारपुर के उप-प्रधान, लिटरेरी सर्कल तथा हिन्दी साहित्य परिषद् होशियारपुर की कार्यकारिणी के सदस्य, शहर कांग्रेस कमेटी होशियारपुर के सक्रिय सदस्य, कविता, संगीत व चित्रकला में विशेष अभिरुचि। **प०** लाजपतराय मार्ग मालरोड, होशियारपुर (पंजाब)।

चन्द्रकेतु आयुर्वेदालंकार

ज० १९ फरवरी १९२२, भड़ौच (गुजरात); **पि०** नारणजी भाई काका भाई देसाई; **कार्य :** राजकीय चिकित्सालयों में चिकित्सक, केन्द्रस्थ-गुजरात राज्य द्वारा संचालित कामदार राज्य बीमा योजना अहमदाबाद में आयुर्वेद-चिकित्सक; **वि०** सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय योग-दान, आयुर्वेद विषयक अनुसंधान में रुचि, १९४२ में राष्ट्रीय आंदोलन के सिलसिले में जेलयात्रा। **प०** श्री सी० एन० देसाई, इंचार्ज आयुर्वेद, डी-३३ ई० एस० आई० स्कीम, खोखरा, वाया अहमदाबाद।

जयकृष्ण विद्यालंकार

ज० १६ अक्टूबर १९२३, शेरकोट (बिजनौर); **पि०** श्री कन्हैयासिंह; **शि०** एम० ए० हिन्दी-संस्कृत (आगरा), एल० टी० (शिक्षा विभाग, उ०प्र०), पीएच० डी० हिन्दी (आगरा)-'हिन्दी की व्याकर-णिक कोटियों का आलोचना त्मक अध्ययन'; **कार्य:** पहले केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा में प्राध्यापक, संप्रति रीडर; **वि०** विभिन्न विषयों पर लग-भग १० शोधपत्र 'गवेषणा' में प्रकाशित, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की त्रैमासिक शोध पत्रिका 'गवेषणा' के सपादक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की पाठ्यक्रम समिति के सदस्य, भाषाविज्ञान के अध्ययन में विशेष अभिरुचि, बारहवीं कक्षा में पढ़ते हुए राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेकर एक वर्ष की जेलयात्रा, अच्छे वक्ता और कवि, सार्वजनिक कार्यों में सोत्साह भाग। **प०** २४/८६ ए दरगाह रोड, वजीरपुरा, आगरा-३।

जयदेव आयुर्वेदालंकार

ज० अम्बाला; **पि०** श्री रामस्वरूप; **कार्य :** पहले स्वतंत्र चिकित्सा कार्य, तदन्तर अम्बाला में औषध-विक्री-व्यवसाय, कई बड़ी-बड़ी कम्पनियों के प्रमुख प्रतिनिधि; **वि०** सार्वजनिक कार्यों में विशेष रुचि, अव्यवसायी, स्वाध्यायप्रिय, मधुरभाषी, मिलनसार, परदुःख कातर, कुशल व्यवसायी। **प०** आर्यनगर, जगाधरी रोड, अम्बाला छावनी।

जितेन्द्र विद्यालंकार

ज० सूरत; **पि०** श्री दिनमणिलाल रणछोड़दास; **कार्य :** सूरत में निजी व्यवसाय। **प०** द्वारा श्री दिनेश त्रिवेदी, सोनी फलिया, सूरत (गुजरात)।

धर्मदेव आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० क्वेटा; **पि०** श्री सोहनलाल; **कार्य :** लखनऊ में स्वतंत्र व्यवसाय करते थे।

प्रताप विद्यालंकार

ज० आश्विन शुक्ला दशमी १९८० वि०, मिर्जापुर; **पि०** श्री बिहारीलाल; **कार्य :** दिल्ली में समाचारपत्रों के संपादकीय विभाग में कार्य, रीवां स्टेट में मुख्याध्यापक, मिर्जापुर में औषधियों के विक्रेता; **र०** ऋतु-संहार, मेघदूत (हिन्दी अनुवाद); एक रूसी उपन्यास का हिन्दी रूपांतर; **वि०** दैनिक, साप्ताहिक व मासिक पत्र-पत्रिकाओं में लेख

व कविताएं प्रकाशित, साहित्यकार परिषद् मिर्जापुर के संस्थापक सदस्य, भारत-रूस सांस्कृतिक समिति के मंत्री, जाने-माने कवि एवं लेखक, कुछ समय तक एक साहित्यिक मासिक 'अभियान' के प्रधान संपादक। प० गणेशगंज मिर्जापुर।

प्रेमचन्द आयुर्वेदालंकार

ज० इटावा, **पि०** श्री चरनीलाल; **शि०** एम० ए० (आगरा); **कार्य** : बिधूना में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; **वि०** निर्धनों की निःशुल्क चिकित्सा, स्थानीय सार्वजनिक कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान, सफल चिकित्सक। **प०** चन्द्र मेडिकल हाल, बिधूना (इटावा)।

ब्रजनन्दन आयुर्वेदालंकार

ज० १२ नवम्बर १९२२, रामनगर (नैनीताल); **पि०** श्री सुन्दरलाल भटनागर; **कार्य** : रामनगर में स्वतंत्र चिकित्सालय का संचालन; **वि०** लायन्स क्लब रामनगर के सदस्य, फोटोग्राफी व पर्यटन में विशेष अभिरुचि–गंगोत्री, गोमुख यमनोत्री, केदारनाथ, पिण्डारी ग्लेशियर आदि और काश्मीर व रामेश्वरम् को छोड़कर शेष सम्पूर्ण भारत का भ्रमण, छात्र-काल में 'सिंह तैराकी' में सदा प्रथम स्थान प्राप्त, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी और अपने समय में दलनायक। **प०** भटनागर क्लिनिक, रामनगर (नैनीताल)।

ब्रह्मदत्त विद्यालंकार

ज० चकिया (बलिया); **पि०** श्री अम्बिकाप्रसाद; **कार्य** : पहले 'जागृति' व 'लोकमत' दैनिक पत्रों के संपादकीय विभाग में कार्य, संप्रति वर्षों से नवभारत टाइम्स के उपसंपादक; **वि०** कुशल लेखक, विभिन्न योजना-परियोजनाओं के बारे में सूचनाप्रद एवं रोचक लेख व रिपोर्ट प्रकाशित, अत्यन्त अध्यवसायी एवं सफल पत्रकार, उत्साही एवं कर्मठ कार्यकर्ता, मिलनसार, अच्छे समालोचक। **प०** बी १६/२ कृष्णनगर, दिल्ली–३१।

ब्रह्मदेव आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० आरा (बिहार); **पि०** श्री मुन्नीलाल; **कार्य** : आरा में निजी औषधालय का संचालन; **वि०** गुरुकुलीय छात्र-जीवन में कुशल खिलाड़ी एवं क्रीड़ामंत्री। **निधन** १९४७।

योगेन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० कामोकी मण्डी (गुजरांवाला); **पि०** श्री बागमल आर्य; **शि०** आयुर्वेदाचार्य (कलकत्ता); **कार्य** : पहले पानीपत में आयुर्वेद चिकित्सा का स्वतंत्र व्यवसाय, कुछ समय मस्तनाथ आयुर्वेदिक डिग्री कालेज अस्थलबोहर में कार्य, स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; **वि०** स्वतंत्रता-आंदोलन में भाग लेने पर जेलयात्रा, हिस्टीरिया, अर्श, वृश्चिक दंश तथा स्थानीय शोथ की चिकित्सा पर अनुसंधान, पूर्णतः धर्मार्थ चिकित्सा के प्रति अभिरुचि, कुछ ऐसे योगों का अन्वेषण जो रोगी से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में धनादि की प्राप्ति न करने का वचन देने पर किसी भी विश्वास-पात्र व्यक्ति को बता देने का संकल्प। **प०** खैल बाजार, पानीपत।

शचीन्द्रमोहन (जगदीशचन्द्रसिंह) आयुर्वेदालंकार

ज० ९ मार्च १९२१, शाहपुर (शाहजहांपुर); **पि०** श्री ठा० साधुसिंह; **कार्य** : जलालाबाद में स्वतंत्र चिकित्सा व्यवसाय; **वि०** आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, आर्यसमाज जलालाबाद तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा शाहजहांपुर के प्रधान कांग्रेस के सम्मानित सदस्य एवं देशसेवा के लिए कृतसंकल्प। **प०** धर्म भवन, बरेली–इटावा रोड, जलालाबाद (शाहजहांपुर)।
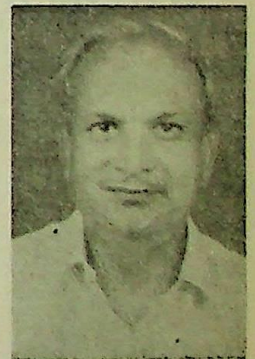
श्यामसुन्दर आयुर्वेदालंकार

ज० ६ मई १९२४, स्यालकोट; **पि०** श्री हकूमतराय (स्वामी कृष्णतीर्थ); **कार्य** : प्रारंभ में मेरठ जिले में स्वतंत्र चिकित्सा-कार्य, फिर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में महोपदेशक (१९५६-७१), वेद-प्रचार के अध्यक्ष (१९६८-७१)

सिंगापुर में पुरोहित (आचार्य) पद पर कार्य (१९७२), नैरोबी आर्यसमाज में पुरोहित एवं प्रचारक (१९७३ से); वि० सदा से संगीत में रुचि, अच्छे व्याख्याता। प० बाक्स नं० ४०२४३, नैरोबी (केनिया)।

सत्यदेव विद्यालंकार (स्व०)

ज० जामपुर; पि० श्री शोभराज; कार्य : मद्रास में निजी व्यवसाय; वि० अच्छे वक्ता व व्यवस्थापटु थे, १९४२ के राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने पर जेलयात्रा।

सत्यमूर्ति आयुर्वेदालंकार

ज० काटरू (आ० प्र०); पि० श्री एन० लक्ष्मी नरसू; कार्य : पहले अम्बाला में औषध-विक्रेता एवं चिकित्सक, फिर चरथावल में स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० लोकप्रिय एवं कुशल चिकित्सक, आचार्य अभयदेव जी द्वारा स्थापित 'अरविन्द निकेतन' चरथावल में कार्य, श्री अरविन्द के भक्त, मधुरभाषी, मिलनसार, सेवाभावी। प० चरथावल (मुजफ्फरनगर)।

सत्यपाल आयुर्वेदालंकार

ज० ३ अप्रैल १९२३, डेरा गाजीखां (पाकिस्तान); पि० श्री वासुदेव विद्यालंकार; कार्य : पुरकाजी में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; वि० सगीत व कुश्ती के प्रेमी, सफल चिकित्सक। प० पुरकाजी (मुजफ्फरनगर)।

हरिकृष्ण वेदालंकार

ज० झंग (मघ्याना); पि० श्री राजाराम; कार्य : श्री आचार्य अभयदेव जी के साथ कार्य (१९४६-६१), १९६२ से श्री अरविन्दाश्रम पाण्डिचेरी में साधक के रूप में सेवा। प० श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी-२ (द० भारत)।
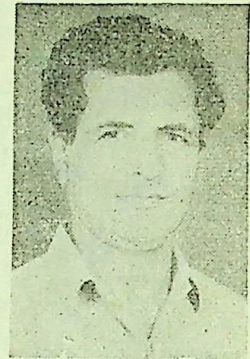
संवत् २००३ (सन् १९४७)

ओम्प्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० ११ दिसम्बर १९२३, दिल्ली; पि० श्री ऋषिकेश; कार्य : गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे मुख्याध्यापक एवं चिकित्सक, संप्रति मथुरा में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; वि० शांत स्वभाव के सेवाभावी, १९४२ में राष्ट्रीय आंदोलन के कारण जेलयात्रा। प० डा० ओम्प्रकाश गुप्त, ४२२-सदर बाजार, मथुरा (उ० प्र०)।

ओम्प्रकाश आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० दलवाल (झेलम); पि० श्री पृथ्वीचन्द्र; कार्य : जालन्धर में स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय करते थे; वि० अपने समय में हॉकी के अच्छे खिलाड़ी।

कुलभूषण आयुर्वेदालंकार

ज० १६ जून १९२४, बलरामपुर (ढेंकानाल स्टेट); पि० श्री रामजी टांक; कार्य : औरंगाबाद में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; वि० गुरुकुल में हॉकी के कुशल खिलाड़ी और दलनायक, लेखन व काव्यरचना में विशेष अभिरुचि, औरंगाबाद के श्री कच्छ गुर्जर क्षत्रिय समाज के मंत्री एवं कार्यकारिणी समिति के सदस्य एवं सक्रिय कार्यकर्ता प० आरोग्य सदन, सुपारी हनुमान रोड, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)।

जगदीशचन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० डेरागाजीखां; पि० श्री भवानीदास; कार्य : शाहपुर

में स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० अपने समय में गुरुकुलीय आयुर्वेद-परिषद् के मंत्री, अच्छे वक्ता, पटना विश्वविद्यालय की जयन्ती पर आयोजित वादविवाद प्रतियोगिता में गुरुकुल के प्रतिनिधि के रूप में भाग लेकर विजयोपहार जीता, सफल एवं सुयोग्य चिकित्सक, सार्वजनिक कार्यों में रुचि। प० शाहपुर, मुजफ्फरनगर।

जयदेव आयुर्वेदालंकार

ज० गुरमानी (मुजफ़्फ़रगढ़); पि० श्री ऊधोदास नागपाल; कार्य: स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय।

यशपाल वेदालंकार (स्व०)

ज० दिल्ली; पि० श्री मुकुन्दीलाल; कार्य: पहले 'नवभारत' दैनिक के संपादकीय विभाग में कार्य, फिर दैनिक हिन्दुस्तान में उपसंपादक; वि० अच्छे लेखक, कुशल पत्रकार, स्वाध्याय प्रेमी, ओजस्वी वक्ता, पटना विश्वविद्यालय की जयन्ती पर आयोजित वादविवाद प्रतियोगिता में भाग लेकर चलविजयोपहार प्राप्त।

रामचन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० मलकवाल (पाकिस्तान); पि० श्री सतराम; कार्य: पहले गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में और फिर गुरुकुल कुरुक्षेत्र में चिकित्सक, संप्रति थानेसर में स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० अपने समय में हॉकी व वालीबाल के अच्छे खिलाड़ी, सेवाभावी एवं सफल चिकित्सक। प० चोपड़ा मेडिकल हाल, निकट कृष्णा गेट, थानेसर, करनाल।

रामदेव वेदालंकार

ज० जयनगर (बिहार); पि० श्री अनहदसिंह; कार्य: झरिया में अध्यापन, बिहार में विद्यालय-निरीक्षक के पद पर कार्य; वि० पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित, प्रबन्धपटु, स्वाध्यायप्रेमी। प० जयनगर (हजारीबाग)।

वासुदेव आयुर्वेदालंकार

ज० धौलपुर; पि० श्री भीकराम रामदयाल; कार्य: धौलपुर में स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० कुशल चिकित्सक, अपने समय के अच्छे खिलाड़ी, छात्रजीवन में क्रीड़ामंत्री।

विद्यारत्न आयुर्वेदालंकार

ज० १ अक्टूबर १९२४, रायकोट (लुधियाना); पि० श्री प्यारेलाल सिंह; शि० सी० एच० पी० (लखनऊ), एम० ए० संस्कृत (गुरुकुल); कार्य: मुजफ्फरनगर में स्वतंत्र चिकित्सा कार्य, गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वेद महाविद्यालय में प्राध्यापक, संप्रति महिला आयुर्वेदिक कालेज खानपुर में शरीर रचना विज्ञान विभाग में प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष; वि० होम्योपैथी में विशेष अभिरुचि, १९४२ में 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भाग लेने पर जेलयात्रा। प० महिला आयुर्वेद महाविद्यालय, कन्या गुरुकुल, खानपुर कलां (सोनीपत)।

वेदप्रकाश विद्यालंकार

ज० वैरा (बुलन्दशहर); पि० श्री बालमुकुन्द; शि० एम० ए० (आगरा); कार्य: गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शिक्षक, हरिराम आर्य हाईस्कूल मायापुर (हरिद्वार) में शिक्षक, संप्रति राजकीय इन्टर कालेज मुजफ्फरनगर में हिन्दी के प्रवक्ता; वि० कुशल एवं सुयोग्य शिक्षक, छात्रजीवन में गुरुकुल में कुलमंत्री, सेवाभावी, स्वाध्यायप्रिय एवं अध्यवसायी। प० १६७ आर्यपुरी, मुजफ़्फ़रनगर।

ज्ञानेन्द्र विद्यालंकार (जी० वी० अलंकार)

पि० श्री बिहारीलाल गुप्त; शि० एम० ए० संस्कृत-हिन्दी (आगरा), इलेक्ट्रोनिक्स में डिप्लोमा (ब्रिटिश इंस्टिट्यूट लंदन); कार्य: कुछ वर्ष हिन्दी व संस्कृत के अध्यापक, संप्रति दिल्ली में साउण्ड रिकार्डिंग तथा स्टीरियो प्रणाली में उपयोगी उपकरणों का निर्माण-कार्य; वि० स्नातक परीक्षा में प्रथम रहने के कारण लब्भूराम नैयड़ स्वर्णपदक प्राप्त, शिल्प व हिन्दी में सर्वप्रथम रहने पर दो

पदक प्राप्त, वाद्यदल के नायक, तैराकी व वनभ्रमण के शौकीन, काशी में आयोजित गीता परीक्षा में १०० रुपए का पुरस्कार प्राप्त, कैरम व ब्रिज खेलने में विशेष दक्ष, आगरा विश्वविद्यालय से फोटोग्राफी में विशेष कुशलता का प्रमाणपत्र प्राप्त, उपकरण-निर्माण में दक्ष। प० १६/बी-११ देवनगर, नई दिल्ली-५।

संवत् २००४ (सन् १९४८)

ईश्वरदत्त विद्यालंकार

ज० ३ जुलाई १९२८, पुण्यभूमि गुरुकुल कांगड़ी; पि० श्री हरिसिंह; शि० एम०ए० हिन्दी (आगरा); कार्य : ज्वालापुर आर्य इन्टर कालेज में हिन्दी-प्रवक्ता; वि० स्नातक परीक्षा में विभिन्न विषयों में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर स्वर्ण एवं रजत पदक प्राप्त, १९४२ के राष्ट्रीय-आंदोलन में भाग लेने पर ६ मास की जेलयात्रा। प० हिन्दी विभाग, आर्य इन्टर कालेज, ज्वालापुर (सहारनपुर)।

कैलाशचन्द्र विद्यालंकार

ज० २९ दिसम्बर १९२६, बिजनौर; पि० श्री कौशलचन्द्र; शि० एम० ए० संस्कृत-हिन्दी (आगरा), पीएच० डी० हिन्दी (आगरा)-'आर्य पूजा पद्धति में पितृ-पूजा की उत्पत्ति और विकास'; कार्य : गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्यापक (१९४८-४९), के० एल० डी० ए० वी० इन्टर कालेज रुड़की में अध्यापक (१९४९-५०), मारवाड़ी इन्टर कालेज कानपुर में अध्यापक (१९५०-५१), आर० जे० पी० आर्य इन्टर कालेज बिजनौर में प्राध्यापक (१९५१-५४), राजकीय डिग्री कालेज मालेरकोटला में प्राध्यापक (१९५४-६७), संप्रति कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के शिक्षण महाविद्यालय में वरिष्ठ प्राध्यापक (१९६७ से); वि० विश्व संस्कृत परिषद् के सदस्य, साहित्यानुशीलन में विशेष अभिरुचि। प० शिक्षण महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

धर्मपाल विद्यालंकार

ज० फिल्लौर; पि० श्री कृपाराम चाननराम; शि० एम० ए० हिन्दी (आगरा); कार्य : पहले राजकीय स्पोर्ट्स कालेज जालन्धर में हिन्दी अध्यापक, संप्रति ज्ञानी करतारसिंह स्मारक राजकीय कालेज टांडा (होशियारपुर) में हिन्दी प्राध्यापक; वि० अपनी जन्मभूमि फिल्लौर में अपने पिता जी की स्मृति में श्री चाननराम आर्य कन्या महाविद्यालय की स्थापना। प० ज्ञानी करतारसिंह राजकीय कालेज, टाण्डा-उडमुड (होशियारपुर)।

रामदेव वेदालंकार

ज० गुहना (करनाल); पि० श्री सन्तराम; कार्य : पहले करनाल जिले में राष्ट्रीय सेवाकार्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्यापक, खादी ग्रामोद्योग में कार्य; वि० १९४२ में स्वतन्त्रता-आंदोलन में भाग लेने के कारण जेलयात्रा, व्यवस्थापटु, सेवाभावी, सार्वजनिक गतिविधियों में विशेष अभिरुचि। प० द्वारा खादी ग्रामोद्योग, डेराबसी (अम्बाला)।

वसन्तकुमार विद्यालंकार

ज० दुर्ग; पि० श्री बजरंग भाई विश्राम जी; कार्य : रायपुर में स्वतन्त्र-व्यवसाय; वि० सन् १९४२ के राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने पर जेलयात्रा, स्वाध्यायप्रेमी। प० द्वारा डॉ० अनन्तकुमार चौहान, नेत्र विशेषज्ञ, चौहान नेत्र चिकित्सालय, दुर्ग (म० प्र०)।

विनयकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० ४ अप्रैल १९२५, जालन्धर; पि० श्री कर्मचन्द्र; शि० शास्त्री बी० ए० (पंजाब), आयुर्वेदवाचस्पति (गुरुकुल); कार्य : शेरकोट में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य, राजकीय आयुर्वेदिक कालेज पटियाला में विकृति विज्ञान विभाग के प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, संप्रति इसी कालेज के प्रधानाचार्य; र० आमवात (पंजाब सरकार तथा मदनमोहनलाल रिसर्च सोसायटी दिल्ली द्वारा पुरस्कृत); वि० अनुसंधान कार्य में रुचि--आमवात रोग

तथा पक्षाघात पर अनुसंधान, आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, पटियाला आर्यसमाज की कार्यकारिणी के सम्मानित सदस्य, सफल एवं योग्य चिकित्सक, अपने समय के हॉकी के अच्छे खिलाड़ी एवं दलनायक। प० प्रिन्सिपल, राजकीय आयुर्वेदिक कालेज, पटियाला (पंजाब)।

शम्भूनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० जम्मू तवी; पि० श्री रामदास तुली; कार्य : शेरकोट में स्वतन्त्र औषधालय का संचालन, गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वेद महाविद्यालय में प्राध्यापक. जम्मू तवी में राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय में प्राध्यापक; वि० संगीत अभिनय एवं काव्य में विशेष अभिरुचि, कुशल चिकित्सक, अपने विषय के सुयोग्य विद्वान्, आयुर्वेदिक अनुसंधान में रुचि। प० १४, छागवान फतू, जम्मू तवी।

सत्यकाम आयुर्वेदालंकार (वर्मा)

ज० रामनवमी १९२६, अम्बाला छावनी; पि० स्व० विद्याधर विद्यालंकार; शि० प्रभाकर, शास्त्री, साहित्यरत्न, साहित्यालंकार, एम० ए० संस्कृत-हिन्दी, पीएच० डी० संस्कृत (वाक्यपदीय में भाषा तात्त्विक विवेचन); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य(१९४८-५४), राजकुमारसिंह आयुर्वेदिक कॉलेज इन्दौर में प्रधानाध्यापक १९५४-५५), दास एन्. दास गुप्ता कॉलेज एवं दिल्ली पब्लिक, कालेज दिल्ली में हिन्दी-संस्कृत के प्रवक्ता (१९५६-५९), दयालसिंह कैम्प कालेज (पंजाब विश्व०) एवं दयालसिंह कॉलेज दिल्ली में प्राध्यापक (१९५९ व ६१), रोम (इटली) के 'इज्मेयो' में संपादन कार्य एवं रोम विश्वविद्यालय में महाभाष्य एवं भारतीय अभिलेखों का अध्यापन (१९६०), दिल्ली विश्वविद्यालय के सांध्यकालीन स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग में प्राध्यापक (१९६१-६४) एव ६६-६९), रुड़की विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की इन्जीनियरी शाखा में भाषाविद् (१९६५-६६), दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में रीडर (१९६९ से); र० आचार्य कृपलानी (१९४९), हीरे मोती (१९५२); संन्यासी : एक अध्ययन (१९५५), गोदान : एक अध्ययन (१९५६), हिन्दी साहित्यानुशीलन (१९६१), हिन्दी का आधुनिक साहित्य १९६१), भाषातत्त्व और वाक्यपदीय (१९६३), महाकवि प्रसाद, महाकवि पन्त, जनक व दिनकर एवं युगकवि तुलसी (१९६४), १५ विविध अनुवाद (१९६५-६७), वाक्यपदीय : ब्रह्मकाण्ड (त्रिभाषी टीकाएं) (१९७०), व्याकरण की दार्शनिक भूमिका (१९७०), संस्कृत व्याकरण का उद्भव और विकास (१९७१), सैद्धांतिक भाषाविज्ञान (अनुवाद) (१९७२), तीन विविध अनुवाद (सग्रहों में) (१९७३-७५), ए कम्पेनियन टु कण्टेम्पोरेरी संस्कृत (संपादन) (१९७३), वेद वाटिका (१९७५), वेदसुमन (१९७५), स्टडीज़ इन इंडोलॉजी (१९७६), तीन उपनिषदों (ईश, केन, कठ) का भाष्य, डिक्शनरीज़ ऑफ वैदिक ग्रामर (पांच खडों में), वैदिक संग्रह, लिंग्विस्टिक एप्रोच् टु भर्तृहरि, वाक्यपदीय, टेक्नीकल टर्म्स ऑफ पाणिनी, भर्तृहरि : शब्द और अर्थ (अंतिम ६ पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं); वि० या० १९६० में रोम तथा यूरोप के विभिन्न नगरों की यात्रा; वि० आल इण्डिया ओरियण्टल कान्फ्रेंस एवं इण्टरनेशनल कांग्रेस ऑफ ओरियण्टलिस्ट्स के सदस्य, रॉयल एशियाटिक सोसायटी लन्दन और ईस्टर्न इन्टीट्यूट ऑफ टोकियो (जापान) के फैलो, आर्यसमाज के विविध कार्यकलापों तथा राष्ट्रीय व श्रमिक आंदोलनों में सक्रिय योगदान, अध्ययन एवं अनुसंधान के प्रति विशेष अभिरुचि। प० ९ ए/६३ वेस्टर्न एक्स एरिया, करोलबाग, नई दिल्ली-५।

सत्यवीर आयुर्वेदालंकार

ज० बरेली; पि० श्री सत्यपाल; कार्य: पहले बरेली में स्वतन्त्र औषधालय का संचालन, संप्रति राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में चिकित्साधिकारी; वि० अभिनय, संगीत आदि में पटु, कुशल चिकित्सक।

संवत् २००५ (सन् १९४९)

कृष्णचन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० दिल्ली; पि० श्री झम्मनलाल; कार्य : पहले दिल्ली में चिकित्सा-कार्य, संप्रति जयपुर में खादी ग्रामोद्योग बोर्ड में कार्यकर्ता; वि० १९४२ में राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने पर जेलयात्रा। प० वैद्य कृष्णचन्द्र आयुर्वेदालंकार, खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, उनियारा बाग, जयपुर।

गुरुदेव वेदालंकार

ज० हावड़ा; पि० श्री मिहिरचन्द्र धीमान; शि० एम० ए० राजनीतिशास्त्र (आगरा); कार्य : स्वतंत्र व्यवसाय; वि० व्यायाम-प्रेमी। प० ११५, बनारस रोड, सलकिया, हावड़ा, कलकत्ता।

चन्द्रकेतु आयुर्वेदालंकार

ज०मेरठ; पि०श्री मुरारीलाल; कार्य : पहले अमरोहा में स्वतंत्र-चिकित्सा-कार्य, संप्रति चरथावल में अरविन्द निकेतन के प्रमुख कार्यकर्ता; वि० छात्रजीवन में अच्छे खिलाड़ी एवं क्रीड़ामन्त्री, राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के कारण १९४२ में जेलयात्रा, कुशल व्यवस्थापक। प० अरविन्द निकेतन, चरथावल (मुजफ्फरनगर)।

यशपाल वेदालंकार

ज० २२ मई १९२८, जामपुर (डेरागाजीखां); पि० श्री जम्नूराम; शि० एम० ए० हिन्दी (आगरा); कार्य : कानपुर में 'नागरिक' साप्ताहिक के उपसंपादक, संप्रति कलकत्ता में व्यापार—सागर सिलाई मशीन के निर्माता व विक्रेता; वि०या० व्यापार हेतु नेपाल यात्रा; वि० आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, पर्यटन में विशेष अभिरुचि, यथाशक्ति 'दुःख तप्तानां प्राणिनाम् आर्तनाशनम्', सुलेखक, अच्छे वक्ता, हिन्दी साहित्य के अनुशीलन में रुचि। प० पाल ब्रदर्स एण्ड कम्पनी, १२२ रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता–७।

राजेश्वरनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० १० सितम्बर १९२७, बिजौली (मेरठ); पि० चौ० विक्रमसिंह; शि० एम० डी० (म्यूनिक), डी० टी० डी० (इटली); कार्य : भवाली टी० बी० सैनेटोरियम में हाउस सर्जन (१९४९-५०), मेरठ में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य (१९५५-५६), इंडोनेशिया में क्षयरोग विशेषज्ञ (१९५६-५७), सुलावेसी प्रांत की राजधानी मकासर में क्षयरोग अधिकारी तथा मेडिकल कालेज मकासर में वक्षरोग के प्राध्यापक (१९५७-६६), संप्रति मेरठ शहर में क्षयरोग विशेषज्ञ के रूप में स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० या० रोम, जर्मनी, इंडोनेशिया; वि० गुरुकुलीय जीवन में व्यायाम, हॉकी तथा वालीबॉल में विशेष रुचि, गुरुकुल उत्सवों पर व्यायाम प्रदर्शन—छाती पर पत्थर रखना, लोहे की जंजीर तोड़ना तथा दो-दो मोटर एक साथ रोकना आदि के प्रदर्शन, एम० डी० में नवीनतम हृदय शल्य चिकित्सा' विषय पर शोधपूर्ण प्रबन्ध प्रस्तुत, इटली सरकार की छात्र-वृत्ति प्राप्त, ख्यातिप्राप्त चिकित्सक, गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय द्वारा चिकित्सा-क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'विद्यामार्तण्ड' से सम्मानित, 'अमेरिकी चेस्ट डिज़ीज़ सोसायटी' के सम्मानित फैलो, इंडोनेशिया में क्षयरोग चिकित्सालय के संस्थापक, इन्डियन मेडिकल एसोशिएशन मेरठ के दो वर्ष सेक्रेटरी एवं अब उपप्रधान, मेरठ की सामाजिक संस्था 'संगीत समाज' के महामन्त्री तथा संगीत महाविद्यालय के सचिव, लायन्स क्लब के प्रधान व डिप्टी डिस्ट्रिक्ट गर्वनर, सेवाभावी, सार्वजनिक कार्यों में विशेष रुचि। प० १७ मिशन कंपाउन्ड, मेरठ।

वेदपाल विद्यालंकार

ज० १ दिसम्बर १९२५, कमालिया (पाकिस्तान); पि० श्री महेन्द्रनाथ विद्यालंकार; शि० एल० टी० (शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश), साहित्यरत्न (प्रयाग); कार्य : गुरुकुल

कुरुक्षेत्र में अध्यापक, अन्य विद्यालयों में अध्यापक, संप्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दिल्ली में अध्यापक । प० १०३६, लक्ष्मीबाई नगर, नई दिल्ली ।

वेदप्रकाश वेदालंकार

ज० गुरुकुल कांगड़ी; पि० श्री भैयालाल; कार्य : विभिन्न चीनी मिलों में मैनूफैक्चरिंग कैमिस्ट,संप्रति महोली (सीतापुर) मिल में कार्यरत; वि० रसायन शास्त्र सम्बन्धी अनुसधान में विशेष अभिरुचि । प० मैनूफैक्चरिंग कैमिस्ट, लक्ष्मी शूगर मिल, पो० महोली (सीतापुर) ।

शंकरदेव वेदालंकार

ज० १९२२, बीदर (कर्नाटक); पि० श्री बालाजीराव; शि० एम० ए० दर्शनशास्त्र (आगरा); कार्य : राजनीति–हैदराबाद स्टेट समाजसेवी मंत्री (१९५२-५६), लोकसभा के सदस्य (१९५७-६२), सर्वोदय एव भूदान-आंदोलन के लिए कार्य, संप्रति लोकसभा-सदस्य (१९७१); र० उल्टी खोपड़ी, माणिक्यम्मा योगिनी, अधिकार याद रख लिये कर्तव्य भूल गये, इंदिरा गांधी समग्र रूप में, क्या ईश्वर है, एक विश्व एक सरकार (सभी रचनाएं हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं में); वि० या० यूरोप, अमेरिका-यात्रा; वि० सर्वोदय, कांग्रेस एवं आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, नैतिक व आध्यात्मिक जागरण के लिये प्रयत्नशील,समाजसेवा शास्त्र एवं आध्यात्मिक प्रभावों के अध्ययन के लिए विदेश-गमन, अच्छे लेखक, ओजस्वी वक्ता, अध्यवसायी, समाज-सेवक,विनोदी स्वभाव के एवं मिलनसार । प० ५६, नॉर्थ एवेन्यू, नई दिल्ली ।
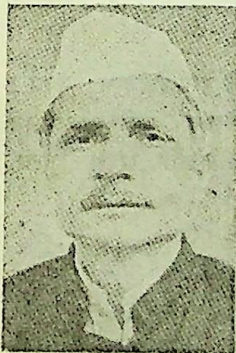
शशिकुमार विद्यालंकार

ज० १६ अप्रैल १९२७,देहरादून; पि०श्री रामनारायण कोठारी; शि० एम० ए० अर्थ-शास्त्र (आगरा), बी० टी० (आगरा); कार्य : अध्यापन–डी० ए० वी० इन्टर कालेज देहरादून में प्रवक्ता;वि०कहानी लेखक में विशेष रुचि, कुछ कहानियां पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित, स्नातक परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त । प० २७ डोभाल वाला, देहरादून ।

सुभाषचन्द्र विद्यालंकार

ज० १५ जनवरी १९२९,मण्डी धनौरा(मुरादाबाद); पि० श्री सागरमल गर्ग; शि० एम० ए० संस्कृत(आगरा), एल-एल० बी० (दिल्ली), डिप्लोमा इन एडवांस्ड रशियन (स्कूल ऑफ फारेन लैंग्वेजेज, दिल्ली); कार्य : 'शिक्षा सुधा' के संपादक(१९४९-५२),सूचना प्रसारण मंत्रालय, आकाशवाणी के समाचार विभाग तथा केन्द्रीय सूचना सेवा में कार्यरत (१९५३ से), संप्रति 'योजना' मासिक में संपादक; वि० गुरुकुलीय जीवन में कुलमंत्री, सुलेखक, व्यवस्थापटु, अर्थशास्त्रीय विषयों में रुचि, कई वर्ष मेरठ कालेज की प्रबन्ध समिति के सदस्य, रघुमल आर्य कन्या महाविद्यालय के अवैतनिक प्रबन्धक, योग एवं अध्यात्म में विशेष अभिरुचि, कुशल पत्रकार । प० डी-६ गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली–४९ ।

संवत् २००६ (सन् १६५०)

अरुणकुमार विद्यालंकार

ज० ३१ दिसम्बर १६२४, क्रुगर्स डोर्प ट्रांसवाल (द० अफ्रीका); **पि०** श्री जीवन जी भगाभाई आर्य; **कार्य:** जोहानिसबर्ग में अध्यापक (१६५२–६१), श्री भारत विद्यामंदिर हिन्दू सेवा समाज पोर्ट इलिजाबेथ में अध्यापक-पुरोहित (१६६३-७६); **वि० या०** वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए रोडिशिया व भारत की यात्रा; **वि०** १६४२-४३ में स्वतंत्रता आंदोलन के सिलसिले में जेल यात्रा, काव्य सामयिक लेखों आदि के लेखन में विशेष अभिरूचि। **प०** पो० बाक्स ४११३, कोसंटेन (६०१४) पोर्ट इलिजाबेथ (द० अफ्रीका)।

अवनीन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० उमराख (बारडोली); **पि०** श्री मुरार जी शुहल भाई; **कार्य:** कुंवरसेन धर्मादा दवाखाने में चिकित्साधिकारी; **वि०** छात्र जीवन में हॉकी व फुटबाल के अच्छे खिलाड़ी एवं दलनायक, सेवाभावी, अभिनय पटु, बागवानी के शौकीन, कुशल चिकित्सक। **प०** कुंवरसेन धर्मादा दवाखाना, पो० टीम्बरवा (सूरत), गुजरात।

अंगिरादेव आयुर्वेदालंकार

ज० गुरुकुल कांगड़ी; **पि०** श्री न्यादरसिंह; **शि०** आयुर्वेदाचार्य; **कार्य:** स्टेट आयुर्वेदिक कालेज लखनऊ में रीडर; **वि०** विनोदप्रिय, स्वाध्यायशील, अच्छे वक्ता, कुशल चिकित्सक, विभिन्न समितियों के सम्मानित सदस्य। **प०** ३/३ तालकटोरा कालोनी, लखनऊ।

केशवदेव विद्यालंकार

ज० १० मार्गशीर्ष १६८४ विक्रमी, नांगल, फिल्लौर (जालन्धर); **पि०** श्री धर्मचन्द्र धीमान; **शि०** एम० ए० (आगरा); **कार्य:** स्टील इक्विपमेंट ऐण्ड कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड कलकत्ता में पहले प्रशिक्षुता-कार्यकर्ता, १६६२ में निदेशक और संप्रति १६६३ से प्रबन्ध निदेशक; **वि०** कुशल व्यवसायी, प्रबन्धपटु, इंजीनियरिंग ऐसोशिएशन ऑफ इंडिया और स्टील रि-रोलिंग मिल्स ऐसोशिएशन ऑफ इंडिया के सम्मानित सदस्य, समाज-कल्याण एवं सार्वजनिक कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान, वैदिक साहित्य एवं पुरातत्त्व में विशेष रुचि—'ओरिजिनेशन ऑफ यूनीवर्स ऐण्ड एलिमेन्ट्स ऑफ वैदिक कास्मोगोनी' विषयक पुस्तक-लेखन में व्यस्त, आर्यसमाज की गतिविधियों में रुचि एवं कलकत्ता आर्यसमाज के सदस्य, रोटरी क्लब हावड़ा, अरविन्द पाथ मंदिर आदि के सदस्य, सम्पूर्ण भारत का भ्रमण, छात्र जीवन में चित्रकला के प्रति विशेष अनुराग। **प०** २४ बेनारस रोड, सल्किआ, हावड़ा।
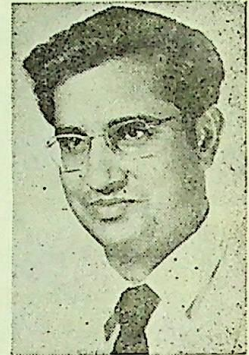
छत्रवीर वेदालंकार

ज० थाना (बम्बई); **पि०** श्री रणछोड़दास; **कार्य:** स्वतन्त्र व्यवसाय; **वि०** सुवक्ता, लेखक, साहित्यानुशीलन में विशेष अभिरूचि। **प०** द्वारा/लक्ष्मी रा?स मिल्स, थाना बम्बई।

जनार्दन विद्यालंकार

ज० एटा; **पि०** श्री स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी; **शि०** एम० ए० (आगरा), पीएच० डी० (आगरा); **कार्य: वि०** सुलेखक, पत्रकार-कला में निपुण, अच्छे वक्ता। **प०** १५/२१८ दूधवाला बंगला, सिविल लाइन्स, कानपुर।

धर्मपाल विद्यालंकार

ज० नौगांव खाल (गढ़वाल); **पि०** श्री केशरसिंह; **शि०** एम० ए० (आगरा) एम० बी० ए० (लंदन); **कार्य:** कुछ समय गुरुकुल फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष, संप्रति विदेश

में सेवारत; वि० प्रबन्ध पटु, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, मिलनसार, पत्रकार-कला के प्रति अनुराग।

धर्मेन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० २३ भाद्रपद १९८३ वि०, स्यालकोट (पाकिस्तान); पि० श्री रामधन; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० आर्यसमाज के क्रियाकलापों के प्रति विशेष अभिरुचि, देश में 'वैदिक समाजवाद' की स्थापना के पक्षपाती, कुशल चिकित्सक, समाज सेवा में व्यस्त, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने की प्रवृत्ति जागृत करने के लिए प्रयत्नशील। प० आरोग्य सदन, धारीवाल (गुरदासपुर)।

धुरेन्द्रदेव (अनिलकुमार) विद्यालंकार

ज० एटा; पि० श्री राजेन्द्रनाथ; शि० एम० ए० (आगरा); कार्य : भारत सरकार के राष्ट्रीय शिक्षा और अनुसधान परिषद् में उच्च पद पर कार्यरत; वि० या० अमेरिका; वि० सुवक्ता, कवि, सुलेखक, छात्रकाल में वादविवाद प्रतियोगिताओं में कई बार विजयश्री प्राप्त, साहित्यगोष्ठी के मन्त्री, फोटोग्राफी और शास्त्रीय संगीत में विशेष रुचि, एवं पटुता, अभिनय में कुशल। प०जे॰५६, मालवीयनगर एक्सटेंशन, नई दिल्ली-१७।

भूदेव आयुर्वेदालंकार

ज० नेपाल; पि० श्री धोलवीरराय; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय, वि० छात्रकाल में क्रीड़ामंत्री, प्रबन्धपटु।

रणजितराय वेदालंकार

ज० बुढावल; पि० श्री रामसिंह; शि० एम० ए० संस्कृत, पीएच० डी० संस्कृत कार्य : पंजाब विश्वविद्यालय के सांध्यकालीन कालेज में संस्कृत विभाग में प्रवक्ता; वि० व्यायाम व कुश्ती के प्रेमी, दार्शनिक विषयों के अध्ययन में रुचि, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शोधपूर्ण लेख प्रकाशित कुशल वक्ता, सुयोग्य व्याख्याता। प० पंजाब विश्वविद्यालय ईवनिंग कालेज, चंडीगढ़।

रामपाल विद्यालंकार

ज० लाहौर; पि० श्री भीमसेन विद्यालंकार; शि० एम० ए० (हिन्दी); कार्य : पजाब के राजकीय महाविद्यालय में हिन्दी विभाग में लेक्चरर; वि० छात्र-जीवन में हॉकी एवं वालीवॉल के अच्छे खिलाड़ी, अच्छे लेखक, पत्रकार-कला के प्रेमी, गुरुकुल में साहित्य-परिषद् के मंत्री, आर्यसमाज के कार्यकलापों में सक्रिय योगदान, गुरुकुल विश्वविद्यालय की विद्यासभा के सदस्य, गुजराती भाषा का ज्ञान। प० गवर्नमेन्ट कालेज, मालेर कोटला (पंजाब)।

सत्यव्रत वेदालंकार

ज० २५ जनवरी १९२९, दिल्ली; पि० श्री मिट्ठनलाल आर्य; शि० एम० ए० सस्कृत (आगरा), डिप्. लिब् एस-सी (बनारस); कार्य : गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग में विज्ञान, धर्मशिक्षा आदि के अध्यापक (१९५०-५७), गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय में अंशकालिक प्राध्यापक (१९५०-५७), बी० एस० ए० डिग्री कालेज मथुरा में पुस्तकालयाध्यक्ष (१९५८-५९), स्कूल आफ प्लैनिंग नई में सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष (१९५९-६३), युनाइटेड स्टेट्स लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस ऑफिस नई दिल्ली में पुस्तकालयाध्यक्ष (I) (१९६३-७५), संप्रति इंस्टट्यूट आफ इंडोलोजी नई दिल्ली में पुस्तकालयाध्यक्ष (१९७६ से); र० अप्रोतकान्वय, कुछ निबन्ध; वि० शांत एवं सरल प्रकृति, रसायनशास्त्र में विशेष अध्ययन, इण्डियन लाइब्रेरी ऐसोसियेशन दिल्ली के सदस्य। प० ई ५/४ कृष्णनगर, दिल्ली–५१।

हरिदेव वेदालंकार

ज० तलावचोरा (सूरत); पि० श्री भीणाभाई वसनजी देसाई; कार्य: स्वतन्त्र व्यवसाय; वि० शास्त्रीय संगीत के प्रति विशेष अनुराग, सेवाभावी।

संवत् २००७ (सन् १९५१)

कर्मवीर आयुर्वेदालंकार

पि० श्री सूरजभान; कार्य : आयात-निर्यात का स्वतन्त्र व्यवसाय। प० एस-४४/ए पंचशील पार्क, नई दिल्ली।

गजेन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० गुजरात; पि० श्री रणछोड़ भाई राम भाई; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० हॉकी के अच्छे खिलाड़ी। प० मु०पो० कोरणा, वाया गगाधरा (सूरत)।

देवव्रत आयुर्वेदालंकार

पि० श्री भरतसिंह; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, कुशल चिकित्सक। प० नारसन, (सहारनपुर)।

धीरेन्द्र आयुर्वेदालंकार

पि० श्री श्रद्धाराम; कार्य : गुरुकुल कुरुक्षेत्र में चिकित्सक। प० विद्याविहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र।

पृथ्वीराज आयुर्वेदालंकार

पि० श्री फतेहचन्द्र; कार्य : स्वतंत्र चिकित्सा व्यवसाय। प० सोवाधीकलां (लुधियाना)।

भगवदत्त विद्यालंकार

पि० श्री ज्योतिराम; कार्य : अध्यापन; वि० आर्यसमाज के प्रमुख एवं उत्साही कार्यकर्ता, सुवक्ता। प० पी० एच० एस० स्कूल, खजुहा (फतेहपुर)।

भारतभूषण विद्यालंकार

ज० २ जनवरी १९३१, जालन्धर; पि० श्री देवीदयाल पुरंग; शि० एम० ए० हिन्दी संस्कृत (आगरा), अनुप्रयुक्त, भाषा विज्ञान में डिप्लोमा (केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा); कार्य : केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय) नई दिल्ली में सहायक शिक्षाधिकारी एवं प्रभारी पत्राचार-पाठ्यक्रम विभाग, प्राध्यापक हिन्दी शिक्षण योजना (गृहमंत्रालय); र० जापान का इतिहास, चीनी पुनर्जागरण (दोनों अनुदित), विदेशियों के लिए प्राइमर, देवनागरी लिपि अभ्यास पुस्तक, व्यावहारिक हिन्दी अंग्रेजी कोश, चैम्बर्स अंग्रेजी-हिन्दी कोश (प्रकाशनाधीन), समेकित पारिभाषिक शब्दावली, प्रशासन एवं पदनाम शब्दावली; वि० फोटोग्राफी में विशेष अभिरूचि, अच्छे लेखक एवं अनुवादक। प० सी–२ ए पाकेट-१६, फ्लैट ९०, जनकपुरी, नई दिल्ली।

भूमित्र आयुर्वेदालंकार

ज० २६ मई १९२९, मुरादाबाद; पि० श्री बांकेलाल; शि० डी० ऐलो०एम० एस०; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० नाक, कान व गला रोग विशेषज्ञ, नेशनल इन्टिग्रेटेड मेडिकल ऐसोसियेशन की मुरादाबाद शाखा के मंत्री, रोटरी क्लब मुरादाबाद के सदस्य, सफल चिकित्सक। प० ८३ ए, हरपाल नगर, प्रिंस रोड, मुरादाबाद।

रामप्रकाश विद्यालंकार

ज० पंजाब; पि० श्री ताराचन्द्र; कार्य : अमृतसर में स्वतन्त्र व्यवसाय। प० ४३४ रानी का बाग, अमृतसर।

रामानन्द आयुर्वेदालंकार

ज० गुजरात; पि० श्री वल्लभ भाई भूला भाई; कार्य: स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय। प० मु० नारसर, पो० कामरेज (सूरत)।

वीरेन्द्रकुमार विद्यालंकार

ज० १ फरवरी १९३२, बड़सू (मुजफ्फरनगर); पि० श्री बुद्धेश्वर; शि० एम. ए. हिन्दी-संस्कृत पी-एच. डी. हिन्दी (दिल्ली); कार्य : शिवाजी कालेज दिल्ली में हिन्दी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष; र० बीती याद, रीतिकाव्य और विद्यापति, गद्यकार महादेवी वर्मा, विद्यापति, विभा, चमत्कारपूर्ण औषधियाँ; वि० गुजराती व बंगाली भाषा के अच्छे ज्ञाता, विदेशी भाषाओं के अध्ययन व खेलों में विशेष रुचि, 'जाह्नवी' एवं 'शिवराज' नामक पत्रिकाओं का संपादन, आधुनिक साहित्य के गंभीर अध्येता, अच्छे लेखक, पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर लेख प्रकाशित । प० बी-३/३ राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-२७ ।

शिवकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० ६ दिसम्बर १९२६, बुरांसपानी (अल्मोड़ा); पि० श्री दलजीतसिंह नेगी; कार्य : उत्तरप्रदेश के राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में चिकित्साधिकारी, संप्रति सैंजी (गढ़वाल) में सेवारत; वि० सफल एवं लोकप्रिय चिकित्सक, स्वाध्याय में रुचि । प० राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, सैंजी (टिहरी गढ़वाल), पो० यमुनापुल, वाया कालसी, देहरादून ।

सम्वत् २००८ (सन् १९५२)

गोपाल आयुर्वेदालंकार

ज० १० फरवरी १९२६, क्वेटा (विलोचिस्तान); पि० श्री हिम्मतराय; कार्य : पहले कैराना (१९५३-५७) में और फिर कानपुर में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० सफल चिकित्सक, कानपुर दक्षिण के लॉयन-क्लब के निदेशक । प० १२८/१-सी, किदवई नगर, कानपुर ।

चन्द्रभानु वेदालंकार

ज० ४ मार्च १९२६, मोगरगा (महाराष्ट्र); पि० श्री सीताराम; शि० एम. ए. हिन्दी (आगरा), पी-एच. डी० हिन्दी (कोल्हापुर)—'आर्यसमाज की हिन्दी गद्य साहित्य की देन'; कार्य : दयानन्द महाविद्यालय शोलापुर में हिन्दी विभाग में अध्यापन कार्य (१९५५-७२), संप्रति इसी महाविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं स्नातकोत्तर हिन्दी शोध केन्द्र के निदेशक (१९७३ से); र० हिन्दी गद्य साहित्य, 'विपात्र' : मुक्ति की उपनिषद्, भारतेन्दु के विचार : एक पुनर्विचार; वि० आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, होमियोपैथी के अध्ययन में विशेष अभिरुचि । प० सोनवणे सदन, लातूर (महाराष्ट्र) ।

नवरत्न विद्यालंकार

ज० महाराष्ट्र; पि० श्री डूंगरसी ओधव ठक्कर; कार्य: स्वतन्त्र व्यवसाय । प० पो० पनवेल, जि० कोलाबा, (महाराष्ट्र) ।

नारायणदत्त विद्यालंकार

ज० १७ फरवरी १९२६, मैसूर; पि० श्री एच० योगनरसिम्हम्; कार्य : पत्रकारिता, 'हिन्दी स्क्रीन' (बम्बई) के संपादकीय विभाग में कार्य (१९५२), खादी ग्रामोद्योग कमीशन बम्बई के प्रकाशन विभाग में संपादक, भारतीय विद्याभवन बम्बई की पत्रिका 'भारती' में संपादक (१९५८-५९), 'नवनीत' हिन्दी डाइजेस्ट में सहायक संपादक (१९५९-६७), इसी में संपादक (१९६८ से); र० साहस के धनी (प्रोफाइल्स इन करेज का हिन्दी अनुवाद), नवनीत सौरभ; वि० हिन्दी, संस्कृत, कन्नड़, अंग्रेजी भाषाओं के ज्ञाता, पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर लेख प्रकाशित, अध्यवसायी एवं सुयोग्य पत्रकार,

गंभीर विचारक एवं लेखक। प० ३४१ ताड़देव, बम्बई-३४।

भक्तप्रिय वेदालंकार

वि० कार्य : केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय में शिक्षा-अधिकारी। प० श्री जी० वी० भक्तप्रिय वेदालंकार, सी ७/१४१ सफदरजंग इंक्लेव, नई दिल्ली-१६।

भानुदेव आयुर्वेदालंकार

ज० फाल्गुन शुक्ल ११ सम्वत् १९७६ वि०, बाढ़ (पटना); पि० श्री महावीर-दास; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० विभिन्न संस्थाओं एवं संगठनों के प्रधान, उपप्रधान व मंत्री आदि के रूप में कार्य, सफल चिकित्सक। प० देव औषधालय, पो० वाढ़, (पटना), विहार।

मनोहर आयुर्वेदालंकार

ज० ४ जून १९३०, काजल हिप्परगा (अहमदपुर); पि० श्री निवृत्ति रेड्डी; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० वर्षों तक अहमदपुर नगरपालिका के सदस्य सफल एवं सेवाभावी वैद्य, एक वर्ष नगरपालिका के अध्यक्ष। प० डॉ० मनोहर रेड्डी आयुर्वेदालंकार, अहमदपुर (उस्मानाबाद), महाराष्ट्र।

महावीर विद्यालंकार

ज० विहार; पि० श्री बंशीलाल; कार्य : स्वतन्त्र कार्य। प० कारूबीघा, पो० मुरवतार गंज (पटना)।

लोकनाथ आयुर्वेदालंकार

पि० श्री भगीरथ शास्त्री; कार्य : पहले नाइजीरिया और अब न्यूयार्क में कार्यरत; वि० छात्रजीवन में अच्छे खिलाड़ी, प्रबन्धपटु। प० 78-40, 162 St Apt. 2 Flushing, Newyork 11366.

विपिनचन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० फाल्गुन शुक्ल ११ संवत् १९८६ वि०, लातूर (महाराष्ट्र); पि० श्री बापुराव चामले; कार्य : लातूर में स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० आर्य-समाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, आर्य-समाज लातूर के प्रधान (१९५५-५६), दयानन्द महाविद्यालय लातूर के स्थापना-काल (१९६०) से ही कार्य-कारिणी के सदस्य, लातूर नगरपरिषद् के सदस्य (१९६०-६५), आर्य-प्रतिनिधि सभा, मध्य दक्षिण के सक्रिय सदस्य। प० डॉ० वी० पी० चामले, लातूर (उस्मानाबाद), महाराष्ट्र।

श्रुतिकांत विद्यालंकार

पि० श्री प्रियव्रत वेदवाचस्पति; शि० एम. ए.; कार्य : कुछ समय ट्रिब्यून के संपादकीय विभाग में कार्य, संप्रति गुयाना ओरियन्टल कॉलेज (दक्षिणी अमेरिका) में प्रधानाचार्य; वि० सुयोग्य वक्ता, लेखक, आर्यसमाज की गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान, छात्रजीवन में अच्छे खिलाड़ी। प० गुयाना ओरियन्टल कॉलेज, २६२ थोमस स्ट्रीट, जियॉर्ज टाउन, गुयाना (दक्षिणी अमेरिका)।

सुरेन्द्रपालसिंह आयुर्वेदालंकार

ज० बरेली; पि० श्री महेशचन्द्र; कार्य : खेती एवं स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० बालीवाल के अच्छे खिलाड़ी। प० नोगांवा ठाकुरान, पो० ब्रलिया (बरेली)।

सोमप्रकाश आयुर्वेदालंकार

पि० श्री प्रेमचन्द; कार्य : उत्तरप्रदेश शासन के आयुर्वेदिक औषधालयों में चिकित्साधिकारी।

हरिप्रसाद विद्यालंकार

ज० १ सितम्बर १६२६, अहमदाबाद; **पि०** श्री डाह्याभाई भोगी लाल पटेल; **कार्य** : 'पटेल भोगीलाल गोविन्दराम' नामक फर्म में स्वतन्त्र व्यवसाय; **वि०** आर्य-समाज लुणसावाड़ा वेद ज्ञान प्रचारक मंडल ट्रस्ट अहमदाबाद के प्रमुख ट्रस्टी, श्री जुना माधवपुरा व्यापारी महाजन लिमिटेड अहमदाबाद के भूतपूर्व मन्त्री, हेरल्ड लास्की इंस्टिट्यूट ऑफ पोलिटिकल साइंस के आजीवन सदस्य, व्यापार एवं तैराकी में विशेष रुचि, प्रबन्ध पटु । **प०** १५६४, कड़वापोर, रजपूतवाड़ो, दरियापुर, बोर्ड २ बी, अहमदाबाद । फोन २२५०८ ।

सम्वत् २००६ (सन् १६५३)

ओमप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० १८ मई १६३१, फगवाड़ा (जालन्धर); **पि०** श्री केप्टन फकीरचन्द शर्मा; **कार्य** : दिल्ली में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य एवं बापू आदर्श विद्यालय राजेन्द्रनगर के अवैतनिक चिकित्सक; **वि०** शिशु रोग विषयक अनुसंधान में व्यस्त तथा इसके लिए दिसम्बर १६७६ में जर्मनी प्रयाण, आयुर्वेद परिषद् पटेलनगर और एन. आई. एम. ए. दिल्ली के सदस्य, आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता, श्री शान्तिस्वरूप जी विद्यालंकार के साथ सर्पदंश की अचूक औषधि की खोज का सफल प्रयास, निर्धनों की अत्यल्प व्यय से चिकित्सा । **प०** ई/२७८ नारायण विहार, नई दिल्ली-२८; डॉ० ओम्प्रकाश शर्मा, २ संतनगर, करोलबाग, नई दिल्ली ।

कृष्णरंजन आयुर्वेदालंकार

ज० बिहार, **पि०** श्री बृजमोहनलाल शर्मा; **कार्य** : स्वतंत्र चिकित्सा व्यवसाय । **प०** अरुणा क्लिनिक, सोकुची बाजार, जमशेदपुर (बिहार) ।

क्रांतिकृष्ण आयुर्वेदालंकार

कार्य : आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी में रीडर एवं उपप्रधानाचार्य, मुख्य आश्रमाध्यक्ष; **र०** दि हैंड बुक ऑफ बैक्टीरियोलॉजी का हिन्दी अनुवाद; **वि०** अच्छे कवि, विविध पत्र-पत्रिकाओं में लेख व कविताएं प्रकाशित, आर्यसमाज के कार्यों में सक्रिय योगदान, गुरुकुल आर्य-समाज के कई बार मन्त्री निर्वाचित, अखिल भारतीय स्नातक मंडल के उपमंत्री, उत्साही एवं कर्मठ कार्यकर्ता । **प०** गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) ।

जगन्नाथ आयुर्वेदालंकार

पि० श्री कीर्तिसिंह; **कार्य** : राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय जोगत में सेवारत । **प०** स्टेट आयुर्वेदिक चिकित्सालय जोगत (उत्तरकाशी) ।

जयदेव आयुर्वेदालंकार

ज० १६ अप्रैल १६३१, बम्बई; **पि०** श्री हीरालाल; **कार्य** : स्वतंत्र चिचित्सा-व्यवसाय । **प०** डॉ० जयदेव हीरालाल सिद्ध, पाटन, जबलपुर ।

देवराज आयुर्वेदालंकार

कुरुक्षेत्र; पि० डॉ० शिवराज; कार्यः थानेसर में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय।

नरपति वेदालंकार

ज० ३ अक्टूबर १९३२, गुजरात; पि० श्री अंबालाल भगवान् जी; शिक्षा एम. ए. (आगरा) एल. एल. बी. (बम्बई); कार्यः नैरोबी (केनिया) में सरकारी नौकरी (१९५९-६४), पोरबन्दर मिल में कार्य (१९६४-६७), मेघदूत सिल्क मिल नवसारी में मैनेजर (१९६७ से); वि०या० केनिया; वि० संगीत में विशेष अभिरुचि, प्रबन्धपटु। प० नटवरलाल अंबालाल आर्य, पो० सीसोद्रा, वाया नवसारी (वलसाड़)।

प्यारेलाल आयुर्वेदालकार

पि० श्री लच्छुराम; कार्यः स्वतन्त्र व्यवसाय। प० जनरल मर्चेन्ट एण्ड कैमिस्ट, पो० परला, वाया चकरौता (टिहरी गढ़वाल)।

ब्रह्मस्वरूप आयुर्वेदालंकार

ज० २ जनवरी १९३०, पायल (लुधियाना); पि० श्री नन्दलाल; शि० डी.एवाई.एम. (वाराणसी), एम.एस.सी. ए. (झांसी); कार्यः बुन्देलखण्ड आयुर्वेदिक कालेज झांसी में चरक व निदान के प्रोफेसर (१९५३-५६), दिल्ली में स्वतन्त्र चिकित्सा--व्यवसाय (१९५७-५८), श्री मस्तनाथ आयुर्वेद महाविद्यालय अस्थल बोहर में एनॉटमी के प्रोफेसर (१९५८-६५), गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वेद महाविद्यालय में काय चिकित्सा के उपाध्याय, श्रद्धानन्द चिकित्सालय में काय चिकित्सा विभाग में इंचार्ज तथा गुरुकुल के मुख्य स्वास्थ्य-अधिकारी (१९६५-७०), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्ययन करते हुए सर सुन्दरलाल चिकित्सालय में क्लिनिकल रजिस्ट्रार (१९७०-७३), संप्रति कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण आयुर्वेदिक कालेज में निदान-चिकित्सा के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (१९७३); वि० स्नातकोत्तर प्रशिक्षण के दौरान 'An experimental and clinical Study of Karismula (Capparis Aphylla Roth on Rheumatic diseases)' विषय पर शोधकार्य, वृक्कपथरी और मूत्र-पथरी रोगों की आयुर्वेद-पद्धति से चिकित्सा करने में पर्याप्त ख्याति प्राप्त, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयुर्वेद की बोर्ड ऑफ स्टडीज और फैकल्टी ऑफ आयुर्वेद के सदस्य मनोनीत, श्री गुलजारीलाल नन्दा द्वारा स्थापित मानव धर्म मिशन के सदस्य और उसके तत्वावधान में होने वाली सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय योगदान, आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा निर्धन जनता की निष्काम सेवा में विशेष अभिरुचि, सुयोग्य एवं सफल चिकित्सक व्यवस्थापटु। प० प्रोफेसर, श्रीकृष्ण आयुर्वेदिक कालेज, कुरुक्षेत्र।

मदनलाल आयुर्वेदालंकार

ज० २४ सितम्बर १९३१, देशनांक (राजस्थान); पि० श्री मोहनलाल कोठारी, शि० आयुर्वेदाचार्य (कलकत्ता); कार्यः कलकत्ता, देशनांक और अब डूंगरगढ़ (चुरू) में स्वतन्त्र चिकित्सा-कार्य; वि० नगरपालिका एवं मंडल कांग्रेस कमेटी देशनांक के वर्षों तक अध्यक्ष डूंगरगढ़ के श्री विवेकानंद प्रतिष्ठान के संस्थापक सदस्य एवं उपाध्यक्ष, मंडल माहेश्वरी सभा व नगर कांग्रेस डूंगरगढ़ की कार्यकारिणी के सदस्य, सामाजिक उत्थान में विशेष अभिरुचि, सार्वजनिक कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान। प० डॉ० मदनलाल कोठारी, श्री डूंगरगढ़ (चुरू), राजस्थान।
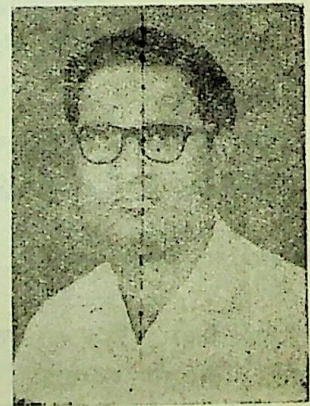
महेन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार

पि० श्री कर्णसिंह; शि० एम. डी. (म्यूनिक)।

महेन्द्रप्रताप आयुर्वेदलंकार (स्व०)

ज० रसूलपुर जाटान; पि० श्री आसाराम; शि० आयुर्वेदाचार्य (अयोध्या विद्यापीठ); कार्य: पहले सब्सिडाइज्ड डिस्पैन्सरी जिला रोहतक में चिकित्सक (१६५३-५५), गांधी स्मारक निधि पंजाब के अनुरोध पर ग्राम सेवक संघटक पंजाब-पेप्सु-हिमाचलप्रदेश में सेवा कार्य (१६५५-५६), गुरुकुल झज्जर में अवैतनिक परामर्शदाता के रूप में रसायनशाला, चिकित्सालय एवं आयुर्वेद कॉलेज के संचालन में सहयोग, शाहपुर (मुजफ्फरनगर) में 'आशा चिकित्सालय' के नाम से स्वतन्त्र चिकित्सालय का संचालन (१६५७ से मृत्युपर्यंन्त); वि०कांग्रेस व सर्वोदय समाज के सक्रिय सदस्य के रूप में कार्य (१६४७-६८), सार्वजनिक कार्यों में विशेष अभिरुचि, कुशल एवं लोकप्रिय चिकित्सक।

रघुनाथ विद्यालंकार

पि० श्री रामललित मिश्र; कार्य: स्वतन्त्र व्यवसाय। प० मिश्रा स्टोर, बन्थवाई बांगरट (स्याम)।

रवीन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० २३ नवम्बर १६३०, मादापुर (कुर्ग); पि० श्री गणपय्या एन० के०; कार्य : तीन वर्ष वीदर (कर्नाटक), में स्वतन्त्र चिकित्सा, तदनन्तर काफी के निजी बगीचे का संचालन; वि० या० हवाई, अमेरिका तथा कनाडा; वि० रोटरीक्लब सकलेसपुर, भारतीय लोकदल, कार्डमम बोर्ड तथा क्रॉफोर्ड हॉस्पिटल बोर्ड सकलेशपुर के सम्मानित सदस्य, खेलों — विशेषकर क्रिकेट में विशेष रुचि। प० हार्ले एस्टेट सकलेशपुर, हासन (कर्नाटक)।

रामचन्द्र विद्यालंकार

ज० वैशाख शुक्ला ६ सम्वत्१६८६ आंधोरी (अहमदपुर); शि० एम. ए., एल. एल. बी.; कार्य : अहमदपुर में वकालत; वि० शिक्षा के प्रसार के लिए गावों में विद्यालयों व अहमदपुर आदि नगरों में नए-नए महाविद्यालयों की स्थापना में योगदान, अहमदपुर तालुका कांग्रेस-कमेटी के मन्त्री, महात्मा गांधी महाविद्यालय अहमदपुर की कार्यकारिणी के सदस्य। प० श्री रामचन्द्र शंकरराव पाटिल एडवोकेट, पो० अहमदपुर (उस्मानाबाद)।

विश्वदेव आयुर्वेदालंकार

ज० रायपुरहंस (बरेली); पि० श्री रूपसिंह; कार्य० : स्वतन्त्र चिकित्सा-कार्य। प० फरीदपुर बरेली।

शिवकुमार आयुर्वेदालङ्कार

ज० बनारस; पि० श्री दुःखीलाल; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय। प० नागकुंआ, बनारस।

शीलकांत विद्यालंकार

पि०श्री हरप्रसाद; कार्य० : स्वतन्त्र-व्यवसाय। प०पो० बॉ०नं०४५, मवंजा, टांगानिका टैरीटरी (पूर्वी अफ्रीका)।

सुखदेव आयुर्वेदालंकार

ज० १० अप्रैल १६२६, नारसन कलां (सहारनपुर); पि०चौ०एतवारसिंह; कार्य : मेरठ आयुर्वेद कॉलेज मे प्रोफेसर, संप्रति अलंकार क्लिनिक के प्रधान चिकित्सक; वि० छात्र जीवन में वाग्वर्धिनीसभाके महामंत्री, युवक कांग्रेस सहारनपुर के भू०पू०अध्यक्ष, आर्य उपप्रतिनिधि सभा सहारनपुर की कार्यकारिणी के सदस्य, आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, सार्वजनिक कार्यों में विशेष रुचि। प०नारसन कलां (सहारनपुर)।

सुनीलकुमार वेदालंकार

ज० ६ जनवरी १६३२ पीसाद (बारडोली); पि० श्री छीतुभाई कालिदास पटेल; कार्य : निजी कृषि व्यवसाय; वि० या० इंगलैण्ड-यात्रा तथा वहां तीन वर्ष निवास; वि० पीसाद धर्मादा में दवाखाने के सदस्य सार्वजनिक कार्योंमें विशेष अभिरुचि, एक वर्ष इंगलैण्ड में कैड्बरी चॉकलेट फैक्टरी में भी कार्य। प० श्री सुनील कुमार छीतुभाई पटेल, मु०पो० पीसाद, वाया गंगाधरा (सूरत)।

सम्वत् २०१० (सन् १९५४)

ओम्प्रकाश वेदालंकार

ज० १० मार्च १९३३, अम्बाला शहर; **पि०** श्री शशिभूषण विद्यालंकार; **शि०** साहित्यरत्न (प्रयाग), एम. ए. हिन्दी (आगरा). एम. ए. संस्कृत (पंजाब), एम. ओ. एल. (पंजाब), पी-एच. डी. हिन्दी (पंजाब), —"सन्त कबीर की योगसाधना और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि"; **कार्य :** डी० ए० वी० कॉलेज अम्बाला नगर में हिन्दी विभागाध्यक्ष (१९५९-६०), राजेन्द्रा राजकीय कॉलेज भटिण्डा में हिन्दी विभागाध्यक्ष (१९६०-६१), राजकीय कॉलेज बांसवाड़ा में संस्कृत-हिन्दी विभाग अध्यक्ष (१९६१-६३), महारानी श्री जया कॉलेज भरतपुर में हिन्दी विभाग में अध्यक्ष, संप्रति राजकीय (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय भरतपुर में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष, **र०** निबन्ध-मंजूषा, संत कबीर की योगसाधना और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि; **वि०** आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, आर्यसमाज भरतपुर के प्रधान व मन्त्री, दयानन्द क्लब भरतपुर के संस्थापक मण्डल के सदस्य, जिला उपप्रतिनिधि सभा भरतपुर के भू० पू० मंत्री, छात्रजीवन में वादविवाद एवं भाषण प्रतियोगिताओं में भाग लेकर प्रथम पुरस्कार एवं चल-विजयोपहार प्राप्त, फोटोग्राफी में विशेष अभिरुचि, उत्तम वक्ता, पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, भाषाविज्ञान प्रशिक्षण शिविर पूना में सम्मिलित । **प०** १७ कृष्णनगर, गोलबाग रोड, भरतपुर (राजस्थान) ।

भगतसिंह विद्यालंकार

ज० २३ जुलाई १९३५ राजूर; **पि०** श्री हुनुमंतराव; **शि०** एम. ए. संस्कृत (दिल्ली), एम. ए. हिन्दी (उस्मानिया), पी-एच.डी. हिन्दी (उस्मानिया), —'रामकथा के पात्रों के चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन'; **कार्य :** मराठवाड़ा विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष; **र०** चिन्तन : अनुचिन्तन, कवित्रय, रामकथा के पात्र, अनियत अंकन, रामकथा व तुलसीदास, कवितावली संदर्भ और संपर्क,वाल्मीकि रामायण में शस्त्रास्त्र, हिन्दी व्याकरण, हिन्दी कहानियाँ, बालभारती (सात भाग). हिन्दी भाषा (तीन भाग), कुमार भारती (तीन भाग), हिन्दी गद्य पद्य संग्रह (तीन भाग), लोक भारती (चार भाग), अर्ध मागधी प्रवेश, वसंतराव नाईक अभिनन्दन ग्रंथ (मराठी); **वि०** विभिन्न पत्र -पत्रिकाओं में लगभग २० शोधपत्र प्रकाशित, 'भक्तिकाल', संस्कृत-हिन्दी के तुलनात्मक अध्ययन, वेद-उपनिषद् एवं दर्शन में विशेषज्ञता प्राप्त, मराठवाड़ा विश्वविद्यालय में कला-संकाय के अधिष्ठाता, इसी विश्वविद्यालय की सीनेट, सिंडीकेट, कार्यकारिणी परिषद्, एकेडेमिक काउन्सिल आदि के सम्मानित सदस्य, नेशनल इन्टीग्रेशन समिति मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के अध्यक्ष, भारतीय हिन्दी परिषद् प्रयाग के आजीवन सदस्य एवं कार्यकारिणी के सदस्य, भारतीय भाषाविज्ञान परिषद् पूना के सदस्य, महाराष्ट्र स्टेट टेक्स्टबुक ब्यूरो पूना की हिन्दी-समिति के सदस्य, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर की हिन्दी की-बोर्ड ऑफ स्टडीज के सदस्य, ख्याति-प्राप्त लेखक एवं चिन्तक, अच्छे वक्ता । **प०** डॉ० भगतसिंह हुनुमंतराव राजूरकर, ८ पुष्पनगरी, एस. टी. वर्कशॉप के सामने, औरंगाबाद ।

राजेन्द्रकुमार (राजीव) आयुर्वेदालंकार

ज० नारसन कलां (मुजफ्फरनगर); **पि०** श्री बल्लासिंह; **शि०** एम. डी. (म्यूनिक); **कार्य :** पश्चिमी जर्मनी में कार्यरत । **प०** Dr. R. Kumar, 8754, Grossostheim, Katzenmarkt, West Germany.

रामप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० कानपुर; **पि०** डॉ० राजबहादुर श्रीवास्तव; **कार्य०** कानपुर में निजी व्यवसाय । **प०** सिंहासिनी इन्जीनियरिंग वर्क्स, ८४/२५ ए–फैक्टरी एरिया, फजलगंज, कानपुर ।

विश्वबन्धु वेदालंकार

ज० ११ जुलाई १९३०, कोटा (राजस्थान); **पि०** श्री नारायणलाल आर्य; **शि०** एम. ए. इतिहास-राजनीति (आगरा), बी. टी. (आगरा); **कार्य :** गुरुकुल विद्या-मन्दिर सूपा में आचार्य; **वि०** **या०** प्रचारार्थ नेपाल - यात्रा; **वि०** आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार - प्रसार में महत्त्वपूर्ण
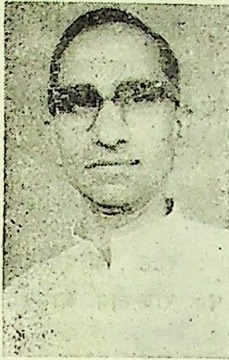
योगदान, ख्यातिप्राप्त वक्ता, छात्रजीवन में अनेक वाद-विवाद एवं भाषण - प्रतियोगिताओं में भाग ले कर चल विजयोपहार एवं प्रथम पुरस्कार प्राप्त, १९५१ में ऑल इण्डिया डिबेट चैम्पियन, इसी वर्ष आगरा विश्वविद्यालय छात्र-संघ के अध्यक्ष, अच्छे लेखक । प० गुरुकुल विद्यामंदिर सूपा; वाया नवसारी, सूरत ।

वेदकुमार वेदालंकार

ज० ३० मार्च १९३०, लातूर (उस्मानाबाद); पि० श्री रघुत्तमदास; शि०एम.ए.हिन्दी (आगरा) एम.ए. संस्कृत (उस्मानिया); कार्य : विविध महाविद्यालयों में हिन्दी विभागों में प्राध्यापक एवं प्रधानाचार्य, संप्रति तुलजापुर तुलजाभवानी कॉलेज के प्रधानाचार्य; र० दो काव्य-संग्रहों का आलोचनात्मक अध्ययन; वि० मराठवाड़ा विश्वविद्यालय में कला-संकाय के अधिष्ठाता (१९६७-६८), आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता एवं प्रचारक, आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद की अन्तरंग सभा के सदस्य, अन्त-र्जातीय विवाह मण्डल रेणापुर के सदस्य, वैदिक पद्धति से पौरोहित्य एवं विविध संस्कार आदि के कार्य में व्यस्त, संगीत में विशेष रुचि, संगीत मण्डल तुलजापुर के अध्यक्ष, छात्रावस्था में अभिनय-पटु । प० प्राचार्य तुलजाभवानी महाविद्यालय, तुलजापुर (उस्मानाबाद) ।

सुधाकर आयुर्वेदालंकार

पि० श्री सुखदेव दर्शनवाचस्पति; कार्य : पहले गाँधी विद्यामन्दिर सरदारशहर के आयुर्वेदिक कॉलेज में कायचिकित्सा के उपाध्याय, सम्प्रति भारत सरकार की सेवा में; वि० हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, अखिल भारतीय हॉकी टूर्नामेंटों में गुरुकुल विश्वविद्यालय की टीम के दल-नायक के रूप में प्रतिनिधित्व तथा चलविजयोपहार प्राप्त, कुशल चिकित्सक, प्रबन्ध पटु । प० सी–५ होजखास, नई दिल्ली ।

सुरेन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार

स्वतन्त्र आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० २२ जुलाई १९३४; पि० श्री बाबूसिंह; शि० एम. ए. हिन्दी (आगरा); कार्य : जसराना (मैनपुरी) में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र में चिकित्सक, गुरुकुल महाविद्यालय में अध्यापन एवं चिकित्सा; वि० बॉलीबॉल एवं बैडमिन्टन के कुशल खिलाड़ी । निधन– १२ जनवरी १९७० ।

सम्वत् २०११ (सन् १९५५)

अनन्तकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० २ अक्टूबर १९३०, दुर्ग (म. प्र.); पि० श्री बरजांग विश्राम चौहान; शि० नेत्र चिकित्सा में स्नात-कोत्तर प्रशिक्षण; कार्य : दुर्ग में निजी नेत्र चिकित्सालय का संचालन; र० जीवन्मुक्त (उपन्यास); वि० दुर्ग आर्य-समाज के सचिव, लॉयन्स क्लब दुर्ग के सदस्य, फोटोग्राफी और मधुमक्खी पालन का शौक, सार्वजनिक कार्यों में सक्रिय योगदान, काव्य एवं उपन्यास-लेखन में रुचि । प० चौहान नेत्र चिकित्सालय, दुर्ग (म. प्र.) ।

ओम्प्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० १२ फरवरी १९३१, लाड़पुर (दिल्ली); पि० श्री जियाराम; कार्य : दिल्ली में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय । प० २२७७, मेदगंज मण्डी, सदर बाजार, दिल्ली-७ ।

ओम्प्रकाश विद्यालंकार

पि० श्री बिशनलाल; कार्य : अध्यापन ।

जयपाल विद्यालंकार

ज० १३ मार्च १९३२, नांगल देवत (दिल्ली); पि० श्री सुरजनसिंह; शि० एम.ए. संस्कृत (दिल्ली); कार्य : हंसराज कॉलेज दिल्ली में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष; र० स्वप्नवासवदत्तम् (टीका), किराताजुनीयम् (टीका); वि० विविध पत्रपत्रिकाओं में गवेषणात्मक लेख प्रकाशित, नाटक देखने में विशेष रुचि, फोटोग्राफी व पर्यटन का शौक, अखिल भारतीय प्राच्य परिषद् के सदस्य, अच्छे वक्ता, छात्र जीवन में अनेक वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में गुरुकुल के प्रतिनिधि के रूप में भाग लेकर पुरस्कार व चल-विजयोपहार प्राप्त । प० ६, प्राध्यापक निवास, हंसराज कॉलेज, दिल्ली–७ ।

दिवाकर विद्यालंकार

ज० ६ सितम्बर १९३५ कलकत्ता, पि० श्री सुखदेव दर्शनवाचस्पति, शि० एम. ए. हिन्दी (आगरा), साहित्यरत्न (प्रयाग), पी-एच. डी. हिन्दी (सागर) — 'पाश्चात्य और हिन्दी निबन्ध साहित्य का तुलनात्मक अनुशीलन'; कार्य : डी. ए. वी. कॉलेज रुड़की में प्रवक्ता (१९५५-५६), सेंट एंड्रयूज कॉलेज गोरखपुर में हिन्दी विभाग के प्रवक्ता (१९५७-६०), डी. ए. वी. कॉलेज अजमेर में हिन्दी के व्याख्याता (१९६०-६१), म. प्र. शासन के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत विविध महाविद्यालयों में हिन्दी विभाग के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, संप्रति लश्कर के राजकीय महाविद्यालय में सेवारत; र० साहित्यिक निबन्ध; वि० विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर लेख प्रकाशित, समाज विज्ञान विषयक अनेक पुस्तकों के अनुवादक, भारतीय हिन्दी परिषद् के सदस्य, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, सागर विश्वविद्यालय तथा रीवा विश्वविद्यालय की विभिन्न परिषदों के सदस्य, सरस्वती साधना संगम ग्वालियर के उपाध्यक्ष, भाषण कला में निष्णात, साहित्यिक-शैक्षणिक समारोहों और आर्यसमाज के उत्सवों पर भाषण, ख्याति प्राप्त वक्ता, विविध महाविद्यालयों के शैक्षणिक आयोजनों में भाषण देने के लिए आमन्त्रित, वक्तृत्व, लेखन व संगीत में विशेष अभिरुचि, हॉकी के कुशल खिलाड़ी और क्वालिफाइड अम्पायर । प० ११—शान्तिनगर, नई सड़क लश्कर, ग्वालियर ।

बालकृष्ण आयुर्वेदालंकार

पि० श्री स्वरूपलाल; कार्य : स्टेट आयुर्वेदिक कॉलेज पटियाला में प्रवक्ता । प० राजकीय आयुर्वेद कॉलेज, पटियाला (पंजाब) ।

महावीर आयुर्वेदालंकार

ज० गुरुकुल कांगड़ी; पि० श्री ताराचन्द; कार्य : उत्तरप्रदेश शासन के अधीन राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में चिकित्साधिकारी; वि० हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, सफल चिकित्सक । प० १३२ द्वारकापुरी, मुजफ्फरनगर ।

महेन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार

कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय । प० भूषण निवास, हसनपुर (मुरादाबाद) ।

रमेशचन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० लुधियाना; पि० श्री वैद्य विष्णुदत्त विद्यालंकार; कार्य : चिकित्सा । प० चौक मलेरीमिल स्ट्रीट, लुधियाना ।

राघवेन्द्र वेदालंकार

ज० बिहार; पि० श्री रामवर्णसिंह । प० बबुखन्ना, सोहसराय (पटना) ।

राजेन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० ३ फरवरी १९३४, बिलासपुर (म. प्र.); पि० श्री वैद्य गरीबराम अग्रवाल; शि० एम. ए. मनोविज्ञान (गुरुकुल); कार्य : बिलासपुर में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय (१९५५–६५), संप्रति आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल काँगड़ी में रस-शास्त्र विभाग के रीडर एवं अध्यक्ष तथा इसी से सम्बद्ध श्रद्धानन्द सेवाश्रम में चिकित्सक; वि० सफल एवं ख्याति प्राप्त चिकित्सक, आयुर्वेदिक पद्धति से चिकित्सा करने में विशेष रुचि, वातरोगों में विशेषज्ञता

प्राप्त, आर्यसमाज की गतिविधियों में विशेष योगदान। प० गुरुकुल काँगड़ी (सहारनपुर)।

राजेन्द्रप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० झालू (बिजनौर); पि० श्री फतेहचन्द्र; कार्य : खेती एवं चिकित्सा का निजी व्यवसाय। प० झालू (बिजनौर)।

रामप्रताप वेदालंकार

ज० २६ जुलाई १९३६, दादरी (गाजियाबाद); पि० श्री केहरसिंह; शि० एम. ए. संस्कृत (आगरा), साहित्याचार्य (बनारस), पी-एच. डी. संस्कृत (दिल्ली) —'पुराणेषु व्याकरणालंकार-रसादिविचार:' कार्य : सनातन धर्म कॉलेज मुजफ्फरनगर में संस्कृत - विभाग के प्रवक्ता, विश्वेश्वरानन्द शोध - संस्थान होशियारपुर में स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्यापन, संप्रति जम्मू विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग में अध्यापन; र० पुराणानां काव्यरूपतया विवेचनम्, सांस्कृतिक और साहित्यिक निबन्ध, राजेन्द्र कर्णपूर (कश्मीरी काव्यानुवाद) साहित्य-सुधासिन्धु (काव्यशास्त्रीय ग्रन्थानुवाद); वि० डोगरी रिसर्च इन्स्टिट्यूट जम्मू तवी के सदस्य, जम्मू की आर्य-समाज के वर्षों तक प्रधान, संस्कृत में अनुसन्धान करने वालों के मार्गदर्शन तथा स्वयं अनुसन्धान करने में व्यस्त, विविध पत्रिकाओं में अनेक शोध-लेख एवं साहित्यिक निबन्ध प्रकाशित, इस समय १६वीं शताब्दी के काव्य-शास्त्रीय हस्तलिखित संस्कृतग्रन्थ साहित्यसुधासिन्धु पर शोधकार्य करने में व्यस्त, प्राच्यविद्यासम्मेलनों में निबन्ध-वाचन में विशेष रुचि। प० १७३ रघुनाथपुरा, जम्मू तवी।

विद्याकिशोर विद्यालंकार

ज० ३१ नवम्बर १९३३, अहरार पिपरा(चम्पारण); पि० श्री टीमल भगत; शि० एम. ए. संस्कृत (वाराणसी); कार्य : सक्रिय राजनीतिक कार्यकर्ता, बिहार विधानसभा के सदस्य (१९६२-६७), राज्य-संगठक बिहार खेतिहर ग्रामीण मजदूर काँग्रेस; वि० हरिजन सलाहकार बोर्ड, राज्य विकास योजना बोर्ड तथा बिहार सरकार की अन्य अनेक समितियों के भू.पू. सदस्य पटना विश्वविद्यालय की सीनेट के सदस्य, आध्यात्मिक विषयों में विशेष अभिरुचि, कांग्रेस-दल की गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण योगदान। प० कांग्रेस भवन, सदाकत आश्रम, पटना-१०।
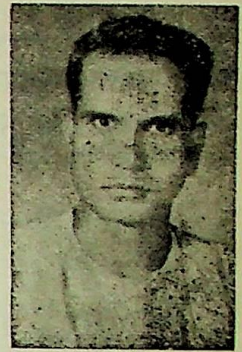
सत्यव्रत आयुर्वेदालंकार

ज० १० अक्टूबर १९३२ मोरटा (मेरठ); पि० श्री पं० जमीयतसिंह; शि० एम. ए. संस्कृत (आगरा); कार्य : गाजियाबाद में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय (१९५५-५६), उत्तरप्रदेश सरकार के राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सा-लयों में चिकित्साधिकारी (१९५७-६५), मेरठ में स्वतन्त्र चिकित्सा-कार्य; वि० छात्र जीवन में गुरुकुलीय साहित्यगोष्ठी के मन्त्री, वाक्-प्रतियोगिताओं में सम्मिलित एवं विजयोपहार प्राप्त, विश्व-विद्यालय के हॉकी-दल में सर्वोत्तम खिलाड़ी, उप-कुलमन्त्री, काव्य-रचना का शौक, रचनाएं विश्व ज्योति एवं साप्ताहिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित, मेरठ जिला कांग्रेस कमेटी के सक्रिय सदस्य, कई वर्षों तक नेशनल मेडीकल ऐसोशिएशन के अध्यक्ष एवं मन्त्री, मेरठ की साहित्यिक संस्था ज्योत्स्ना के अध्यक्ष, सामाजिक कार्यों और खेलों में विशेष अभिरुचि। प० ९ कल्याणनगर, मेरठ; टेलीफोन नं० 24717

सम्वत् २०१२ (सन् १९५६)

अविनाशचन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० २१ मई १९३८, बिहार शरीफ; पि० श्री गिरीधारीसिंह; शि० एम. ए. संस्कृत (आगरा); कार्य : बिहार शरीफ में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य (१९५६–६६), संप्रति आयुर्वेदिक कॉलेज अतर्रा में फिजियोलॉजी के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (१९६६ से); वि० पब्लिक हैल्थ इन्स्टीट्यूट पटना से चिकित्सा प्राविधिक प्रशिक्षण प्राप्त कुशल चिकित्सक एवं शिक्षक; प० अध्यक्ष शरीर क्रिया विज्ञान विभाग, आयुर्वेदिक कॉलेज,अतर्रा, बांदा

केशवदेव आयुर्वेदालंकार

ज० १२ मई १९३३, पि० श्री उम्मेदसिंह; कार्य : सनातनधर्म धर्मार्थ औषधालय मेरठ में चिकित्साधिकारी । प० सनातनधर्म धर्मार्थ चिकित्सालय, देहली मार्ग, मेरठ ।

गोपाल वेदालंकार

ज० २१ फरवरी १९३९; करीम नगर (आ. प्र.); पि० श्री कोंडल रेड्डी; शि० एम. ए. संस्कृत (उस्मानिया), एम. ए. जर्मन साहित्य (म्यूशेन, जर्मनी), पी-एच. डी. (उस्मानिया); कार्य : उस्मानिया विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग में प्राध्यापक (१९६०–६४), पश्चिमी जर्मनी के ट्यूबिंगेन विश्वविद्यालय में हिन्दी व तेलगु का अध्यापन (१९६५–६८), संप्रति उस्मानिया विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में रीडर; वि० या० पश्चिमी जर्मनी; वि० श्वेविश बोली पर अनुसन्धान-कार्य सम्पन्न, काव्य व वेद के अध्यापन में विशेष रुचि, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी । प० डॉ० एम. गोपाल रेड्डी, २–२–११०५/२१ तिलकनगर, हैदराबाद–४४ ।

ज्ञानचन्द्र आयुर्वेदालंकार

पि० श्री रामजीदास; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; प० कैथल मंडी (करनाल) ।

दीवानचन्द आयुर्वेदालंकार

ज० २१ अक्टूबर १९३१, राजपुरा (पंजाब); पि० श्री सम्मामल; कार्य : राजपुरा में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० नेत्ररोग-विशेषज्ञ, भारत सेवक समाज के मन्त्री (१९६३ से), भारत सेवक समाज के निःशुल्क नेत्र-चिकित्सा शिविर के इन्चार्ज, सेवा समिति के प्रधान, अखिल भारतीय सेवा-समिति के उपाध्यक्ष, नेशनल मेडिकल ऐसोशिएशन के उपाध्यक्ष (१९६६–७०), तथा पंजाब, हरियाणा, जम्मू-काश्मीर शाखा के मन्त्री (१९७१–७२), १९६५ व १९७१ में नागरिक सुरक्षा परिषद् के कमांडर इन चीफ, रोटरी क्लब राजपुरा के मन्त्री, अन्य अनेक सामाजिक व राजनीतिक सगठनों के सम्मानित सदस्य, सफल एवं ख्याति प्राप्त चिकित्सक, प्रतिष्ठित स्नातक । प० डॉ० दीवानचन्द्र गर्ग, मोहिन्दरगंज, राजपुरा (पंजाब) ।

धर्मदेव आयुर्वेदालंकार

ज० बनारस; पि० श्री दुखीलाल; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य । प० नागकुंआ, बनारस ।

प्रभातकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० ४ जनवरी १९३६, गुजरात; पि० श्री पं० परमानन्द विद्यालंकार; शि० एम. ए. संस्कृत (गुरुकुल); कार्य : राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालयों में शारीर-शास्त्र का अध्यापन, सम्प्रति राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज जम्मू में शारीर एवं शल्य विभाग के अध्यक्ष; वि० स्वाध्यायशील, पी-एच. डी. के लिए शोध-प्रबन्ध लिखने में व्यस्त, अपने विषय के अच्छे ज्ञाता, मधुरभाषी, मिलनसार, संस्कृत साहित्य एवं मानव शरीरशास्त्र के प्रति विशेष अभिरुचि, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी । प० ४९, रेहड़ी मोहल्ला, जम्मू ।

बृजलाल आयुर्वेदालंकार
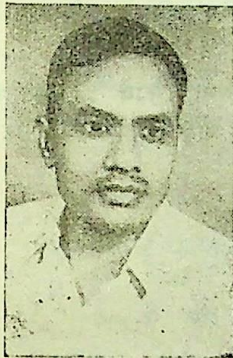
ज० २३ दिसम्बर १९३५, करनाल; पि० श्री बालकृष्ण; कार्य : हिमाचल प्रदेश में राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय में चिकित्साधिकारी (१९५७–६२), संप्रति विकासनगर (देहरादून) में स्वतन्त्र चिकित्सा-कार्य (१९६२ से); वि० सफल चिकित्सक । प० डॉ० बी. एल. संतोषी, विकासनगर (देहरादून) ।

बालकृष्ण आयुर्वेदालंकार

ज० कडेपुर (महाराष्ट्र); पि० बिट्ठलराव पटेल; कार्य : समाज सेवा । प० डॉ० बालकृष्ण माने, कन्डेपुर, तालुका अहमदपुर (उस्मानाबाद) ।

भूदेव विद्यालंकार

ज० ५ जनवरी १९३४, शिरोड़ (उस्मानाबाद); पि० श्री व्यंकटराव पाटिल; शि० एम. ए. हिन्दी-संस्कृत (उस्मानिया); कार्य : दयानन्द कॉलेज लातूर में प्राध्यापक; वि० दयानन्द कॉलेज की कार्यकारिणी के सदस्य, मराठवाड़ा विद्यापीठ की विधि सभा के सदस्य, सार्वजनिक एवं समाज सेवा सम्बन्धी कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान । प० सरस्वती नगर, इन्दिरा भवन, लातूर (उस्मानाबाद) ।

महेन्द्रसिंह आयुर्वेदालंकार

ज० ६ अक्टूबर १९३३, दिल्ली; पि० चौ० सोहनसिंह; शि० नेत्र-चिकित्सा में स्नातकोत्तर प्रशिक्षण (बंगलौर); कार्य : नई-दिल्ली में स्वतन्त्र-चिकित्सा-व्यवसाय । प० लाडोसराय, महरौली, नई-दिल्ली–३० ।

राजपाल आयुर्वेदालंकार

ज० अशोधा (रोहतक); पि० श्री खुशीराम; शि० एम. डी. (म्यूनिक); कार्य : पश्चिमी जर्मनी में सेवारत । प० Dr. Rajpal Dald, 635 Badnauheim Hochwalld–Krankenhaus, West Germany.

राजबहादुर आयुर्वेदालंकार

ज० ५ सितम्बर १९३३, हैदराबाद; पि० श्री गुरुशंताप्पी; शि० पी. जी. ओ. (बंगलौर); कार्य : गांधी चिकित्सालय बदरपुर में सहायक चिकित्साधिकारी, मिन्टो ऑफ्थैल्मिक हॉस्पिटल बंगलौर के क्लिनिकल-सहायक, इन्टरनेशनल एयर पोर्ट्स ऑथौरिटी ऑफ इण्डिया के सहायक चिकित्साधिकारी, दिल्ली स्वास्थ्य योजना (शिक्षा निदेशालय) में स्वास्थ्य-अधिकारी, पालम पॉटरीज दिल्ली के चिकित्साधिकारी, केन्द्रीय परिवार नियोजन संस्थान दिल्ली के परामर्शदाता, महरौली में स्वतन्त्र औषधालय का संचालन; वि० नेत्र रोग विशेषज्ञ, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी एवं योग्यता प्राप्त अम्पायर, छात्र-जीवन में हॉकी, फुटबॉल और बालीबॉल में विश्वविद्यालय-कलर प्राप्त, अखिल भारतीय श्रद्धानन्द हॉकी टूर्नामेन्ट के संयुक्त सचिव (१९५५), हॉकी में गोल-रक्षक के रूप में अच्छी ख्याति प्राप्त । प० महीपालपुर, नई दिल्ली-३७ ।

राजेन्द्रकुमार वेदालंकार

ज० १ जुलाई १९३६, अठिलापुर (बलिया); पि० श्री हरिप्रसाद; शि० विद्यावाचस्पति (गुरुकुल), एम. ए. हिन्दी (आगरा), एम. ए. संस्कृत (गुरुकुल), साहित्य-

रत्न (प्रयाग); कार्य : गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग में विज्ञान एवं हिन्दी के अध्यापक, संप्रति अनुवाद एवं प्रकाशन निदेशालय पंतनगर में वरिष्ठ अनुवादक (१९६९ से); र० पादप रोग विज्ञान, पशु-प्रजनन, प्रायोगिक मृदा सर्वेक्षण (तीनों अनूदित), सब्जियों के रोग, फलों के रोग, फसलों के रोग (तीनों सपादित); वि० सफल अनुवादक, विज्ञान — विशेष रूप से रसायन विज्ञान — में विशेष अभिरुचि, अध्यवसायी, स्वाध्यायशील। प० V/1386 पन्तनगर (नैनीताल)।

विश्वनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० १२ अक्टूबर सन् १९३३, दार्जिलिंग; पि० श्री गोपीराम शर्मा ; कार्य : डूआर्स ट्रांसपोर्ट नई दिल्ली में मैनेजर; वि० या० पाकिस्तान, नेपाल; वि० हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, व्यवसाय में विशेष अभिरुचि । प० डॉ. बी. एन. शर्मा, ४७८५ केलाशो स्ट्रीट, २३ दरियागज, नई दिल्ली–२

वेदप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० १० जुलाई १९३३, बयाना (भरतपुर); पि० श्री गणेशीलाल आर्य; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० आर्यसमाज एवं जनसंघ के सक्रिय कार्यकर्ता, सार्वजनिक कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान, सफल एवं सेवाभावी चिकित्सक प० बयाना (भरतपुर)।

वेदप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० जबलपुर; पि० वैद्य चतुर्भुज शर्मा; कार्य : आयुर्वेद कॉलेज में अध्यापन एवं चिकित्सा। प० राजकीय आयुर्वेद कॉलेज, इन्दौर (म. प्र.)।

शिवलाल आयुर्वेदालंकार

ज० सोनीपत; पि० श्री नन्दलाल हकीम; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय । प० अमर औषधालय, सोनीपत ।

सुरेशप्रसाद आयुर्वेदालंकार

पि० डॉ० राधेश्याम सक्सेना; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा - व्यवसाय । प० राय दीपचन्द स्ट्रीट, फर्रुखाबाद ।

सोमदेव आयुर्वेदालंकार

ज० २३ जनवरी १९३१, सरहिन्द; पि० श्री रामगोपाल आर्य; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय। प० ग्राम विशनगढ़, पो० दंदराला ढींडसा, वाया अमरगढ़, (पटियाला)।

हरिश्चन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० १३ अगस्त १९३३, मोरखड़ी (रोहतक); पि० श्री हजारीसिंह; कार्य : हरियाणा सरकार के स्वास्थ्य विभाग में चिकित्सा कार्य; वि० नेत्र रोग विशेषज्ञ, स्नातक परीक्षा में 'कामला रोग' पर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करके प्रतिष्ठित स्नातक, समाज सेवा एवं चिकित्सा-कार्य में विशेष अभिरुचि । प० मकान नं० ३२० मॉडल टाउन, दिल्ली रोड, रोहतक ।

सम्वत् २०१३ (सन् १९५७)

ओम्प्रकाश वेदालंकार

ज० जड़ौदा (ग्रा० प्र०); पि० श्री विट्ठलराय; शि० एम. ए. संस्कृत (उस्मानिया); कार्य : कुछ समय समय तक अध्यापन-कार्य, संप्रति समाज-सेवा; वि० समाज-सेवा में अनुराग, विविध सभा-समितियों के पदाधिकारी एवं सक्रिय सदस्य। प० निवघा, तालुका हदगांव (नान्देड़), महाराष्ट्र।

केशवदेव आयुर्वेदालंकार

ज० बिजनौर; पि० श्री यज्ञदत्त; कार्य : स्वतन्त्र कार्य। प० नागूवाला पो० नांगल (बिजनौर)।

जयप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० २९ जुलाई १९३८, जयपुर; पि० श्री चांदमल भारतीय; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय में गृह-चिकित्सक, पैथोलॉजी विभाग में डिमॉन्स्ट्रेटर तथा द्रव्यगुण विभाग में डिमॉन्स्ट्रेटर, संप्रति स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० छात्र-काल में विद्यार्थी-परिषद् के कार्यकलापों में सक्रिय, नेशनल इन्टीग्रेटेड मेडिकल ऐसोशिएशन के आजीवन सदस्य एवं मन्त्री, इस परिषद् की पत्रिका के सम्पादक मण्डल के सदस्य, बनीपार्क धर्मार्थ संस्थान जयपुर के आजीवन सदस्य, लायन्स क्लब की अटेन्डेन्स कमेटी के अध्यक्ष, राजस्थान स्वास्थ्य योग परिषद् के उपाध्यक्ष, अनेक पत्र-पत्रिकाओं में चिकित्सा विषयक विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित, सामाजिक कार्यों में विशेष अभिरुचि। प० ए २६/एफ (२) कांतिचन्द्र रोड, बनीपार्क, जयपुर।

ताराचन्द्र वेदालंकार

ज० ४ जुलाई १९३५, अम्बाला; पि० श्री पन्नालाल; शि० एम. ए. संस्कृत-हिन्दी (आगरा), बी एड्(आगरा); कार्य : सेना मे ए. ई. सी. नायब सूबेदार; वि० छात्रावस्था में हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, विश्वविद्यालय की टीम में सम्मिलित होकर कई टूर्नामेन्टों में भाग, उत्तम खिलाड़ी के रूप में पुरस्कृत, फुटबॉल में विशेष अभिरुचि। प० टी ६/३ कानवाई पार्क, अम्बाला छावनी।

बाबूलाल आयुर्वेदालंकार

ज० १५ मई १९३५; झुलना (दुर्ग); पि० श्री अनन्तराम पांडेय; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० पर्यटन व शिकार में विशेष रुचि, आर्य-समाज के क्रियाकलापों में सक्रिय योगदान, छत्तीसगढ़ कल्याण समिति कोरबा के सदस्य। प० कोरबा (बिलासपुर), मध्य-प्रदेश।

रणवीर विद्यालंकार

ज० २५ मार्च १९३५, सुनाम (पटियाला); **पि०** श्री खुशहालचन्द पुरी; **शि०** विद्यावाचस्पति इतिहास (गुरुकुल), एम०ए० इतिहास (आगरा), साहित्यरत्न हिन्दी (प्रयाग); **कार्य :** मुद्रण एवं प्रकाशन का स्वतन्त्र व्यवसाय (१९६०—७४), संप्रति राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय दिल्ली में निदेशक; **वि०** कालिदासकालीन भारत (रघुवंश के आधार पर) तथा मुगल स्थापत्यकला एवं चित्रकला का शोधपूर्ण अध्ययन, गांधी स्मारक संग्रहालय समिति और गांधी बुक हाउस नई दिल्ली के मन्त्री, अध्ययन-अध्यापन संग्रहालय-विज्ञान और फोटोग्राफी में विशेष अभिरुचि, अच्छे लेखक । **प०** १४—राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली ।

ललितमोहन वेदालंकार

शि० एम. ए., बी. एड.; **कार्य :** अध्यापन । **प०** छाजूसिंह का द्वार, अलवर (राजस्थान) ।

विश्वप्रकाश वेदालंकार

ज० जौनपुर; **पि०** श्री विश्वनाथदास आर्य । **कार्य :** स्वतन्त्र कार्य । **वि०** संगीत, भ्रमण एवं कृषि में रुचि, आर्य-समाज के सक्रिय कार्यकर्ता; **प०** विश्व भवन, ईशापुर, जौनपुर (उ०प्र०) ।

सुखदेव आयुर्वेदालंकार

ज० ३० जनवरी १९३४, रानीपुर रियासत (खैरपुर स्टेट); **पि०** श्री ऐन० बी० ठाकुर; **शि०** ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); **कार्य :** बोचासन (खेड़ा) में अवैतनिक सेवा-कार्य (१९५८-५९), सणाली सर्वोदय आश्रम, दांता (बनास कांठा) द्वारा सचालित चिकित्सालय में चिकित्साधिकारी (१९५९-६१). महाल आरोग्य मण्डल, पेटलाद (खेढ़ा) द्वारा संचालित चिकित्सालय में प्रभारी चिकित्साधिकारी (१९६१—६५), बोचासन (खेड़ा) में चिकित्साधिकारी (१९६५—७०), बोचासन में प्राइवेट प्रैक्टिस (१९७०-७१), जिला पंचायत बनासकांठा द्वारा संचालित चिकित्सालय में प्रभारी चिकित्साधिकारी (१९७१ से); **र०** विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में 'हाथियों के बीच', 'गेंद का मेला', 'हरिद्वार से गङ्गोत्री तक', 'गुजरात के आदिवासी भील' आदि सचित्र लेख प्रकाशित; **वि०** काय-चिकित्सा विषय में कष्टसाध्य रोगों के लिए सस्ती व अच्छी औषधियों की खोज में व्यस्त, फोटोग्राफी और वन-पर्यटन में विशेष अभिरुचि—लगभग १०० रंगीन व श्याम/श्वेत फोटो व ट्रांस्पेरेन्सी, धर्मयुग, 'इलस्ट्रेटेड वीकली आफ इण्डिया' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा एक ही रंगीन ट्रांस्पेरेन्सी जर्मनी की तीन अलग-अलग सामयिकों में कालान्तर में प्रकाशित तथा पुरस्कृत । **प०** म रा मोहल्ला, डीसा (जिला बनासकांठा), उत्तर गुजरात ।

सुरेशकुमार विद्यालंकार

ज० २ फरवरी १९३७, दिल्ली; **पि०** श्री धर्मदेव वेदवाचस्पति; **शि०** विद्यावाचस्पति हिन्दी (गुरुकुल), एम. ए. हिन्दी (दिल्ली), एम. ए. संस्कृत (आगरा) पीएच. डी. हिन्दी (आगरा), —'प्रेमचन्द की भाषा का शैलीवैज्ञानिक विश्लेषण,' डिप्लोमा इन लिंग्विस्टिक्स (पूना); **कार्य :** गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में हिन्दी लेक्चरर (१९५९-६९), डेक्कन कॉलेज पूना में सीनियर रिसर्च फैलो (१९६९-७१), केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा में रीडर (१९७१ से); **र०** राष्ट्रपति कैनेडी की जीवन झांकी (अनु०), शैली और शैलीविज्ञान, शैलीविज्ञान, शैली विज्ञान और प्रेमचन्द की भाषा, आधुनिक गद्य संग्रह, हिन्दी इन एडवरटाइज़मेन्ट : ए स्टडी इन

लिंग्विस्टिक मेथड, प्रोसीडिंग्स ऑफ फोर्थ ऑल इण्डिया कॉन्फ्रेंस ऑफ लिंग्विस्ट्स (सम्पादित); वि० हिन्दी व अंग्रेजी में भाषाविज्ञान व शैलीविज्ञान संबंधी विषयों पर लगभग २० शोधपत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित, अपने विषय के जाने-माने विद्वान् एवं लेखक, अध्यवसायी एवं स्वाध्यायशील। प० रीडर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा – ५।

हरिशंकर आयुर्वेदालंकार

ज० ४ जनवरी १९३४, हिंगोली; पि० श्री पन्नालाल; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० शिकार एवं फोटोग्राफी में विशेष अभिरुचि, लायन्स क्लब देगलूर के सदस्य। प० पो० देगलूर (नांदेड), महाराष्ट्र।
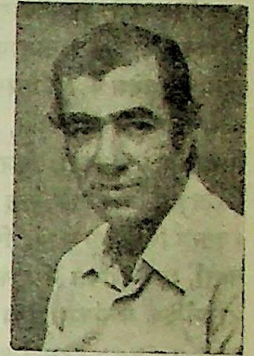
सम्वत् २०१४ (सन् १९५८)

अनिलकुमार वेदालंकार

ज० महाराष्ट्र; पि० श्री वी. वी. उस्वेवाद; कार्य : अध्यापन। प० माणिक स्मारक आर्य विद्यालय, पो० हिंगोली (महाराष्ट्र)।

अभयदेव आयुर्वेदालंकार

शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : सहारनपुर में स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० हॉकी के अच्छे खिलाड़ी। प० गुप्ता क्लिनिक, खुमरान, सहारनपुर।

आर्यकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० २७ मई १९३६, बिलासपुर (रामपुर); पि० श्री केशवशरण; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० दो विद्यालयों की स्थापना एवं प्रबन्ध में महत्त्वपूर्ण योगदान, कन्या विद्यालय बिलासपुर के प्रबन्धक, संगीत, फोटोग्राफी एवं पर्यटन में विशेष अभिरुचि, सफल चिकित्सक। प० बिलासपुर (रामपुर)।

कैलाश विद्यालंकार

शि० एम. ए. हिन्दी-संस्कृत (आगरा); कार्य : केन्द्रीय विद्यालयों में शिक्षक; वि० चित्रकला में रुचि, गुरुकुल संग्रहालय और 'कालीदास के पक्षी' नामक पुस्तक के लिए सुन्दर चित्रों की रचना, स्वाध्यायशील। प० सेंट्रल स्कूल, एयरफोर्स, दिल्ली छावनी।

जयवीर आयुर्वेदालंकार

ज० २२ फरवरी १९३१, फहीमपुर कलां (मंसूरपुर); पि० श्री अतरसिंह; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : गुरुकुल कुरुक्षेत्र में चिकित्सक (१९५९-६४), स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, भारतीय लोकदल मोदीनगर के सदस्य, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, विश्वविद्यालय की टीम में सम्मिलित हो कर कई टूर्नामेंटों में भाग तथा सर्वोत्तम खिलाड़ी का पुरस्कार प्राप्त। प० २४१ ब्रह्मपुरी, मुजफ्फरनगर।

धर्मवीर आयुर्वेदालंकार

ज० १ अक्टूबर १९३६, समदपुर (मुरादाबाद); पि० श्री मुकन्दसिंह; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय। प० मीरापुर (मुफ्फजरनगर)।

नवलकिशोर वेदालंकार

शि० एम. ए. हिन्दी; कार्य : अध्यापन। प० १-१४२, मॉडल बस्ती, दिल्ली।

नारायणदत्त आयुर्वेदालंकार

पि० श्री लक्ष्मीनारायण; **शि०** ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); **कार्य** : नालागढ़ (अम्बाला) में चिकित्सक, हिमाचल प्रदेश के अधीनस्थ राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में चिकित्साधिकारी, गुरुकुल कांगड़ी के आयुर्वेद महाविद्यालय में प्रवक्ता, गुजरात नेत्र राहत मण्डल बोचासन (खेड़ा) में चिकित्सक, कुछ वर्ष दिल्ली और अब कानपुर में स्वतन्त्र चिकित्सा-कार्य; **वि०** युवक कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्त्ता, छात्र-जीवन में हॉकी के अच्छे खिलाड़ी मधुरभाषी, राजनैतिक कार्यकलापों व चिकित्सा कार्य में विशेष अभिरुचि । **प०** १२८ / ५६ सी ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर–११ ।

नृपेन्द्र आयुर्वेदालंकार

शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ) **कार्य** : स्वतंत्र चिकित्सा-कार्य; **वि०** सुवक्ता, अनेक वादविवाद एवं भाषण प्रतियोगिताओं में प्रतिनिधित्व, आयुर्वेद संबन्धी विषयों में विशेष अभिरुचि, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी । **प०** सिवहारा (बिजनौर) ।

प्रशान्तकुमार वेदालंकार

ज० २१ दिसम्बर १९३७, सीतापुर (मुजफ्फरगढ़), **पि०** श्री वासुदेव विद्यालंकार; **शि०** एम. ए. हिन्दी (दिल्ली), पीएच. डी. हिन्दी (दिल्ली); **कार्य** : हंसराज कॉलेज दिल्ली में हिन्दी विभाग में प्राध्यापक; **र०** वैदिक साहित्य में नारी, आदि; **वि०** 'युगीन' पत्रिका का संपादन, आर्यसमाज की गतिविधियों में योगदान, अच्छे वक्ता, अखिल भारतीय वादविवाद-प्रतियोगिताओं में गुरुकुल विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित तथा पुरस्कार प्राप्त, सार्वजनिक कार्यों में विशेष रुचि, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् दिल्ली के भू. पू. उपाध्यक्ष । **प०** ७/२ रूपनगर, दिल्ली ।

महेन्द्रप्रताप आयुर्वेदालंकार

ज० १६ नवम्बर १९३६, गंडहा (बदायूं); **पि०** श्री शिवकुमारदत्त; **शि०** ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); **कार्य** : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; **वि०** धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ने, उन पर चर्चा-परिचर्चा करने, प्राकृतिक स्थलों व तीर्थस्थानों के पर्यटन में अभिरुचि । **प०** श्री महेन्द्रप्रताप शर्मा, ग्रा. पो. गंडहा, दातागंज (बदायूं) ।

युधिष्ठिर आयुर्वेदालंकार

पि० श्री दुःखीलाल; **शि०** ए. एम बी.एस. (लखनऊ); **कार्य** : स्वतन्त्र कार्य । **प०** ८/२७ नागकुंआ, बनारस ।

योगराज आयुर्वेदालंकार

पि० डॉ० रामलाल ग्रोवर; **कार्य** : स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय; **वि०** हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, आगरा जिले की हॉकी टीम में प्रतिनिधित्व । **प०** ग्रोवर क्लिनिक, शाहगंज, आगरा ।

रघुवीरसिंह आयुर्वेदालंकार

ज० बिजनौर; **पि०** श्री रामस्वरूप; **शि०** ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); **कार्य** : खेती व चिकित्सा का निजी कार्य । **प०** ग्राम मुखतारपुर, पो० साहनपुर (बिजनौर) ।

राजेन्द्रनाथ आयुर्वेदालंकार

ज० हैदराबाद; **पि०** श्री महादेव; **कार्य** : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय । **प०** न्यू बिल्डिग, बैंकागण्ड स्ट्रीट, निजामाबाद; हैदराबाद ।

राजेश्वर आयुर्वेदालंकार

ज० २८ अक्टूबर १९३६, जैसलमेर; **पि०** श्री सोहनपाल भाटिया; **शि०** ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); **कार्य** : आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी में गृह-चिकित्सक (१९५९), राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय जैसलमेर में वैद्य (१९६०–६५) राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय, जोधपुर में सहायक चिकित्सक एवं विवेचक (१९६५ – ६९), आयुर्वेद महाविद्यालय उदयपुर में चिकित्सक एवं विवेचक (१९७०), राजस्थान लोकसेवा आयोग द्वारा द्वितीय श्रेणी के चिकित्सक पद पर

चयन (१९७१), प्रथम श्रेणी चिकित्सक पद पर पदोन्नति (१९७३), संप्रति राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय जैसलमेर में वरिष्ठ चिकित्सक; वि० नेशनल इन्टीग्रेटेड मेडिकल एसोशिएशन के सदस्य । प० मकान नं० ३०३० जैन धर्मशाला के पास, जैसलमेर ।

विजयसिंह आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० बिजनौर; पि० श्री शेरसिंह; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : खेती व चिकित्सा का निजी व्यवसाय।

विश्वबन्धु आयुर्वेदालंकार

ज० १५जून १९३६, प्रागपुर (कांगड़ा); पि० श्री पृथ्वीचन्द्र आर्य; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); आयुर्वेदवाचस्पति, एम. डी. (पटियाला); कार्य : हिमाचल प्रदेश राज्य व शिमला नगरपालिका के आयुर्वेदिक औषधालयों व ओषधी निर्माणशालाओं में चिकित्साधिकारी, सम्प्रति राजकीय आयुर्वेदिक औषधि निर्माणशाला जोगिन्द्र नगर में रस निर्माण कक्ष में अध्यक्ष; वि० एम. डी. के लिए 'रस पर्पटी का संग्रहणी पर प्रभाव' विषय पर शोधप्रबन्ध प्रस्तुत, अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन हिमाचल प्रदेश शाखा शिमला के सदस्य, आर्यसमाज प्रागपुर के सदस्य, अध्ययन एवं रोगियों की सेवा में विशेष अभिरुचि । प० राजकीय आयुर्वेदिक फार्मेसी, जोगिन्द्र नगर (मण्डी), हि. प्र. ।

सुरेन्द्रप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० ३१ जुलाई १९३४; झालू (बिजनौर); पि० श्री फतेहचन्द्र अग्रवाल; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतंत्र चिकित्सा कार्य; वि० नई-नई आयुर्वेदिक ओषधियों के अनुसन्धान एवं निर्माण में रुचि, आर्यसमाज और अन्य सामाजिक संगठनों एवं संस्थाओं के क्रियाकलापों में सक्रिय योगदान, अनेक संगठनों के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष; प० अग्रवाल आई एण्ड जनरल हॉस्पिटल अमरोहा (मुरादाबाद), टेलि. १९२ ।

सम्वत् २०१५ (सन् १९५९)

कृष्णकान्त आयुर्वेदालंकार

ज० हरिद्वार; पि० श्री पं० उमाकान्त उप्रेती; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतंत्र चिकित्साव्यवसाय; वि० कृषि तथा खेलकूद में विशेष अभिरुचि । प० नेपाल क्लिनिक, अपर रोड, हरिद्वार (सहारनपुर) ।

गोपालकृष्ण आयुर्वेदालंकार

प० द्वारा राजगोपाल प्रकाशन, ८ फैज बाजार, दरियागंज, दिल्ली ।

जगन्नाथ विद्यालंकार

ज० १ जून १९३६, आंध्र प्रदेश; पि० श्री एम० कोंडल रेड्डि; शि० एम. ए. संस्कृत (दिल्ली विश्वविद्यालय), एम. ए. हिन्दी (उस्मानिया विश्व०), एम.ए. भाषाशास्त्र (उस्मानिया विश्व०), एम. ए. तुलनात्मक भाषा-विज्ञान (बर्कले एवं हवाई विश्व०, अमरीका), एम. ए. ध्वनिग्राम विज्ञान (एरिज़ोना विश्व०), पी. एच. डी. (एरिज़ोना विश्व०) -- "लोनवर्ड फोनोलॉजी"; कार्य : हैदराबाद में हिन्दी तथा संस्कृत का अध्यापन (१९६१-६८), केलिफोर्निया वहवाई विश्वविद्यालय में संस्कृत हिन्दी का अध्यापन (१९६८ से), इस समय एरिज़ोना विश्वविद्यालय में भाषा-विज्ञान के सहायक प्राध्यापक; र० भारत व अमेरिका

की पत्र-पत्रिकाओं में कई शोध-लेख प्रकाशित; वि० या० यूरोप, अमेरिका, मैक्सिको, फिलीपीन्स, जापान, थाईलैंड आदि देशों की यात्रा; वि० लिंग्विस्टिक सोसायटी ऑफ अमेरिका के सदस्य, खेलकूद में रुचि के कारण मैक्सिको, म्यूनिख, मौंट्रियल में हुए ओलिम्पिक्स देखने गए, भ्रमण, विविध भाषाओं के अध्ययन तथा फोटोग्राफी में विशेष अभिरुचि । प० Dept.of Oriental Studies, University of Arizona Tucson, Az 85721, U. S. A.

बालानन्द आयुर्वेदालंकार

शि० ए.एम.बी.एस. (लखनऊ); कार्य : हिमाचल प्रदेश सरकार के अधीन आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में चिकित्साधिकारी ।

भूपेन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार

शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ), एम. डी.(म्यूनिक); कार्य : पश्चिमी जर्मनी में चिकित्सा-कार्य । प० Dr. B. K. Sharma, Kaln, Mainzer, Strasse-26 W. Germany.

महेन्द्रप्रताप आयुर्वेदालंकार

पि० श्री निरंजनलाल शर्मा; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : चिकित्सा । प० गांधी ग्राम, पो. सौदुल्लागंज (बदायूं) ।

माधवराम आयुर्वेदालंकार

ज० १३ जनवरी १९३६, सालपुर; पि० श्री प्रयागदत्त मिश्र; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा - व्यवसाय । प० सालपुर, पो० अजयपुर (सीतापुर) ।

योगेन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार

पि० श्री वैद्य उदितनारायण; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय । प० द्वारा रॉयल मेडीकल हॉल, गांधी रोड, देहरादून ।

रवीन्द्रकुमार आयुर्वेदालङ्कार

ज० हरदोई; पि० श्री वीरेन्द्र कुमार विद्यार्थी; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : उत्तरप्रदेश शासन के आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में चिकित्सक । प० डॉ० आर.के. विद्यार्थी, स्टेट आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी ससपान (रहीमाबाद) ।

राजकुमार आयुर्वेदालंकार

पि० श्री रामगोपाल; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-कार्य । प० डॉ० राजकुमार गर्ग, पिलखुआ (मेरठ) ।

रवीन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० १५ अप्रैल १९३८, हरदोई; पि० श्री गदाधर प्रसाद विद्यार्थी; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : भारत सेवक समाज शिविर बेहटा (हरदोई) में चिकित्साधिकारी, संप्रति उत्तर-प्रदेश सरकार के आयुर्वेदिक चिकित्सालय में चिकित्साधिकारी; वि० शल्यचिकित्सा एवं परिवार-नियोजन-कार्यक्रम में विशेष रुचि । प० राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, पो० ससपन (लखनऊ) ।

विष्णुदत्त आयुर्वेदालंकार

ज० फलौदा (मुजफ्फरनगर); पि० श्री जिगरामसिंह; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-कार्य । प० डॉ० विष्णुदत्त त्यागी, ग्राम फलौदा, पो० पुरकाजी (मुजफ्फरनगर) ।

सुभाषचन्द्र आयुर्वेदालंकार

पि० श्री सरदारीलाल वैद्य; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-कार्य । प० मेन बाजार, पठानकोट (पंजाब) ।

हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार

पि० श्री खुशीराम वैद्य; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : चिकित्सा-कार्य । प० बुगरासी (बुलन्दशहर) ।

हरिराजसिंह आयुर्वेदालंकार

ज० १ जनवरी १९३६, मोरना (बिजनौर); शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय (१९६०–६१), संप्रति सेवा समिति धर्मार्थ औषधालय धामपुर में प्रधान चिकित्साधिकारी; वि० चिकित्सा एवं सार्वजनिक कार्यों में विशेष अभिरुचि, सेवा समिति धामपुर की कार्यकारणी के सदस्य । प० सेवा समिति धर्मार्थ औषधालय, धामपुर (बिजनौर) ।

हरिशंकर आयुर्वेदालङ्कार

पि० श्री राजाराम शर्मा; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : चिकित्सा । प० बिलसी (बदायूं) ।

सम्वत् २०१६ (सन् १९६०)

आनन्दप्रकाश आयुर्वेदालंकार

पि० श्री करतारसिंह; शि० ए० एम० बी० एस० (लखनऊ); कार्य : ज्वालापुर में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; प० डॉ० आनन्दप्रकाश चौहान, घासमण्डी, ज्वालापुर (सहारनपुर) ।

करुणेश विद्यालंकार (त० शि० क० कृष्णन)

ज० ३० मार्च १९४२, मुसरी (तिरुच्चिरापल्ली); पि० श्री टी० एन० शिवलिंगम; शि० एम. ए. हिन्दी (आगरा); कार्य : गवर्नमेन्ट आर्ट्स कालेज, मद्रास में हिन्दी के प्राध्यापक (१९६२–६४), 'मेखला' नामक पत्रिका का प्रकाशन, संप्रति साउथ मद्रास इलेक्ट्रिक सप्लाई कारपोरेशन में प्रचार व जन-सम्पर्क अधिकारी (१९६६ से); र० तमिलशास्त्र की एक झलक; वि० दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की कार्यकारिणी के सदस्य तथा इस सभा की पत्रिका के सम्पादक, 'इन्दिरा गुरुकुलम्' नामक संस्था के संस्थापक, हिन्दी व संस्कृत के प्रसार में सक्रिय योगदान, हॉकी व क्रिकेट के अच्छे खिलाड़ी, तमिल-साहित्य पर अनुसन्धान में विशेष अभिरुचि । प० ५८ ए-इछिमारा लेन, तिरुच्चिरापल्ली–२ ।
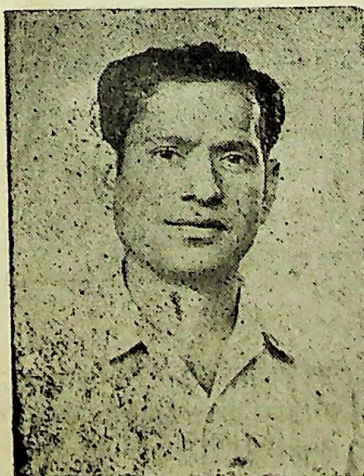
घनश्याम आयुर्वेदालंकार

ज० १८ अक्टूबर १९३६, गांजापुर; पि० श्री रामजीवन अग्रवाल; शि० ए०एम० बी० एस० (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० अग्रवाल नवयुवक संघ हिंगोली में अध्यक्ष, सार्वजनिक कार्यों में विशेष अभिरुचि । प० डॉ० घनश्याम रामजीवन अग्रवाल; गांधी चौक, हिंगोली (परमणी) ।

जगदीशप्रसाद आयुर्वेदालंकार

ज० १९ जुलाई १९३९, बाजना (मथुरा); पि० श्री छोटेलाल आर्य; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यबसाय; वि० सामाजिक एवं

राजनैतिक गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण योगदान, विद्या-संवर्धिनी सभा बाजना के सदस्य, श्री बृज हितकारी विद्यालय बाजना के प्रबन्धक, औषधि-निर्माण में विशेष अभि-रुचि। प० आर्य बन्धु, आयुर्वेद भवन, बाजना (मथुरा)।

दिलीप वेदालंकार

ज० ११ जुलाई १९३६, मोगर (आणंद); पि० श्री आशाभाई दाजीभाई महीडा; शि० एम. ए. संस्कृत (दिल्ली), पीएच. डी. संस्कृत (गुरुकुल) –'वेदों में मानववाद; कार्य : हंसराज कॉलेज दिल्ली में प्रवक्ता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से नैरोबी में वैदिक धर्म के प्रचारक, गुरुकुल सूपा के भू० पू० आचार्य एवं मुख्याधिष्ठाता, आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा में संस्कृत के प्राध्यापक व विभागाध्यक्ष; र० वैदिक मानव-वाद; आपणो सांस्कृतिक वारसो, पतिना पत्नी; वि० या० अफ्रीका, इंग्लैण्ड, अमेरिका, इटली, नार्वे, आस्ट्रिया, स्वीडन, रूस, फ्रांस आदि; वि० आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान, विदेशों में ६ वर्ष तक प्रचार-कार्य में व्यस्त, अफ्रीका में अनेक आर्य बाल मंदिरों एवं आर्यसमाजों की स्थापना, गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री, अनेक संगठनों एवं संस्थाओं के उपमन्त्री, हिन्दू धर्म रक्षक और प्रसारक मंडल गुजरात के उपाध्यक्ष, पं० सातवलेकर स्मारक अखिल भारतीय संस्कृत प्रसार-समिति बड़ौदा के मंत्री एवं संयोजक, आर्य-कुमार महासभा बड़ौदा के निरीक्षक, ओजस्वी वक्ता, सफल लेखक, उत्साही कार्यकर्ता एवं निपुण प्रशासक। प० आर्य-कन्या महाविद्यालय, कारेली बाग, बड़ोदरा।

महाव्रत आयुर्वेदालंकार

ज० १ अगस्त १९३४, वेमार (बड़ौदा); पि० श्री लल्लुभाई जीवाभाई पटेल; शि० ए० एम० बी० एस० (लखनऊ); कार्य : पहले गुजरात नेत्र राहत एवं आरोग्य मण्डल में चिकित्सा-कार्य, संप्रति स्वतन्त्र चिकित्सा - व्यवसाय; वि० खेडा और पंचमहाल जिला नेत्र-चिकित्सा सोसायटी के सदस्य। प० डॉ० महाव्रत एल. पटेल, पो० बोरसद (खेड़ा), गुजरात।

महीपतसिंह आयुर्वेदालंकार

ज० १५ अगस्त १९३६, तैल भवांसी (गढ़वाल); पि० श्री भूपालसिंह; शि० ए०एम०बी०एस० (लखनऊ); कार्य : राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में चिकित्सा-धिकारी; वि० चिकित्साशास्त्र में हुई नवीन खोजों को जानने और तत्सम्बन्धी साहित्य पढ़ने में अभिरुचि। प० राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, लगौण्डी (गुप्तकाशी), जिला चमोली।

यज्ञदत्त आयुर्वेदालंकार

पि० श्री कृष्णदत्त; शि० ए. एम. बी०एस. (लखनऊ); कार्य : चिकित्सा। प० द्वारा कृष्ण फार्मेसी, ज्वालापुर (सहारनपुर)।

राजेन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार

पि० श्री सुन्दरलाल तितोरिया; शि० ए.एम.बी.एस. (लखनऊ), कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य ।

राजेन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० ४ नवम्बर १९३८, मेरठ शहर; पि० श्री उमराव सिंह; शि० ए० एम० बी० एस० (लखनऊ), एम० ए० संस्कृत (आगरा); कार्य : उत्तर-प्रदेश राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में चिकित्सक, अब स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० नेशनल इन्टीग्रेटेड मेडिकल एसोसिएशन के सदस्य, मेरठ शहर की कांग्रेस कमेटी तथा ब्रह्मपुरी (मेरठ) की आर्यसमाज के सदस्य, पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित। प० ३१ कनोहरलाल ट्रस्ट मार्केट, मेरठ शहर; ५३४ ब्रह्मपुरी, मेरठ शहर ।

राजेन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार

पि० श्री मुरारीलाल शर्मा; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय । प० हसनपुर (मुरादाबाद) ।

राजेन्द्रपाल आयुर्वेदालंकार

पि० डॉ० बाबूराम; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य । प० शिवपुरी, पो० खन्ना (लुधियाना) ।

रामप्रकाश आयुर्वेदालंकार

शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : हिमाचल प्रदेश के राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में चिकित्साधारी । प० राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, हैटली, तहसील हमीरपुर (काँगड़ा) ।

विक्रमसिंह आयुर्वेदालंकार

पि० श्री प्रतापसिंह कटौच; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : चिकित्सा । प० ६४ ई विद्या विहार, पिलानी (राजस्थान) ।

विजेन्द्रसिंह आयुर्वेदालंकार

ज० २८ अक्टूबर १९३५, पौड़ी गढ़वाल; पि० श्री दौलतसिंह तड़ियाल; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : हिमाचलप्रदेश सरकार के आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में चिकित्साधिकारी, इस समय शिल्ला (सिरमौर) में । प० राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, शिल्ला (पौंटा), जिला सिरमौर (हि. प्र.) ।

विश्वराजम् वेदालंकार

ज० ९ दिसम्बर १९३९, परासी बाजार (नेपाल); पि० श्री पं० केशवराज उपाध्याय; शि० विद्यावाचस्पति इतिहास (गुरुकुल), एम. ए. इतिहास (आगरा), डिप् इन. एड्. (त्रिभुवन); कार्य : गुरुकुल कांगड़ी में इतिहास विभाग के प्रवक्ता(१९६०-९२), नेपाल के हाई स्कूल में अध्यापक एवं मुख्याध्यापक; वि० छात्र - जीवन में संस्कृतोत्साहिनी सभा गुरुकुल कांगड़ी के मंत्री, १९७५ में त्रिभुवन विश्वविद्यालय छात्रावास में प्रीफेक्ट, रेडक्रॉस सोसाइटी की जिला कमेटी के सदस्य,

जिला शिक्षा समिति के सदस्य, सामाजिक कार्यों में विशेष अभिरुचि । प० श्री विश्वराजम् उपाध्याय वेदालंकार, परासी बाजार, (नेपाल), पो० नौतनवां वाया भैरवा, (गोरखपुर) ।

वेदव्यास वेदालंकार

ज० ८ नवम्बर १९३८, बिहारशरीफ; पि० श्री रामेश्वरगोपाल आर्य; शि० एम. ए. संस्कृत (आगरा), एम. ए. हिन्दी (भागलपुर), डी.एम.एस. (बिहार होमियोपैथिक बोर्ड); कार्य : विहार शरीफ में अध्यापन कार्य; वि० आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य, संस्कृत साहित्य के अध्ययन में विशेष अभिरुचि, अच्छे वक्ता, स्वाध्यायशील । प० लहेरी मुहल्ला, पो० विहारशरीफ (नालन्दा), बिहार ।

व्रजमोहन आयुर्वेदालंकार

शि०ए.एम.बी.एस.(लखनऊ); कार्य : स्वतंत्र-चिकित्सा व्यवसाय । प० मेन बाजार, मीरापुर (मुजफ्फरनगर) ।

सत्यपाल आयुर्वेदालंकार

ज० गुरुकुल कांगड़ी; पि० श्री रक्षपाल; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : उत्तर प्रदेश शासन के आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में सेवारत; वि० अच्छे वक्ता, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी । प० द्वारा श्री रक्षपाल जी, वानप्रस्थाश्रम के निकट, ज्वालापुर (सहारनपुर) ।

सोमदत्त आयुर्वेदालंकार

ज० ५ अप्रैल १९३९, थानाभवन; पि० श्री चमनलाल; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय । प० गढ़ी अब्दुल्ला खां (कच्ची गढ़ी), मुजफ्फरनगर ।
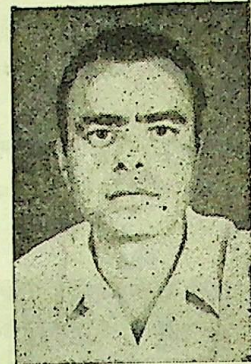
श्रीराम आयुर्वेदालंकार

ज० १ जून १९३९, गुन्टूर (आ. प्र.); पि० श्री के. अप्पय्या चौधरी; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); नेत्र चिकित्सा में स्नातकोत्तर प्रशिक्षण (बंगलौर); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा - व्यवसाय; वि० हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, गुरुकुल विश्वविद्यालय के हॉकी दल में सम्मिलित, नेत्र-रोग विशेषज्ञ । प० डॉ०के० श्रीराम चौधरी, ईस्वरी आई हॉस्पिटल चिलाकालूर्पेट (गुन्टूर), आंध्र प्रदेश ।
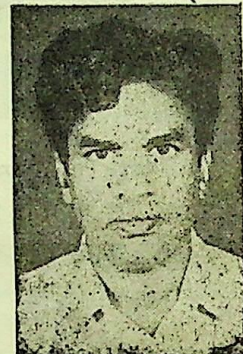
हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० कोटा (सहारनपुर); पि० श्री प्यारेलाल; शि० ए.एम.बी.एस. (लखनऊ); कार्य : आदर्श नेत्र-चिकित्सालय, (डॉ० भगवानदास ट्रस्ट) दिल्ली में चिकित्सक, अब देवबंद में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० सफल चिकित्सक । प० ४८ ब्रह्मपुरी, मुजफ्फरनगर ।

सम्वत् २०१७ (सन् १९६१)

दीनदयाल आयुर्वेदालंकार

ज० ३ जुलाई १९३७, थापली (पौड़ी गढ़वाल); पि० श्री डबलसिंह बिष्ट; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : रिवालसर (हिमाचल प्रदेश) में चिकित्साधिकारी (१९६२–६५), हिमाचल प्रदेश की राजकीय आयुर्वेदिक फार्मेसी में निर्माण वैद्य एवं उपव्यवस्थापक (१९६५ से);

र० धन्वन्तरी १९७१ का आसव-निर्माण विशेषांक; वि० हिमाचल-प्रदेश आयुर्वेद सम्मेलन व हिन्दी साहित्य संगम के सदस्य, 'सचित्र आयुर्वेद' और 'धन्वन्तरी' में आयुर्वेद विषयक लेख प्रकाशित, आसवारिष्ट के निर्माण में विशेष रुचि, सफल वैद्य। प० उप-व्यवस्थापक, राजकीय आयुर्वेदिक फार्मेसी, जोगेन्द्रनगर (मण्डी), हि० प्र०।

धर्मवीर विद्यालंकार

ज० ५ मई १९३८, निरना (बीदर); पि० श्री मलशेट्टप्पा चनबसप्पा सोपन्ना; शि० एम. ए. हिन्दी (उस्मानिया); कार्य : राजकीय माध्यमिक शाला निरना में हिन्दी के विशेष अध्यापक, कला व विज्ञान महाविद्यालय जमखण्डी में हिन्दी प्राध्यापक, पहले श्री एस. एस. खूबा बसवेश्वर कला और विज्ञान महाविद्यालय बसवकल्याण में तथा सम्प्रति श्री शरणबसवेश्वर कला महाविद्यालय गुलबर्गा (कर्नाटक) में हिन्दी विभाग के रीडर व विभागाध्यक्ष; र० सन्देशगड्डु; वि० विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्त्वावधान में 'टीचर इंप्रूवमेंट फैलोशिप' पर मैसूर विश्वविद्यालय से "महात्मा दादू साहित्य : स्रोत परिप्रेक्ष्य" विषय लेकर शोधकार्यरत, हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, साहित्य के पठन-पाठन में विशेष अभिरुचि। प० प्रो० धर्मवीर एम. सोपन्ना, मकान नं० १०-२-५४ संगमेश्वरनगर, गुलबर्गा (कर्नाटक)।
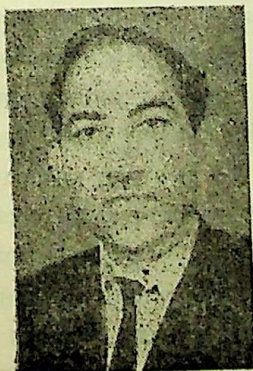
धूमसिंह आयुर्वेदालंकार

ज० ३१ जून १९३८, दीवालहेड़ी; पि० श्री रामलाल; शि० ए. एम.बी.एस. (लखनऊ); कार्य: स्वतंत्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० कांग्रेस के प्रमुख सक्रिय कार्यकर्ता, आर्यसमाज देवबन्द के सदस्य, नगर की प्रमुख राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण योगदान। प० देवबन्द (सहारनपुर)।

नरेन्द्रदेव आयुर्वेदालंकार

ज० २७ मार्च १९३८, धमोरा (रामपुर); पि० श्री चोखेलाल आर्य; शि० ए.एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० आर्यसमाज धमोरा, दयानन्द सालवेशन मिशन और उपप्रतिनिधि सभा रामपुर के सदस्य, आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, समाजसेवा एवं चिकित्सा-कार्य में विशेष अभिरुचि। प० धमोरा (रामपुर), उत्तर-प्रदेश।

प्रियव्रत वेदालंकार

ज० १३ अप्रैल १९३९, बीन्झौल (पानीपत); पि० श्री मुंशीराम; शि० एम. ए. संस्कृत (दिल्ली); कार्य : डी. ए. वी. कॉलेज अमृतसर में संस्कृत के प्राध्यापक; वि० छात्रजीवन में हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, गुरुकुल में क्रीड़ामंत्री, डी. ए.वी. कॉलेज अमृतसर की प्रबन्ध-समिति के सदस्य। प० संस्कृत विभाग, डी. ए. वी. कॉलेज, अमृतसर।

मनमोहनलाल आयुर्वेदालंकार

ज० ६ अप्रैल १९३४, दरियाखान (प० पाकिस्तान); पि० डॉ० नारायणदास कक्कड़; शि० ए.एम.बी. एस, (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० आर्यसमाज बयाना के कई वर्षों से प्रधान, नेशनल इन्टीग्रेटेड मेडिकल एसोशिएशन के सदस्य, समाज सेवा में विशेष अभिरुचि। प० आर्यसमाज रोड, बयाना (भरतपुर)।

रामकृष्ण वेदालंकार

ज० १५ सितम्बर १९४१, गजरौला (बिजनौर); पि० श्री देवराज; शि० एम. ए. हिन्दी (ग्रागरा), बी. एड्. (आगरा); कार्य : डी. ए. वी. हायर सेकेन्डरी स्कूल बिजनौर में हिन्दी-संस्कृत के प्रवक्ता; वि० अध्ययन-अध्यापन में विशेष अभिरुचि । प० डी० ए० वी० हायर सेकेन्डरी स्कूल, बिजनौर ।

वेदप्रकाश वेदालंकार

ज० ६ जनवरी १९४१, गुमथला (करनाल); पि० श्री बाबूराम; शि० विद्यावाचस्पति संस्कृत (गुरुकुल), एम.ए. संस्कृत (दिल्ली), एम. ए. हिन्दी (कुरुक्षेत्र), शास्त्री (पंजाब); कार्य : विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान होशियारपुर में अध्यापन, अब डी. ए. वी. कॉलेज अम्बाला शहर में संस्कृत के प्राध्यापक; र० उपनिषद् दर्पण, अलंकार संस्कृत निबन्धावली, अलकार संस्कृत व्याकरण, चारुदत्तम्, हितोपदेश, अपरीक्षितकारक, रघुवंश, कुमारसम्भव, अभिज्ञान शाकुन्तल (अन्तिम ६टीकाएं), आदि कवि वाल्मीकि (हरयाणा सरकार द्वारा पुरस्कृत); वि० आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, एम. ए. एवं वाचस्पति में विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम, भारतीय ओरियन्टल कॉन्फ्रेंस तथा अन्तर्राष्ट्रीय ओरियन्टल कॉन्फ्रेंस के सदस्य, भाषण, लेखन, संगीत व खेलों में विशेष अभिरुचि, अनेक वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व, संस्कृत के अच्छे वक्ता, स्वाध्यायशील। प० अध्यक्ष संस्कृत विभाग, डी. ए. वी. कॉलेज, अम्बाला शहर ।

शमशेर आयुर्वेदालंकार

ज० १५ जनवरी १९४१, अमृतसर; पि० श्री भोलानाथ दिलावरी; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : ओषधि निर्माण का स्वतन्त्र व्यवसाय । प० दिलावरी स्ट्रीट, पुतलीघर, अमृतसर ।

श्यामनाथ वेदालंकार

ज० १६ मार्च १९४०, दिल्ली; पि० श्री झुनकूलाल; शि० विद्यावाचस्पति हिन्दी (गुरुकुल), एम.ए.हिन्दी (दिल्ली), एम. ए. संस्कृत (आगरा), साहित्याचार्य (वाराणसी), पीएच. डी. हिन्दी (मेरठ) —'हरिकृष्ण प्रेमी व्यक्तित्व और कृतित्व'; कार्य : गुरुकुल कांगड़ी इन्टर कॉलेज में हिन्दी के प्रवक्ता, डी.ए.वी. कॉलेज अजमेर में प्रवक्ता, मेरठ विश्वविद्यालय के अधीन डिग्री कॉलेज में हिन्दी-प्रवक्ता, गुरुकुल विद्यालय विभाग के मुख्याध्यापक; संप्रति किसी डिग्री कालेज में प्रवक्ता; र० वेद और आचार्य ऋषि दयानन्द; वि० आर्यसमाज, गुरुकुल कांगड़ी के मंत्री, हिन्दी सत्याग्रह (१९५८) में तीन मास की जेल यात्रा, प्रबन्धपटु, अच्छे वक्ता एवं खिलाड़ी। प० १९३३, फाउन्टेन, दिल्ली—६ ।

सुभाषचन्द्र वेदालंकार

ज० १३ अप्रैल १९४२, डी. आई. खान (पाकिस्तान); शि० एम. ए. संस्कृत एवं वैदिक साहित्य (जयपुर), साहित्याचार्य (शिक्षा विभाग राजस्थान), पीएच. डी. संस्कृत (जयपुर); कार्यः महाराजा संस्कृत कॉलेज जयपुर में संस्कृत-प्रवक्ता, संप्रति राजकीय कॉलेज बांसवाड़ा में संस्कृत विभागाध्यक्ष; र० संस्कृत सौरभम्, हिन्दी राजतरंगिणी, संस्कृत निबन्ध पारिजात, ईशवाक्यम्, किरातार्जुनीयम् (विश्रुत टीका), संस्कृत सोपानम्, महाराणाप्रताप चरितम्, गीता (विश्रुत टीका), स्वप्नवासवदत्तम् (विश्रुत टीका), शैक्सपियरशतकम्, ईशोपनिषद् भाष्य (अंतिम चार अप्रकाशित); वि० विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में २५ शोधलेख तथा लगभग ५० अन्य लेख प्रकाशित, संस्कृत प्रचार मण्डल बांसवाड़ा, राजस्थान संस्कृत परिषद् तथा संस्कृत प्रचार मण्डल राजस्थान के संस्थापक, आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, आर्यसमाज बांसवाड़ा के प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान के अंतरंग-सदस्य, अनेक संस्कृत-संगठनों के महासचिव एवं

सदस्य, अच्छे वक्ता अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व एवं चल-विजयोपहार प्राप्त। प० अध्यक्ष संस्कृत विभाग, राजकीय कॉलेज, वासवाड़ा (राजस्थान)।

सुरेन्द्रमोहन आयुर्वेदालंकार

ज० २४ जून १९४०, मुक्तसर ; पि० श्री प्रेमनाथ भण्डारी ; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतंत्र चिकित्सा-कार्य; वि०आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता एवं मंत्री, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्ध समिति मुक्तसर के उपमन्त्री, आयुर्वेद मण्डल मुक्तसर के प्रचार-मंत्री, समाज-सेवा एवं राजनीति में विशेष अभिरुचि। प० मकान नं० ४७२७, मोहनलाल स्ट्रीट, मुक्तसर।

हरिश्चन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० १६ जुलाई १९४०, खुब्बनपुर (सहारनपुर): पि० श्री बूलचन्द आर्य; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० इन्टीग्रेटेड मेडीकल ऐसोशिएशन के सदस्य, चिकित्सा-कार्य में विशेष अभिरुचि। प० खुब्बनपुर (सहारनपुर)।
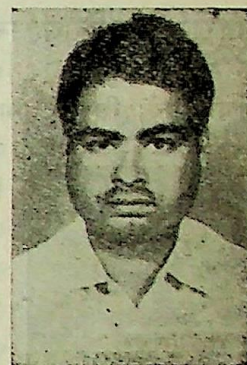
सम्वत् २०१८ (सन् १९६२)

आनन्दसिंह आयुर्वेदालंकार

पि० श्री वैद्य पूरनसिंह; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : चिकित्सा-व्यवसाय। प० सुल्तानपुर (नैनीताल)।

जितेन्द्रकुमार विद्यालंकार

ज० मेरठ; शि० एम. ए. संस्कृत (आगरा), पीएच. डी. संस्कृत (आगरा)—'संस्कृत साहित्य में आयुध'; कार्य : दिगम्बर जैन कॉलेज बड़ौत, चाँदपुर डिग्री कॉलेज में संस्कृत विभाग के प्रवक्ता; वि० अच्छे वक्ता एवं खिलाड़ी। प० १७९ जत्तीवाड़ा, मेरठ।

देवेश्वर विद्यालंकार

ज० गढ़ी मलहरा; पि० श्री काशीप्रसाद महेतो; शि० एम. ए.; कार्य : इन्टर कालेज में प्रधानाचार्य। प० गढ़ी मलहरा (छतरपुर)।

बलराम आयुर्वेदालंकार

ज० १८ अगस्त १९३८, गौरगुश्ती (पाकिस्तान); पि० श्री रामसरन उप्पल; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : देहरादून में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय ; वि० नेशनल इन्टीग्रेटेड मेडिकल ऐसोशिएशन ऑफ इन्डिया के सदस्य, सफल चिकित्सक। प० १० कांवली रोड, देहरादून।

महेन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार

पि० श्री यशपाल; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय। प० अम्बेहटा (सहारनपुर)।

वीरेन्द्रपाल विद्यालंकार

पि० श्री बहादुरसिंह; शि० एम. ए. हिन्दी (आगरा); कार्य : इन्टर कॉलेज में अध्यापन । प० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पो० भृगुखाल (पौड़ी गढ़वाल)।

शिवराज आयुर्वेदालंकार (स्व०)

ज० १२ जुलाई १९३८, बूढ़पुर (मेरठ); पि० श्री पूर्णचंद्र आर्य; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : जीवन पर्यन्त बड़ौत में स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय; वि० आर्यसमाज के कार्यकलापों में महत्त्वपूर्ण योगदान, बागपत (मेरठ) आर्यसमाज के संस्थापक, अध्ययनकाल में खेल-कूद, नाटक, वादविवाद तथा अन्य प्रतियोगिताओं में सोत्साह सम्मिलित, अखिल भारतीय वाद-विवाद-प्रतियोगिताओं में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व, १९७३ के चुनावों में विधान सभा के लिए प्रत्याशी, सच्चे समाज सेवक । निधन : २४ दिसम्बर १९७३, बड़ौत ।

सत्यप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० १ अक्टूबर १९४१, बरेली; पि० श्री रामचन्द्र अग्रवाल; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); एम. ए. (आगरा); कार्य : मुरली मनोहर आयुर्वेदिक डिग्री कॉलेज बरेली में संस्कृत के प्राध्यापक, संप्रति स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; वि० सफल एवं लोकप्रिय चिकित्सक । प० प्रकाश क्लिनिक, बिहारीपुर रोड, बरेली ।

सोमप्रकाश आयुर्वेदालंकार

ज० १७ सितम्बर १९३७, बिजनौर ग्राम गजरौला; पि० श्री मोखासिंह जी; सम्प्रति, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में निर्माण वैद्य (१९६२ से); वि० छात्रावस्था में हॉकी के अच्छे खिलाड़ी, विश्वविद्यालय हॉकी टीम का लगातार कई वर्षों तक प्रतिनिधित्व, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी आर्यसमाज के निर्विरोध प्रधान (१९६४ से १९७७), गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में भवन निर्माण कार्य में संलग्न, प्रबन्ध पटु, मिष्ट भाषी एवं व्यवहार कुशल । प० गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार ।

सम्वत् २०१९ (सन् १९६३)

अवधेशकुमार विद्यालंकार

ज० १३ अप्रैल १९४३, सिगरी बहुअरी (चम्पारन); पि० श्री राजाराम पाँडेय; शि० एम. ए. एस. (काशी विद्यापीठ); कार्य : श्रम कल्याण तथा मजदूर शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत सरकारी पदाधिकारी के रूप में कार्यरत; वि० या० नेपाल-भ्रमण; वि० गुरुकुल महाविद्यालय वैरगनिया (मुजफ्फरपुर) के प्रधान, आर्यसमाज चम्पारन के प्रधान, अनेक साहित्यिक, धार्मिक व व्यावसायिक संगठनों के सदस्य, कृषि-व्यवसाय तथा समाज-सुधार के कार्य-क्रम में विशेष अभिरुचि, छात्र-जीवन में वाग्वर्धिनी सभा, अखिल भारतीय श्रद्धानन्द हॉकी टूर्नामेंट आदि के मंत्री, अच्छे वक्ता । प० अनुपम खाद भंडार, नरकटिया गंज (चम्पारन), बिहार ।

ओम्प्रकाश विद्यालंकार

ज० बदायूं; पि० श्री मोहनलाल; शि० एम. ए. प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति (गुरुकुल), बी. लिब्. (दिल्ली); कार्य : पंचायती राज प्रशिक्षण केन्द्र गुरुकुल काँगड़ी में प्रशिक्षक, जवाहरलाल नेहरू श्रवणनाथ मठ डिग्री कालेज हरिद्वार में कुछ समय स्नातक कक्षाओं में अध्यापन तथा पुस्तकालयाध्यक्ष; वि० कुशल प्रबन्धक, सामाजिक कार्यों में रुचि, व्यवहार कुशल । प० जे०एन०एस०एम० डिग्री कालेज, हरिद्वार (सहारनपुर) ।
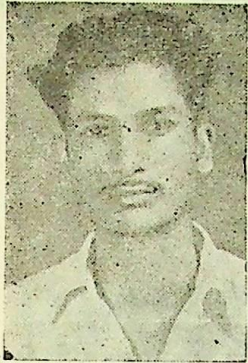
प्रभुदयाल आयुर्वेदालंकार

ज० २० जनवरी १९३७, सूरौठ (राजस्थान); पि० श्री गिरिराजप्रसाद; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय। प० डॉ० प्रभुदयाल सिंहल, पो० सूरौठ (सवाई माधोपुर), राजस्थान।

बुद्धिप्रकाश आयुर्वेदालंकार

कार्य : सरायतरीन में स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय। प० देश हितकारी फार्मेसी, सरायतरीन (मुरादाबाद)।

भारतभूषण वेदालंकार

ज० ६ जनवरी १९४३, स्वतन्त्रता आन्दोलन के अन्तर्गत – बरेली (जिला जेल); पि० श्री तुंगलसिंह; शि० एम. ए. संस्कृत-मनोविज्ञान, पीएच. डी. गुरुकुल (वेदाचार्य); कार्य : गुरुकुल विश्वविद्यालय के वेद विभाग में प्राध्यापक; वि० "आथर्वणिक राजनीति" विषय पर शोध प्रबन्ध, गोरक्षा आंदोलन में भाग लेने के कारण दिल्ली-जेलयात्रा, ओरियन्टल कान्फ्रेंस तथा विश्वमानव कल्याण परिषद् के सदस्य। छात्र जीवन में अनेक वर्षों तक संस्कृतोत्साहिनी एवं वाग्वर्धिनी सभा के मंत्री, हॉकी के खिलाड़ी; उत्तम वक्ता के रूप में अनेक बार पुरस्कृत, साहित्यिक अध्ययन में विशेष रुचि, अनेक पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित। वन एवं पर्वत तथा ऐतिहासिक स्थानों में भ्रमण का शौक, समाजसुधारक एव आध्यात्मिकता की ओर रुझान। प० ७ गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)।

योगेन्द्रकुमार आयुर्वेदालंकार

शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय। प० निकट रेलवे स्टेशन, गजरौला (मुरादाबाद)।

रामकुमार आयुर्वेदालंकार

ज० ज्वालापुर; पि० श्री दासीराम वैश्य; कार्य : स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय। प० झंडा चौक, ज्वालापुर (सहारनपुर)।

वेदमित्र आयुर्वेदालंकार

ज० २३ सितम्बर १९४०, सरायतरीन (मुरादाबाद); पि० डॉ० बुद्धिप्रकाश आर्य; शि० आयुर्वेदभास्कर (गुरुकुल महाविद्यालय); ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); कार्य : बहजोई में स्वतन्त्र चिकित्सा-व्यवसाय; र० आर्य भजन संग्रह; वि० आर्यसमाज एवं कांग्रेस के कार्य-कलापों में महत्त्वपूर्ण योगदान, आदर्श बाल मन्दिर बहजोई और मेडीकल प्रेक्टिशनर एसोसिएशन के सदस्य, सफल चिकित्सक। प० रेलवे रोड, बहजोई (मुरादाबाद)।

व्रजेश विद्यालंकार

ज० १७ अप्रैल १९४२, गढ़ी मलहरा (छतरपुर); पि० श्री रामनाथ चौरसिया; शि० एम. ए. संस्कृत (आगरा); कार्य : श्रीमन्त विजयाराजे सिंधिया महाविद्यालय अडोसर (भिंड) व्याख्याता, जैन महाविद्यालय भिंड में संस्कृत-व्याख्याता, संप्रति छत्रसाल महाराजा महाविद्यालय महाराजपुर (मध्य-प्रदेश) में प्राचार्य; वि० संगीत में विशेष रुचि, वैदिक मंत्रों के सस्वर पाठ व गायन में निपुण, स्वाध्यायशील, अच्छे वक्ता। प० प्राचार्य, सी. एम. डी. कालेज, महाराजपुर (छतरपुर) म० प्र०।

शिवकुमार विद्यालंकार

पि० श्री गुलवीरसिंह मेहता; शि० एम. ए. संस्कृत (आगरा); वि० : व्यायामप्रिय, गुरुकुल-उत्सवों पर छाती पर पत्थर उठाने, सरिया मोड़ने आदि के करतब प्रदर्शित ।

सम्वत् २०२० (सन् १९६४)

कौशलेन्द्र आयुर्वेदालंकार

ज० १३ जुलाई १९३७, नेपाल; पि० श्री बिन्देश्वरी प्रसाद; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ), एम. ए. प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृत (गुरुकुल); कार्य : श्रद्धानन्द सेवाश्रम, गुरुकुल कांगड़ी में गृह-चिकित्सक, आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापन, फार्मेस्युटिकल लैबोरेटरी रानीखेत में शोध-अधिकारी, संप्रति नेपाल में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य; वि० छात्र-जीवन में विभिन्न परिषदों के मन्त्री व अध्यक्ष, श्रेष्ठ वक्ता एवं अभिनयपटु, गुरुकुल पत्रिका के समाचार-लेखक, नेपाल रेडक्रॉस सोसायटी की जिला समिति के उपाध्यक्ष, जिला शिक्षा-समिति एवं जिला बाल संगठन-समिति के सदस्य, गाऊंफर्क राष्ट्रीय अभियान जिला समिति के सदस्य, अनेक सामाजिक एवं शिक्षण-संस्थाओं के सक्रिय सदस्य एवं पदाधिकारी । प० डॉ० कौशलेन्द्र बहादुर, परासी (नेपाल) ।

गोविन्दराव विद्यालंकार

ज० महाराष्ट्र; कार्य : स्वतन्त्र व्यापार; वि० छात्र-जीवन में खेलों में रुचि एवं विश्वविद्यालय की टीम में सम्मिलित । प० परली (महाराष्ट्र) ।

धर्मदीप विद्यालंकार

ज० कवा (लातूर); पि० श्री नाथजी संतराम जो; शि० एम. ए.; कार्य : लातूर में अध्यापन कार्य; वि० छात्रजीवन में हॉकी व वॉलीबाल के अच्छे खिलाड़ी, सुवक्ता, एन. सी. सी. में उच्च पद प्राप्त । प० ग्राम कवा, लातूर (उस्मानाबाद) ।

नरेन्द्रपालसिंह आयुर्वेदालंकार

ज० १५ जनवरी १९४१, बिजनौर; पि० श्री रामचरणसिंह वर्मा; शि० ए. एम. बी. एस. (लखनऊ); एम. ए. मनोविज्ञान (गुरुकुल); कार्य : आयुर्वेद महाविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी में प्राध्यापक एवं चिकित्सक; वि० 'सचित्र आयुर्वेद' आदि पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर लेख प्रकाशित । प० गुरुकुल काँगड़ी (सहारनपुर) ।

विजयवीर विद्यालंकार

ज० १३ जुलाई १९४४, बम्बई; पि० श्री नारायण राव आर्य; शि० एम. ए. हिन्दी-संस्कृत (उस्मानिया), पीएच. डी. हिन्दी (उस्मानिया)—'हिन्दी में रस सिद्धान्त विवेचन : 'आधुनिक काल'; कार्य : प्राच्य-महाविद्यालय हैरादबाद में हिन्दी विभाग के प्राध्यापक; र० रस सिद्धान्तविवेचन, दक्षिण में रामकथा, सन्त-साहित्य में नाम स्मरण, विपंचिका (काव्य); वि० दक्षिण भारत में आर्यसमाज एवं वैदिकधर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय, दक्षिणांचलीय साहित्य समिति के उपाध्यक्ष, आर्य-समाज सुलतान बाजार के मन्त्री, दो वर्ष आंध्रप्रदेश हिन्दी विद्यार्थी संघ के प्रधान मन्त्री, सुकवि, लेखक, श्रद्धानन्द बलिदान अर्ध-शताब्दी के अवसर पर हैदराबाद से प्रकाशित 'स्मारिका' के संपादक, स्वाध्याय एवं अध्यापन में रुचि, अच्छे वक्ता उत्साही एवं

अध्यवसायी, छात्रावस्था से ही काव्यरचना के शौकीन। प० ३-४-६९३ / २२ / १ नारायणगुड़ा, हैदराबाद, (आं. प्र.)।

विनोदचन्द्र विद्यालंकार

ज० ४ जून १९४२, फरीदपुर (बरेली); पि० डॉ० रामनाथ वेदालंकार; शि० एम. ए. संस्कृत (आगरा), पीएच. डी. संस्कृत (आगरा) — 'जयदेव : आचार्य एवं नाटककार के रूप में आलोचनात्मक अध्ययन; कार्य : अनुवाद एवं प्रकाशन निदेशालय पंतनगर में अनुवादक; र० जयदेव : आचार्य एवं नाटक कार के रूप में आलोचनात्मक अध्ययन (मौलिक शोधग्रन्थ), गाय-भैंस की भारतीय नस्लों के अभिलक्षण, कवकनाशी एवं पादपरोग नियंत्रण, भारत में मृदा संरक्षण, पशु-प्रजनन (चारों अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकों के अनुवाद), उत्तरप्रदेश कृषि मान चित्रावली, आनुवंशिकी के प्रारम्भिक सिद्धांत (दोनों संपादित) आदि; वि० लगभग १५ पुस्तकों का अनुवाद पूर्ण, विभिन्न पत्रपत्रिकाओं में हिन्दी व संस्कृत में विविध विषयों पर शोधपूर्ण लेख प्रकाशित, छात्रजीवन में विभिन्न परिषदों के मन्त्री, पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति स्मृति समारोह समिति गुरुकुल के मन्त्री, गुरुकुलोत्सवों पर वेद व संस्कृत सम्मेलनों में भाग लेकर श्रेष्ठ वक्ता के रूप में पुरस्कृत, गुरुकुल-पत्रिका में 'गुरुकुल-समाचार' स्तम्भ के वर्षों तक संपादक, विद्याविनोद में प्रथम रहने के कारण विद्यालंकार कक्षाओं में उत्तरप्रदेश सरकार की वरसरी प्राप्त, आर्यसमाज के कार्यों में रुचि, अखिल भारतीय स्नातक मण्डल के कई वर्षों से उपमन्त्री, होमियोपैथी चिकित्सा में विशेष अभिरुचि, गत छः वर्षों से पंतनगर में निःशुल्क होमियोपैथी चिकित्सा में व्यस्त, प्रस्तुत परिचायिका के संपादक। प० आवास : I/११६ फूलबाग, पंतनगर (नैनीताल); कार्यालय : अनुवाद एवं प्रकाशन निदेशालय, गो० ब० पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (नैनीताल)।

सम्वत् २०२१ (सन् १९६५)

ओमप्रकाश विद्यालंकार

ज० ८ जून १९४६, होली (उस्मानाबाद); पि० श्री वासुदेवराज हणमंतराव कुलकर्णी होलीकर; शि० एम. ए. हिन्दी (कुरुक्षेत्र); कार्य : दयानन्द वाणिज्य महाविद्यालय लातूर के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष; र० प्रेमचन्द से मुक्तिबोध : औपन्यासिक यात्रा, लोक-भारती (संपादित); वि० 'कविता में बिम्ब विधान : नयी कविता के संदर्भ में' विषय पर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय से पीएच. डी. के लिए शोधकार्यरत, मराठवाड़ा विश्वविद्यालयीन प्राध्यापक संगटना के अध्यक्ष, महाराष्ट्रान्तर्गत विश्वविद्यालयीन तथा महाविद्यालयीन प्राध्यापक महासंघ के उपमंत्री, आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, अध्ययन-अध्यापन व खेलकूद में विशेष अभिरुचि, मराठवाड़ा हिन्दी साहित्य परिषद् के सदस्य। प० अध्यक्ष हिन्दी विभाग, दयानन्द वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर (उस्मानाबाद), महाराष्ट्र।

जगन्नाथ विद्यालंकार

ज० २९ नवम्बर १९४२, पटना शहर; पि० श्री केदारनाथ पांडे; कार्य : स्व० सत्यदेव विद्यालंकार के निजी सचिव, मोतीलाल बनारसीदास आदि प्रकाशकों के यहाँ संपादक-अनुवादक, खादी ग्रामोद्योग में अनुवादक, दिल्ली के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डॉ० दशरथ

ओझा के अधीन सपादन-अनुवाद कार्य, संप्रति स्वतन्त्र लेखन; र० सस्कृत काव्य-शास्त्र का इतिहास (अनूदित), नाट्यकोश, हमारे स्वाधीनता सग्राम की गौरवगाथा (लेखनाधीन); वि० आर्य-समाज की गतिविधियों में योगदान, पत्रकारिता एवं शिक्षण-कार्यों में विशेष अभिरुचि, भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता से शिक्षा प्राप्त, कुशल अनुवादक एवं लेखक । प० २०० / ए ४ रेलवे कालोनी, वसन्त मार्ग, पहाड़गंज, नई दिल्ली—५५ ।

जयवन्त आयुर्वेदालंकार

ज० १९ अगस्त १९३६, खेड़ोई–कच्छ; पि० श्री मणिशंकर आर्य; शि० ए. एम. बी. एस (लखनऊ); कार्य : सिविल हॉस्पिटल भुज (गुजरात) चिकित्साधिकारी; वि० सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय प्रगति के कार्यों में योगदान, मेडीकल ऐसोसिएशन के सदस्य, सर्वे ऑफ इडिया की टीम के साथ बार्डर डिमार्केशन के लिए चिकित्सक दल के अध्यक्ष के रूप में पाकिस्तान यात्रा, सफल चिकित्सक । प० डॉ. जे. एम. आर्य, सिविल हॉस्पिटल, भुज-कच्छ (गुजरात) ।

महावीर विद्यालंकार

ज०बड़सू (मुजफ्फरनगर); पि० श्री कुन्दनसिंह; शि० एम. ए. प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति (गुरुकुल कांगड़ी विश्व०); कार्य : गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग में अध्यापक; वि० पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर शोधपूर्ण लेख प्रकाशित, उज्जैन के कालिदास समारोह में शोधपूर्ण निबन्ध लिखने पर प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत, ड्राइङ्ग में विशेष रुचि, अच्छे कवि व हॉकी के खिलाड़ी, अनेक टूर्नामेंटों में विश्वविद्यालय टीम के सदस्य के रूप में सम्मिलित, गुरुकुल पत्रिका के 'समाचार स्तम्भ' के लेखक। प० गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) ।

यशपाल वेदालंकार

ज० २२ मार्च १९४६, खेड़ी महेशपुर (बिजनौर); पि० श्री सागरसिंह; शि० एम. ए. संस्कृत (आगरा), बी. एड्. (आगरा); कार्य : अध्यापन; वि० प्रवचन व भाषण देने में विशेष रुचि, अच्छे वक्ता, आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान । प० ग्राम महेशपुर खेड़ी, पो० भोजपुर (बिजनौर) ।

विश्ववर्धन वेदालंकार

ज० २५ दिसम्बर १९४५, मैनपुरी; पि० श्री लक्ष्मी-नारायण चतुर्वेदी; कार्य : सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में वैदिक धर्म के प्रचारक एवं उपदेशक; वि० अच्छे वक्ता, स्वाध्यायशील । प० शकूरबस्ती, रानीबाग, मकान नं० १८८, गली पुलिस चौकी, दिल्ली ।

शंकरसिंह वेदालंकार

ज० ६ जून १९४२ सरैय्याँ (कानपुर); पि० श्री मंगलसिंह; शि० एम. ए. संस्कृत (गुरुकुल); एम. ए. हिन्दी (कुरुक्षेत्र), विद्यानिधि (दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय); कार्य : आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश में महोपदेशक, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में असम में प्रचार कार्य, महर्षि-दयानन्द विद्यापीठ इल (कानपुर) में आचार्य, संप्रति डी. ए. वी. कॉलेज अम्बाला शहर में संस्कृत-हिन्दी के प्राध्यापक; र० वाग्दान, एक महर्षि, एक समाज; वि० आर्यसमाज के कार्यकलापों में सक्रिय योगदान, काव्य-रचना में विशेष रुचि, पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित । प० डी. ए. वी. कॉलेज, अम्बाला शहर ।

सुरेन्द्रकुमार विद्यालंकार

ज० २८ मार्च १९४६, दिल्ली; पि० श्री धर्मदेव वेदवाचस्पति; शि० एम. ए. हिन्दी (दिल्ली); कार्य : हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड में संपादक । प० ३२९८, सेक्टर १५ डी, चंडीगढ़ ।

सम्वत् २०२२ (सन् १९६६)

ईश्वरदत्त विद्यालंकार

ज० शाहपुर (जींद); पि० श्री चौ० हरलाल; शि० एम. ए. संस्कृत (कुरुक्षेत्र); कार्य : अध्यापन; प० संस्कृत विभाग, राजकीय महाविद्यालय, जींद (हरियाणा) ।

जयदेव वेदालंकार

ज० ५ दिसम्बर १९४१, झाड़ौदाकलां (दिल्ली); पि० श्री जुगलालसिंह; शि० एम. ए. दर्शन-मनोविज्ञान (गुरुकुल), प्रभाकर (पंजाब), साहित्य-रत्न(प्रयाग), पीएच. डी. दर्शन (मेरठ); कार्य : गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में दर्शन विभाग में प्रवक्ता; र० महर्षि दयानन्द की विश्व-दर्शन को देन; वि० आर्यसमाज की गति-विधियों में रुचि, गुरुकुल आर्यसमाज के मंत्री, स्वाध्यायशील, अखिल भारतीय स्नातक मण्डल के एक वर्ष मंत्री । प० गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) ।

जयदेव वेदालंकार (आर्य)

ज० १८ जनवरी १९४२, गुना (म. प्र.); पि० श्री नन्दलाल आर्य; शि० एम. ए. संस्कृत-हिन्दी (दिल्ली); कार्य : आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली में पुरोहित एवं उपदेशक, आर्यसमाज मॉडल टाउन अम्बाला में पुरोहित, संप्रति डी. ए. वी. कॉलेज अम्बाला शहर में हिन्दी विभाग के प्रवक्ता; वि० भारतीय दर्शन, धर्म, संस्कृति, काव्य में विशेष रुचि, आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय, अच्छे वक्ता । प० शिक्षक आवास, डी. ए. वी. कॉलेज, अम्बाला शहर ।

दयासागर विद्यालंकार

ज० कण्डेला (हरियाणा); पि० चौ० पौहकर; शि० एम. ए. संस्कृत; कार्य : अध्यापन । प० संस्कृत विभाग राजकीय महाविद्यालय, जींद (हरियाणा) ।

प्रकाशवीर विद्यालंकार

ज० २३ जनवरी १९४५, माण्डौठी (हरियाणा); पि० श्री रामानन्द; शि० एम. ए. संस्कृत (कुरुक्षेत्र); कार्य : छाजूराम मेमोरियल जाट कॉलेज हिसार में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष, राजकीय महा-विद्यालय नारनौल में संस्कृत प्राध्यापक, संप्रति राजकीय महिला महाविद्यालय रोहतक में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष; र० आत्म-विज्ञान (संपादित); वि० कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र के छात्र-संगठन में प्रति-निधि, हरियाणा विद्यार्थी संग-ठन के अध्यक्ष, चण्डीगढ़ आंदोलन में सम्मिलित पंजाब आर्य-प्रतिनिधि सभा के सदस्य, कुरुकुल विश्वविद्यालय की आर्य विद्यासभा के सदस्य, गुरुकुल भैंसवाल और खानपुर कलां की कार्यकारिणी के सदस्य, अपने गांव में आचार्य कुल ऋतस्थली की स्थापना एवं उसके मन्त्री, आर्य-समाज की गतिविधियों में सक्रिय, एम. ए. परीक्षा में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में समस्त भारतीयों में सर्वप्रथम आने के कारण हरियाणा भाषा विभाग द्वारा ३०० रुपये के पुरस्कार से सम्मानित,

छात्रजीवन में अनेक भाषण व वादविवाद प्रतियोगिताओं में प्रतिनिधित्व, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित। प० इन्द्रा चक्रवर्ती राजकीय महिला महाविद्यालय, रोहतक।

रामप्रसाद वेदालंकार

ज० ७ जनवरी १९३६, थान (पाकिस्तान); पि० श्री गंगाविशन; शि० सिद्धान्तभूषण, सिद्धान्तशिरोमणि (दयानन्दोपदेशक महाविद्यालय), एम ए. वैदिक साहित्य (गुरुकुल); कार्य : स्वतन्त्र व्यापार, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वेद विभाग में पहले प्रवक्ता और अब रीडर एवं विभागाध्यक्ष; वि० आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय, लोकप्रिय उपदेशक एवं व्याख्याता, विविध विषयों पर लेख प्रकाशित, 'अश्विनौ से सम्बद्ध वैदिक कथाओं का विवेचन' विषय पर पीएच. डी. के लिए शोधकार्यरत। प० गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)।

विजयकुमार विद्यालंकार

ज० २८ अगस्त १९४६, फिरोजपुर; पि०श्री प्राणनाथ वानप्रस्थी; शि० एम ए. हिन्दी (दिल्ली), रूसी भाषा में डिप्लोमा (बम्बई); कार्य : एल्फिन्स्टन कॉलेज बम्बई में हिन्दी प्राध्यापक, भारतीय रिजर्व बैंक बम्बई में हिन्दी सहायक, संप्रति यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया बम्बई में हिन्दी अधिकारी; र० इन्दिरा गांधी, वीर सावरकर, लालबहादुर शास्त्री, राजा राममोहन राय (उ.प्र. शासन द्वारा पुरस्कृत), हमारी विरासत (अनुवाद), घर-परिवार (अनुवाद); वि० बम्बई विश्वविद्यालय में 'हिन्दी लेखिकाओं के श्रेष्ठ उपन्यासों का अध्ययन' विषय पर शोधकार्य के लिए पंजीकृत, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् यूनियन बैंक बम्बई के सदस्य, विभिन्न भाषाएं सीखने, अनुवाद करने तथा साहित्य पढ़ने में विशेष रुचि। प० ९ देवव्रत, अशोक नगर, कांदीवली (पूर्व) बम्बई–६७।
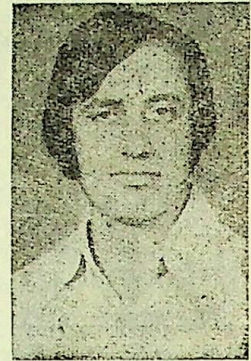
सम्वत् २०२३ (सन् १९६७)

देवदत्त वेदालंकार (लाम्बा)

ज० हरिगढ़ खेड़ी (हरियाणा); शि० एम. ए. संस्कृत (कुरुक्षेत्र); कार्य : अध्यापन। प० संस्कृत विभाग, समाज कल्याण महाविद्यालय, सोनीपत (हरियाणा)।
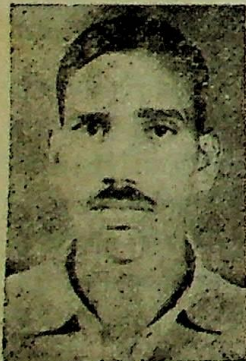
ब्रह्मानन्द वेदालंकार

ज० ३ मार्च १९४४, डेवां (पटना); पि० श्री अलखनारायण; शि० एम.ए. संस्कृत (गुरुकुल); कार्य : गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग में अधिष्ठाता, प्रचार-कार्य; वि० आर्यसमाज के क्रियाकलापों में सक्रिय योगदान।

राजकृष्ण विद्यालंकार

ज० गंजनाला (हरियाणा); शि० एम. ए. (हिन्दी); कार्य : अध्यापन; वि० छात्र जीवन में अच्छे खिलाड़ी। प० हिन्दी विभाग, डिग्री कालेज, रादौर (अम्बाला छावनी)।

सत्यपाल विद्यालंकार

ज० आंवली; शि० एम. ए. हिन्दी; कार्य : अध्यापन। प० प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, सी. आर. ए. कॉलेज, सोनीपत (हरियाणा)।

सुशीलचन्द्र विद्यालंकार

ज० ९ नवम्बर १९४७, कानपुर; पि० श्री श्यामलाल; शि० एम. ए. मनोविज्ञान (गुरुकुल), एम. फिल्. (मेरठ); कार्य : कानपुर में साइकिलों का व्यापार; वि० छात्रजीवन

में अच्छे खिलाड़ी, अखिल भारतीय स्नातक-मण्डल के कोषाध्यक्ष । प० ६३ / २३ हरबन्स मोहाल, कानपुर ।

सूर्यप्रकाश विद्यालंकार

ज० १४ अगस्त १९४६, दिल्ली; पि० डॉ० गंगाराम; एम.ए. हिन्दी (गुरुकुल) पीएच.डी. हिन्दी (गुरुकुल) 'सप्तक-त्रय आधुनिकता एवं परम्परा'; कार्य: गाजियाबाद में डिग्री कॉलेज में हिन्दी विभाग में प्रवक्ता; वि० छात्र जीवन में गुरुकुल पत्रिका के 'समाचार' स्तम्भ के लेखक, आकाशवाणी दिल्ली द्वारा विविध विषयों पर वार्ताएं प्रसारित, पत्र-पत्रिकाओं में लेख व कहानी आदि प्रकाशित, 'साख्यकारिका' का हिन्दी पद्यानुवाद 'संस्कृत प्रचारकम्' में धारावाही रूप में प्रकाशित, कहानी, कविता आदि के सृजन में रुचि, डी० लिट्० उपाधि के लिए शोधकार्यरत । प० हिन्दी विभाग, शम्भूदयाल पोस्टग्रेजुएट कॉलेज, गाजियाबाद ।

सम्वत् २०२४ (सन् १९६८)

जयपाल विद्यालंकार

ज० शाहपुर (कण्डेला); पि० चौ० शोभाचन्द; शि० एम० ए० हिन्दी (कुरुक्षेत्र); कार्य : अध्यापन; वि० आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान; प० हिन्दी विभाग, नेहरू कॉलेज, हांसी (हिसार)।

देवदत्त वेदालंकार

प० ग्राम लालुयागेडा, पो० पश्चिम गंदनपुर (मिडनापुर), बंगाल ।

प्रतापसिंह विद्यालंकार

शि० एम. ए.; कार्य : गुरुकुल भैंसवाल में अध्यापन। प० गुरुकुल भैंसवाल कलां (रोहतक) ।

मंगलदेव विद्यालंकार (लाम्बा)

ज० २४ मार्च १९४८, हरिगढ़ (जीन्द); पि० श्री किशना; शि० साहित्याचार्य (पंजाब), एम. ए. हिन्दी (कुरुक्षेत्र); कार्य : भाषा विभाग हरियाणा में सर्वेक्षण-अधिकारी, आई. वी. कॉलेज पानीपत में अध्यापन, संप्रति छोटूराम किसान कॉलेज जींद में हिन्दी विभागाध्यक्ष; वि० कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की पीएच. डी. उपाधि के लिए 'हरियाणा में जिला जींद की लोककथाओं का अध्ययन' विषय पर शोधकार्यरत, निराला हिन्दी साहित्य परिषद् के प्रधान, गुरुकुल भैंसवाल की प्रबन्ध-समिति के सदस्य, पत्र-पत्रिकाओं में कहानी व लेख प्रकाशित, समाजसेवा में विशेष अभिरुचि । प० हिन्दी विभाग, सी० आर० के० कॉलेज, जीन्द (हरियाणा) ।
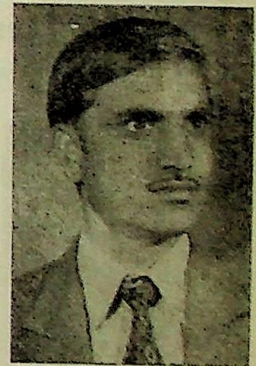
मधुकर विद्यालंकार

ज० ३० अप्रैल १९४८, धनौरी (जीन्द); पि० श्री शीशराम धुलि; शि० एम. ए. संस्कृत (कुरुक्षेत्र); कार्य : गुरुकुल भैंसवाल में अध्यापन, अब इन्दिरा चक्रवर्ती राजकीय महाविद्यालय रोहतक में संस्कृत के प्रवक्ता;
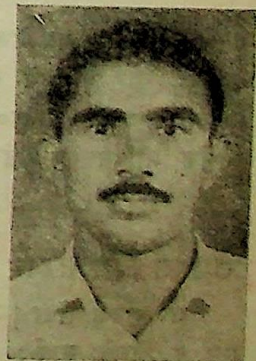
वि० विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, गुरुकुल भैंसवाल की आर्यकुमार सभा के मंत्री, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की 'संस्कृत साहित्य परिषद्' के मंत्री व प्रधान, कबड्डी के अच्छे खिलाड़ी, हिन्दी सत्याग्रह पंजाब और गोरक्षा आंदोलन में सम्मिलित तथा जेलयात्रा। प० प्रवक्ता, संस्कृत विभाग इन्दिरा च० रा० महाविद्यालय, रोहतक।

महेशचन्द्र वेदालंकार

ज० १ जुलाई १९४७, ढकपुरा (मैनपुरी); पि० श्री सरदारसिंह; शि० शास्त्री, साहित्यरत्न एम० ए०; कार्य : आर्यसमाज दीवान हाल में धर्माचार्य, शिक्षण; वि० वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान, पठन-पाठन में विशेष अभिरुचि।

रघुवीर वेदालंकार

ज० ३ जुलाई १९४५, जड़वड़ (मुजफ्फरनगर); पि० श्री हबड़ूसिंह; शि० शास्त्री, आचार्य (पंजाब), काव्यतीर्थ (कलकत्ता), एम. ए. संस्कृत (दिल्ली), पीएच. डी. संस्कृत (दिल्ली) — 'काशिका समालोचनात्मक अध्ययन'; कार्य : रामजस कालेज दिल्ली में संस्कृत-विभाग के अध्यक्ष; र० बुद्ध चरितम् (संस्कृत टीका), काशिका प्रकाशिका (दोनों अप्रकाशित); वि० विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर लेख प्रकाशित, आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय, अध्यापन व लेखन में विशेष अभिरुचि। प० संस्कृत विभागाध्यक्ष, रामजस कॉलेज, मौरिसनगर, नई दिल्ली-७।

राजबल विद्यालंकार

ज० खरक पौंडा (जींद); पि० चौ० मुंशीराम; शि० एम. ए. हिन्दी; कार्य : माध्यमिक विद्यालय कुरुक्षेत्र में हिन्दी के प्रवक्ता; वि० अच्छे खिलाड़ी, छात्र-जीवन में बाढ़ सहायता कार्यों में योगदान। प० प्रवक्ता हिन्दी राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कुरुक्षेत्र।

रामकुमार विद्यालंकार

ज० भैंसवाल कलां; पि० श्री चौ० मांगेराम; शि० एम. ए. हिन्दी (कुरुक्षेत्र); वि० गोवध, मद्य-निषेध, हिन्दी-सत्याग्रह में सक्रिय भाग। प० भैंसवाल कलां (सोनीपत)।

विश्वपाल वेदालंकार

ज० आश्विन बदी अमावस्या २००० विक्रमी, कंवरियावास; पि० श्री प्रभुदयाल; शि० एम. ए.। प० द्वारा आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर (सहारनपुर)।

वेदसुमन वेदालंकार

ज० १ नवम्बर १९४५, शाहपुर (करनाल); पि० श्री रामप्रसाद; शि० एम.ए. दर्शनशास्त्र (गुरुकुल), एम.ए. हिन्दी (पंजाब); कार्य : पुरोहित, आर्य प्रादेशिक सभा, हरियाणा के महोपदेशक, संप्रति डी.ए.वी. कालेज करनाल में हिन्दी के प्रवक्ता; वि० काव्य-रचना में विशेष रुचि, अच्छे वक्ता, अनेक वादविवाद-प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व एवं पुरस्कार प्राप्त, आर्यसमाज के कार्यकलापों में महत्त्वपूर्ण योगदान, वैदिक साहित्य

विषयक अनुसन्धान एवं समाज सुधार कार्यों में अभिरुचि। प० हिन्दी विभाग, डी. ए. वी. कॉलेज, करनाल (हरियाणा)।

सत्यवीरसिंह विद्यालंकार

ज० १० जनवरी १९४९, तिहाड़ (सोनीपत); पि० श्री हरिराम; शि० एम. ए. हिन्दी (पंजाब), एम. ए. प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व (गुरुकुल), बी.एड्. (पजाब); कार्य : अध्यापन, गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में मुख्याध्यापक, सम्प्रति जाट कॉलेज हिसार में हिन्दी-प्राध्यापक; वि० कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कला तथा भाषा संकाय के सदस्य, विविध सामाजिक तथा शैक्षणिक विषयों पर लेख प्रकाशित, वेद-प्रचार में सक्रिय,साहित्य लेखन में रुचि,आर्य-प्रतिनिधि सभा हरियाणा के अंतरंग सदस्य, आर्य कन्या उच्च विद्यालय हिसार की प्रबन्धसमिति के सदस्य, एन. सी. सी. में जूनियर कमीशन प्राप्त, 'समाज, दर्शन तथा काव्य कला के संदर्भ में मध्य-कालीन हरियाणवी सन्त साहित्य का मूल्यांकन' विषय पर शोधकार्यरत। प० छाजूराम मेमोरियल जाट कॉलेज, हिसार।

सुमेधामित्र वेदालंकार

ज० ९ अगस्त १९४६, मरुकिया (दरभंगा); पि० श्री झोटनराम; शि० शास्त्री (वाराणसी), एम.ए. दर्शन-शास्त्र (गुरुकुल), बी. एड्. (बिहार), एम. ए. संस्कृत (वाराणसी); कार्य : चतरा (हजारीबाग), गुरुकुल महा विद्यालय मेहियां तथा गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू में आचार्य संप्रति बनारस में 'ऋग्वेद पंचम मंडल का भाषा-वैज्ञानिक अध्य-यन' विषय पर शोधकार्यरत;वि० श्री सुभाषचन्द्र बोस द्वारा स्थापित फारवर्ड ब्लॉक के संगठन में योगदान, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर लेख प्रकाशित, १९५७ में गोरक्षा आन्दोलन में भाग लेकर जेल-यात्रा, असम व बिहार में आर्यसमाज व वैदिक-धर्म के प्रचारक, सामाजिक कार्यों में विशेष अभिरुचि। द्वारा / संस्कृत विभाग हिन्दू विश्वविद्यालय, प० वाराणसी।
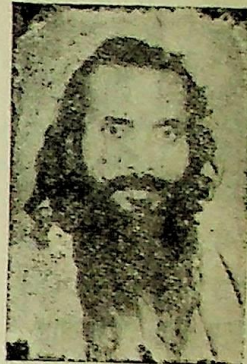
सम्वत् २०२५ (सन् १९६९)

जहानसिंह वेदालंकार

प० ग्राम दहीरपुर, पो० बाफेड़ा कलां (मेरठ)।

मदनमोहन विद्यालंकार

ज० नमासा (कन्नौज); पि० श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र। प० मु० नमासा, पो० कन्नौज (फर्रुखा-बाद)।

वेदव्रत विद्यालंकार

ज० २२ फरवरी १९४७, बुलन्दशहर; पि० श्री धर्मवीर शास्त्री; शि० शास्त्री (वाराणसी), साहित्याचार्य

(दरभंगा), एम. ए. हिन्दी (गुरुकुल); कार्य : आर्य कॉलेज लुधियाना में हिन्दी विभाग में प्रवक्ता; वि० भारतीय-हिन्दी परिषद् के सदस्य, सुवक्ता, स्वाध्यायशील, आर्यसमाज के कार्य-कलापों में अभिरुचि, शोधकार्य में व्यस्त । प० आर्य कॉलेज, लुधियाना (पंजाब)।

सत्यपाल वेदालंकार

ज० १० जनवरी १९४६, सपनावत (मेरठ); पि० श्री छिद्दासिंह; शि० एम. ए. मनोविज्ञान (गुरुकुल), बी. एड्. (मेरठ); कार्य : गुरुकुल महाविद्यालय सपनावत में प्रधानाचार्य, श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी में अध्यापन, नवभारत हाईस्कूल छपरौली में अध्यापन, दिल्ली में क्लिनिक का संचालन; वि० गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर और सपनावत की प्रबन्ध-समिति के सदस्य, सामाजिक कार्यकर्ता, वैदिक धर्म के प्रचार, चिकित्सा एवं शिक्षा सम्बन्धी कार्यों में विशेष अभिरुचि । प० डॉ० सत्यपाल वेदालंकार, प्रकाश क्लिनिक, घिटोरनी, नई दिल्ली—३० ।

प्रमोदमित्र वेदालंकार

ज० १० जुलाई १९४८, भरवारी (प्रयाग); पि० श्री राधेराम; शि० एम. ए. संस्कृत (वाराणसी); कार्य : बस्ती जिले के इन्टर कॉलेज में अध्यापन; र० ज्ञान की बातें; वि० वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय में रुचि । प० डी. ए. वी. इन्टर कॉलेज, मेंहदावल (बस्ती), उ. प्र. ।

सुरेन्द्रसिंह वेदालंकार

ज० ६ मार्च १९५०, सपनावत (मेरठ); पि० श्री हरज्ञानसिंह; शि० एम. ए. (मेरठ), बी. एड्. (मेरठ); कार्य : गुरुकुल शिक्षा सूर्य सपनावत में प्राचार्य, अब तिलपता के इन्टर कॉलेज में अध्यापन; वि० उ. प्र. माध्यमिक शिक्षक संघ के शाखा-मंत्री । प० उपप्राधानाचार्य, भारतीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, तिलपता (गाजियाबाद) ।
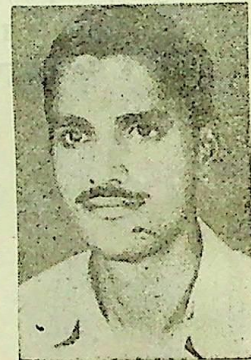
सम्वत् २०२६ (सन् १९७०)

अशोककुमार विद्यालंकार

ज० १० फरवरी १९४६; पि० श्री अमरनाथ चोपड़ा; शि० एम. ए. हिन्दी (गुरुकुल कांगड़ी); कार्य : हरियाणा के आंचलिक क्षेत्र में हिन्दी भाषा व साहित्य का अध्यापन, हैदराबाद में 'मिलाप' दैनिक के उपसम्पादक, संप्रति नृपतुंग जूनियर कॉलेज में हिन्दी-प्राध्यापक; वि० उस्मानिया विश्वविद्यालय में 'महादेवी वर्मा की साहित्य साधना' वैदिक साहित्य के परिप्रेक्ष्य में, विषय पर शोधकार्यरत, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखों का प्रकाशन, सुवक्ता । प० प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, नृपतुंग जूनियर कॉलेज वरंगल (आ. प्र.) ।

दयाचन्द्र विद्यालंकार

ज० ५ मई १९४८, विधलान (सोनीपत); पि० श्री रामस्वरूप; शि० शिक्षाशास्त्री (वाराणसी), एम.ए. (आगरा); कार्य : गुरुकुल मटिण्डू में सहायक मुख्याधिष्ठाता एवं अध्यापन कार्य; वि० आर्यसमाज के प्रचार तथा समाजसेवा में विशेष अभिरुचि । प० गुरुकुल मटिण्डू (खरखोदा), जिला सोनीपत ।

देवराज विद्यालंकार

ज० १ जुलाई १९५०, आँवली (सोनीपत); पि०चौ० प्रभुदयाल; शि० एम.ए. हिन्दी (पंजाब), बी.एड्. (पंजाब); कार्य : हरियाणा वार हीरोज मेमोरियल कॉलेज गोहाना में प्राध्यापक, संप्रति गुरुकुल भैंसवाल में अध्यापक तथा 'समाज संदेश' मासिक के सहायक सम्पादक; वि०स्नातक संघ गुरुकुल भैंसवाल के मन्त्री, विविध पत्र-पत्रिकाओं मे सुन्दर कविताएं और लेख प्रकाशित, ग्राम-विकास समिति आंवली के मन्त्री, समाज सेवा और काव्य-रचना मे विशेष अभिरुचि । प० गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा, भैंसवाल कलां (सोनीपत) ।

देवशर्मा वेदालंकार

ज० बिंदकी; पि०श्री रामनारायण शास्त्री; शि०एम.ए. संस्कृत (वाराणसी) । प० आर्यनगर, बिंदकी (फतेहपुर) ।

प्रेमदत्त विद्यालंकार

शि० एम.ए. इतिहास (कुरुक्षेत्र); कार्य : अध्यापन; प० प्रवक्ता, इतिहास विभाग, डिग्री कॉलेज, इन्द्रलधन (रोहतक) ।

विजयकुमार वेदालंकार

ज० २ जनवरी १९५१, बड़सू (मुजफ्फरनगर); पि० श्री प्रभुसिंह; शि० एम. ए. हिन्दी (कुरुक्षेत्र), पीएच. डी. हिन्दी (कुरुक्षेत्र)--'शुक्लोत्तर हिन्दी समीक्षा और डॉ० नगेन्द्र के समीक्षा-सिद्धान्त'; कार्य : आई. बी. कॉलेज पानीपत में हिन्दी-प्राध्यापक; वि० अध्ययन-अध्यापन तथा आर्यसमाज के कार्यों में विशेष अभिरुचि । आई.बी. कॉलेज, पानीपत (हरियाणा) ।

वीरपाल विद्यालंकार

ज० ६ जुलाई १९४८, भसौता (बुलन्दशहर); पि० श्री रामधन शर्मा; शि० एम.ए. संस्कृत (मेरठ); कार्य : अध्यापन ; वि० पीएच. डी. उपाधि के लिए 'वैदिक संहिताओं में दार्शनिक तत्त्व' विषय पर शोध-कार्य, अनेक वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त, एन. सी. सी. में सीनियर अण्डर ऑफिसर आर्यसमाज की गतिविधियो में सक्रिय, विद्यालंकार परीक्षा में उत्तर-प्रदेश सरकार की बरसरी प्राप्त, लेखन व भाषण में विशेष अभिरुचि । प० श्री चण्डी इन्टर कॉलेज, पिलखुआ (मेरठ) ।

सम्वत् २०२७ (सन् १९७१)

कर्णसिंह विद्यालंकार

ज० भैंसवाल कलां; पि० श्री निहालसिंह; शि० बी. एड्. । प० भैंसवाल कलां (सोनीपत) ।

जगदेवसिंह विद्यालंकार

ज० २० अक्टूबर १९५१, गोयला कलां (रोहतक); पि० श्री इन्द्राजसिंह आर्य; शि० एम. ए. संस्कृत-हिन्दी

(गुरुकुल); **कार्य :** इन्दिरा गाँधी कॉलेज इबलधन में प्रवक्ता; वि० पीएच. डी. के लिए शोध-कार्यरत, वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय । प० इन्दिरा गांधी कॉलेज, इबलधन (रोहतक) ।
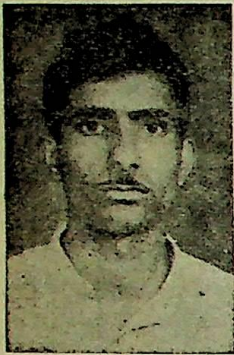
जितेन्द्रलाल विद्यालंकार

ज० बिहार; पि० श्री मुरली साहू । प० अंसारी रोड, हजारी बाग (बिहार) ।

विजयपालसिंह विद्यालंकार

ज० १० अगस्त १९५०, जीतपुर (मेरठ); पि० श्री ओम्प्रकाश; शि० एम.ए. हिन्दी (कुरुक्षेत्र); कार्य : गुरुकुल कुरुक्षेत्र में हिन्दी व संस्कृत के अध्यापक, अब आर्य स्कूल नरवाना में अध्यापक; वि० आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय, साहित्य में विशेष अभिरुचि, पीएच. डी. हेतु रोहतक विश्वविद्यालय में पंजीकृत । प० आर्य हायर सैकेन्डरी स्कूल, नरवाना (जींद) ।

शंकरलाल वेदालंकार

ज० पमारिया (सेऊ); पि० श्री मथुराप्रसाद तिवारी । प० ग्राम पमारिया, पो० सेऊ ।

श्रीवत्सकुमार विद्यालंकार

ज० ५ अगस्त १९५१, उडीसा; पि० श्री भागुरिथ-चरण साहू; शि० एम. ए. संस्कृत (गुरुकुल); कार्य : उड़ीसा सरकार के शिक्षा विभाग के अधीन महाविद्यालयों में अध्यापन; सम्प्रति केन्दुझर कॉलेज में संस्कृत-अध्यापक; वि० विद्यालकार कक्षाओं में उत्तर-प्रदेश की ६० रुपये मासिक की बरसरी तथा एम.ए. में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान से १०० रुपये मासिक की छात्रवृत्ति प्राप्त, लघु-कवितायें यत्र-तत्र प्रकाशित, गल्प, काव्य एवं साहित्य-आलोचना में विशेष अभिरुचि । प० अध्यापक संस्कृत, केन्दुझर कॉलेज, केन्दुझर (उड़ीसा) ।
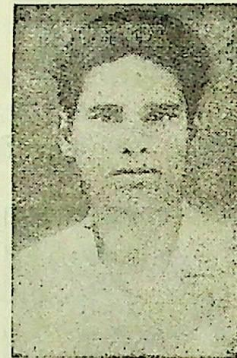
सम्वत् २०२८ (सन् १९७२)

अशोककुमार विद्यालंकार

ज० २० जुलाई १९५२, रोहतक; पि० श्री अमरनाथ; शि० एल. एल. बी० (मेरठ); **कार्य :** रोहतक में वकालत; वि० स्वाध्याय में रुचि, विद्यालंकार कक्षाओं में उत्तर-प्रदेश सरकार की बरसरी प्राप्त । प० १९/१५१ काठ-मंडी, रोहतक ।

ओम्प्रकाश वेदालंकार

प० ग्रा. पो. गोयवा कलां, रोहतक (हरियाणा) ।

जगदीश विद्यालंकार

ज० १४ दिसम्बर १९५०, बीकानेर; पि० श्री प्रह्लादराय खंडेलवाल; शि० बी. एड्. (कुरुक्षेत्र), बी. लिब्. (कुरुक्षेत्र), एम. लिब्. (पंजाब); **कार्य :** पंतनगर विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में तकनीकी सहायक; वि० पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर लेख प्रकाशित, आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योग-

दान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की पुस्तकालय विज्ञान छात्र परिषद् के सचिव, एम. लिब्. में 'रोल ऑफ स्पेसियल लाइब्रेरीज इन ऐडवांसमेंट ऑफ साइन्टिफिक नॉलेज इन इन्डिया' विषय पर लघु शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत, स्वाध्यायशील। प० विश्वविद्यालय-पुस्तकालय, पंतनगर (नैनीताल)।

मदनमोहन विद्यालंकार

प० द्वारा श्री जमुनाप्रसाद जी मुनीम, मकान नं० ३४८, काजीबाग असार जी, काशीपुर (नैनीताल)।

सत्यदेव विद्यालंकार

ज० १ सितम्बर १९५२, मातृश्याम (हरियाणा); पि० श्री लक्ष्मणदेव आर्य; शि० एल. एल. बी. (दिल्ली); कार्य : पंजाब व हरियाणा हाईकोर्ट में वकालत; वि० गुरुकुल आर्यनगर स्नातक मंडल के प्रधान, वैदिक विद्या-निकेतन कन्या हाई स्कूल हिसार के प्रबन्धक, स्वामी देवानन्द सरस्वती न्यास गुरुकुल आर्यनगर हिसार के कोषाध्यक्ष, पंजाब व हरियाणा हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के सदस्य, दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र सलाहकार-समिति के सदस्य, पत्र-पत्रिकाओं में लेख व कवितायें प्रकाशित, भारतीय युवक कांग्रेस की जिला शाखा की कार्यकारिणी के सदस्य, आर्यसमाज व वैदिकधर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान, लोक-सेवा में रुचि, गरीबों की निःशुल्क वकालत। प० १२५-२ प्रेमनगर, हिसार (हरियाणा)।

सत्यपाल विद्यालंकार

ज० हरियाणा; पि० श्री मानसिंह। प० पो० क्योडक (कैथल), हरियाणा।

सम्वत् २०२६ (सन् १९७३)

मदनलाल विद्यालंकार

ज० १३ अक्टूबर १९५२ शाहपुर; पि० श्री भुवासीराम; शि० एम.ए. हिन्दी (गुरुकुल); कार्य : गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की पीएच. डी. उपाधि के लिए 'कामायनी और उर्वशी की प्रतीक-योजना का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोधकार्य में व्यस्त; वि० भारतीय हिन्दी परिषद्, प्रयाग तथा अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य - स्मारिका - परिषद् हरिद्वार के सदस्य; एन.सी.सी. में अण्डर ऑफीसर, साहित्य के अध्ययन में विशेष रुचि, एम.ए. परीक्षा में भी 'उर्वशी में दिनकर की प्रतीक योजना' विषयक शोधप्रबन्ध प्रस्तुत। प० रिसर्च स्कॉलर, राजेन्द्र प्रसाद छात्रावास गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर); द्वारा श्री भुवासीराम जी, ग्राम शाहपुर, पो० नगला रोडान (करनाल)।

योगेशचन्द्र विद्यालंकार

ज० खानपुर कलां; पि० श्री धर्मभानु; कार्य : अध्यापन। प० डी. ए. वी. हाईस्कूल, गोहाना (सोनीपत)।

रणवीरसिंह विद्यालंकार

ज० २० अगस्त १९५३, गुरुकुल भैंसवाल कलां (रोहतक); पि० श्री बृहस्पति शास्त्री; शि० एम. ए. संस्कृत (कुरुक्षेत्र); कार्य : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में पीएच. डी. उपाधि के लिए 'संस्कृत कोष-शास्त्र का उद्‌भव और विकास' विषय पर शोध-

कार्यरत; वि० एम. ए. में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की छात्रवृत्ति प्राप्त, पीएच. डी. के लिए जूनियर फैलोशिप प्राप्त, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की शोध-संगोष्ठी के सचिव, समाजवादी विचारों व लेखकों से प्रभावित, संस्कृत के सर्वाङ्गीण वाङ्मय के अध्ययन में विशेष अभिरुचि । प० संस्कृत-विभाग, वि० ना० चक्रवर्ती विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र ।

राजवीरसिंह विद्यालंकार

ज० हरियाणा; पि० श्री आचार्य विष्णुमित्र, प० कन्या गुरुकुल खानपुर कलां (सोनीपत) ।

रामानन्द विद्यालंकार

ज० कासेण्डी; पि० श्री ज्ञानीराम; शि० बी. एड्. (कुरुक्षेत्र); कार्य : अध्यापन । प० कासण्डी (रोहतक) ।

सम्वत् २०३० (सन् १६७४)

तपेन्द्रकुमार वेदालंकार

ज० १ जुलाई १६५४, निरगाजनी (मुजफ्फरनगर); पि० महाशय रघुवीरसिंह सुधारक; शि० एम. ए. संस्कृत (गुरुकुल); कार्य : गुरुकुल विश्वविद्यालय की पीएच. डी. उपाधि हेतु 'युधिष्ठर विजय महाकाव्य : एक अध्ययन विषय पर शोध-कार्यरत; वि० अखिल हरिद्वारीय संस्कृत परिषद के सदस्य, आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय, वादविवाद एवं भाषण-प्रतियोगिताओं में गुरुकुल का प्रतिनिधित्व एवं पुरस्कार प्राप्त, पत्र-पत्रिकाओं में कहानी, लेख व कविताएं प्रकाशित, एम. ए. में 'उत्तररामचरितेऽर्थालंकारः' विषय पर लघुशोधप्रबन्ध प्रस्तुत । प० अमृत वाटिका, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, (सहारनपुर) ।

प्रकाशचन्द्र वेदालंकार

ज० १२ दिसम्बर १६५२, बम्बई; पि० श्री अशोकजी वे० किशोराणी; शि० शास्त्री (झज्जर), एम. ए. संस्कृत (दिल्ली); कार्य : दिल्ली विश्वविद्यालय में एम.फिल. में अध्ययन; वि० जर्मनी से 'रामाङ्क-नाटिका' हस्तलिपि पर शोधकार्यरत, संस्कृत छात्र परिषद् दिल्ली विश्वविद्यालय के सदस्य, रामजस कॉलेज संस्कृत परिषद् के अध्यक्ष, विविध पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, स्वाध्याय मंडल दिल्ली द्वारा 'वेद अपौरुषेय हैं' शीर्षक लेख पुरस्कृत, एन. सी. सी. की बी. सर्टिफिकट परीक्षा उत्तीर्ण, अध्ययन-अध्यापन एवं सामाजिक कार्यों में विशेष अभिरुचि । प० आर्य समाज मॉडल बस्ती, नई दिल्ली ५

फूलसिंह विद्यालंकार

ज० १६५२; शाहपुर; (जींद) पि० श्री वीरसिंह; शि० एम.ए. हिन्दी (कुरुक्षेत्र); कार्य : इस समय शिक्षण महाविद्यालय कुरुक्षेत्र में बी. एड्. में अध्ययन रत; वि० कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की हिन्दी साहित्य परिषद् के सचिव, पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित । प० ४६, नवयुवक छात्रावास, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र ।
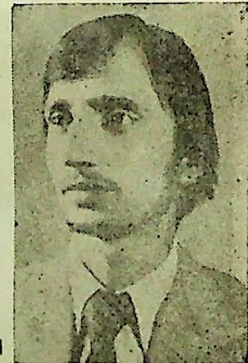
भगवानसिंह वेदालंकार

ज० ६ अगस्त १६५२, फलैदा (मुरादाबाद); पि० श्री साधूसिंह; शि० एम. ए. संस्कृत (मेरठ); कार्य :

आर्यसमाज मेरठ में सेवा-कार्य; वि० आर्यकुमार सभा, मुरादाबाद के उपमन्त्री व उपप्रधान, आर्यसमाज एवं वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय, महर्षि दयानन्द के भक्त, पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित । प० आर्य-समाज प्रह्लाद नगर, मेरठ शहर ।

महावीर विद्यालंकार

ज० गोयला कलां (हरियाणा); पि० श्री रूपराम । प० गोयला कलां (रोहतक) ।

मेघसिंह वेदालंकार

ज० १ जुलाई १९५०, परौरी (अलीगढ़); पि० श्री रामसिंह; शि० एम. ए. संस्कृत (दिल्ली); कार्य : स्वाध्याय एवं आर्यसमाज में उपदेश व पौरोहित्य; वि० विश्व वेद परिषद् के सदस्य, १९७३ में गुजरात व महाराष्ट्र में आर्यसमाज का प्रचार, अच्छे वक्ता । प० आर्यसमाज, किंग्जवे कैम्प, दिल्ली–९ ।

रवीन्द्रकुमार विद्यालंकार
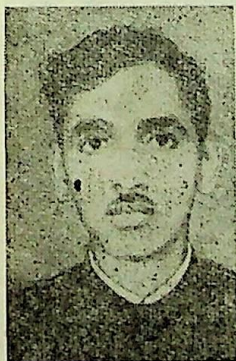
ज० १६ जुलाई १९५१, चतुर्भुज बरांव; पि० श्री राजगृही प्रसाद ; कार्य : स्वतन्त्र व्यवसाय; वि० समाज-सेवा एवं सुधार-कार्यों में विशेष अभिरुचि । प० रवि ऐन्ड कम्पनी, जितौरा (भोज-पुर) बिहार ।

राजेन्द्रसिंह विद्यालंकार

ज० १० जून १९५५, कासेन्डी (सोनीपत); पि० श्री दीपचन्द्र; शि० एम.ए. हिन्दी (कुरुक्षेत्र); कार्य : हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में एम. फिल्. में अध्ययन, पीएच. डी. उपाधि के लिए 'गरीबदास : एक दार्शनिक अध्ययन' विषय पर शोधकार्यरत; वि० या० साँस्कृतिक जीवन के अध्ययन हेतु मौरिशस यात्रा; वि० छात्र राजनीति में सक्रिय, पत्र-पत्रिकाओं में अनेक लेख प्रकाशित, सामाजिक कार्यों में रुचि, हरियाणवी साहित्य-परिषद् गोहाना, अग्रिम युवा-संगठन खानपुर तथा राष्ट्रीय युवा मंच कासेन्डी के सक्रिय सदस्य । प० हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला–५ ।
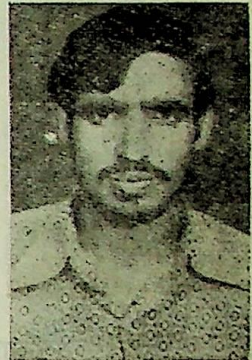
हुकमसिंह वेदालंकार

ज० ३ जनवरी १९५४, मुक्द्राबाद (सहारनपुर); पि० श्री रामदिया; कार्य : गुरुकुल झज्जर में अध्यापन, इस समय दिल्ली विश्वविद्यालय में एम. ए. में अध्ययनरत; वि० काव्य-रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित, श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर में परीक्षा-अधिकारी, समाजसेवा व संगीत में विशेष अभिरुचि, एन. सी. सी. की 'बी' व 'सी' सर्टीफिकेट परीक्षाएं उत्तीर्ण । प० आर्य-समाज माडल बस्ती, नई दिल्ली—५ ।

सम्वत् २०३१ (सन् १९७५)

अरविन्दकुमार विद्यालंकार

ज० २५ मार्च १९५५, पटना शहर; पि० श्री राजेश्वरप्रसाद; कार्य : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में एम. ए. (अंतिम वर्ष) संस्कृत में अध्ययन; वि० अध्ययन व देशाटन में रुचि । प० संस्कृत-विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र ।

गोविन्दसिंह विद्यालंकार

ज० थालकुंडी पाटना; कार्य : गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में एम. ए. संस्कृत (अन्तिम वर्ष) में अध्ययन । प० संस्कृत विभाग, गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) ।

चन्दराम विद्यालंकार

ज० माहरा (हरियाणा); पि० श्री रूपराम; शि० बी. ए., बी. एड्.; कार्य : अध्यापन । प० माहरा (जूआँ), सोनीपत ।

जयप्रकाश विद्यालंकार

ज० कारद (हरियाणा); पि० श्री होश्यारसिंह; शि० एम० ए० (कुरुक्षेत्र) । प० ग्रा० पो० कारद (करनाल) ।

नरेन्द्रकुमार वेदालंकार

ज० १४ मार्च १९५८, बम्बई; पि० श्री अशोक जी वे० किशोराणी, कार्य : स्नातकोत्तर अध्ययन । प० आर्यसमाज सैजपुर (बोघा), अहमदाबाद ।

बालकृष्ण विद्यालंकार

ज० खण्डहना (संबलपुर); पि० श्री गोपालचन्द; कार्य : गुरुकुल विश्वविद्यालय में एम.ए. संस्कृत (अंतिम वर्ष) में अध्ययन । प० संस्कृत विभाग गुरुकुल काँगड़ी (सहारनपुर) ।

बुद्धदेव विद्यालंकार

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में एम. ए. (द्वितीय वर्ष) में अध्ययन । प० द्वारा श्री भरतसिंह शास्त्री, ३९४ आर्यसमाज मार्ग, लोहारू (भिवानी) ।

राजपाल विद्यालंकार

ज० कासेण्डी (सोनीपत); पि० श्री बलवीरसिंह; कार्य : रोहतक विश्वविद्यालय में एम. ए. हिन्दी (अन्तिम वर्ष) में अध्ययन । प० हिन्दी विभाग, रोहतक विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) ।

वेदकुमार वेदालंकार

ज० १ मार्च १९५३, गुलबर्गा (कर्नाटक); पि० श्री महादेवसिंह; कार्य : दिल्ली विश्वविद्यालय में एम. ए. संस्कृत (अंतिम वर्ष) में अध्ययन; वि० रामजस कॉलेज दिल्ली की संस्कृत साहित्य परिषद् के अध्यक्ष, सामाजिक कार्यों में सक्रिय, भाषण प्रतियोगिताओं, संस्कृत-नाटक आदि में तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विशेष अभिरुचि, आर्यसमाज के कार्यकलापों में महत्त्वपूर्ण योगदान । प० १७ / ५३ तिलकनगर, नई दिल्ली – १८ ।

सतीशचन्द्र विद्यालंकार

ज० २४ जुलाई १९५४, सतीघाट (कनखल); पि० श्री रामचन्द्र; कार्य : गुरुकुल विश्वविद्यालय में एम. ए.

हिन्दी (अन्तिम वर्ष) में अध्ययन; वि० पत्र-पत्रिकाओं में कई रचनाएं प्रकाशित, कई बार गुरुकुल विश्वविद्यालय में फुटबाल टीम के दलनायक, भारतीय हिन्दी परिषद् प्रयाग और अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य - स्मारिका - परिषद्, हरिद्वार के सदस्य, 'नयी कहानी एवं उसका शिल्प-विधान' विषय पर लघु शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत, एन.सी.सी. में सीनियर अण्डर आफीसर, कई राष्ट्रीय पर्वों पर परेड का नेतृत्व, कहानी, फीचर आदि लिखने में विशेष अभिरुचि । प० १८ – हनुमानगढ़ी, कनखल (सहारनपुर) ।

सत्यकाम वेदालंकार

ज० १२ जून १९५५, डाणि-भालोठ (झुन्झनुं); पि० श्री कुशालाराम शर्मा; कार्य : गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में एम. ए. संस्कृत (अंतिम वर्ष) में अध्ययन; वि० वेदालंकार परीक्षा में सर्वप्रथम तथा पदक प्राप्त, संस्कृत के अध्ययन तथा योगाभ्यास में विशेष रुचि, अच्छे वक्ता । प० संस्कृत विभाग, वेद एवं आर्टस् कॉलेज, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय (सहारनपुर) ।

सत्यवीरसिंह विद्यालंकार

ज० ३१ मार्च १९५४, हरियाणा; पि० श्री चन्दनसिंह आर्य; शि० बी. एड् (कुरुक्षेत्र); कार्य : दिल्ली विश्वविद्यालय में एम. ए. हिन्दी (प्रथम वर्ष) में अध्ययन; वि० सामाजिक कार्यों में सक्रिय, देशसेवा की लगन, गुरुकुल कांगड़ी में आयोजित कुश्ती-चैम्पियनशिप में ४०-४८ किलो भार के समूह में सर्वप्रथम एवं चैम्पियन, वालीबॉल तथा फुटबॉल में विशेष अभिरुचि, १९७२ के भारत-पाक-युद्ध में हरिद्वार-क्षेत्र में प्रमुख स्थानों पर रात्रि-सेवा, एन. सी. सी. में बी. सर्टिफिकेट परीक्षा उत्तीर्ण । प० पूठकलां, दिल्ली–४१ ।

हरिराम विद्यालंकार

ज० कासेण्डी (सोनीपत); पि० श्री अमीरसिंह; कार्य : रोहतक विश्वविद्यालय में एम.ए. हिन्दी (अंतिम वर्ष) में अध्ययन । प० हिन्दी विभाग, रोहतक विश्वविद्यालय, रोहतक ।

सम्वत् २०३२ (सन् १९७६)
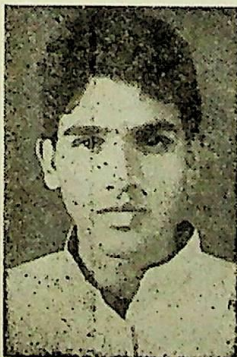
अशोककुमार विद्यालंकार

ज० ५ अगस्त १९५२, राजोदा (देवास); पि० श्री हीरालाल; शि० विद्यावाचस्पति (दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार); कार्य : संप्रति दिल्ली विश्वविद्यालय में एम. ए. (प्रथम वर्ष) में अध्ययन; वि० विश्व वेद परिषद् के सदस्य, आर्य-समाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, कविता, लेख आदि के लिखने में तथा व्याख्यान देने में विशेष रुचि । प० आर्यसमाज मन्दिर, रोहतासनगर, शिवाजीपार्क, शाहदरा, दिल्ली–३२ ।

गणेशप्रसाद विद्यालंकार

ज० पानागढ़ बाजार (वर्दवान); पि० श्री शिवशंकर-प्रसाद; कार्य : दिल्ली विश्वविद्यालय में एम. ए. (प्रथम वर्ष) में अध्ययन; वि० संगीत-गायन में विशेष अभिरुचि, सुवक्ता, खेलों में कुशलता-प्राप्त । प० आर्यसमाज मन्दिर, रोहतासनगर, शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली–३२

बिट्ठलराव विद्यालंकार

ज० महाराष्ट्र; पि० श्री श्रीपतराव; कार्य : अध्ययन। प० श्री विट्ठलराव होलीकर, ग्राम पो० होली, वाया लातूर (उस्मानाबाद) महाराष्ट्र।

भीमसिंह वेदालंकार

ज० ५ जनवरी १९५६, लोहारी (सुताना); पि० श्री विद्यानिधि शास्त्री; शि० शास्त्री (पंजाब); कार्य : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में एम. ए. संस्कृत (प्रथम वर्ष) में अध्ययन, वि० कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की संस्कृत परिषद् के सचिव, विभागीय पत्रिका 'कलानिधि' के संस्कृत खण्ड के संपादक, निबन्ध व लेख आदि लिखने में विशेष रुचि, गांव में रुढ़िगत सामाजिक बुराइयों के समूलोन्मूलन के लिए प्रयत्नशील। प० गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र।

रमेशचन्द्र विद्यालंकार

ज० १३ जनवरी १९५४, नालपुर (मेरठ); पि० चौ० छतरसिंह जी; कार्य : इस समय मेरठ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एस. एस. वी. कॉलेज हापुड़ में हिन्दी में एम. ए. (प्रथम वर्ष) में अध्ययन; वि० गुरुकुल के शिक्षाकाल में विभिन्न परिषदों के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष, एन. सी. सी. में अण्डर ऑफीसर, गहन अध्ययन व खेलकूद में विशेष रुचि। प० ग्राम नालपुर, डॉ० खरखौदा (मेरठ)।
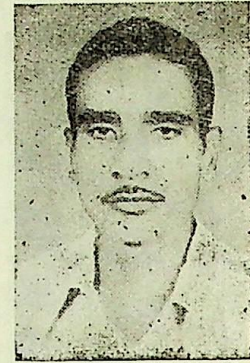
सत्यवीर विद्यालंकार

ज० १८ नवम्बर १९५३, बोहर (रोहतक); पि० श्री रणसिंह; कार्य : रोहतक विश्वविद्यालय में एम. ए. हिन्दी (प्रथम वर्ष) में अध्ययन; र० ब्रह्मचर्य; वि० गोरक्षा आंदोलन में भाग लेकर जेल-यात्रा, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में कुश्ती-चैम्पियन, रोहतक विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में विभागीय सचिव, युवा कांग्रेस के क्षेत्रीय सचिव, गुरुकुल-पत्रिका में समाचार स्तम्भ के लेखक, आर्यसमाज मॉडल-टाउन रोहतक के प्रधान, वालीबॉल के अच्छे खिलाड़ी, 'उर्वशी में प्रतीक योजना' पर अनुसंधान कार्य संपन्न। प० २०३ एल, मॉडल टाउन, रोहतक।
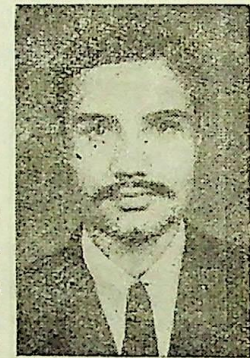
कन्या गुरुकुल और उसकी स्नातिकाएँ

कन्या गुरुकुल देहरादून
और
उसकी स्नातिकाएँ

कन्या गुरुकुल की स्थापना एवं विकास

प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा प्रतिपादित आदर्शों के अनुरूप अलग-अलग जाति, वंश, सम्प्रदाय व धर्म की छात्राओं को बिना किसी भेदभाव के गुरुकुलीय आश्रम-व्यवस्था में रखकर दीक्षित करने, आर्यसमाज के मंतव्यों के अनुसार वेद-वेदांग, संस्कृत-साहित्य, प्राचीन भारतीय संस्कृति के साथ-साथ अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान में शिक्षित करने और इस प्रकार देश व मानव जाति की सेवा के लिए बहुमुखी, प्रतिभा सम्पन्न आदर्श नारियां तैयार करने के उद्देश्य से कन्याओं के लिए एक पृथक् गुरुकुल खोलने की आवश्यकता गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना के समय से ही अनुभव की जा रही थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी और अन्य मूर्धन्य आर्यनेताओं के प्रयत्नों तथा दानवीर सेठ राधुमल जी द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता से इस विचार को क्रियारूप में परिणत किया जा सका। फलतः ८ नवम्बर १९२३ (२३ कार्तिक १९८० विक्रमी) को दीपमालिका के दिन आर्यसमाज के गणमान्य सुप्रसिद्ध नेता आचार्यप्रवर रामदेव जी के नेतृत्व में दिल्ली में कन्या गुरुकुल की स्थापना हुई। यह लगभग तीन वर्ष तक दिल्ली में ही चलता रहा, और उसके बाद इसे १ मई १९२७ को देहरादून स्थानान्तरित कर दिया गया। यहां यह छोटासा पौधा संस्था के आदिसंस्थापक आचार्य रामदेव जी, उनके परिवार के सदस्यों—सुपुत्र पं० यशःपाल सिद्धांतालंकार, सुपुत्री श्रीमती सीतादेवी विद्यालंकृता, श्रीमती चन्द्रप्रभा विद्यालंकृता एवं श्रीमती दमयन्ती कपूर——, प्रथम आचार्या कु० विद्यावती सेठ और उनके परिवार के सदस्यों तथा अन्य कर्मठ कार्यकर्ताओं के त्याग, अटूट लगन, अदम्य उत्साह एवं अनथक प्रयास से उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ आज एक विशाल वटवृक्ष की भांति पुष्पित एवं पल्लवित हो रहा है और गुरुकुल विश्वविद्यालय के अंगभूत कन्या महाविद्यालय के रूप में राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर रहा है। इस संस्था की गरिमा का सबसे बड़ा प्रभाव इसी से मिलता है कि यहाँ न केवल भारत के कोने-कोने से, बल्कि विदेशों से भी छात्राएं आकर शिक्षा ग्रहण करती रही हैं।

इस महाविद्यालय में वैदिक और अर्वाचीन साहित्य के साथ-साथ गृहविज्ञान, अंग्रेजी, शिल्पकला, संगीत, इतिहास, भूगोल, गणित, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, ड्राइंग-पेंटिंग आदि अर्वाचीन विषयों की शिक्षा भी राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती है :

प्रारम्भ में यहां १२वीं तक की शिक्षा की व्यवस्था थी और उस समय स्नातिकाओं को कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की अपनी उपाधि 'विद्यालंकृता' दो जाती थी जिसे देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों और शिक्षा संस्थानों द्वारा मान्यता प्राप्त थी। परन्तु सन् १९५७ से यहां की छात्राएं भी १४ वर्ष तक अध्ययन करने के बाद गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार की 'विद्यालंकार' उपाधि से विभूषित होती हैं।

स्नातिकाएं : विविध क्षेत्रों में

यहां की स्नातिकाएं जहां एक ओर कुशल गृहणियां सिद्ध हुई हैं, वहीं दूसरी ओर उनमें से अधिकांश ने किसी न किसी रूप में समाज व राष्ट्र की प्रगति में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है।

सुयोग्य स्नातिका स्व० श्रीमती सीतादेवी विद्यालंकृता भारत की सुप्रसिद्ध कांग्रेसी नेता थीं । आप कई वर्ष तक लोकसभा की सदस्या भी रहीं । आपका सारा जीवन देश व जाति की सेवा में ही व्यतीत हुआ ।

श्रीमती सीता बहिन चन्द्रमणि पंडित विद्यालंकृता बड़ौदा की प्रख्यात समाजसेविका हैं । इन्होंने महिला सदन बड़ौदा की मुख्याधिष्ठात्री के रूप में कार्य करते हुए हजारों महिलाओं को सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से ऊंचा उठाने में महत्वपूर्ण कार्य किया है ।

आर्यसमाज की सेवा

आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में कन्या गुरुकुल की अनेक स्नातिकाओं ने महत्वपूर्ण योगदान किया है ।

ख्यातिप्राप्त एवं विदुषी आर्य उपदेशिका स्व० श्रीमती चन्द्रप्रभा विद्यालंकृता इसी गुरुकुल की गौरवमयी देन हैं । इन्होंने आर्यसमाज सरगोधा (पाकिस्तान) और दिल्ली बिड़ला मिल की आर्यसमाजों में उल्लेखनीय सेवा की । स्व० श्रीमती अरुन्धती विद्यालंकृता ने क्वेटा (बिलोचिस्तान) में आर्यसमाज का प्रशंसनीय कार्य किया है ।

श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालंकृता के नाम से आंध्रप्रदेश का कौन आर्य नर-नारी परिचित नहीं है । आपकी प्रभावशाली एवं ओजस्वी वक्ता के रूप में आर्य-जगत् में महती प्रतिष्ठा है । आप वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद की मंत्री भी रही हैं ।

श्रीमती सत्यवती विद्यालंकृता (शर्मा) ने अफ्रीका में आर्यसमाज की जो सेवाएं की हैं वे सदा स्मरणीय रहेंगी । श्रीमती शांता विद्यालंकृता (कोचर) नैनीताल आर्यसमाज की और श्रीमती सुमेधा विद्यालंकृता नागपुर में आर्यसमाज की अत्यन्त सक्रिय कार्यकर्त्री रही है । श्रीमती ब्रह्मवती विद्यालंकृता (नारंग) देहरादून आर्यसमाज की और श्रीमती चन्द्रकांता विद्यालंकृता नागपुर आर्यसमाज की प्रसिद्ध एवं कर्मठ नेता हैं । श्रीमती दयावती विद्यालंकृता जयपुर में आर्यसमाज के कार्यों में अपना योगदान कर रही हैं ।

श्रीमती वेदवती विद्यालंकृता आर्यसमाज की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में पर्याप्त सक्रिय हैं । इन्होंने सीतापुर में स्त्री आर्यसमाज की स्थापना की । इस समय ये मेरठ की आर्य-स्त्री समाज की प्रधाना हैं ।

श्रीमती दमयन्ती विद्यालंकृता (कपूर) लम्बे समय से कन्या गुरुकुल देहरादून की आचार्या के रूप में तन-मन-धन से आर्यसमाज की सेवा में लीन हैं । इन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग अपनी मातृसंस्था के विकास एवं संचालन में लगा दिया ।

शिक्षा-क्षेत्र में स्नातिकाएं

कन्या गुरुकुल की अनेक स्नातिकाएं शिक्षा के क्षेत्र को अपनाकर भावी पीढ़ी के नव-निर्माण एवं विकास में उल्लेखनीय योगदान कर रही हैं । यहां की अनेक विदुषी स्नातिकाएं विविध विषयों में उच्च शिक्षा के पश्चात् विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य कर रही हैं । बहुत-सी स्नातिकाओं ने संस्कृत, दर्शन, हिन्दी आदि विषयों में शोध-कार्य करके पी-एच. डी. उपाधि भी प्राप्त की है ।

डॉ० शांता विद्यालंकृता (कोचर) और डॉ० मधु विद्यालंकार दिल्ली में जानकी देवी महाविद्यालय में हिन्दी की प्राध्यापिका हैं । डॉ० ब्रह्मवती विद्यालंकृता (नारंग) महादेवी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में, श्रीमती वेदवती विद्यालंकृता नेशनल स्माईल डिग्री कालेज मेरठ में, और डॉ० रमा विद्यालंकृता (दुबलिश) मुन्नालाल डिग्री कालेज सहारनपुर में संस्कृत विभाग की अध्यक्षा के पद को सुशोभित कर रही हैं । डॉ० वेदकुमारी विद्यालंकृता जयपुर के गौरीदेवी राजकीय

महिला विद्यालय में, डॉ० सुमेधा विद्यालंकृता लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली में, डॉ० हेमलता विद्यालंकार सुन्दरबती महिला कॉलेज भागलपुर में, डॉ० विमला विद्यालंकार हिन्दू विश्वविद्यालय बाराणसी में, श्रीमती सरोज विद्यालंकार दिल्ली के श्यामाप्रसाद मुकर्जी कॉलेज में, श्रीमती मंजु विद्यालंकार राजकीय महिला महाविद्यालय अमृतसर में संस्कृत की प्राध्यापिका हैं। डॉ० सरला विद्यालंकृता शिकोहाबाद के बी. डी. एम. गर्ल्स डिग्री कॉलेज में उपप्राचार्या के पद को अलंकृत कर रही हैं डॉ० सूनृना विद्यालंकार, सरोज विद्यालंकार आदि कतिपय स्नातिकाएं कन्या गुरुकुल देहरादून में भी अध्यापन कार्य कर रही हैं।

एक पुरानी स्नातिका श्रीमती कृष्णा विद्यालंकृता शिक्षा के क्षेत्र मे क्रांतिकारी विचार धारा की प्रबल समर्थक हैं और इन्होंने लखनऊ में स्प्रिंग डेल स्कूल के नाम से एक पब्लिक स्कूल की स्थापना की है।

हरिजन बालिकाओं की शिक्षा के क्षेत्र में कुमारी पुष्पावती विद्यालंकृता द्वारा की गई सेवाएं सदा स्मरणीय रहेंगी। इस समय ये दिल्ली में ओखला स्थित कस्तूरबा बालिका विद्यालय की प्रधानाचार्य के पद पर सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं।
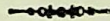
स्नातिका-परिचय

सम्वत् १९८८ (सन् १९३१)

सुलभा विद्यालंकृता
प० श्री वी. डी. वर्मा, वस्सीराम एण्ड संस, राइस मिल्स, पीलीभीत।

सुशीला देवी विद्यालंकृता
प० बलवन्त निवास, शक्ति प्लांट, मोरवी (सौराष्ट्र)।

शांति विद्यालंकृता [दिवंगत]

सम्वत् १९८९ (सन् १९३२)

सत्यवती विद्यालंकृता

ज० २८ अक्टूबर १९१२, सुलतानी गालड़ी (गुरुदासपुर); पति डॉ०सुरेन्द्रनाथ शर्मा; शि० प्रभाकर (पंजाब); वि० या० योरोप व अफ्रीका के विभिन्न देशों में सामाजिक अभिरुचियों के अध्ययन हेतु परिभ्रमण; वि० कन्या की विभिन्न शिक्षा-संस्थाओं तथा आर्य-सामाजिक संगठनों में समाज-सेवा, आर्य-समाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान। प० एन-१५ ग्रेटर कैलाश—१, नई दिल्ली—४८।

सम्वत् १९९० (सन् १९३३)

चन्द्रप्रभा विद्यालंकृता (स्व०)

ज० १४ मार्च १९१४; पति श्री गन्धर्वसेन खोसला; पि० आचार्य रामदेव; शि० शास्त्री (पंजाब), एम. ए. हिन्दी (आगरा); कार्य : कन्या गुरुकुल देहरादून में ४-५ वर्ष अवैतनिक कार्य; वि० आर्यसमाज सरगोधा (पाकिस्तान) में उल्लेखनीय सेवा कार्य, दिल्ली बिड़ला मिल की आर्य-समाज की सक्रिय सदस्या, सुप्रसिद्ध विदुषी उपदेशिका के रूप में ख्याति प्राप्त।

सावित्री देवी विद्यालकृता
पि० श्री टेकचन्द प० १३ ई-१२ ईस्ट पटेल रोड, नयी दिल्ली-८।

सम्वत् १९९१ (सन् १९३४)

दमयन्ती विद्यालंकृता

ज० २ मार्च १९१६, गुरुकुल काँगड़ी; पति श्री विष्णुदत्त कपूर; पि० आचार्य रामदेव; शि० साहित्यरत्न हिन्दी (पंजाब), प्रभाकर (पंजाब), एम. ए. हिन्दी-संस्कृत (आगरा); कार्य : कस्तूरबा बालिका विद्यालय, दिल्ली में प्रधानाचार्या, बिरला बालिका विद्यापीठ पिलानी में प्रवक्ता, सम्प्रति वर्षों से कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून की आचार्या; वि० 'विनय पत्रिका एवं भक्ति-काव्य'

विषय पर अनुसन्धान कार्य में व्यस्त, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की विद्या-सभा, सीनेट, सिण्डीकेट, शिक्षा-पटल की सदस्या, शिक्षा-परिषद् उत्तर-प्रदेश की सदस्या, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की सीनेट की सदस्या, सन् १९५३ से अहर्निश कन्या गुरुकुल देहरादून के निर्माण एवं विकास में तन-मन-धन से संलग्न, शिक्षा, साहित्य एवं समाज-सेवा में विशेष अभिरुचि, कर्मठ एवं प्रबन्धपटु। प० कन्या गुरुकुल ६०, राजपुर रोड, देहरादून।

शांता विद्यालंकृता

ज० ३० अगस्त १९१६, दिल्ली; पति डॉ० हरिवंश कोचर; पि० बाबा मिलखा सिंह; शि० एम. ए. हिन्दी-संस्कृत (आगरा) पी-एच.डी. हिन्दी (दिल्ली)—'हिन्दी साहित्य में 'मंगल काव्य'; कार्य : जानकी देवी महाविद्यालय दिल्ली में हिन्दी विभाग में प्राध्यापिका; वि० नैनीताल में आर्य-समाज की सक्रिय कार्यकर्त्री, वर्षों तक आर्य-समाज की मंत्री एवं प्रधान, पठन-पाठन में विशेष अभिरुचि। प० ७० बाबर रोड, नई दिल्ली—१।

सुशीलादेवी विद्यालंकृता

ज० १५ जनवरी १९१६, शमसाबाद (हैदराबाद); पति स्व० श्री शान्तिशरण विद्यार्थी; शि० साहित्यरत्न (प्रयाग); कार्य : सिकन्दराबाद में एक उद्योग का संचालन; पूंजीवाद, समाजवाद और भारतीय दृष्टिकोण, संस्कृत-कवियों का वाणी विलास, ऋषि दयानन्द और वेद; वि० वैदिक साहित्य में विशेष अभिरुचि, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद की सदस्या, हैदराबाद में म्यूनिसिपल कांउसिलर के पद पर प्रतिष्ठित, आकाशवाणी से अनेक वार्ताएं प्रसारित, मौरीशस में आर्य महासम्मेलन के अवसर पर महिला सम्मेलन का उद्घाटन, अच्छी कवयित्री, वर्षों तक आर्यप्रतिनिधि सभा की मन्त्री एवं हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षा-मन्त्री, ओजस्वी वक्ता। प० १५ जीरा कंपाउण्ड, सिकन्दराबाद; २-४-८५ दीपक सिख रोड, सिकन्दराबाद (आंध्रप्रदेश)।

सम्वत् १९९२ (सन् १९३५)

चन्द्रकान्ता विद्यालंकृता

प० कान्ति निवास, रेखी पेट्रोल पम्प के पीछे, बेझन बाग, नागपुर-४ (महाराष्ट्र)।

दयावती विद्यालंकृता

ज० २० अक्टूबर १९१८ (पाकिस्तान); पि० श्री रामचन्द्र आर्य; शि० विशारद संस्कृत (पंजाब); कार्य : उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जयपुर में अध्यापन; वि० आर्य-समाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान। प० प्लाट नं० ६६३ आदर्श नगर, जयपुर-४।

ब्रह्मवती विद्यालंकृता

ज० ८ अक्टूबर १९१६, सोलन (शिमला); पति : श्री देवचन्द्र नारंग; पि० श्री कालूराम; शि० साहित्यरत्न संस्कृत (प्रयाग), प्रभाकर (पंजाब), बी० ए० (आगरा), एम० ए० संस्कृत (आगरा), बी०टी०
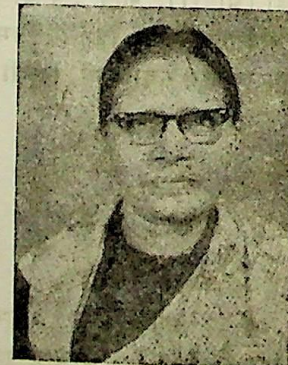
(आगरा), पीएच० डी० संस्कृत (मेरठ) — 'कालिदास के नारीपात्र'; कार्य : सन् १९४८ में आमेर शरणार्थी कैम्प में कमाण्डेन्ट, कन्या गुरुकुल देहरादून में मुख्याध्यापिका एवं कार्यवाहक आचार्या, सम्प्रति महादेवी स्नातकोत्तर महाविद्यालय देहरादून में संस्कृत विभाग की अध्यक्षा (सन् १९६० से); र० महान् भारतीय, कालिदास के नारीपात्र (शीघ्र प्रकाश्य); वि० मेरठ विश्वविद्यालय संस्कृत प्राध्यापक परिषद् की सक्रिय पदाधिकारिणी, गढ़वाल विश्वविद्यालय की संस्कृत बोर्ड ऑफ स्टडीज की सदस्या, आर्यसमाज की गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण योगदान, १५-१६ वर्ष से आर्यसमाज देहरादून की उपप्रधाना, वेद-दर्शन-उपनिषद् विषयक एवं सामयिक विषयों पर भाषण, सुवक्ता, कांग्रेस के कार्यों में सक्रिय सहयोग (१९४०–४७), अखिल भारतीय महिला आश्रम, देहरादून की अन्तरंग सदस्या, महादेवी स्नातकोत्तर महाविद्यालय के छात्रावास की अध्यक्षा, सभी उपाधियाँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, लेखन व अध्यापन में विशेष रुचि। प० १३ बी, कचहरी रोड, देहरादून।

भारतप्रिया विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री वाचस्पति जी दीक्षित, भाटिया भवन, बर्नी रोड, बुलन्दशहर (उ. प्र.)।

वेदवती विद्यालंकृता

सुशीलादेवी विद्यालंकृता

प० श्रीमती सुशीलादेवी त्रिवेदी, रायचन्द रोड, नवसारी (गुजरात)।

सम्वत् १९९३ (सन् १९३६)

अनसूया विद्यालंकृता

ज० १० जनवरी १९१८, जालन्धर; पति : श्री दयाप्रकाश गार्ग्य; शि० साहित्यरत्न (प्रयाग), बी. ए., प्रभाकर (पंजाब); वि० साहित्य में अत्यधिक रुचि। प० द्वारा श्री डी. पी. गार्ग्य, ४३-बी. पी. डब्ल्यू. डी. कालोनी, जोधपुर (राजस्थान)।

कलावती विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री प्रकाशचन्द्र जी, प्रकाश एण्ड कम्पनी, नासिक रोड (महाराष्ट्र)।

शकुन्तला विद्यालंकृता

शान्तीदेवी विद्यालंकृता

प० विट्ठल भाई आर्य कन्या गुरुकुल, नडियाद (सूरत)।

सत्यव्रता विद्यालंकृता

पि० श्री जीवनभाई माधव जी।

सावित्री विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री शिवनारायण जी, एडवोकेट, गंज, मुरादाबाद।

सीता बहिन विद्यालंकृता

ज० चैत्र सुदी नवमी १९७४ विक्रमी. सातेम (गुजरात); पति : श्री चन्द्रमणि मोतीलाल पंडित; पि० श्री दुर्लभ भाई; कार्य : एक वर्ष आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा में अध्यापन, महिला सदन बड़ौदा में मुख्याधिष्ठात्री (१९३७ से); वि०समाज सेवा में सक्रिय योगदान, महिला सदन में कार्य करते हुए हजारों महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक आदि सभी दृष्टियों से उद्धार, सिलाई, कढ़ाई एवं बुनाई में विशेष अभिरुचि। प० आर्य कन्या महाविद्यालय कारेली बाग, बड़ौदा–१।

सुखदा विद्यालंकृता
प० द्वारा श्री हरिशंकर जी हरदुवागंज (अलीगढ़)।

सुखदा देवी विद्यालंकृता
प० द्वारा श्री जे. पी. अग्रवाल, ११० बी. महानगर, सी सेक्टर, लखनऊ।

सुशीला विद्यालंकृता
प० गवर्नमेंट गर्ल्स हाईस्कूल, सीकरी (जयपुर)।

सुशीलादेवी विद्यालंकृता
शि० काव्यतीर्थ, विशारद। प० द्वारा प्रो. भीमसेन जी शास्त्री, प्लाट नं० २६५ आदर्शनगर, जयपुर।

सम्वत् १९९४ (सन् १९३७)

गायत्री देवी विद्यालंकृता
पि० श्री बनवारीलाल जी।

वेदवती विद्यालंकृता

प० श्री शम्भूनारायण जी दीक्षित, बुढनामऊ, फतेहपुर (उ.प्र.)।

शान्तिदेवी विद्यालंकृता
शि० एम.ए., एल.टी.। प०महादेवी कॉलेज, देहरादून।

सावित्री विद्यालंकृता
पि० श्री शादीराम जी।

सुमित्रा विद्यालंकृता
पि० श्री काशीराम जी।

सम्वत् १९९५ (सन् १९३८)

उषा विद्यालंकृता
पि० श्री दुर्गादास जी।

कमला विद्यालंकृता
पि० श्री फकीरचन्द जी।

रामकली विद्यालंकृता
श्री बद्रीप्रसाद शंकर।

वेदवती विद्यालंकृता
ज० १ नवम्बर १९१९ लाहौर; पति : श्री बलजीत शास्त्री; पि० स्व० लाला रोशनलाल; शि० विद्यालंकार (गुरुकुल), प्रभाकर हिन्दी (पंजाब), एम. ए. संस्कृत (आगरा); कार्य : महिला डिग्री कॉलेज मेरठ में संस्कृत-विभागाध्यक्ष; वि०सामाजिक कार्यों में सक्रिय योगदान, वर्षों से आर्य स्त्री समाज सदर मेरठ की प्रधान, छात्रावस्था में अनेक पुरस्कार व पदक प्राप्त, सभी परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण। प० दुर्गा भवन, १९२-सी दिल्ली रोड, मेरठ।

शांता विद्यालंकृता
ज० १९२०, अमरोहा (मुरादाबाद); पति : श्री जितेन्द्रसिंह गुप्ता; वि० वैदिक विचारधारा के प्रचार-

प्रसार में योगदान, वेदाध्ययन सत्संग एवं स्वाध्याय में विशेष अभिरुचि। प० २९ शिवाजी मार्ग, ईस्टर्न कचहरी, रोड, मेरठ।

शीलावती विद्यालंकृता (स्व०)
पति : श्री अनोखेलाल जी ऊरभरे।

शोभावती विद्यालंकृता
प० १०६, भदैनी, वाराणसी।

सुमित्रा विद्यालंकृता
पि० श्री मंगलसेन जी।

सुशीला विद्यालंकृता
प० ११ नवनीतनगर, एम. जी. रोड, राजवाडी, घाट कोपर, बम्बई-७७।

स्नेहलता विद्यालंकृता
प० श्री ए. डी. पाठक, पाठक-निवास, स्ट्रीट नं० ६, कृष्णनगर, होशियारपुर (पंजाब)।

सम्वत् १९९६ (सन् १९३९)

अरुन्धती विद्यालंकृता [स्व०]
पति : डॉ० सोमप्रकाश आयुर्वेदालंकार; आचार्य रामदेव; वि० पति के साथ क्वेटा (बलोचिस्तान) में आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान। निधन १९९१, बीसलपुर (पीलीभीत)।

प्रकाशवती विद्यालंकृता
पि० श्री धारीलाल।

मायादेवी विद्यालंकृता
प० ४१, ईस्ट कैनाल रोड, देहरादून।

शकुन्तला विद्यालंकृता
प० द्वारा श्री प्रभुलाल शर्मा, अर्जीनवीस, कालसी (देहरादून)।

सुभद्रा विद्यालंकृता
प० फोर्थ फ्लोर, एफ ए ३३, कोलाबा, बम्बई-३।

सम्वत् १९९७ (सन् १९४०)

कृष्णबाला विद्यालंकृता
प० द्वारा श्री सहदेव चक्रवर्ती, मकान नं० बी/१३/५०४ कूचा पं० धनीराम, मोहल्ला करीमपुरा लुधियाना।

कौशल्या विद्यालंकृता
पि० श्री हरगोविन्द धर्म जी।

विनयकुमारी विद्यालंकृता
प० श्री चांद मेहता, १०७३, दर्शन भवन, शाहदरा, दिल्ली-३२।

सम्वत् १९९८ (सन् १९४१)

अरुणावती विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री महेन्द्रसिंह जी, मु० काला मन्दिर, पीलीभीत (उ० प्र०)।

कौशल्यादेवी विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री सी. एल. सूद, फ्लैट नं० ४, २८ साउदर्न एवेन्यू, कलकत्ता-२६।

चंचलकुमारी विद्यालंकृता

पि० श्री गोविन्द राम जी।

चन्द्रावती विद्यालंकृता

प० द्वारा सरदार वी. एस. मेहता; ५ वंशीधर विला, शोभानी रोड, कोलाबा, बम्बई।

प्रभातशोभा विद्यालंकृता

ज० २ अगस्त १९२५ ई० लाहौर; पि० स्व० पं० बुद्धदेव विद्यालंकार; शिक्षा विद्यालंकृता, एम. ए. (दर्शनशास्त्र, दिल्ली विश्वविद्यालय), संगीत विशारद, (गान्धर्व महाविद्यालय); कार्य : समाज-सेवा, ग्राम विकास एवं संस्कार निर्माण; गांधी शताब्दी की राष्ट्रीय समिति में महिला एवं बाल विकास, उत्तर क्षेत्र (उत्तर-प्रदेश पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान) की प्रभारी संयोजिका; हरियाणा गाँधी शताब्दी की सचिव; सघन ग्राम विकास योजना पट्टी कल्याण की संचालिका; स्वराज्य भारती ट्रस्ट की संस्थापक मन्त्री; संयुक्तराष्ट्र से मान्यता प्राप्त विश्वधर्म और शान्ति सम्मेलन की महासभा की सदस्य, विश्व-धर्म और शान्ति-सम्मेलन (भारत) के उत्तरी क्षेत्र और बम्बई की मंत्री, इसी वर्ष सिंगापुर में आयोजित एशियायी सम्मेलन की अध्यक्षता; अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन की उपप्रधान। वि० अमरीका और कनाडा की अध्ययन-यात्रा। स्थायी प० ग्राम और डाकघर बाघपुर, तहसील बेटी, जिला रोहतक (हरियाणा); वर्तमान : ३ कृष्ण-मेनन मार्ग, नयी दिल्ली–११०–००११।

लक्ष्मीदेवी विद्यालंकृता

पि० श्री टी. आर. नायडु।

शांता विद्यालंकृता

ज० २५ दिसम्बर १९२२, दिल्ली, पि० श्री रामचन्द्र; शि० प्रभाकर हिन्दी (पंजाब) साहित्यरत्न हिन्दी (प्रयाग) एम. ए. संस्कृत (आगरा); कार्य : अध्यापन; वि० स्वाध्याय में विशेष अभिरुचि। प० श्रीमती शान्ता शर्मा, संस्कृत प्रवक्ता, गोमती कन्या इन्टर कॉलेज, जानसठ (मुजफ्फर-नगर)।

सरला विद्यालंकृता

ज० ३ जनवरी १९२४, फर्रुखाबाद; पति : श्री चन्द्रसेनसिंह भदौरिया; पि० ठा० रूपसिंह राठौर; शि० विद्यालंकार (गुरुकुल), एम. ए. संस्कृत-हिन्दी (आगरा), साहित्यरत्न (प्रयाग), पीएच. डी. संस्कृत (आगरा) 'जैन योग एवं पातञ्जल योग का तुलनात्मक अध्ययन'; कार्य : श्री रत्नमुनि जैन गर्ल्स कॉलेज में प्रवक्ता, पी. सी. बागला डिग्री कॉलेज हाथरस में प्रवक्ता, संप्रति बी.डी. एम. गर्ल्स डिग्री कॉलेज शिकोहाबाद में उपप्राचार्या; र० संस्कृत की कतिपय कृतियों की टीकाएं एवं निबन्ध की पुस्तकें प्रकाशित; वि० दार्शनिक विषयों में विशेष अभिरुचि, विविध साहित्यगोष्ठियों एवं परिषदों में सक्रिय भाग शीघ्र ही सामाजिक या राजनैतिक कार्यक्षेत्र में आने का विचार, अध्ययन-अध्यापन में रुचि। प० द्वारा श्री

चन्द्रमेनसिंह भदौरिया एडवोकेट ३५/२९२ नौबस्ता, लोहा-मण्डी, अगरा-२; संस्कृत विभाग, बी. डो. एम. एम. गर्ल्स डिग्री कॉलेज, शिकोहाबाद (मैनपुरी) ।

सावित्री विद्यालंकृता

ज० १३ नवम्बर १९२३, रुड़की; पति : डॉ० रामगोपाल मिश्र; वि० एक प्रसिद्ध फ्रेंच उपन्यास हिन्दी में अनूदित, कला, साहित्य, काव्य, नाटक आदि के पठन-पाठन में विशेष रुचि । प० जेड I/ ए, हौज़ खास, नयी दिल्ली—१६ ।

सीतादेवी विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री एस. पी. गूणकरे, कौंसिल हाल, बम्बई ।

सुशीला विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री फकीरचन्द जी जाती, स्टेट इंजीनियर, गंगटोक (सिक्किम) ।

सम्वत् १९९९ (सन् १९४२)

गायत्री विद्यालंकृता

प० डॉ० बी. कुमार, सूट नं० ४, ईस्टर्न कोर्ट, पी २९, मिशनरो, एक्सपर्ट कलकत्ता—१३ ।

पुष्पावती विद्यालंकृता

पति : डॉ० अमीचन्द जी चोपड़ा ।

रमावती विद्यालंकृता

प० श्री वीरेन्द्र कुमार रस्तोगी, मवाना (मेरठ) ।

लज्जावती विद्यालंकृता

पति : श्री गजाधर प्रसाद जी ।

विद्यावती विद्यालंकृता

प० द्वारा सेठ अमरनाथ जी, जालंधर छावनी (पंजाब) ।

सरला विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री यशवन्तसिंह कोछड़, प्लाट नं० ८, ३९ राजपुर रोड, दिल्ली—६ ।

सुधामयी विद्यालंकृता

ज० १० फरवरी १९२६, कानपुर; पति : हरिदत्त वेदालंकार; पि० श्री कैलाशबिहारी सेठ; शि० बी. ए., एम. ए. (आगरा); वि० सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में गहरी रुचि, पन्त नगर कृषि विश्वविद्यालय के लेडीज क्लब की एक वर्ष कोषाध्यक्षा और कई वर्ष तक महासचिव, विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किसान मेलों के अवसर पर महिला मंगल दल के स्टाल का सचालन, बगला देश के स्वातंत्र्य-संग्राम के समय जवानों के लिए खाद्य सामग्री भेजी, सैनिक परिवारों एवं जवानों के लिए वस्त्र और गरम कपड़े तय्यार करके भिजवाए, पन्त-नगर में कैम्पस स्कूल की स्थापना के लिए लेडीज-क्लब की ओर से धन-संग्रह, विविध प्रकार व्यंजन एवं आचार-निर्माण मे विशेष अभिरुचि एवं दक्षता प्राप्त, एम. के. पी. पत्रिका (देहरादून) और नवनीत आदि पत्र-पत्रिकाओं में लेख

प्रकाशित, पति के लेखन कार्य में सक्रिय सहयोग, आर्य-समाज के कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान, गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) की स्त्रीसमाज की वर्षों तक पदाधिकारी, मिलनसार एवं मृदुभाषी प्रकृति के कारण अत्यधिक लोकप्रिय । प० V/१३५८, पतनगर (नैनीताल) ।

सुषमा विद्यालंकृता

प० द्वारा आर. के. बाच, सी. ओ. पी. पी. ६-८-०-३ बम्बई–२५ ।

सम्वत् २००० (सन् १९४३)

उर्मिला विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री गिरधारीलाल जी, २५ पंचकुईयां रोड, नयी दिल्ली-५५ ।

इंदिरा विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री तेजभान भाटिया, ९५ पेशविला रोड, देहरादून ।

कृष्णाकुमारी विद्यालंकृता

ज० ६ दिसम्बर १९२४, स्याना (बुलन्दशहर); पति : डॉ० राजाराम रस्तोगी; पि० राय साहब लाला बांकेलाल रस्तोगी; वि० सामाजिक एवं राजनैतिक गतिविधियों में योगदान, कढ़ाई, बुनाई व सिलाई में दक्षता प्राप्त, वैदिक एवं आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक प्रगति से सम्बन्धित साहित्य में विशेष अभिरुचि । प० २४/१८८ राजेन्द्र नगर, पटना-१६ ।

चंचल विद्यालंकृता

पि० श्री देवीप्रसाद जी ।

भगनवती विद्यालंकृता

पि० श्री हीरालाल जी ।

विद्यावती विद्यालंकृता

पि० श्री राजबहादुर जी सक्सेना ।

वेदवती विद्यालंकृता

पि० श्री रामप्रकाश जी ।

शकुन्तला विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री डी. वी. प्रकाश, ए. ई. एन., साउथ ईस्ट रेलवे, बिलासपुर (म. प्र.) ।

श्रीदेवी विद्यालंकृता

प० आर–८, मॉडल टाउन, दिल्ली–९ ।

सन्तोष विद्यालंकृता

प० वैलफेयर लेबर सेन्टर, न्यू लेबर कालोनी, रोशन बाग, लखनऊ ।

सावित्री विद्यालंकृता

प० द्वारा डॉ० आनन्दकुमार जी चूहड़पुर (देहरादून) ।

सुदर्शन विद्यालंकृता

पि० श्री भगवती जी वोरी ।

सुषमा विद्यालंकृता

ज० १ दिसम्बर १९२७, जालंधर (पंजाब); पि० स्व० चन्द्रमणि जी विद्यालंकार; पति : डॉ० लक्ष्मीदत्त कार्ले (पी-एच.डी.); शि० शास्त्री (पंजाब वि. वि. १९४३), एम. ए. (आगरा); कार्य : अध्यापन; वि० लेखन, आर्यसमाज महिला विभाग और लायंस क्लब में सक्रिय; प० २२ नील गगन, सातवां रोड, शान्ताक्रूज (पूर्व), मुम्बई-४००–०५५ ।

सम्वत् २००१ (सन् १९४४)

चन्द्रावती विद्यालंकृता (स्व०)

पि० श्री अवधविहारीलाल ।

पुष्पा विद्यालंकृता

ज० २२ जून १९२५, दिल्ली; पति : श्री धर्मवीर विद्यालंकार; पि० श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति; शि० बी. ए. (आगरा); कार्य : हीरादेवी कन्या पाठशाला कनखल में मुख्याध्यापिका, शिशु मन्दिर पीलीभीत में मुख्याध्यापिका, संप्रति पीलीभीत में गृहस्थ व फार्मिंग; वि० गुरुकुल काँगड़ी की विद्यासभा की कई वर्ष तक सदस्या, कहानी व उपन्यास लेखन में विशेष अभिरुचि । प० भण्डारा फार्म, पो० मझोला (पीलीभीत) ।

प्रकाशवती विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री जयदेव, पायोनियर (मद्रास) प्राइवेट लिमिटेड, २३ माउन्ट रोड, मद्रास ।

प्रभावती विद्यालंकृता

प० द्वारा वी. पी. शर्मा, १-सी/११ रोहतक रोड, नयी दिल्ली–५ ।

भारती विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री रामेश्वर जी स्नातक, नरवाना (हरियाणा) ।

विमला विद्यालंकृता (स्व०)

पति : डॉ० अनन्तानन्द आयुर्वेदालंकार; पि० श्री प्रभुदयाल; वि० आर्यसमाज की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी की स्त्री आर्यसमाज की प्रधान व मंत्री, स्वाध्यायप्रेमी, मिलनसार, मृदुभाषी, संगीत में विशेष अभिरुचि । **निधन** अक्टूबर १९७४, गुरुकुल कांगड़ी ।

शकुन्तला विद्यालंकृता (स्व०)

पि० श्री छज्जूराम ।

शान्ति विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री पी. सी. गुप्ता, प्रेमसदन, १०६ खेड़ापति कालोनी, ग्वालियर ।

सन्तोष विद्यालंकृता

पि० श्री विष्णुचन्द्रसिंह ।

सरला विद्यालंकृता

प० श्री चेतनलाल जी आर्य, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर ।

सरस्वती विद्यालंकृता

ज० ८ जुलाई १९२६, मलवाड़ा (सूरत); पति : श्री धीरेन्द्र विद्यालंकार; शि० संगीत विशारद (गान्धर्व महाविद्यालय); वि० आर्य-समाज मॉडल टाउन दिल्ली और गुजराती महिला संस्था 'संस्कार केन्द्र' कमला नगर दिल्ली की सदस्या, सामाजिक कार्यों में विशेष अभिरुचि; प० डी-१/१६ मॉडल टाउन, दिल्ली–९ ।

सावित्री विद्यालंकृता

ज० १७ अक्टूबर १९२७ सरायसिद्ध (पाकिस्तान); पति : श्री प्रेम नारायण खुराना; वि० सामाजिक तथा राजनीतिक प्रवृत्तियों में और साहित्यिक अध्ययन में रुचि; प० १५–डी. कमला नगर, दिल्ली—७ व शूगर मिल्स नवाबगंज (गोंडा), उत्तर-प्रदेश २७१-३०४ ।

सुभद्रा विद्यालंकृता

प० श्री कृष्णप्रसाद जी रिटायर्ड तहसीलदार, इटावा ।

सुशीला विद्यलंकृता

प० द्वारा श्री भागाराम जी, जिला बोर्ड इंजीनियर, उरई (जालौन) ।

सम्वत् २००२ (सन् १९४५)

कृष्णा विद्यालंकृता

वि० शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी विचारधारा की प्रबल समर्थिका, लखनऊ में स्प्रिंग डेल स्कूल नामक पब्लिक स्कूल की संस्थापिका एवं संचालिका । प० श्रीमती कृष्णा सूद, स्प्रिंग डेल स्कूल, महानगर, लखनऊ ।

जनक विद्यालकृता

प० श्री कै. तिलकराज प्रिंजे, २७ छिंदवाड़ा रोड, कामठी, नागपुर ।

द्रौपदी विद्यालंकृता

पि० श्री सम्मनलाल जी ।

पुष्पवती विद्यालंकृता

कार्य : कस्तूरबा बालिका विद्यालय की प्रधानाचार्या; वि० हरिजन बालिकाओं की शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय योगदान । प० प्रधानाचार्या, कस्तूरबा बालिका विद्यालय, ईश्वरनगर, नयी दिल्ली-२० ।

प्रियम्वदा विद्यालंकृता

प० द्वारा डा० प्यारेलाल जी गहलौत, फिरोजाबाद (आगरा) ।

रक्षावती विद्यालंकृता

पि० श्री दीनानाथ ।

राजदुलारी विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री मंगतराम जी, टिमली, देहरादून ।

विमला विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री गंगाराम जी, ब्राइट एण्ड कम्पनी, झांसी ।

विमला विद्यालंकृता

पि० श्री रामलाल ।

वेदकुमारी विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री गिरधारीलाल जी २५ पंचकुइयां रोड, नयी दिल्ली-५५ ।

शान्ति विद्यालकृता

पि० श्री बागमल जी ।

शारदा विद्यालकृता

प० द्वारा श्री रघुनन्दनप्रसाद जी, देसरी (मुजफ्फरनगर)

सत्यवती विद्यालंकृता

प० श्री कै. बी. सिन्हा, बलदेव निवास, बानी पार्क, सवाई जयसिंह हाईवे, जयपुर ।

सुन्दर विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री नारायणदास जी, १० अंडरहिल रोड, सिविल लाइन, दिल्ली,५४ ।

सम्वत् २००३ (सन् १९४६)

उमावती विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री दवेन्द्रनाथ जी महाजन, ८ रानी का बाग, अमृतसर ।

ओ३म्बाई विद्यालंकृता

ज० १८ दिसम्बर १९२८, बौंदा (भिवानी); पति : कर्नल भरतसिह; शि० एम. ए. संस्कृत एवं अंग्रेजी (आगरा); वि० फौजी पत्रिका में धार्मिक विषयों पर लेख प्रकाशित, साहित्य व योग में विशेष रुचि । प० द्वारा कर्नल भरतसिंह, बी-१ डिफेंस कॉलोनी, मवाना रोड, मेरठ ।

करुणा विद्यालंकृता

पि० श्री ला. बन्नाराम जी ।

कृष्णा विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री बा. पूर्णचन्द्र ऐडवोकेट, माई थान, आगरा-४ ।

कौशल्या विद्यालंकृता

पि० श्री दुर्गादास ।

गायत्री विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री अन्तर्यामी पण्डा, अखिल भारतीय चरखा संघ, उत्कल ब्रांच केन्द्र-पटना ।

चंचल विद्यालंकृता

पि० श्री बाबूराम बौरी ।

चमेली विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री अमरनाथ जी सेठी, ११ आकलैंड रोड, इलाहाबाद ।

ज्योत्स्ना विद्यालंकृता

प० २७ टी. आई. टी. ब्लॉक, मार्ड पैली, सिकन्दराबाद (दक्षिण) ।

प्रभावती विद्यालंकृता

ज० लाहौर; पति : डॉ० प्रकाशचन्द्र खुराना; पि० श्री कन्हैयालाल । प० द्वारा डॉ० प्रकाशचन्द्र खुराना, धनिक बाजार, अमृतसर ।

भद्रशीला विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री के. सी. त्यागी, मकान नं० १४७६, सैक्टर २२ बी. चंडीगढ़-२२ ।

मायावती विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री भगवानदास जी राठी, एग्जिक्यूटिव इंजीनियर, रेहिन्द डाम, मिर्जापुर ।

शान्ति विद्यालंकृता

पि० श्री गेंदाराम ।

सीता विद्यालंकृता

प० द्वारा डॉ एच. आई. आर. शर्मा, श्री गोपालदास रोड, अमृतसर ।

सुमेधा विद्यालंकृता

ज० २१ अप्रैल १९३१, रंगून (बर्मा); पति : श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति; पि० स्व० सुखदेव दर्शनवाचस्पति; शि० विद्यालंकार (गुरुकुल), एम. ए. संस्कृत (दिल्ली), साहित्याचार्य (दरभंगा), पी-एच. डी. संस्कृत (दिल्ली)– 'महाभारत में शांतिपर्व का आलोचनात्मक अध्ययन'; कार्य : लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई

दिल्ली में प्राध्यापिका; वि० आकाशवाणी के नागपुर केन्द्र के महिला, बाल एवं देहाती कार्यक्रमों में योगदान, अखिल भारतीय महिला परिषद् दिल्ली और लेडीज क्लब गुलमोहर पार्क दिल्ली की सदस्या, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान आदि पत्र-पत्रिकाओं में सामयिक लेख प्रकाशित, नागपुर में स्त्री आर्यसमाज के कार्यकलापों में सक्रिय योगदान, संगीत एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों में विशेष अभिरुचि । प० अभ्युदय, बी-२२ गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली—४९ ।

सुशीला विद्यालंकृता

प० श्री मुकुटबिहारीलाल जी, द्वारा श्री कृष्णकुमार जी, कोठी राय रोशनलाल जी, कटरा मानराय, बरेली ।

सम्वत् २००४ (सन् १९४७)

ओमवती विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री ओमकुमार जी, सुपरवाइजर, हिन्द लैम्प्स, शिकोहाबाद ।

निर्मला विद्यालंकृता (स्व०)

पुष्पावती विद्यालंकृता

ज० ११ अगस्त १९२७, लाहौर; पति : श्री अविनाशचन्द्र विद्यालंकार; पि० श्री कन्हैयालाल; शि० संगीत प्रभाकर, बी० ए० मेरठ; कार्य : कन्या गुरुकुल कनखल में अध्यापन; वि० गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की विद्यासभा की सदस्या, संगीत एवं सामाजिक कार्यों में रुचि. कई वर्ष तक गुरुकुल कांगड़ी की स्त्री-आर्यसमाज की मंत्री एवं अन्य पदाधिकारी । प० आर्यनगर, कनखल-ज्वालापुर रोड, ज्वालापुर (सहारनपुर) ।

प्रतिभा विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री हरगोविन्द जी धर्मसी, ग्लास मर्चेन्ट्स, ३१ मिर्जा स्ट्रीट, बम्बई ।

प्रेमलता विद्यालंकृता (दिवंगत)

राजकुमारी विद्यालंकृता

पि० श्री रोशनलाल ।

राजकुमारी विद्यालंकृता

प० श्री दुर्गाप्रसाद जी, द्वारा श्री सन्तदास सगड़, एडवोकेट, कूंचा, लुधियाना ।

लीलावती विद्यालंकृता (दिवंगत)

विमला विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री मुलखराज जी दत्त, एम. ई. एस., फिरोजपुर ।

सन्तोष विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री सत्यपाल जी बजाज, आर्यसमाज, रोहतक ।

सरला विद्यालंकृता
प० श्री जीवनदास जी, द्वारा श्री नारायणसिंह, पो० बा. ४, झरिया, (मानभूम)।

सुलक्षणा विद्यालंकृता
प० द्वारा श्री रामरक्खामल जी, फिल्लौर (जालन्धर)।

स्नेहलता विद्यालंकृता
प० द्वारा श्री बालकृष्ण जी रोहतगी, ओरियंटल इलैक्ट्रिक कम्पनी, भागीरथ पैलेस, चांदनी चौक, दिल्ली–६।

स्वर्णलता विद्यालंकृता (दिवंगत)

सम्वत् २००५ (सन् १९४८)

कमला विद्यालंकृता
प० द्वारा श्री रमेशकुमार जी पी. डब्ल्यू. डी., एम. ई. एस., ४–४–४४६ सुलतान बाजार, हैदराबाद (आ० प्र०)।

कान्ता विद्यालंकृता
प० द्वारा डॉ० शर्मा, फाउन्ड्री रोड, नाहन (हि. प्र.)।

कौशल्यादेवी विद्यालंकृता
ज० ३० अप्रैल १९३१, देहरादून; पति श्री यशपाल आर्य; वि० व्यवसाय में विशेष अभिरुचि, देहरादून में वनोषधि वितरण के व्यवसाय हेतु 'नॉर्दर्न इंडिया ड्रग्स कॉरपोरेशन' नामक संस्थान की स्थापना एवं संचालन, आर्यसमाज की गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण योगदान। प० १/३ ए धामावाला, देहरादून।

राजकुमारी विद्यालंकृता
प० द्वारा श्री मथुरादास जी, एलाटमेन्ट हाउस नं० ६६८, झज्झर (रोहतक)।

लक्ष्मीदेवी विद्यालंकृता
प० द्वारा श्री ज्ञानेन्द्र जी, सत्य आश्रम, नारायण स्वामी मार्ग, बरेली।

वीणा विद्यालंकृता
प० द्वारा श्री गिरराज जी धरण, पुरुषोत्तमदास शास्त्री लाइन, राजा बाजार, लखनऊ।

वेदवती विद्यालंकृता
प० द्वारा चौ० कुन्दनलाल जी, बदरीपुर, देहरादून।

व्रजरानी विद्यालंकृता
ज० २५ जुलाई १९३०, इटावा; पि० श्री सुखनन्दनप्रसाद, पति : श्री घनश्यामसिंह कपूर; शि० एम. ए. (आगरा), कार्य : प्रवक्ता संस्कृत, आर्य कन्या इन्टर कालेज, मेरठ शहर; वि० संस्कृत अध्यापन, साँस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग, शारीरिक व्यायाम का प्रशिक्षण, आर्य समाज की गतिविधि में योगदान, प्रौढ़ साक्षरता में विशेषता, शिक्षा-प्रचार। प० ३२ स्वामी पाड़ा, निकट डॉ० बीरचन्द्र, बुढ़ाना दरवाजा, मेरठ।

शीलवती विद्यालंकृता

प० ३८/६१ कांवली रोड, देहरादून ।

सरोज विद्यालंकृता

ज० १२ अगस्त १६३१, फीजी; पति श्री सुरेन्द्रनाथ अग्रवाल; पि० श्री स्व० अमीचन्द्र विद्यालंकार; वि० मृदुभाषी, मिलनसार, विदुषी. सामाजिक एवं देश सेवा के कार्यों में रुचि । प० ई–६, अमर कालोनी, लाजपतनगर-४, नई दिल्ली २४ ।

सावित्री विद्यालंकृता

प० ए. डी. ओ. (एस. ई. डब्ल्यू.), आई. डी. ब्लॉक, पुरकाजी (मुजफ्फरनगर) ।

सुशीला विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री रामनाथ जी, एकाउटैंट, शूगर मिल्स. रोहाना कलाँ (मुजफ्फरनगर) ।

सम्वत् २००६ (सन् १६४६)

उर्मिला विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री दयाशंकर अग्रवाल, केशवाश्रम, भुवनेश्वर (उड़ीसा) ।

कर्मा विद्यालंकृता

श्री रामजीदास शर्मा ।

प्रभा विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री वी. पी. शर्मा, ३२० मालरोड, अजमेर (राजस्थान) ।

सरला विद्यालंकृता

प० श्रीमती सरला देवी विद्यालंकृता, आर्य कन्या पाठशाला, हरदोई ।

सरोज विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री एन. के. पगनपैय्या मैनेजर, मादापुर स्टेट, मादापुर, कुर्ग ।

सुशीला विद्यालंकृता

प० क्लेमैन्ट टाउन, देहरादून ।

सम्वत् २००७ (सन् १६५०)

आनन्दी विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री महावीरदास जी, मु. नाथचक, पो. बाढ़, जि. पटना ।

उर्मिला विद्यालंकृता

प० १३० सदर बाजार, रामलीला ग्राउंड झांसी ।

चन्द्रावती विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री बाबूराम जी खोसला, सिगनल इंस्पेक्टर, रानाघाट ई. आई. आर. रानाघाट (बंगाल) ।

पुनीता विद्यालंकृता

प० १६ ई. सी. रोड, देहरादून ।

मनोहरलता विद्यालंकृता

प० श्री अमरनाथ जी बौरी, द्वारा श्री रामतीर्थ महेन्द्रा, कूंचा सूदां, लुधियाना ।

यशोदा विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री भुवनेश्वरदास जी, मु. नाथचक, पो. बाढ़ जि. पटना।

शन्नो विद्यालंकृता

प० द्वारा डॉ० मूलचन्द जी, १०/५०० खलासी लाइन, कानपुर।

सत्यवती विद्यालंकृता

ज० २३ दिसम्बर १९३२, ठांगर (पौड़ी गढ़वाल); पति : डॉ० शिवकुमार आयुर्वेदालंकार; पि० श्री कुन्दनसिंह नेगी; शि० विद्यालंकार (गुरुकुल), साहित्यरत्न हिन्दी (प्रयाग), एम. ए. हिन्दी (आगरा); कार्य : राजकीय कन्या इण्टर कॉलिज में अध्यापन; वि० स्वाध्याय में विशेष रुचि, व्यवहार-कुशल, मृदुभाषी । प० प्रवक्ता हिन्दी, राजकीय कन्या इन्टर कॉलेज, लैन्सीडाउन।

सरला विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री रामलाल एन्ड विद्यासागर रस्तोगी, विद्या-भवन, बदायूं।

सम्वत् २००८ (सन् १९५१)

उषा विद्यालंकृता

प० श्रीमती उषारानी रस्तोगी, द्वारा जीवनराम एन्ड सन्स, सदर बाजार, झांसी।

कृष्णा विद्यालंकृता

प० द्वारा श्रीमती सुमित्रादेवी जी, मुहल्ला बाराखाकी, मेरठ।

राजकुमारी विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री बलवीर राज सौंधी, सालिग निवास, जालन्धर शहर।

ललिता विद्यालंकृता

प० ललिता चाउन, १०२ ए, कोलाबा कॉजवे, बम्बई–१।

विजयलक्ष्मी विद्यालंकृता

ज० ६ अप्रैल १९३४, बांकानेर (सूरत); पति : श्री नागरभाई कुंवर जी; कार्य : सिलाई का कार्य । प० मु० पो० बांकानेर, तालुका बारडोली (सूरत)।

विनय विद्यालंकृता

ज० ८ फरवरी १९३३, शाहदरा (दिल्ली); पति : श्री जुगिन्द्रलाल कपूर; वि० आर्यसमाज के कार्यों में रुचि, बच्चों के स्कूल में 'अभिभावक संघ' की सदस्या साहित्यिक अध्ययन व घरेलू कार्यों में रुचि । प० बी. ५/२० कृष्णनगर, दिल्ली।

वेदवती विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री शम्भुनाथ जी गुप्त, जीवनराम एन्ड सन्स, सदर बाजार, झांसी।

सुधा विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री बद्रीनाथ जी गैरिजन इंजीनियर, झांसी।

सुशीला विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री बारुमल जी मैकेनिकल फोरमैन, बीरबल पो०, काठियावाड़।

सम्वत् २००९ (सन् १९५२)

इन्दिरा विद्यालंकृता

प० श्रीमती इन्दिरा कपिला; कस्तूरबा सेविका आश्रम, रोहतक रोड, दिल्ली ।

उर्मिला विद्यालंकृता

ज० २० अप्रैल १९३५, कछोली (अमलसाड); पति : श्री भीमभाई दयाल नायक; वि० गृह - व्यवस्था. कुटुम्ब सेवा व बागवानी में विशेष अभिरुचि । प० द्वारा श्री भीमभाई दयाल जी नायक, रमण पुलिया, धमडाछा, वाया अमलसाड (बलसाड़) ।

पुष्पा विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री दयाराम जी शर्मा, एडवोकेट, २४ बी न्यू कालोनी, पलवल (जि० गुड़गांव) ।

विमला विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री धर्मवीर जी गुप्त, एग्जीक्यूटिव इंजीनीयर, १७६ ए सिविल लाइन, बरेली ।

सन्तोष विद्यालंकृता

प० श्री दुर्गाप्रसाद जी मेहता खिजराबाद, तहसील जगाधरी (अम्बाला)।

सावित्री विद्यालंकृता

ज० १० फरवरी १९३४ रानीपुर; पति : श्री इन्द्रदेव विद्या-भूषण स्नातक; वि० शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र में रुचि, पंचायत समिति, चित्तौड़गढ़ की सदस्य, स्त्री-सुधार और बाल-शिक्षा विशेष क्षेत्र । प० मु० पो० सेंती, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) ।

सीता विद्यालंकृता

प० श्रीमती मलावीदेव जी, महिला आश्रम, लक्ष्मण चौक, देहरादून ।

सुशीला विद्यालंकृता

प० श्रीमती सुशीला अग्रवाल, ई. ५६, सेक्टर २, जगन्नाथ नगर, रांची ४ (बिहार) ।

सम्वत् २०१० (सन् १९५३)

अंजनादेवी विद्यालंकृता

ज० ९ फरवरी १९३५, कराची; पति : डॉ० देशबन्धु आर्य; वि० हाटपिपलिया में महिला मण्डल की अध्यक्षा, सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों में योगदान, संगीत व स्वाध्याय में विशेष अभिरुचि । प० सान्ध्यदीप; ७४ नरसिंह बाजार, हाट पिपलिया (देवास), म. प्र. ।

इन्दुमती विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री रवीन्द्रप्रसाद जोशी, ग्राम, पो. पुण्डेश्वरी, काशीपुर (नैनीताल) ।

उषा विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री नरेन्द्रनाथ कोछड़, विजय लक्ष्मी टाकीज, चन्दौसी (मुरादाबाद) ।

कमला विद्यालंकृता

प० श्री किशोरीलाल जी वकील, वस्सी पठाना (पटियाला)।

कमला विद्यालंकृता

प० श्री गिरधारीलाल जी द्वारा श्री मेहरचन्द जी पुरी, पचकुंईया रोड, नई दिल्ली—५५।

कृष्णा विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री वेदप्रकाश जी, मकान नं. ९४-९५, माडल बस्ती, दिल्ली – ६

देवबाला विद्यालंकृता

श्री जसवन्तराम जी।

प्रेमवती विद्यालंकृता

श्री हरिस्वरूप जी कश्यप

प्रेमवती विद्यालकृता

प० द्वारा श्री बृजलाल जी नेहरा, ए-८/४४ बरकतपुरा, हैदराबाद (आ. प्र.)।

प्रेमसुधा विद्यालंकृता

प० श्रीमती प्रेमसुधा गोयल, सुधा विला प्रोफेसर्स लेन, कच्चा कालेज रोड़, बरनाला (संगरूर)।

मीरा विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री व्यंकटराव जी, मु० राजूरकर, पो. देगलूर (महाराष्ट्र)।

रविकान्ता विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री ताराचन्द जी रईस, आईस फैक्टरी, फैजाबाद (उ. प्र.)।

विद्योतमा विद्यालंकृता

प० स्वास्थ्य निरीक्षका, भटवाड़ी, जि० उत्तर काशी, गढ़वाल।

विश्वमोहिनी विद्यालंकृता

प० द्वारा श्रीमती लालमणिदेवी जी खंडेलवाल, मकान नं० २४४ चितरंजन एवेन्यू, कलकत्ता।

सन्तोष विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री ओ. पी. रस्तोगी, सुपरिन्टेंडेंट, एम. ई. एस., तल्लीताल (नैनीताल)।

सरला विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री एन. के. गनवैया मैनेजर, मादापुर स्टेट मादापुरा (कुर्ग)।

सुदर्शना विद्यालंकृता

ज० १९ अगस्त १९३३, क्वेटा; पति : श्री राजेन्द्रनाथ भक्त; शि० एम. ए. इतिहास (आगरा), एम. ए. राजनीति (मेरठ), बी. एड्. (मेरठ); कार्य : बी. एम. डी. जैन गर्ल्स हायर सेकेन्डरी स्कूल जगाधरी में मुख्याध्यापिका; वि० कन्याओं की शिक्षा व वेदप्रचार में विशेष अभिरुचि। प० ७८९, स्कूल रोड, जगाधरी।

सम्वत् २०११ (सन् १९५४)

इन्दिरा विद्यालकृता

प० द्वारा श्री दौलतराम जी शर्मा, ६० मजीठा रोड, अमृतसर (पंजाब)।

इन्दुबाला विद्यालंकृता

प० श्री जसवन्त राय (बर्मा)।

इन्दुमती विद्यालंकृता

पति : श्री डी. सी. गुप्ता, पि० श्री हरिप्रसाद जी, प० द्वारा श्री डी. सी. गुप्ता, मैनेजर, पो. गोदावरी खानी (करीम नगर)।

चंचल विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री रमाकान्तसिंह रोहतगी, १६/५१ सिविल लाइन्स, कानपुर।

चन्द्रवती विद्यालंकृता

दयारानी विद्यालंकृता

प० द्वारा अध्यापिका, हरिजन सेवक संघ, किंग्सवे, दिल्ली।

प्रेम विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री प्रतापसिंह जी जमवाल, कम्पोज़ीटर गवर्नमैंट इंडिया प्रेस, शिमला।

भाग्यवती विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री हयातसिंह जी, जनरल मर्चेन्ट, ग्राम कन्यूर, पो. बैजनाथ जि० अल्मोड़ा।

महिमा विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री बद्रीप्रसाद जी गुप्त, चौहड़पुर (देहरादून)।

राजकुमारी विद्यालंकृता

प० द्वारा श्री रामचन्द दीनानाथ जी, डेरी बस्सी, कलसिया स्टेट (जि. अम्बाला)।

शान्ता विद्यालंकृता

सम्वत् २०१२ (सन् १९५५)

वेदकुमारी विद्यालंकृता

ज० १२ मार्च १९३५. लाहौर छावनी; पि० श्री शिवलाल कौशिक; शि० एम. ए. संस्कृत (जयपुर), पी-एच. डी. संस्कृत (जयपुर) –'मैत्रायणी संहिता का एक अध्ययन'; कार्य : गौरीदेवी राजकीय महिला महाविद्यालय अलवर में संस्कृत की प्राध्यापिका; वि० १९५४ में ढाई वर्ष तक प्लास्टर चढ़े रहने के कारण घुटने, कुल्हे आदि के जोड़ समाप्त, फलतः चलने बैठने में असमर्थ, इस विषम परिस्थिति में भी धुन की धनी होने के कारण लेटे-लेटे ही सभी परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, लोक-सेवक के रूप में राजस्थान समग्र सेवा संघ की सर्वोदयी वृत्तियों से सम्बद्ध, भारतीय समाज कल्याण परिषद् की अलवर शाखा की सदस्या, राजस्थान संस्कृत परिषद् और आचार्य-कुल की सदस्या, भारत-चीन युद्ध के दौरान भारतीय सैनिकों के लिए स्वेटर बुन कर प्रेषित, बिहार के भूचाल व अकाल-पीड़ितों के लिए घर-घर घूम कर धन अन्न-संग्रह, एन. सी. सी. का प्रशिक्षण प्राप्त, हरिजन-बस्तियों में जाकर उनकी सफाई व शिक्षा में योगदान, छात्राओं व अध्यापिकाओं में अत्यन्त लोकप्रिय, महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा-योजना की इंचार्ज, सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि, अध्यात्म-काव्य एवं दर्शन के प्रति अनुराग। प० ३२-बी मनु मार्ग, अलवर (राजस्थान)।

सम्वत् २०१४ (सन् १९५७)

उमा विद्यालंकार

पि० श्री प्रयागशरण; प० द्वारा श्री जे. सी. गर्ग, कमला निवास, बेतियाहाता, गोरखपुर।

उर्मिला विद्यालंकार

पि० श्री गंगाप्रसाद आर्य; प० द्वारा श्री मेवालाल किसनलाल आर्य, पो० कांकिनाड़ा, २४ परगना (बंगाल)।

गायत्री विद्यालंकार

पि० श्री बांकेलाल जी मूंदड़ा । पति : डॉ० पी.एम. महेश, अध्यक्ष भौतिकी विभाग, मेरठ कालेज, मेरठ ।

वजीर; पि० श्री वीरसेन; वि० या० युगाण्डा (पूर्व अफ्रीका); वि० स्वाध्याय में विशेष अभिरुचि । प० द्वारा वेद-सदन महारानी रोड, इन्दौर; ८३ मौरी रोड, स्टॉक नेविंग्टन, नं० १६, लन्दन (यू० के०) ।

चन्द्रावती विद्यालंकार

प० द्वारा श्री ईश्वरीप्रसाद जी, बड़जोई (मुरादाबाद) ।

धर्मव्रती विद्यालंकार

प० द्वारा श्री वजीरचन्द जी ठेकेदार, न्यू कालोनी, गुड़गांव (हरियाणा) ।

प्रेमसुधा विद्यालंकार

पि० श्री महेन्द्रनाथ ।

राजकुमारी विद्यालंकार

पि० डॉ० रामनारायण । प० द्वारा परमानन्द रेलन एडवोकेट; प० १११, एल, मॉडल टाउन, सोनीपत (हरियाणा) ।

लक्ष्मी विद्यालंकार

पि० श्री किशोरीलाल; प० द्वारा श्रीमती चमनदेवी जी, धामपुर (बिजनौर) ।

विजया विद्यालंकार

ज० ३० जून १९३६, इन्दौर; पति : श्री सतीश

विमला विद्यालंकार

प० द्वारा कैप्टिन आर० सिन्हा, चीफ मिलिट्री इन्स्ट्रक्टर, ४०२ तिलक रोड, मेरठ ।

वेदवती विद्यालंकार

ज० १० मार्च १९३८, डेरागाजीखां; पि० श्री लक्ष्मीनारायण नागिया; शि० एम. ए. संस्कृत (बनारस); कार्य : दिल्ली प्रशासन में स्नातकोत्तर अध्यापिका; वि० स्वाध्याय, अभिनय व संगीत में विशेष अभिरुचि । प० १९/२ ए मोतीनगर, नई दिल्ली ।

सरोज विद्यालंकार

पि० श्री रामनाथ कक्कड़ । प० द्वारा श्री बी. पी. कपूर, ४ शीलकुञ्ज, रुड़की यूनिवर्सिटी, रुड़की (सहारनपुर) ।

सावित्री विद्यालंकार

पि० श्री रामप्रतापसिंह ।

सावित्री विद्यालंकार

प० द्वारा श्री ओमप्रकाश प्रधान, ग्राम एवं डाकखाना ढकौली (मेरठ) ।

सुशीला विद्यालंकार

प० द्वारा श्रीमती गायत्रीदेवी, खिजराबाद. तहसील खरड़, जिला अम्बाला।

स्नेहलता विद्यालंकार

पि० श्री हरस्वरूप जी; प० केनिया कालोनी, अफ्रीका।

सम्वत् २०१५ (सन् १९५८)

उषा विद्यालंकार

पि० श्री रामनारायण। प० द्वारा कुमार रेलन, डी. एम. टेक्निकल, १३८, आर मॉडल टाउन, सोनीपत (हरियाणा)।

कविता विद्यालंकार (स्व०)

पि० श्री शारदाप्रसाद एडवोकेट।

मंगला विद्यालंकार

पि० श्री बालकृष्ण। प० द्वारा मैसर्स सुरेश एण्ड कम्पनी, ४१ लोकमान्य वस्तु भण्डार, दादर बम्बई—२८।

रमा विद्यालंकार

पि० श्री प्रयागशरण सिंघल। प० द्वारा २९ सेवक-आश्रम, देहरादून।

रुक्मणि विद्यालंकार

पि० श्री वशीधर रामगोपाल प० द्वारा ५/२२ बी. रूपनगर, दिल्ली–६।

लक्ष्मी विद्यालंकार

पि० श्री राधेलाल त्रिपाठी। प० द्वारा श्री आर. के. मिश्र, हाईकोर्ट लेन, प्रताप कालोनी ग्वालियर।

विमला विद्यालंकार

प० द्वारा श्री वीरसेन जी, वेदसदन, ७२, महारानी रोड, इन्दौर।

विमला विद्यालंकार

पि० श्री वशीधर रामगोपाल, प० द्वारा ५/२२ बी. रूपनगर, दिल्ली–६।

वीना विद्यालंकार

ज० १७ अगस्त १९४०, मुरादाबाद; पतिः डॉ० एस. के. रस्तोगी; शि० एम. ए. संस्कृत (जीवाजी); वि० एम. ए. में योग्यता सूची में पंचम स्थान प्राप्त करने के कारण 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष समारोह समिति' द्वारा सम्मानित, ग्वालियर की बाल विकास परिषद्, कस्तूरबा महिला समिति एवं ग्वालियर महिला मण्डल की सदस्या, साहित्य के अध्ययन-अध्यापन में रुचि, पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित। प० डॉ० एस. के. रस्तोगी, शीतला गली, ग्वालियर (म. प्र.)।

वेदवती विद्यालंकार

पि० श्री अमरनाथ महेन्द्रा।

सरला विद्यालंकार

पि० श्री महेशलाल आर्य। प० डॉ० वी. प्रकाश, सरला प्रकाश, ८२१७ हेमिल्टन स्प्रिंग लिमिटेड, कार्डेरॉक स्प्रिंग्स, बेथेस्डा, मैरीलैंड–२००३४, सं० रा० अमेरिका।

सुलक्षणा विद्यालंकार

पि०श्री किशोरीलाल मण्डल। प० १०४७, हजूरी रोड, लुधियाना (पंजाब)।

सुलभा विद्यालंकार

पि० श्री पृथ्वीचन्द्र आर्य। प० द्वारा श्री पृथ्वीचन्द्र जी आर्य लोअर बाजार, शिमला।

सम्वत् २०१६ (सन् १६५६)

कमलेश विद्यालंकार

श्रीमती कमलेश भसीन, २/२६, रूपनगर दिल्ली।

कान्ता विद्यालंकार

श्री भूदेवचन्द्र प० द्वारा श्री भूदेव हरिश्चन्द्र, गवर्नमेंट कन्ट्रैक्टर, सिन्दरी (बिहार)।

कान्ता विद्यालंकार

पि० श्री धर्मपाल। प० द्वारा श्री धर्मपाल प्रेमचन्द गांधी, चांदनी चौक, दिल्ली-६।

कृष्णा विद्यालंकार

पि० श्री किशोरीलाल मण्डल। प० १०४७ हजूरी रोड, लुधियाना।

पुष्पावती विद्यालंकार

पि० श्री नन्दलाल सेठी।

रक्षा विद्यालंकार

प० द्वारा श्री पारससिंह, बड़ी बेल, अम्बाला।

सरस्वती विद्यालंकार

ज० १६ जनवरी १६३८ आगरा; पति : श्री कुंवर रुद्रसिंह; पिता : स्व० श्री अद्वैतानन्द; शि० एम. ए. हिन्दी (आगरा); वि० घर पर ही ग्रामीण बच्चों की मैट्रिक, इन्टर बी. ए. तक की शिक्षा का निःशुल्क प्रबन्ध तथा गुरुकुलीय आदर्शों का प्रचार, संस्कृत में एम.ए. (उत्तरार्ध) परीक्षा तय्यारी में व्यस्त, संगीत में विशेष रुचि। प० मकान नं० १२४, सेक्टर १० ए, चण्डीगढ़।

सम्वत् २०१७ (सन् १६६०)

उमा विद्यालंकार

श्री अमरनाथ महेन्द्रा।

उमा विद्यालंकार

पि० श्री गोपीनाथ प० द्वारा श्री गोपीनाथ जी त्यागी, गांव एवं डाकघर मदौली (मेरठ)।

निर्मला विद्यालंकार

पि० श्री साधोराम प० ग्राम एवं डाकघर अधोया, जिला अम्बाला।

मंजु विद्यालंकार

ज० २० अक्टूबर १६४२, लाहौर; पि० स्व. देवचन्द्र नारंग; शि० एम. ए. संस्कृत (आगरा); कार्य : राजकीय कॉलिज अमृतसर में संस्कृत विभाग की अध्यक्ष; वि० पी-एच. डी. के लिए 'कालिदास का मानवेतर विलास' विषय पर शोधकार्य में व्यस्त, विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र की सदस्या, अध्ययन-अध्यापन में विशेष रुचि। प० संस्कृत विभाग, गवर्नमेंट कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर।

शशिबाला विद्यालंकार

पि० श्री गणेशनारायणसिंह । प० द्वारा चौ० लायकसिंह, शिकोहाबाद (मैनपुरी)।

संतोष विद्यालंकार

प० द्वारा श्री ग्रार. के. मित्तल, जन्तुविज्ञान विभाग प्रोफेसर्स लॉज, मोदीनगर (मेरठ)।

सुखदा विद्यालंकार

पि० श्री पृथ्वीचन्द आर्य । प० द्वारा श्री पृथ्वीचन्द ग्रार्य, लोग्रर बाजार, शिमला (हि० प्र०)।

सुशीला विद्यालंकार

प० द्वारा श्री वंशीधर रामगोपाल, मेंहदी वाले, ५/२२ बी. रूपनगर, दिल्ली-७।

सम्वत् २०१८ (सन् १९६१)

इन्द्रावती विद्यालंकार

कृष्णा विद्यालंकार

प०द्वारा श्री जनेश्वरप्रसाद जी एग्ज़ीक्यूटिव इंजीनियर, २०३ लॉज रोड, ग्रागरा।

रमा विद्यालंकार

प० द्वारा श्री वी. ए, मिश्र, मैनेजर. ९ सी IV, V; बी, भारत हैवी इलैक्ट्रिकल लिमिटेड, रानीपुर, हरिद्वार (सहारनपुर)।

सरोज विद्यालंकार

प० द्वारा श्री लाजपतराय सूद, स्टेशन मास्टर, पी० बॉक्स १०७ किसुमु, बी. ई. ए. केनिया कालोनी (ग्रफ्रीका)।

सुधा विद्यालंकार

प० द्वारा श्री नरोत्तम जी शारदा, ठेकेदार, काठगोदाम (नैनीताल)।

सुमित्रा विद्यालंकार

प० द्वारा श्री जगन्नाथ जी ग्रार्य, रेलवे मेल सर्विस, सहारनपुर।

सम्वत् २०१९ (सन् १९६२)

इन्दिरा विद्यालंकार

प० द्वारा श्री मथुरादास जी गोपाल, नेशविला रोड, देहरादून।

उषा विद्यालंकार

ज० २६ फरवरी १९४३, जम्मू; पति : श्री विजयभूषण भारद्वाज; पि० श्री सत्यदेव विद्यालंकार; शि० एम. ए. संस्कृत (दिल्ली); वि० या० विश्वदर्शन हेतु यूरोप, एशिया के ग्रनेक देशों का भ्रमरण; वि० कन्या विश्वविद्यालय की महिला परिषद् की सदस्या, आर्यसमाज के कार्यों में सक्रिय योगदान, संगीत में विशेष ग्रभिरुचि। प० ई–१८ ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली–४८।

चन्द्रबाला विद्यालंकार

पि० श्री विजयपालसिंह; प० द्वारा श्री मेजर एस. अहलावत, ३८ यू. पी. एन. सी. सी. बटालियन, सीतापुर (उ० प्र०) ।

सुशीला विद्यालंकार

पि० श्री नरोत्तमशरण शारदा; प० डागा भवन, होप सर्कस, अलवर ।

सम्वत् २०२० (सन् १९६३)

इन्दिरा विद्यालंकार

पि० किशोरीलाल जी मण्डल; प० १०४७ हजूरी रोड, लुधियाना ।

पुष्पा विद्यालंकार

पि० श्री रामप्रसाद जी मण्डल; प० ३५ पटेलबाबू रोड, भागलपुर ।

मीरा विद्यालंकार

पि० श्री राधेलाल जी त्रिपाठी; प० ११९/१९६ ओमनगर, कानपुर ।

रश्मि विद्यालंकार

प० ४५, पार्क एरिया, विलसन गार्डन, बैंगलौर ।

शान्ता विद्यालंकार

ज० ७ जनवरी १९४४, जरोड़ा (महाराष्ट्र); पति : श्री जयसिंह राव गायकवाड़; पि० श्री विट्ठल राव पाटिल जरोड़कर; शि० बी. एड. (जबलपुर), एम. ए. संस्कृत (जबलपुर); वि० विद्यालंकार व एम.ए.परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी प्राप्त, छात्रावस्था में संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता में पुरस्कृत, संस्कृत के पठन-पाठन में विशेष अभिरुचि । प० श्रीमती शान्ता गायकवाड़, द्वारा श्री जयसिंह राव गायकवाड़, गायकवाड़ कुटी, नर्मदा पथ, जबलपुर ।

हेमलता विद्यालंकार

ज० १५ फरवरी १९४३, पंचगछिया (बिहार); पति : डॉ० साकेन्द्रप्रसादसिंह; शि० एम. ए. संस्कृत (वनस्थली), पी-एच. डी. संस्कृत (भागलपुर) — 'ऋग्वेद के अग्निसूक्तों की उपमाओं का अध्ययन'; कार्य : सुन्दरवती महिला कॉलेज, भागलपुर में संस्कृत की प्रवक्ता; वि० खेल-कूद में प्रवीण, देहरादून में प्रधानाध्यापक संघ द्वारा आयोजित अन्तर्विद्यालय छात्रा क्रीडा प्रतियोगिता में चैम्पियन (१९५४–५६), मेरठ मंडल बालिका खेल-कूद प्रतियोगिता मे तथा लखनऊ में प्रान्तीय युवक समारोह द्वारा आयोजित क्रीडा-प्रतियोगिता में चैम्पियन, भागलपुर विश्वविद्यालय क्रीडा - परिषद् की सदस्या एवं अपने महाविद्यालय की क्रीडा-परिषद् की अध्यक्षा, दो रचनाएं प्रकाशित । प० संस्कृत-विभाग, सुन्दरवती महिला कालेज, भागलपुर (बिहार) ।

सम्वत् २०२१ (सन् १९६४)

इन्दिरा विद्यालंकार

पि० श्री कन्हैयालाल शाह; प० २५ आशुतोष मुकर्जी रोड, पो० एलगिन रोड, भवानीपुर, कलकत्ता।

कमला विद्यालंकार

पि० श्री सत्यप्रकाश; प० द्वारा श्री ब्रजमोहन सूद, मकान नं० १६४ अपर मोहल्ला, कालका (हरियाणा)।

सरोज विद्यालंकार

पि० श्री हरिवंशसिंह; प० द्वारा श्री चौधरी हरपालसिंह, नन्दन पिविन न्यू कालोनी, जनता हास्पिटल के निकट, के. पी. रोड, बुलन्द शहर।

सविता विद्यालंकार

ज० १० अगस्त १९४५; पि० श्री विष्णुदत्त कपूर; शि० एम. ए. राजनीतिशास्त्र (आगरा), बी. एड. (मेरठ); वि० संगीत-वादन में विशेष अभिरुचि, अनेक प्रतियोगिताओं में विशेष पारितोषिक एवं विजयोपहार प्राप्त, एम. ए. में डी. ए. वी. कालेज में प्रथम स्थान प्राप्त। प० द्वारा श्रीमती दमयन्ती कपूर, आचार्या कन्या गुरुकुल, ६० राजपुर रोड, देहरादून।

सुधा विद्यालंकार

ज० २९ अगस्त १९४४, बीकानेर; पति : श्री बुद्धिप्रकाश; पि० श्री रघुवीरशरण लाहोटी; वि० छात्रावस्था में खेलों में पुरस्कार प्राप्त, आर्य-समाज सीताराम बाजार की सक्रिय सदस्या, संगीत में विशेष अभिरुचि। प० १०९८, गली राजा उग्रसेन, सीताराम बाजार, दिल्ली।

सुरेन्द्रपाल विद्यालंकार

पि० श्री शमशेरसिंह; प० द्वारा श्री गुरतेजसिंह, आई. ए. एस. सब-कलैक्टर मेंडक ५०२११० (आ० प्र०)।

सूनृता विद्यालंकार

ज० २९ सितम्बर १९४३, जौनपुर; पति : श्री भारतभूषण विद्यालंकार; पि० श्री विश्वनाथदास; शि० एम. ए. संस्कृत (बनारस), पी-एच. डी. संस्कृत (बनारस) — 'व्यासभाष्य का परिशीलन'; कार्य : कन्या गुरुकुल देहरादून में प्रवक्ता; वि० प्राचीन भारतीय ग्रन्थों के अध्ययन एवं अनुशीलन में विशेष अभिरुचि। प० कन्या गुरुकुल ६० राजपुर रोड, देहरादून; द्वारा श्री भारतभूषण विद्यालंकार, गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)।

सम्वत् २०२२ (सन् १९६५)

अर्चना विद्यालंकार

ज० १५ जून १९४९; पति : श्री हरजीत सिद्धू; पि० श्री गधर्वसेन खोसला; शि० एम. ए. इतिहास (पंजाब) बी.एड्. (बनारस), बी. ए. अभिनय-कला (दिल्ली); कार्य : पंजाब सांस्कृतिक दल में कलाकार; वि० छात्रावस्था में वाद-विवाद, अभिनय एवं संगीत की प्रतियोगिताओं में सर्वोत्तम पुरस्कार प्राप्त, पंजाब के रंगमंच की प्रसिद्ध कलाकार एवं अभिनेत्री, दूरदर्शन-कार्यक्रमों में सम्मिलित, अभिनय के क्षेत्र में पर्याप्त ख्याति अर्जित । प० १३११ सेक्टर १५ बी, चंडीगढ़ ।

चंचल विद्यालंकार

पि० श्री लक्ष्मणदास तनेजा । प० २६, मिलिट्री क्वार्टर्स, रामनगर, रुड़की ।

राधा विद्यालंकार

पि० श्री नित्यानन्दसिंह । प० मु० पो० कदवां जिला पूर्णिया (बिहार) ।

सरला विद्यालंकार

पि० श्री हरवंशसिंह प० द्वारा श्री हरवंशसिंह, बेगमाबाद (मेरठ) ।

सरोज विद्यालंकार दीक्षा

ज० २८ अक्टूबर १९४६, तलवन (पंजाब); पति : डॉ० प्रशांतकुमार वेदालंकार; शि० एम. ए. संस्कृत (वनस्थली); कार्य : श्यामाप्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय दिल्ली में प्राध्यापिका; वि० पी-एच. डी. उपाधि के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय से 'ऐतरेय एवं तैत्तिरीय ब्राह्मणों के निर्वचन' विषय पर शोधकार्यरत, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सीनेट की सदस्या, आर्यसमाज तथा अन्य सावंजनिक संस्थाओं से सम्बद्ध, मंजी हुई समाजसेविका । प० ७/२ रूपनगर, दिल्ली-७ ।

सुनीति विद्यालंकार

पि० श्री देवेन्द्रकुमार । प० अम्बेहटा, सहारनपुर ।

सुमन विद्यालंकार

पि० श्री राजबहादुर । प० कोठी किरान, हाथरस (अलीगढ़) ।

सुषमा विद्यालंकार

पि० चौधरी प्रेमराज । प० ४८४४/२४, दरियागंज, दिल्ली-२ ।

सम्वत् २०२३ (सन् १९६६)

उषा विद्यालंकार

पि० श्री वेदप्रकाश । प० द्वारा श्री ए. के. इन्द्रायन, कल्याण अधिकारी, भारत सरकार, एटोमिक एनर्जी, ट्राम्बे बम्बई-७४ ।

प्रेमवती विद्यालंकार

पि० श्री सुल्तानसिंह । प० द्वारा चौधरी बाबूराम सिंह, इमारती लकड़ी के व्यापारी, देहरादून ।

विमला विद्यालंकार

पि० श्री तारादत्त; **शि०** एम. ए. संस्कृत, पी-एच. डी. संस्कृत (बनारस) — 'पातञ्जल योगसूत्र का समीक्षात्मक अध्ययन;' **कार्य :** हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस के संस्कृत-पालि विभाग में व्याख्याता; **र०** पातञ्जल योगसूत्र का समीक्षात्मक अध्ययन; **वि०** पी-एच. डी. के शोध-प्रबन्ध की सर्वोत्कृष्टता के कारण स्वर्णपदक से सम्मानित, अनेक शोध-लेख प्रकाशित, ख्यातिप्राप्त लेखिका, स्वाध्याय-प्रिय । **प०** डॉ० विमला कर्णाटक, संस्कृत-पालि विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ।

वीरबाला विद्यालंकार

पि० श्री समयसिंह; **प०** ४९२ खुड़बुड़ा, देहरादून ।

सावित्री विद्यालंकार

पि० श्री कन्हाईलाल; **प०** द्वारा श्री सत्यनारायण शाह, २५ आशुतोष मुकर्जी रोड व भवानीपुर एलगिन रोड, कलकत्ता ।

सम्वत् २०२४ (सन् १९६७)

फूला विद्यालंकार

पि० श्री गुरुप्रसाद सूद; **प०** द्वारा प्रेमलता देवान, पो० बाक्स सं० ३९९, ताबोरा, तांजानिया ।

माधुरी विद्यालंकार

पि० कन्हाईलाल शाह; **प०** २५ आशुतोष मुकर्जी रोड, कलकत्ता—२० ।

रंजना विद्यालंकार

पि० श्री शिव कृष्णकान्त; **प०** श्रीमती के० कौल, १४ हरिद्वार रोड, देहरादून ।

लतागोपाल विद्यालंकार

पि० श्री एम. आर. गोपाल; **प०** श्रीमती लतागोपाल; बी डी. जी. विद्या-मन्दिर, एन. एस. बी. रोड, रानीगनी, वर्दवान (पश्चिमी बंगाल) ।

विन्ध्या विद्यालंकार

ज० २८ नवम्बर १९४७, हिमाचल प्रदेश; **पति :** श्री देवकुमार; **पि०** श्री गौरीप्रसाद; **शि०** एम. ए. राजनीतिशास्त्र (पंजाब); **कार्य :** स्वतन्त्र पत्रकारिता; **वि०** 'इण्डिया कालिंग कनाडा' के लिए लेखन, भारत-कनाडा मैत्री संघ की सदस्या, हिमाचलप्रदेश में भारतीय ग्रामीण महिला संघ, नैतिक स्वास्थ्य संस्था की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, संगीत व बागवानी का शौक, पत्र-पत्रिकाओं में लेख व शोधपत्र प्रकाशित । **प०** द्वारा श्री देवकुमार, स्पेशल कॉरेस्पॉन्डेन्ट, स्टेट्समैन, कनाट सरकस, नयी दिल्ली ।
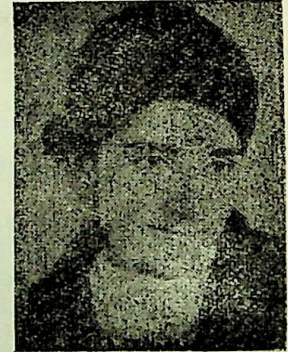
स्वदेश विद्यालंकार

पि० श्री वैष्णवदास; **प०** ३६ रायनगर, गांधी नगर, दिल्ली—३१ ।

सम्वत् २०२५ (सन् १९६८)

दुर्गा विद्यालंकार

पि० श्री विश्वम्भरसिंह । प० १५ कर्जन रोड, देहरादून ।

मधु विद्यालंकार

ज० २८ अगस्त १९४६, दिल्ली; पति : श्री चमनलाल अग्रवाल; शि० एम. ए. हिन्दी (दिल्ली), पी-एच.डी. हिन्दी (दिल्ली)—'हिन्दी और गुजराती एकांकी साहित्य'; कार्य : जानकी देवी महाविद्यालय दिल्ली में प्राध्यापिका । प० सी-४६ डी.डी.ए. फ्लैट्स, ओल्ड राजेन्द्र-नगर, नयी दिल्ली—६० ।

रजनीश विद्यालंकार

पि० श्री जयप्रकाश । प० द्वारा श्री जयप्रकाश, इमलीखेड़ा, सहारनपुर ।

ललिता विद्यालंकार

पि० श्री बाबूराम । प० मकान नं० ४६२/१, मेजर श्यामलाल रोड, सिविललाइन, लुधियाना ।

सुशीला विद्यालंकार

पि० श्री बाबूराम । प० मकान नं० ४६२/१, मेजर श्यामलाल रोड सिविल-लाइन, लुधियाना ।

सम्वत् २०२६ (सन् १९६९)

आभा विद्यालंकार

पि० श्री नटवरलाल छगनलाल शाह ।

प्रतिभा विद्यालंकार

ज० १ अक्टूबर १९४७, जौनपुर; पति : अनिल कुमार; पि० श्री विश्वनाथदास; शि० एम. ए. (मगध); वि० संगीत में विशेष अभिरुचि । प० द्वारा अनिलकुमार, सत्यज्ञान - निकेतन, आर्य नगर, ज्वालापुर (सहारनपुर) ।

रश्मि विद्यालंकार

पि० श्री जीतसिंह । प० द्वारा श्री ललित शास्त्री, रेलवे रोड, कोटद्वार (उ० प्र०) ।

राजकुमारी विद्यालंकार

पि० श्री विश्वराज । प० द्वारा शीतल सुरमा कार्यालय, बरेली ।

रेनुका विद्यालंकार

पि० श्री बालकृष्ण । एच-४४८, राजेन्द्रनगर नई दिल्ली—६० ।

वीना विद्यालंकार

पि० श्री श्रीराम । प० द्वारा श्री सोहन थपलियाल, समाचार सम्पादक, आकाशवाणी, लखनऊ ।

सरिता विद्यालंकार

ज० २ जून १९५१, फरीदपुर (बरेली); पति : श्री सुमनलाल; पि० डॉ० चन्द्रगुप्त आयुर्वेदालंकार; वि० या० पति के साथ ईरान यात्रा; वि० पाककला, पेंटिग, टाइपिंग एवं सिलाई में प्रशिक्षण प्राप्त, संगीत (वादन) एवं बुनाई में विशेष अभिरुचि । प० चन्द्रवाटिका, पो० बिलारी (मुरादाबाद) ।

सम्वत् २०२७ (सन् १९७०)

कुमकुम विद्यालंकार

पि० श्री प्रेमराज चौधरी । प० ४८४४/२४, दरिया-गंज, दिल्ली-२ ।

नीलमकुमारी विद्यालंकार

पि० श्री जयदयाल । प० द्वारा श्री जयदयाल, ग्राम कलसाला, शाहाबाद मार्कण्डा करनाल ।

प्रमिला विद्यालंकार

ज० १७ जुलाई १९४९, तरनतारन (पंजाब); पि० श्री करतारसिंह; शि० एम. ए. (मेरठ), बी. एड.; पति : श्री इन्द्रजीत महेता; प० सी ४/९२-१, एस.डी.ए. हौज खास, नई दिल्ली–१६

प्रेमलता विद्यालंकार

पि० श्री रामप्रकाश । प० द्वारा श्री रामप्रकाश जी मल्लन, मु० पो० बहरामघाट, बाराबन्की ।

राजेश विद्यालंकार

ज० ९ अक्टूबर १९५१, महेन्द्रनगर (बिजनौर); पति : श्रीनारायणशर्मा; शि० एम. ए. (मेरठ); वि० साहित्य में विशेष रुचि । प० द्वारा डॉ० नारायण शर्मा, गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) ।

रेखा विद्यालंकार

पि० श्री सोमप्रकाश चौधरी । प० द्वारा श्री आर. एन. अग्रवाल, एच. डी. ओ. २९, रेवर विला रोड, नागल-टाउनशिप, पंजाब ।

स्नेहलता विद्यालंकार

पि० श्री हरिश्चन्द्र । प० द्वारा श्री भूदेवचन्द्र हरिश्चन्द्र, राजकीय ठेकेदार, सिंदरी (बिहार) ।

सम्वत् २०२८ (सन् १९७१)

नीरुरानी विद्यालंकार
पि० श्री खिच्चूमल । प० ८७ गाडोदिया मार्केट, दिल्ली-६ ।

नीलम विद्यालंकार
पि० श्री तीर्थदास चौधरी । प० एफ-२२ सेंट्रल रेवेन्यू कालोनी, लारेंस रोड, अमृतसर ।

रंजनाकुमारी विद्यालंकार
पि० श्री मोतीलाल । प० द्वारा राधेश्याम मन्दिर, मु० सुहसपुर जिला मोंगा (अहमदाबाद) ।

वन्दना विद्यालंकार
पि० श्री बख्तावरसिंह । प० द्वारा श्री बख्तावरसिंह, गाँव मलवाला, पो० आ० कराईवाला (फिरोजपुर) ।

शान्ता विद्यालंकार
पि० श्री जी. एल. मेहता । प० द्वारा श्री जी. एल. मेहता, पोस्ट मास्टर नौतनवा, गोरखपुर ।

शान्ता विद्यालंकार
पि० श्री नारायणराव ।

सन्तोष विद्यालंकार
पि० श्री तीर्थदास चौधरी । प० एफ-२२ सेंट्रल रेवेन्यू कॉलोनी, लारेंस रोड, अमृतसर ।

सरोज विद्यालंकार
पि० श्री राम धस्माना । प० द्वारा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, ६० राजपुर रोड, देहरादून ।

सुखदा विद्यालंकार
ज० १० जनवरी १९५२, जरौड़ा, पति : श्री सुभाषराव मुडे; पि० श्री विट्ठलराव पटेल; वि० सामाजिक व राजनीतिक कार्यों में रुचि, वादविवाद प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त । प० श्रीमती सुखदा मुडे, आजरा जूनियर कॉलेज, तालुका आजरा (कोल्हापुर)

सम्वत् २०२९ (सन १९७२)

उमाकुमारी विद्यालंकार
पि० श्री रामगोपाल । प० ५५ महिला छात्रावास, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी ।

उषाकुमारी विद्यालंकार
पि० श्री नौबहारसिंह । प० मकान नं० ए १५७, नई कॉलोनी, पो० कालागढ़ (गढ़वाल) ।

कुशा विद्यालंकार
ज० २६ नवम्बर १९५४, कानपुर; पि० श्री संजय शास्त्री; शि० एम. ए. संस्कृत (कानपुर); कार्य : निजी प्रेस का संचालन; वि० महिला सहकारी समिति लिमिटेड की मण्डी की सदस्य, पत्रकारिता में अभिरुचि, सभी परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी प्राप्त । प० रमता योगी प्रेस, किदवईनगर, कानपुर-११

प्रतिभा विद्यालंकार

पि० श्री शशिकुमार नारायणसिंह प० द्वारा श्री शशिकुमार नारायणसिंह पुलिस इन्पेक्टर, रकसौल (चम्पारन), बिहार ।

माधुरी विद्यालंकार

पि० श्री मोतीचन्द्र ।

मालती विद्यालंकार

ज० ५ मई १९५२, बरनिहार; पति : श्री कामदेवपति तिवारी, पि० श्री राजाराम पाण्डेय; वि० छात्रावस्था में खेल-कूद विशेषकर २००, १०० व ८० मीटर की दौड़ में दक्षता प्राप्त तथा ५ वर्ष जिला चैम्पियन, २ वर्ष मेरठ मंडलीय चैम्पियन और एक वर्ष (१९६९ में) उत्तर-प्रदेश की चैम्पियन घोषित, समाज व परिवार को अधिक से अधिक भारतीय बनाने का प्रयास, खेल-कूद, संगीत व कला के प्रति विशेष अभिरुचि, आदर्श गृहिणी । प० द्वारा श्री कामदेवपति तिवारी, ग्रा० पाकड़गांव, वाया नरईपुर (चम्पारण) ।

रागिनी विद्यालंकार

पि० श्री विष्णुचन्द्र शर्मा प० ४८ कैंट, बरेली ।

विमला विद्यालंकार

पि० श्री जगनारायणसिंह । प० द्वारा मेजर जगनारायणसिंह यादव, मु० पो० अचीना, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) ।

वीना विद्यालंकार

पि० श्री अमरनाथ शास्त्री प० द्वारा श्रीमती सीतादेवी जी, अध्यापिका, जूनियर हाईस्कूल, करौरा (बुलन्दशहर) ।

सुनीता विद्यालंकार

पि० श्री राजेश्वरप्रसाद । प० १५-डी, सुभाष रोड, देहरादून ।

स्वराज विद्यालंकार

पि० श्री जयनारायणसिंह । प० द्वारा श्री मेजर जयनारायणसिंह यादव मु० पो० अचीना महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) ।

सम्वत् २०३० (सन् १९७३)

कमलेश विद्यालंकार

ज० ९ अगस्त १९५३, फैजाबाद (उत्तर-प्रदेश); पि० श्री रामजी दुबे, पति : श्री शरच्चन्द्र तिवारी; शि० बी. एड. (जबलपुर-७४); वि० कढ़ाई, सिलाई, बुनाई, गृहकार्य में दक्षता, धार्मिक और साहित्यिक अध्ययन में रुचि । प० द्वारा श्री शरच्चन्द्र तिवारी, २४३४ स्टेशन रोड, महू छावनी (इन्दौर) म. प्र. ।

गीता विद्यालंकार

पि० श्री मदनलाल । प० द्वारा श्री हरवंशलाल जी महाजन, १६५ लाजपत मार्केट, दिल्ली-६ ।

पुष्पा विद्यालंकार

पि० श्री देवीप्रसाद । प० द्वारा श्री देवीप्रसाद देवली, थानाध्यक्ष, डुभालवाला, देहरादून ।

पूनम विद्यालंकार

ज० १० नवम्बर १९५४ बीसलपुर; डॉ० सोमप्रकाश खन्ना; शि० एम.ए. प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं पुरातत्व (गुरुकुल); वि० संगीत, कढ़ाई सिलाई आदि में विशेष अभिरुचि। प० द्वारा डॉ० सोम प्रकाश खन्ना, ४०—ई सत्यलक्ष्मी हाउसिंग सोसायटी, पोस्टन सागर चैम्बूर बम्बई।

सुधा विद्यालंकार

ज० १५ अगस्त १९५३, पि० श्री श्यामलाल, पति : श्री कुलदीप कुमार वर्मा, स्थायी प० द्वारा श्री श्यामलाल डब्ल्यू. बी. १२०, शकरपुर, दिल्ली-११००५१ वर्तमान प० श्रीमती सुधा कुमारी वर्मा, २१ कोलिनट्री रोड, सिडिन्ड्रम, लदन एस. ई. २६ (इंगलैंड)।

शशि विद्यालंकार

पि० चौधरी देवेन्द्रसिंह। प० द्वारा चौधरी देवेन्द्रसिंह टिम्बर मर्चेन्ट, लक्खी बाग, देहरादून।

सम्वत् २०३१ (सन् १९७४)

आशा विद्यालंकार

पि० श्री गोवर्धनलाल मेहता। प० द्वारा श्री जगन्नाथ जी, पो० पज्जीधोता, जिला होशियारपुर।

उत्तरा विद्यालंकार

पि० श्री लालचन्द्र जी सरकैक। प० द्वारा श्री लालचन्द्र जी सरकैक, ग्राम दलान, पो० थानेधार, जिला महासु (हि० प्र०)।

उमारानी विद्यालंकार

पि० श्री रामकृष्णसिंह जी प० मु. पो. बरकातपुर, जिला बुलन्दशहर।

निरूपमा विद्यालंकार

ज० २६ जुलाई १९५४, अम्बाला; पति : श्री रमन; पि० श्री अविनाशचन्द्र विद्यालकार; शि० बी. एड्. (मेरठ); कार्य : भारत हैवी इलैक्ट्रिकल हरिद्वार और मंगलौर के कन्या-विद्यालयों में अध्यापन, संप्रति गृहस्थ; वि० सामाजिक एवं राजनीतिक प्रवृत्तियों में विशेष अभिरुचि, संगीत (वादन) में दक्ष। प० ४३८, डबल स्टोरी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली।

पुष्पलता विद्यालंकार

पि० श्री शंकरदत्त आर्य। प० द्वारा श्री शंकरदत्त जी आर्य, पो० फलावड़ा (मेरठ)।

मालती विद्यालंकार

ज० मार्च १९५५, माजरी माफी (देहरादून);

पि० श्री नत्थासिंह; वि० इतिहास व राजनीति में विशेष अभिरुचि । प० ग्राम माजरी माफी, पो० आई. आई. पी. (मोहकमपुर), देहरादून ।

मालती विद्यालंकार

पि० श्री ब्रजकिशोर द्विवेदी । प० द्वारा श्री ब्रजकिशोर द्विवेदी, ग्राम दूबेपुर, पो० उपगाँव (उन्नाव) ।

रीता विद्यालंकार

पि० श्री विष्णुचन्द्र शर्मा । प० ४८ कैंट, बरेली ।

संगीता विद्यालंकार

पि० श्री हरवंशलाल गम्भीर । प० द्वारा श्री हरवंशलाल गम्भीर, दिल्ली बूटपालिश कम्पनी, बाड़ा हिन्दूराव दिल्ली—६ ।

सावित्री विद्यालंकार

पि० श्री अगनूशाह । प० एन-२५, एस. एस. एच., मसाला पट्टी कलकत्ता--१३ ।

सम्वत् २०३२ (सन् १९७५)

कमला विद्यालंकार

पि० श्री भुवनचन्द्र तिवारी । प० २९ राजपुर रोड, देहरादून ।

प्रभा विद्यालंकार

ज० २६ अक्टूबर १९५४, पलिया कलां (खीरी); पि० श्री ओमप्रकाश आर्य; शि० एम. ए. संस्कृत (कानपुर); वि० आर्यसमाज पलिया कलां की गतिविधियों में सक्रिय योगदान, समाज व देश की सेवा में रुचि । प० आर्यभवन, पलिया (खीरी) ।

प्रेमकुमारी विद्यालंकार

पि० श्री भीमसिंह यादव । प० श्री भीमसिंह यादव, पोस्ट-मास्टर, दिल्ली छावनी—१० ।

मीरा विद्यालंकार

पि० श्री जोगेन्द्रसिंह । प० द्वारा श्री जोगेन्द्रसिंह ठाकुर, ग्राम समरोटी, पो० कोटगढ़ (महासु), हिमाचल-प्रदेश ।

रंजना विद्यालंकार

पि० श्री जोगेन्द्रसिंह । प० द्वारा श्री जोगेन्द्रसिंह ठाकुर, ग्राम समरोटी, पो० कोटगढ़ (महासु), हिमाचल प्रदेश ।

वन्दना विद्यालंकार

ज० २ जून ५७, डूंगरपुर (मुरादाबाद); पि० श्री एम. आर. सिंह; शि० एम. ए., वि० समाज-सेवा, कहानी लेखन; प० ग्राम डूंगरपुर, डा० मानपुर, जि० मुरादाबाद ।

विमला विद्यालंकार

प० द्वारा श्री मानसिंह जी, वेद भवन, मकान नं०५०, होशियारपुर रोड, मोहल्ला किशनपुरा, जालन्धर शहर ।

वीना विद्यालंकार

पि० श्री दिलाराम अग्रवाल । प० द्वारा रोपड़ आलू कम्पनी, रोपड़, पंजाब ।

शशि विद्यालंकार

पि० श्री दिलाराम अग्रवाल । प० द्वारा रोपड़ आलू कम्पनी, रोपड़, पंजाब ।

सुनीता विद्यालंकार

पि० श्री भगतराम । प० द्वारा श्रीमती महेन्द्रादेवी, १९-सी राजपुर रोड, देहरादून ।

सम्वत् २०३३ (सन् १९७६)

आभा विद्यालंकार

पि० श्री विद्यासागर शर्मा । प० द्वारा श्री विद्यासागर शर्मा, ग्राम लाठी, पो० कुमारसेन, जिला शिमला ।

चन्द्रवती विद्यालंकार

पि० श्री हेमराज । प० कन्या गुरुकुल, ६० राजपुर रोड, देहरादून ।

विमला विद्यालंकार

पि० श्री लालचन्द्र सरकेक । प० द्वारा श्री लालचन्द्र सरकेक, ग्राम दलान, पो० थानेधार, जिला महासु (हिमाचल प्रदेश) ।

—•—

नामानुक्रमणिका

(कोष्ठक की संख्याएं स्नातक बनने के सन् की सूचक हैं)

नामानुक्रमणिका (२)

(कोष्ठक की संख्यायें स्नातिका बनने के सन् की सूचक हैं)

संशोधन-परिवर्द्धन

पृ० ७२

सत्यदेव विद्यालंकार (दलपति)

ज० नैरोबी (केनिया)।
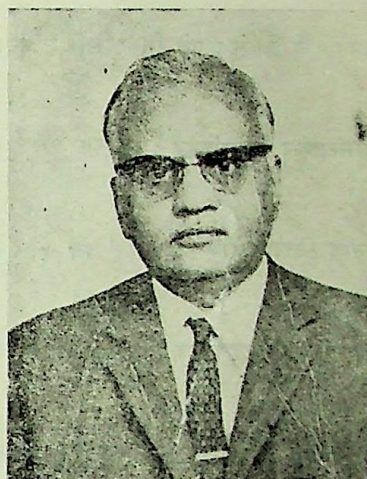
पृ० ६०

ओम्प्रकाश विद्यालंकार के परिचय में उनके चित्र के स्थान पर वीरेन्द्र वेदालंकार (स्नातक सन् १९४०) का चित्र छप गया है।

पृ० ६९

धीरेन्द्र नाथ विद्यालंकार के परिचय में धीरेन्द्र कुमार विद्यालंकार (स्नातक सन् १९३९) का चित्र छप गया है।

'परिचायिका' के छपते-छपते निम्नलिखित स्नातक-बन्धुओं का देहावसान हो गया :—

शान्तिस्वरूप वेदालंकार : स्नातक वर्ष १९२०; परिचय पृष्ठ ४४ ।

पूर्णचन्द्र विद्यालंकार : स्नातक वर्ष १९२९; परिचय पृष्ठ ६६ ।

शिवदत्त आयुर्वेदालंकार : स्नातक वर्ष १९३२; परिचय पृष्ठ ७१ ।

नित्यानन्द वेदालंकार : स्नातक वर्ष १९३३; परिचय पृष्ठ ७२ ।

रामचन्द्र आयुर्वेदालंकार : स्नातक वर्ष १९४०; परिचय पृष्ठ ९९ ।